अग्निशिखा Vol. 32 2001-2

by Arya Samaj Foundation Chennai an

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

100718

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

130718

अग्निशिखा

अगस्त २००१   अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा अगस्त २००१ वर्ष ३२, अंक १, पूर्णांक ३७३

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : यशपाल जैन	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		६
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	११
प्रार्थना (कविता)	सुमित्रानन्दन पंत	१७
अशुभ व्यक्तित्व	श्रीअरविन्द	१८
नीम की यात्रा		२२
सदा हरे भरे	माताजी की बातचीत के आधार पर	२९
एक युवा कलाकार के नाम	श्रीअरविन्द	३२
सब कुछ दे दो	श्रीमा	३३
श्रीअरविन्द के वचन		३५
सोसायटी समाचार		३६
एनुअल जनरल मीटिंग की सूचना		३७

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा सितम्बर २००१ वर्ष ३२, अंक २, पूर्णांक ३७४

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : मृत्यु का रहस्य	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	९
करने दे मुझको प्रणाम (कविता)	छोटेनारायण शर्मा	१७
एक शिष्य के नाम पत्र		१८
'ऋषिवर बोले' : चोरी (१)		२४
जगत् में व्यक्ति की भूमिका	श्रीमां	२८
गुदड़ी का लाल	अनुबेन	२९
अचूक साधन	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ८ से	३४

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा

सितम्बर २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा अक्तूबर २००१ वर्ष ३२, अंक ३, पूर्णांक ३७५

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : मानव प्रकृति	अनुबेन	२
कर्मयोग के साधक श्री रवीन्द्रजी	ज्ञानवती गुप्ता	५
दैनन्दिनी		९
जय श्रीअरविन्द (कविता)	छोटेनारायण शर्मा	१३
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	१४
मिथ्यात्व	नलिनीकान्त गुप्त	२३
श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		२५
साधना के रूप में किया गया कर्म	श्रीअरविन्द के पत्रों से	३१
भागवत कृपा और कर्मफल	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५ से	३४
सोसायटी समाचार		३७

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

"प्रकृति अपने सौंदर्य को अर्पित करती है।"

यह सहज और अनायास किया गया नैवेद्य है।

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32
3

3/11/200
LIBRARY

अग्निशिखा

अक्तूबर २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा नवम्बर २००१ वर्ष ३२, अंक ४, पूर्णांक ३७६

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : श्रद्धा	अनुबेन	२
हृदय-वन्दना	'हृदय'	५
दैनन्दिनी		७
जागरण गान (कविता)	छोटेनारायण शर्मा	११
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	१२
योग में कर्म के लिये उचित हेतु	श्रीअरविन्द	२३
एक प्रयत्न	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ८ से	२८
मृत्यु के बाद		३३
सोसायटी समाचार		३६

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

मनोवैज्ञानिक पूर्णता

केवल एक ही मनोवैज्ञानिक पूर्णता नहीं है
बल्कि फूल की पंखुड़ियों की तरह पांच पूर्णताएं हैं।
वे हैं सचाई, श्रद्धा, भक्ति, अभीप्सा और समर्पण।

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

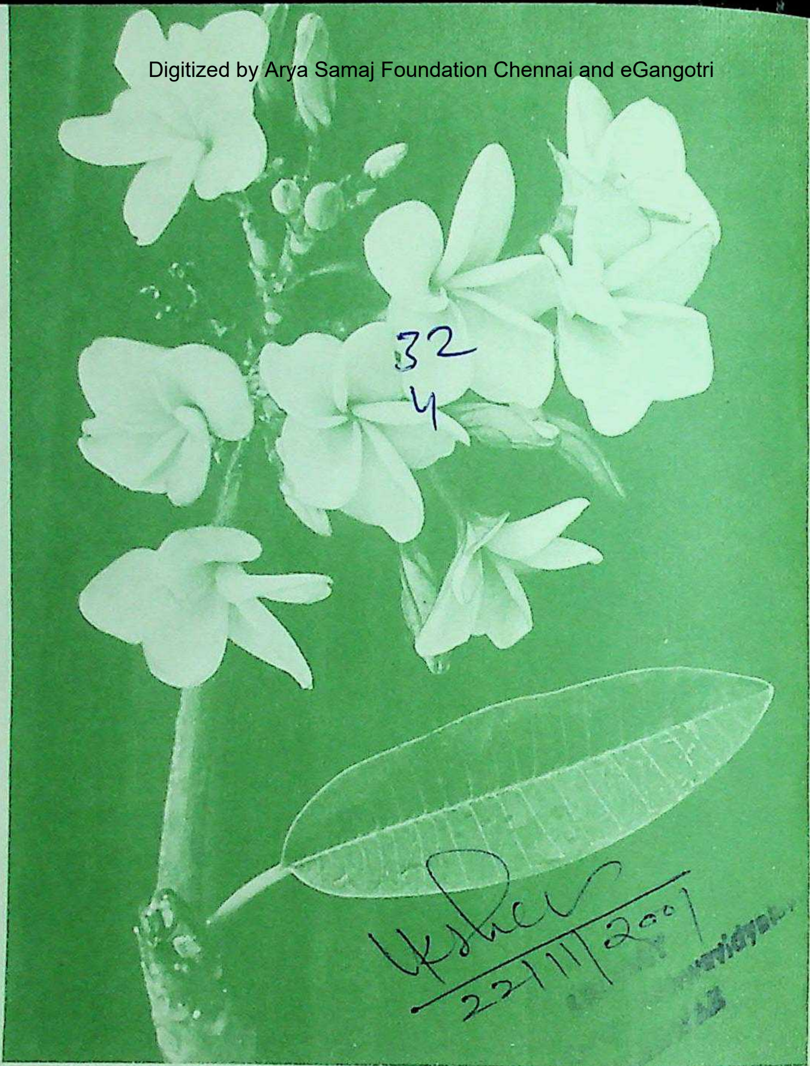

अग्निशिखा

नवम्बर २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा दिसम्बर २००१ वर्ष ३२, अंक ५, पूर्णांक ३७७

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : क्या पाठ ?	अनुबेन	२
रवीन्द्रजी के लेख		
सम्पादक की एक शाम		४
मेरा पहला खोज-कार्य		११
आपसे मिलिये : आप हैं काजी साहब		१६
मेरे घर मेहमान आये		२२
हमारे जीजाजी		२६
छिप्पी, सिप्पी		३२
सोसायटी समाचार		३६
Notice for an Extraordinary General Meeting		३८

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

दृढ़ संकल्प

वह जानता है कि उसे क्या चाहिये और करके दिखा देता है।

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

32
5
17/12/2001
LIBRARY
Vishwavidyalaya
HARDWAR

अग्निशिखा

दिसम्बर २००१ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा जनवरी २००२ वर्ष ३२, अंक ६, पूर्णांक ३७८

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' :	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
श्रद्धांजलि श्री रवीन्द्रजी को		
रवीन्द्र	एक वरिष्ठ साधक	९
रवीन्द्रजी : एक मस्तमौला अनासक्त साधक-साहित्यकार	डॉ० रजनीकान्त जोशी	११
नानी की कहानी	सुमेधा वर्मा	१५
श्री रवीन्द्रजी : एक कर्मवीर	मधु आर्य	२०
श्री रवीन्द्रजी : एक प्रखर आत्मा	चन्द्रदेव प्रसाद सिंह	२१
श्रद्धांजलि-भरा एक पत्र	राधारमण	२२
एक मित्र का पत्र	राजेन	२४
बीता कल	रवीन्द्रजी	२५
सच्चे बनो	'श्रीमातृवाणी' खण्ड २ से	२७
'ऋषिवर बोले' : चोरी (२)		२८
क्या भगवान् केवल निर्वाण चाहते हैं ?	श्रीमां	३२
एक शिष्य को जन्मदिन के संदेश		३४

मुखपृष्ठ

श्री रवीन्द्रजी

(२६ जनवरी १९१७—२४ अगस्त २००१)

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी — ६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

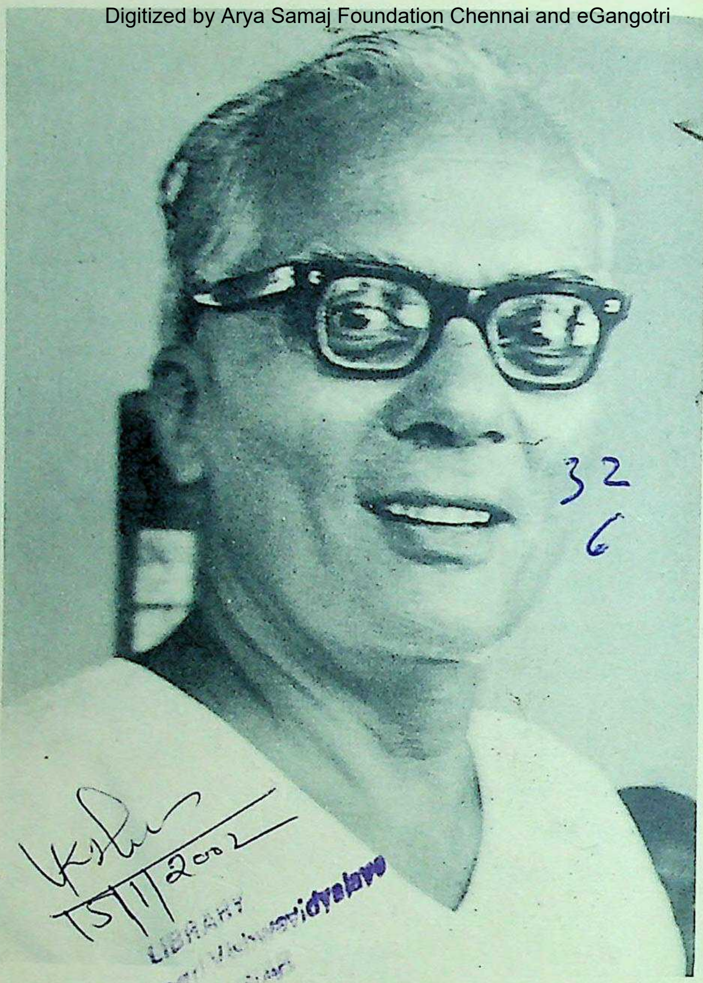

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARIDWAR
13/11/2002

(१९१७—२००१)

अग्निशिखा

जनवरी २००२

अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा फरवरी २००२ वर्ष ३२, अंक ७, पूर्णांक ३७९

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : शुभ आगमन	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
दिव्य मां	नीरदवरण	९
अभीप्सा करनेवाले के नाम पत्र	श्रीअरविन्द	२०
कुछ भगवान् के बारे में	रवीन्द्र	२३
इच्छाएं ठोस रूप लेती हैं	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५ से	२७
हमारा योग	नलिनीकान्त गुप्त	३०
अहंकार पर विजय पाना	श्रीमां	३२
ध्यान और प्रगति	श्रीमां	३४
सोसायटी समाचार		३५

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

अवतार

पृथ्वी पर शरीर में अभिव्यक्त परम-प्रभु

हिन्दी—कमल

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा

फरवरी २००२ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निशिखा मार्च २००२ वर्ष ३२, अंक ८, पूर्णांक ३८०

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : कौन अधिक सुसंस्कृत है ...?	अनुबेन	२
उषा से पहले का अंधकार	श्रीअरविन्द	६
दीप्तियों की माता का स्तवन	श्रीअरविन्द	७
दैनन्दिनी		११
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
युद्ध और राजनीति	नीरदवरण	१५
विजयें प्राप्त करते चलो	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५ से	२१
न्याय और कृपा	श्रीमां	२३
अवचेतना, अहंकार इत्यादि के बारे में		२४
मृत्यु-देवता	'श्रीमातृवाणी' से	२९
'ऋषिवर बोले' : समय		३१
सोसायटी समाचार		३४

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

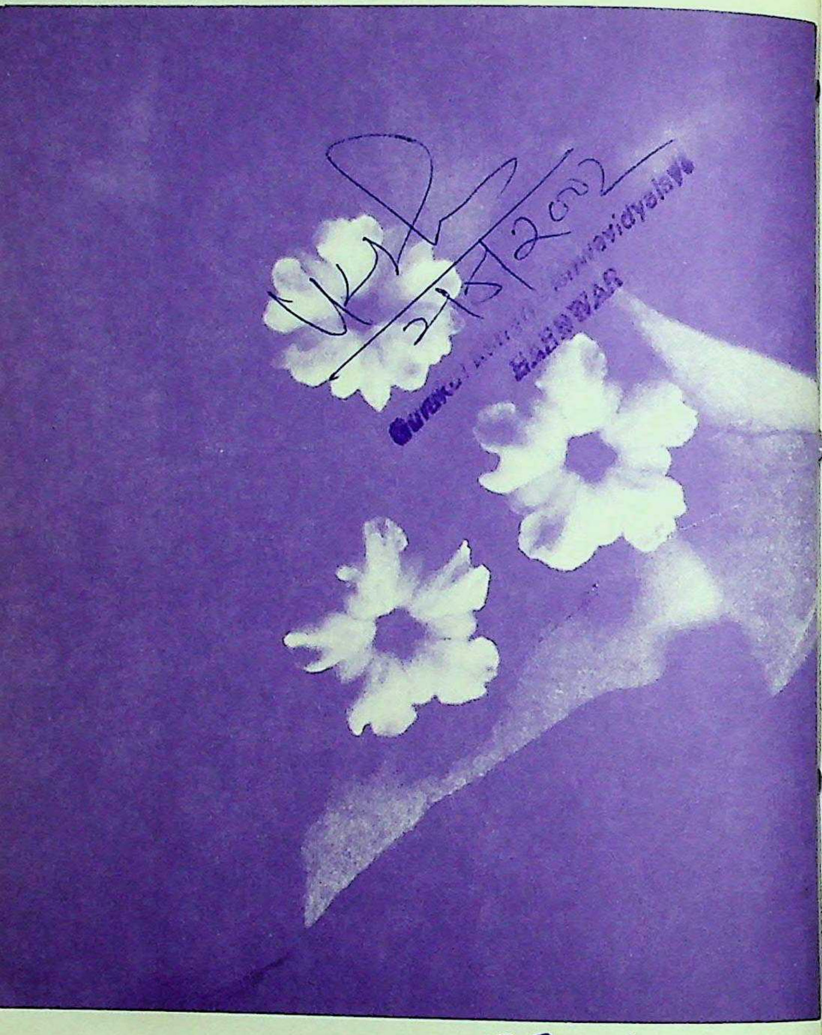

अग्निशिखा

मार्च २००३ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा अप्रैल २००२ वर्ष ३२, अंक ९, पूर्णांक ३८१

विषय-सूची

संदेश	श्रीअरविन्द	१
'सम्पादकीय' : चिंगारियां	अनुबेन	२
प्रात प्रदीप	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	५
दैनन्दिनी		७
दु:ख-दर्द	रवीन्द्र	९
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
युद्ध और राजनीति	नीरदवरण	१२
मानवजाति का उपकार	श्रीमां	१९
'नन्हें-मुन्नों के लिये'—जेल या . . . ?	अनुबेन	२३
बनी-बनायी कहानी	रवीन्द्र	२७
निम्न गतियों को अस्वीकार करो	श्रीमां	३४
एक लघु कथा		३५
सोसायटी समाचार		३६

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

धरती पर अतिमानसिक अमरता

इसे चरितार्थ करना बाकी है

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARIDWAR

अग्निशिखा

अप्रैल २००२

अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : टेरी फॉक्स	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
पहले अपना इलाज करो	रवीन्द्र	८
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
युद्ध और राजनीति	नीरदवरण	११
१८ जनवरी १९५१ की वार्ता	श्रीमां	२०
किसी की जान गयी आपका फसाना हुआ	रवीन्द्र	२७
मां के उत्तर गण के मुखिया को		३१
रामकृष्ण के वचन		३६
सोसायटी समाचार		३७

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

सेवा

सिद्धि प्राप्त करने का निश्चिततम उपाय है परम प्रभु की सेवा में रहना

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

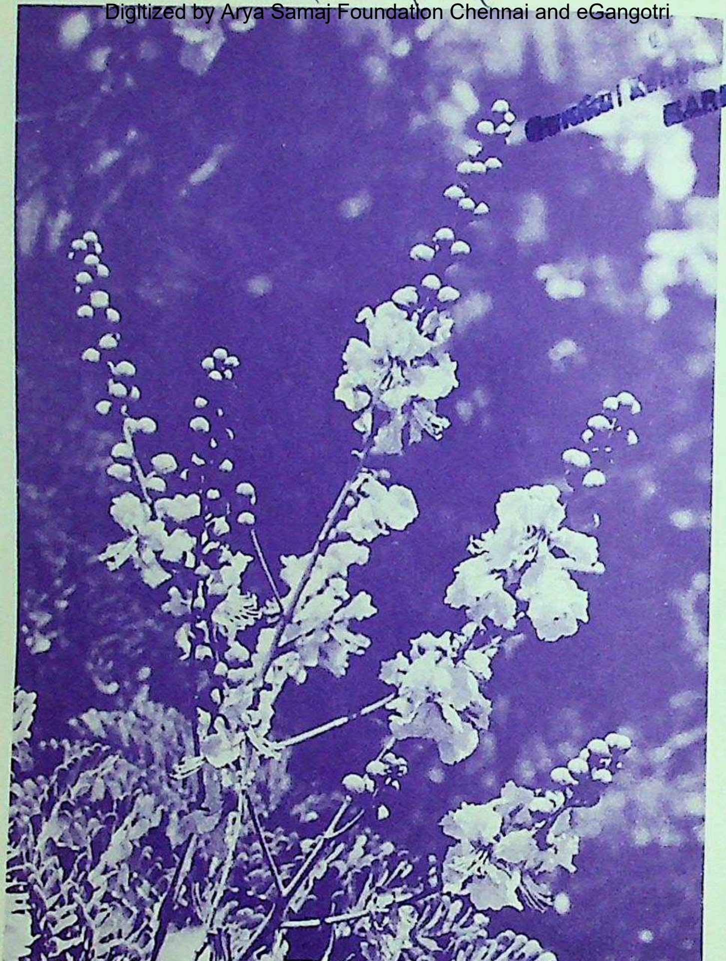

अग्निशिखा

मई २००२

अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा जून २००२ वर्ष ३२, अंक ११, पूर्णांक ३८३

विषय-सूची

संदेश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : दिलासा	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
भारत की एकता	रवीन्द्र	८
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
युद्ध और राजनीति	नीरदवरण	११
शाश्वत के स्वर	छाया श्रीवास्तव	२०
हैदर बी खाला	रवीन्द्र	२४
भौतिक का रूपांतर	श्रीअरविन्द	२९
माताजी के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार		३४
सोसायटी समाचार		३६

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

विनम्रता

अपनी सरलता में प्रशंसनीय

हिन्दी—दूर्वा

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13/6/2002
LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
32
4

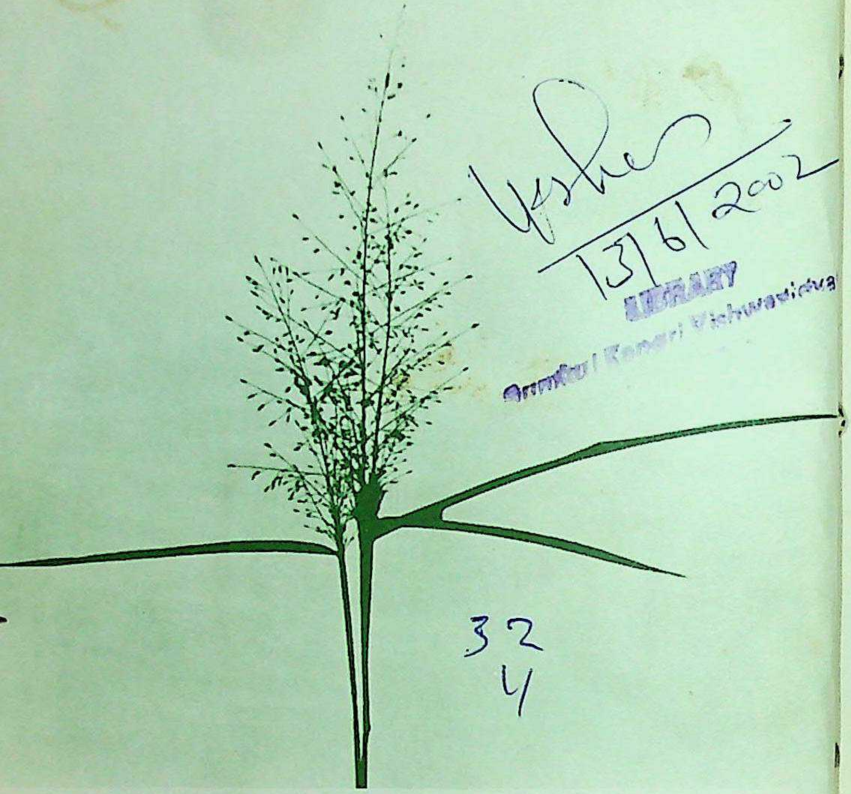

अग्निशिखा

जून २००२ अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अग्निशिखा जुलाई २००२ वर्ष ३२, अंक १२, पूर्णांक ३८४

विषय-सूची

सन्देश	श्रीमां	१
'सम्पादकीय' : अवश्य जगायेंगे	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
सोडरजू मर गये	रवीन्द्र	१०
श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष		
युद्ध और राजनीति	नीरदवरण	१२
दिल की सचाई	रवीन्द्र	१९
श्रीमां के उत्तर		२२
सामूहिक प्रार्थना	'श्रीमातृवाणी' खण्ड ९ से	२९
प्रेम	श्रीअरविन्द	३१
सोसायटी समाचार		३६

मुखपृष्ठ के चित्र का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ

अतिमानसिक अभिव्यक्ति के प्रति प्रकृति का जागरण और प्रथम प्रत्युत्तर

रस लेती हुई वह अभिव्यक्ति अपने-आपको खोलती और समझने का प्रयास करती है।

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

संपादक : अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

32
12

अग्निशिखा

जुलाई २००२

अखिल भारतीय पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

स्वाधीनता प्राप्त कर लेना आसान है पर उसे बनाये रखना कम आसान है। पहली चीज के लिये केवल बहुत बड़े प्रयास की जरूरत होती है जिसमें देश की सभी ऊर्जाएं केंद्रित हों, दूसरी के लिये जरूरत होती है सम्मिलित, संगठित और व्यवस्थित शक्ति की। अगर ये दोनों शर्तें पूरी हो जायें तो और कोई आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि बाकी सब चीजें ब्यौरे की हैं जो अपने-आप आ जायेंगी। पहली शर्त के लिये आवश्यक है मनुष्यों के हृदय को भरनेवाली प्रबल निःस्वार्थ श्रद्धा और अभीप्सा की ... दूसरी के लिये भारत को अपने छितरे हुए बलों को एक तथा अप्रतिरोध्य समग्र में संगठित करने की जरूरत है।

—श्रीअरविन्द

जब तक कोई मुझे अवसर नहीं देता मैं किसी के भी दोषों पर अंगुली नहीं उठाता। साधक को सचेतन बनकर अपने-आपको प्रकाश के सामने रखना चाहिये, अवलोकन करना, परित्याग करना तथा बदलना चाहिये। हमारा बीच में पड़कर टीका-टिप्पणी करना, इस या उस भूल को दिखाना, ठीक तरीका नहीं है। यह तो स्कूल-मास्टर का तरीका है—आध्यात्मिक परिवर्तन में यह उपयोगी नहीं होता।

१० मई १९३६ —श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहां क्यों आती हैं ? मनोरंजन के किसी स्थान पर क्यों नहीं जातीं ?" वे बोलीं, "... हमें जिन्दगी को जरा गहराई से देखने का मौका मिलता है। ... दुनियादारी ही सब कुछ नहीं है। कुछ उससे ऊपर भी है। आप बुरा न मानें, बाहर की अमीरी, ऊपरी टीमटाम, भीतर की गरीबी की निशानी है।" अशिक्षित ग्रामीण लगती महिला की गहरी बातें भारत की संस्कृति का हर भारतीय को उपहार है।

विदेश में बसे एक डॉक्टर दम्पति से उनकी मुलाकात हुई। जैसा उनका व्यक्तित्व था यहां भी उनके आगे पति पत्नी के मन में चलती रस्साकशी प्रकट हो गयी। डॉक्टर गुप्ता कुछ कहें उससे पहले हेमलता बोल उठीं, "देखिये, यहां का अन्न-जल कबतक बदा है। पर वतन की धरती सोते-जागते हमें बुलाती रहती है।" यशपालजी ने देखा, पति-पत्नी की आंखें गीली हो गयी थीं। विदेश में बसे भारतीय को मातृभूमि के लिये इतना तड़पते कम ही सुना है। इनके लिये शायद धन-वैभव से बढ़कर महत्त्वपूर्ण भारत का वातावरण होगा।

यशपालजी एक तहखाने में गये जहां मनुष्यों को दी जानेवाली यातनाओं का प्रदर्शन था। स्वाभाविक था कि वे बाहर निकले तो बड़े विक्षुब्ध थे। उन्होंने घट घट बसते प्रभु से पूछा, "क्या कभी वह युग आयेगा जब सब इंसान इंसान के नाते भाई होंगे, न कोई छोटा होगा, न कोई बड़ा, न अमीर को अपनी अमीरी का अभिमान होगा, न गरीब के दिल में अपनी गरीबी के लिये हीन-भाव, सबके बीच प्रेम का नाता होगा, सब प्रेम की अटूट डोर से बंधे होंगे।" उनकी यह अभीप्सा अवश्य चरितार्थ होगी और आशा है वे अपने नये शरीर में उसे देख पायेंगे।

पत्नी आदर्श देवी के देहांत से भी उनके उत्साह और जीवट में कोई अंतर न आया।

उनका साहित्य सारगर्भित वाक्यों से भरा पड़ा है। "धर्म का अर्थ है प्रेम, एक दूसरे के प्रति आदर।" "जिसमें गति नहीं उसमें मति नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जवानी की लहर में जोश होता है, होश नहीं।" "भाग्य आदमी के पुरुषार्थ से बनता है।" "आदमी में वह ताकत है कि रेगिस्तान में भी फूल खिला सकता है।"

उनके साहित्य की मुख्य कृतियां भी कम नहीं हैं। उन्होंने प्रायः तेईस मुख्य पुस्तकें लिखी हैं। इतना ही नहीं, वे सस्ता साहित्य द्वारा पत्रिका भी प्रकाशित करते थे। उनके साहित्य का सम्मान रूस में भी हुआ। रूसी सरकार से उन्हें दो बार "सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार" मिला और केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों ने भी उन्हें पुरस्कृत किया था।

इन सब पहलुओं के बावजूद सबसे आकर्षक और विशेष पहलू था उनका मानव प्रेम, जीवन के प्रति अदम्य उत्साह और घुमक्कड़ स्वभाव। उनके आदर्शवाद ने कई छोटी-मोटी संस्थाओं की सहायता की थी।

उनके कुछ पक्ष ऐसे भी थे जो जनता से ओझल रहते थे और वे थे उनका गांभीर्य और जिम्मेदारी की भावना। उस पक्ष का पता हमें लगा अतीत में घटे एक प्रसंग से। भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जब पांडिचेरी आश्रम आये तो माताजी से मिले थे। दिल्ली जाकर शायद बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने माताजी को एक पत्र लिखा। अब समस्या यह थी कि डाक के द्वारा भेजना उन्हें उचित न लगा; किसी पत्र-वाहक के द्वारा वे पत्र भेजना चाहते थे। उस संदेश-दूत को बहुत सतर्क होने के साथ-साथ बातें इधर उधर फैलाने की आदत नहीं होनी चाहिये। अब सोचो किसे बुलाया होगा इस काम के लिये ? यशपाल जी को ! उस पत्र में उन्होंने माताजी से भारत की सरकार को सुचारु रूप से चलाने में सहायता मांगी थी। वे सुझाव चाहते थे। माताजी ने यशपालजी से बातचीत की और कहा कि वे अपने चुने हुए व्यक्तियों को दिल्ली भेजेंगी जो सारे विभागों में सहायता देंगे किंतु उनकी एक शर्त थी। वह यह कि उनके द्वारा भेजे गये लोग सरकार से तनख्वाह न लेंगे और न किसी का हुकुम मानेंगे। जब यशपालजी ने ये बातें राजेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद जी से कहीं तो दो-तीन दिन के बाद उन्होंने यशपालजी को बुलाया और कहा, "माताजी की कितनी कृपा है! किंतु हम उनकी शर्त मान न पायेंगे। हमारे अफसर कभी स्वीकार न करेंगे कि उनके ऊपर कोई और व्यक्ति हो जिसकी बात उन्हें माननी पड़े।"

तो यशपालजी अगर सतरंगी थे तो गहरे समुद्र भी थे।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

अगस्त

१. निस्संदेह, भागवत कृपा हमेशा काम करती रहती है, बस, स्थूल जगत् और उसमें निवास करनेवाले लोग ही उसे नहीं जानते!

२. भगवान् चाहते हैं कि तुम सबसे पहले अपने-आपको खोज निकालो; अपनी सच्ची सत्ता के द्वारा अपनी निचली सत्ता पर अधिकार जमाओ और उस पर शासन करो, और तब तुम इस महान् भागवत कर्म (पार्थिव जीवन के पूर्ण रूपांतर) में बिलकुल स्वाभाविक रूप से अपना ठीक स्थान पा लोगे।

३. यदि वास्तव में तुम किसी चीज से आसक्त नहीं हो तो यह एक बहुत बड़ी यौगिक सिद्धि है और उसके लिये शिकायत करना गलत होगा।

४. सबसे पहले भगवान् को प्राप्त करना होगा, चाहे तुम उन्हें अपने अंदर अतर्मुखी और एकाग्र होकर प्राप्त करो, चाहे प्रेम व आत्मदान के द्वारा श्रीअरविन्द और मेरे अंदर प्राप्त करो। एक बार जब तुम भगवान् को पा लोगे तब तुम स्वभावतः ही सब वस्तुओं में और सर्वत्र उन्हें देखोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. अपने अंदर प्रवेश करो, अपने चैत्य पुरुष को प्राप्त करो और उसके साथ-ही-साथ तुम मुझे भी अपने अंदर जीवंत, अपने प्राण के भी प्राण के रूप में, सदा उपस्थित और सर्वदा समीप, एकदम स्पष्ट और मूर्त्त रूप में पा लोगे।

६. मैं हमेशा तुम्हारे हृदय में रहती हूं।

७. चैत्य पुरुष सोया नहीं रहता। वास्तव में उसके साथ का संपर्क अच्छी तरह स्थापित नहीं हुआ है, क्योंकि मन बहुत अधिक शोर मचाता है और प्राण बहुत चंचल है।

८. बंद दरवाजों को खोलने के लिये अपने दोष स्वीकार करने के समान अच्छी और कोई चीज नहीं है। जो चीज मुझे बताने में सबसे अधिक भय लगता है वह मुझे बता दो और तुरंत ही तुम अपने को मेरे अधिक नजदीक अनुभव करोगे।

९. प्रत्येक व्यक्ति से केवल वही चीज मांगी जाती है जो उसके पास है, या जो कुछ वह स्वयं है, उससे अधिक कुछ नहीं, पर उससे कम भी नहीं।

१०. सच्चा दिव्य प्रेम सभी झगड़ों से ऊपर है। यह अपरिवर्तनीय आनंद और शांति में प्राप्त पूर्ण एकत्व का अनुभव है।

११. प्रेम करने का अर्थ अधिकार करना नहीं, बल्कि अपने-आपको दे देना है।

१२. यदि तुम अपना काम एक श्रद्धांजलि के रूप में करो जिसे तुम सच्चाई के साथ भगवान् के चरणों में अर्पित करते हो तो वह काम उतना ही लाभदायी बन जायेगा जितना कि ध्यान।

१३. बिना आत्मसंयम के भौतिक स्तर पर कुछ भी करना असंभव है। यदि तुम्हारा हृदय, नियमित रूप से और निरंतर, धड़कने के कठोर संयम के अधीन होना न चाहे तो तुम पृथ्वी पर जी ही न सकोगे। जिन्होंने महान् सिद्धियां प्राप्त की हैं वे सदा महान् संयमी पुरुष ही थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. चिंतित मत होओ, केवल अपने अंदर और अच्छा करने के संकल्प को सर्वदा बनाये रखो।

१५. हां, तुम्हारा आशा करना ठीक है। यह आशा ही वह चीज है जो सुखद भविष्य का निर्माण करती है।

१६. भय नहीं करना चाहिये, विजय उन्हीं की होती है जो निर्भय होते हैं। मैं तुम्हें पथ दिखाने और तुम्हारी रक्षा करने के लिये सदा तुम्हारे साथ हूं।

१७. मौन रहने में कोई बुराई होने का खतरा नहीं, जब कि बोलते समय दस में से नौ बार मूर्खतापूर्ण बातें करना संभव है।

१८. भीतरी शांति को प्राप्त करना चाहिये और निरंतर बनाये रखना चाहिये। जो शक्ति यह शांति देती है उससे ये सभी (रोगादि) छोटी-छोटी तकलीफें दूर हो जाती हैं।

१९. निश्चल-नीरवता में ही अंतःप्रेरणा का ऊंचे से ऊंचा स्रोत है।

२०. स्वयं अपने हृदय को शुद्ध करने के लिये यह आवश्यक है कि तुम काम करो और यह विचार करने में अपना समय न बिताओ कि दूसरे क्या करते हैं और क्या नहीं करते।

२१. आशा या श्रद्धा को कभी न खोना चाहिये। कोई रोग ऐसा नहीं जो असाध्य हो, भगवान् की शक्ति के लिये हम कोई सीमा नहीं बांध सकते।

२२. निराशावादी होने से इसके सिवा कभी और कोई फल नहीं होता कि मनुष्य ठीक उन्हीं चीजों को अपने ऊपर खींच लाता है जिनसे वह डरता है। इसके विपरीत, यह जरूरी है कि सब तरह के निराशाभरे विचारों को दूर भगाकर केवल उसी विषय में सोचने पर बल दो जिसे तुम पसंद करते हो।

२३. सबसे अच्छा मित्र जो तुम्हें मिल सकता है, क्या वह भगवान् ही नहीं हैं, जिनके सामने तुम सब कुछ कह सकते, सब कुछ प्रकट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हो ? क्योंकि निश्चय ही, सर्व-करुणा, सर्व-शक्ति का स्रोत वे ही हैं, वे प्रत्येक भूल को, यदि उसे दोहरांया न जाये, मिटा सकते और सच्ची चरितार्थता का मार्ग खोल सकते हैं। ये वे ही हैं जो सब कुछ समझ सकते और सब घावों को भर सकते हैं तथा पथ पर सदा सहायता कर सकते हैं, तुम हिम्मत न हार जाओ, लड़खड़ा न पड़ो, गिर न जाओ बल्कि लक्ष्य की ओर सीधे चलते जाओ इसमें तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। वे ही सच्चे मित्र हैं, अच्छे और बुरे दिनों के साथी हैं। वे समझ सकते और घावों को भर सकते हैं और जब तुम्हें उनकी जरूरत होती है, वे सदा पथ-प्रदर्शन करने और सहारा देने और तुमसे सच्चे रूप में प्रेम करने के लिये आ उपस्थित होते हैं।

२४. अतीत को पूरी तरह साफ किया जा सकता और पोंछा जा सकता है, यहांतक कि उसका भविष्य पर कोई प्रभाव न रहे, पर शर्त यही है कि उसे तुम स्थायी वर्तमान न बना लो, यह आवश्यक है कि तुम स्वयं अपने अंदर के गलत स्पंदनों को रोको, उन्हीं स्पन्दनों को अनिश्चित काल तक फिर-फिर पैदा न करते रहो।

२५. सच्चा विश्राम चेतना को विस्तृत करने से, विश्वभावापन्न बनाने से मिलता है। संसार के जितने विशाल बन जाओ और तुम सदा आराम में रहोगे। कर्म की भरपूरता में, रणस्थली के बीचोंबीच, विविध प्रयासों के पूर्ण प्रवेग में तुम अनंतता और शाश्वतता की विश्रांति को अनुभव करोगे।

२६. जो शरीर तुम पर शासन करता है वह शत्रु है, यह एक अव्यवस्था है जिसे तुम स्वीकार नहीं कर सकते। मन की आलोकित संकल्प-शक्ति का ही शरीर पर शासन होना चाहिये, यह नहीं कि शरीर मन पर अपना नियम लागू करे। जब व्यक्ति जानता हो कि अमुक चीज बुरी है तो उसे न करने के लिये उसे समर्थ होना चाहिये और जब वह किसी चीज को चरितार्थ करना चाहे तो कर सके, पग-पग पर अपनी अयोग्यता, दुर्भावना या शरीर के असहयोग के कारण उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुकना न पड़े। और इसके लिये शारीरिक अनुशासन का अभ्यास और अपने घर का मालिक बनना जरूरी है।

२७. दिव्य जीवन किसी ऐसी चीज का परित्याग नहीं करेगा जो दिव्य बनने योग्य हो, हमें सभी चीजों को हाथ में लेना है, समुन्नत करना है और एकदम पूर्ण बनना है।

२८. निश्चित ही, यदि तुम दिव्य चेतना प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हें आध्यात्मिक अभीप्सा का त्याग नहीं करना चाहिये, किंतु यदि तुम पृथ्वी पर एक पूर्ण दिव्य सत्ता बनना चाहते हो तो इसका पूरा ध्यान रखो कि दूसरा सिरा छूट न जाये, और अपने शरीर को भी जितना संभव हो उतना बढ़िया यंत्र बनाओ।

२९. अगर तुम उचित वृत्ति के साथ खेलने की इच्छा रखते हो, किसी भी निम्न वृत्ति के बिना, ईर्ष्या या महत्त्वाकांक्षा के बिना ऐसे भाव के साथ खेलते हो जिसे "खिलाड़ी का सही भाव" कहते हैं, यानी अपना पूरा प्रयास करते हुए परिणाम की चिंता नहीं करते और सफलता न मिलने पर या चीजें अपने पक्ष में न होने पर विचलित हुए बिना अपना पूरा-पूरा प्रयास करते हो तो प्रतियोगिता में भाग लेना बहुत उपयोगी है। इन सब प्रतियोगिताओं से तुम्हें महत्तर आत्म-नियंत्रण और परिणाम के प्रति अनासक्ति के भाव की प्राप्ति हो सकती है जिससे असाधारण चरित्र के गठन में बड़ी सहायता मिलती है।

३०. सब कुछ सदा ही इस पर निर्भर करता है कि काम को किस तरह किया जाता है, इसपर इतना नहीं कि व्यक्ति क्या करता है, बल्कि उस भाव पर जिससे वह उसे करता है।

३१. कोई महत्त्वाकांक्षा न रखो,
सबसे बड़ी बात यह है कि दिखावा न करो,
परंतु प्रति मुहूर्त वह होओ
जो तुम अधिक-से-अधिक हो सकते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(गतांक से आगे)

मुद्रणालय का महत्त्व इसके बाद आता है। आजकल हमारे आश्रम-मुद्रणालय का सारे भारत में प्रमुख स्थान है। इसका कारण यह है कि प्रारंभ से ही माताजी ने अपने सामने पूर्णता का आदर्श रखा था और कार्यकर्ताओं से उसी आदर्श के पालन का आग्रह रखती थीं। आश्रम से बाहर कितने ही मुद्रणालय चलते हैं, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यहां किसी और ही आदर्श पर यह काम होता था। मुद्रणालय के मैनेजर से एक बार माताजी ने कहा था "संसार के किसी भी भाग से मुद्रण में पूर्णता की मांग हो तो यही सुनायी देना चाहिये—"पांडिचेरी आश्रम-प्रेस इस आदर्श को निभा पायेगा।''

जैसे अन्य बड़े-बड़े संस्थानों में होता आया है, वैसे ही इस प्रेस का प्रारंभ भी बड़े मामूली ढंग से हुआ था। मुझे पता नहीं इस प्रस्ताव की चर्चा कैसे शुरू हुई थी कि हमारा एक प्रेस होना चाहिये जिसमें श्रीअरविन्द की पुस्तकें छापी जायें। माताजी ने इस विचार को स्वीकार किया। शुरूआत कैसे की जाये, वही बड़ा प्रश्न था। प्रश्न इतना धन का न था जितना इस क्षेत्र को जाननेवाले अनुभवी लोगों का था। वे बाहर के लोगों को इस काम के लिये नियुक्त नहीं करना चाहती थीं। उनकी इच्छा यही थी कि प्रेस को आश्रमवासी ही चलायें। उस समय हमने हैदराबाद सरकार के साथ सर अकबर हैदरी द्वारा संबंध स्थापित किया था जिनके कारण हमें निजाम सरकार ने गोलकोण्ड के लिये अनुदान दिया था और इसीलिये उस इमारत का नाम गोलकोण्ड[१] रखा गया।

[१] हैदराबाद में एक स्थान है गोलकोण्डा जो निजाम के अधीन था। वह अपनी हीरों की खानों के लिये विख्यात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संबंध ने सरकार के एक अनुभवी अधिकारी को आकर हमारे प्रेस का आरंभ करने का मार्ग खोल दिया। जैसे ही प्रेस का काम शुरू हुआ, माताजी ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उन्होंने युवक, बूढ़े, चाहे दार्शनिक, विद्वान्, प्राध्यापक हों, सबको प्रेस के काम में लगा दिया। स्वाभाविक था कि असंख्य समस्याएं उठीं, झगड़े, असामंजस्य, शिकायतें—प्राकृतिक नहीं बल्कि मनुष्यों के बीच संघर्ष खड़े हुए। माताजी इन सब समस्याओं के लिये तैयार थीं, क्योंकि वे मानव स्वभाव को जानती थीं और यह भी समझती थीं कि कार्य के द्वारा ही उसे बदला जा सकता है, निष्क्रियता के पलायन-द्वार द्वारा नहीं। हम बीच-बीच में श्रीअरविन्द के साथ माताजी को इन कठिनाइयों के विषय में चर्चा करते सुना करते थे। उनके मौन साक्षी पुरुष-सा सहारा और माताजी का नियमित प्रेस में निरीक्षण के लिये जाना—इनके कारण प्रारंभिक कठिनाइयां धीरे-धीरे कम होती गयीं और थोड़ा सामंजस्य स्थापित हो गया। एक-एक कर श्रीअरविन्द की पुस्तकें प्रकाशित होती गयीं। इस तरह हमारे अनगढ़ किंतु उत्साही युवकों के दल और गिने-चुने प्रशिक्षित तनख्वाह-प्राप्त कार्यकर्ताओं को लेकर यह संस्था खड़ी की गयी थी। यह माताजी के कार्य करने की पद्धति का एक उदाहरण था। श्रीअरविन्द की यह उक्ति कि चीजों को जीवन में से स्वयं सहज रूप से ऊपर उठना चाहिये न कि निश्चित मानसिक अभिरचना द्वारा—यह भौतिक वस्तुओं को चरितार्थ करने के लिये आदर्श वाक्य है, आदर्श प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया दिव्य शक्ति के द्वारा हमारे ऊपर सीधी होती थी। सचमुच हमारे सारे संस्थान—आश्रम तक—थोड़ा-थोड़ा जुड़कर इतने विशाल इसी सिद्धांत के आधार पर हुए हैं—"सब कुछ हो सकता है अगर भागवत स्पर्श हो"—और अब ओरोवील उसका नवीनतम उदाहरण है। फिर भी हमें याद रखना चाहिये कि किसी भी तरह का कार्य हम क्यों न करें, उसका महत्त्व गौण है, किंतु अगर उसी कार्य को "साधना के रूप में हम भगवान् को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्पित कर दें या इस चेतना या श्रद्धा के साथ करें कि दिव्य शक्ति यह कार्य कर रही है," तो उस कार्य का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है।

अब हम एकदम से भिन्न कार्यक्षेत्र को देखते चलें जिसका योग में स्थान है या नहीं उस पर जोरों से चर्चा हो सकती है। खासकर तब जब माताजी टेनिस को साधना का माध्यम बनाकर स्वयं टेनिस खेला करती थीं। मैं इस विषय पर अधिक चर्चा करना नहीं चाहता क्योंकि उपरोक्त वाक्य काफी स्पष्ट है। टेनिस खेलना शुरू करने से पहले माताजी ने हमारे टेबल-टेनिस खिलाड़ियों के साथ टेबल-टेनिस खेलना शुरू किया। इसका आरंभ इस तरह हुआ—एक लड़के ने अपने घर में टेबल-टेनिस रखने की इजाजत मांगी तो उन्होंने उत्तर दिया "नानताई[1] में क्यों नहीं रख सकते ? ऐसी व्यवस्था हो जाये तो मैं भी जाकर खेल सकूंगी।" इस अप्रत्याशित सुझाव से लड़का आश्चर्य और खुशी से भर उठा। माताजी के लिये यह कसरत अच्छी और हल्की रही होगी और साथ ही बढ़ते हुए युवा खिलाड़ियों के दल के साथ उनके संपर्क का माध्यम भी यह खेल बन गया होगा। शायद उस खेल और संपर्क के द्वारा वे उन पर अपना यौगिक कार्य कर रही होंगी! एक-दो वर्ष बाद माताजी ने टेनिस-कोर्ट बनाने की योजना सुझायी। शायद उन्हें लगा हो कि अब खुली हवा में ज्यादा फुर्तीली कसरत की आवश्यकता है। उन्होंने कई बार इस योजना के बारे में श्रीअरविन्द से बातचीत भी की। एक दिन हमने सुना कि समुद्र-तट पर जो उत्तर-पूर्व में बंजर भूमि है उसे आश्रम ने लंबे अरसे के लिये सरकार से पट्टे पर ले लिया है। उसके एक हिस्से में टेनिस-कोर्ट बनेगा और बाकी जमीन में क्रीड़ांगण बनेगा। आज उस क्रीड़ांगण को देखकर कोई कल्पना तक न कर पायेगा कि वह स्थान कितना घिनौना था! तब वह पांडिचेरी का गंदे-से-गंदा स्थान था। कांटों और जंगली पौधों से भरा वह स्थान लोगों के लिये पाखाना-

[1] आश्रम के एक मकान का नाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बन गया था और सूअरों के लिये चरागाह। वहां की दुर्गंध और घृणास्पद रूप उस दृश्य को नारकीय बनाये हुए था और औपनिवेशिक सरकार के माथे पर काला दाग-सा लग रहा था। माताजी ने इस ऊबड़-खाबड़, बंजर जमीन को स्वर्ग-सा क्रीड़ांगण बना दिया। शायद यही भौतिक तत्त्व का अतिमानसिक रूपांतर था। सामने समुद्र-तट सौंदर्य और आनंद का दृश्य बन गया था। और किसी बात के लिये नहीं तो इस भूमि-रूपांतर के लिये पांडिचेरी सरकार को माताजी के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिये। लेकिन अतीत को कौन याद रखता है ? कृतज्ञता मनुष्य में बड़ा विरल गुण है। मैं औरों से भी ज्यादा प्रसन्न था क्योंकि मुझे टेनिस में बहुत रुचि थी और मैं यह भी सोचा करता था कि इस खेल में भाग लेने से योग करना आसान होगा ! किंतु हाय मेरा दुर्भाग्य ! उस खेल ने मेरा संतुलन ही गड़बड़ा दिया !

ये सब बातें तो गौण हैं। मेरा मुख्य मंतव्य था माताजी का काम करने का तरीका दिखाना। जैसे ही वह बंजर जमीन आश्रम को मिल गयी, माताजी ने एकाग्र मन से अपना काम शुरू कर दिया और कैसा भीषण कार्य था वह ! आश्रम के जैसी गैर सरकारी संस्था के लिये समुद्र की लहरों को रोकने के लिये एक परकोटा बांधना कितना बड़ा साहस का कार्य था, यह वही समझ सकता है जिसकी कोई आमदनी न हो क्योंकि आश्रम की कोई आमदनी न थी। मैं केवल टेनिस-कोर्ट की बात करूंगा। माताजी ने पैसों की चिंता नहीं की, उन्होंने मजदूरों और धन को मुक्त हाथों से लगाया। कारण यह था कि टेनिस-कोर्ट को कम-से-कम समय में बनाने का उन्होंने निश्चय कर लिया था। हमने बहुत बार देखा था कि माताजी को जब कोई काम करना जरूरी लगता तो वे उसमें तेजी से लग जातीं और उन्हें पूरा विश्वास रहता कि आवश्यक साधन अपने-आप जुट जायेंगे। टेनिस-कोर्ट के कार्य को चरितार्थ करने के लिये विशेषज्ञ की आवश्यकता थी। माताजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द से कहा, "मैं ऐसे व्यक्ति को जानती हूं जो यह काम कर पायेगा।" वे थे एक साधक, नाम था मनोरंजन गांगुली। मैंने उनको काम करते हुए देखा है और मैं माताजी के प्रति उनकी अद्भुत भक्ति देखकर चकित रह गया। माताजी को उन पर जो भरोसा था उसे सत्य सिद्ध करने के लिये वे दृढ़ निश्चयी थे। सारे कार्य की देख-भाल वे अखण्ड प्रेम, कर्तव्यपरायणता और शांत दिमाग से करते। उन्होंने टेनिस ग्राउण्ड को अपना घर बना लिया था, वहीं एक स्टूल पर बैठकर कई निद्राहीन रातें उन्होंने बितायीं। मैंने उनसे पूछा कि वे इतनी जल्दबाजी क्यों कर रहे हैं तो बोले, "माताजी चाहती हैं कि काम निश्चित समय पर पूरा हो जाये।" मैंने शंका प्रकट की "बहुत कम दिन बचे हैं, क्या यह संभव होगा?" वे बोले, "मुझे पूरा करना ही होगा।" और सचमुच उन्होंने कार्य निश्चित समय पर पूरा कर दिखाया! एक अनोखा साहस था वह। एक बार फिर माताजी का सही मनुष्य का चुनाव था।

जब टेनिस-कोर्ट तैयार हो गया तो हमारे कार्यक्रम में भी बदलाव आ गया। श्रीअरविन्द का दोपहर का भोजन जल्दी परोसा जाने लगा ताकि माताजी पांच बजे तक टेनिस ग्राउण्ड जा पायें। जाने से पहले वे टेनिस के लिये विशेष रूप से बनायी पोशाक पहन कर श्रीअरविन्द के कमरे में आती थीं। वे प्रायः एक घण्टे के लिये कई युवकों के साथ टेनिस खेलतीं और प्रतियोगिताओं में भी भाग लेती थीं। वहां से सीधी क्रीड़ांगण में जातीं और वहां अनेक कार्यक्रम समाप्त करने के बाद रात को आठ या नौ बजे आश्रम लौटतीं।

अपनी उम्र के लिये माताजी बहुत अच्छा खेलती थीं। माताजी ने कहा था कि छोटी उम्र में वे टेनिस की चैम्पियन थीं, इतनी सटीकता से खेलतीं कि हम ताज्जुब में पड़ जाते—विशेषकर जब वे फोरहैण्ड मारा करतीं। हां, वे बहुत ज्यादा दौड़-भाग न कर पाती थीं किंतु उनकी चुस्ती विलक्षण थी। उनकी दृष्टि में आध्यात्मिकता के लिये और शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये टेनिस सबसे अच्छा खेल है। उन्होंने उसका उपयोग केवल अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिये ही नहीं किया बल्कि जैसे हर कार्य में करती आयी थीं, अन्य खिलाड़ियों पर उसके माध्यम से वे आध्यात्मिक कार्य भी करती रहीं। उनको इस आंतरिक कार्य में उतना ही रस था जितना शारीरिक खेल में। भगवान् के साथ खेलने का अर्थ था अभीप्सा करना, उद्घाटित होना, सच्ची अभिवृत्ति रखना और खेल के द्वारा उनकी शक्ति को ग्रहण करना, जैसे कि भौतिक और मानसिक क्रियाओं द्वारा हम लोग करते थे। खेल में उनके कार्य की पद्धति ज्यादा सीधी और आनंददायक थी। संक्षेप में, टेनिस को भी साधना का माध्यम बनाया गया था। जब किसी साधक को कोई आंतरिक कठिनाई होती तो माताजी उसे अपने साथ टेनिस खेलने के लिये बुलातीं और उसका प्रभाव आश्चर्यजनक होता। कभी-कभी जिस व्यक्ति के साथ नियमित खेलतीं उसे कई दिनों तक न बुलातीं या एकदम बुलाना बंद कर देतीं। लोग कहना चाहेंगे कि यह अजीब है किंतु नहीं, ऐसा न था, खिलाड़ी स्वयं, जो ऐसी परिस्थिति में होते थे, अपने न बुलाने का आंतरिक कारण खूब समझते थे। किसी ने एक बार एकदम भिन्न प्रसंग में पूछा, जहां व्यक्ति पर बहुत ज्यादा विपत्तियां आयी थीं कि क्या माताजी उनको कसौटी पर कस रही थीं, तो उन्होंने जवाब दिया, "कभी नहीं। लोगों को वैसे ही बहुत मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं, हम उनके लिये और मुसीबतें क्यों बढ़ायें किंतु हां, आंतरिक परीक्षाएं होती रहती हैं।" उनकी कार्य-शैली बहुत अधिक सूक्ष्म, तेज और रहस्यमय होती है, जो हमारा छोटा-सा मानव मन समझ नहीं पाता, इसीलिये मैं उसको समझाने का प्रयास भी न करूंगा। हमारे जन्म-दिवस पर वे हमें अपने साथ टेनिस खेलने का विशेष निमंत्रण देतीं। उस दिन के खेल से हमें जो हर्ष मिलता था वह श्रीअरविन्द के साथ हमारी बातचीत के हर्ष के जैसा होता, अवश्य वह प्रकार में भिन्न होता लेकिन कोटि में समान।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना

नमन तुम्हें करता मन!
हे जग के जीवन के जीवन,
प्रीति मौन प्रति उर स्पंदन में
स्मरण तुम्हें करता मन!

अश्रु पूत अब मेरा आनन,
तुहिन धौत वारिज के लोचन,
यह मानस की वेला पावन
करता तुम्हें समर्पण!

तुम अंतर के पथ से आओ,
चिर श्रद्धा के रथ से आओ,
जीवन अरुणोदय संग लाओ,
युग प्रभात का नव क्षण!

बहे रुधिर में स्वर्गिक पावक,
स्वप्न पंख लोचन हों अपलक,
रंग दे नव शोभा का जावक
जीवन के पग नूतन!

आज व्यक्ति के उतरो भीतर,
निखिल विश्व में विचरो बाहर,
कर्म वचन मन जन के उठकर
बनें युक्त आराधन!

असफल हो जब श्रांत मनोबल,
आवेगों से अंतर विह्वल,
तुम करुणा-कर से छू उज्ज्वल
जड़ता कर दो चेतन!

—सुमित्रानन्दन पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशुभ व्यक्तित्व

अशुभ व्यक्तित्व की जो बात तुमने कही वह मेरे लिये बहुत रुचिकर है क्योंकि यह मेरे सतत अनुभव को उत्तर देती है कि अपने काम में पूरी तरह से लगे मनुष्य के साथ हमेशा या प्रायः हमेशा—शायद इन चीजों के बारे में हमें बहुत कठोर और सब पर लागू हो सकनेवाले नियम नहीं बनाने चाहिये—एक सत्ता चिपकी रहती है, एक ऐसी चीज जो कभी-कभी व्यक्ति का हिस्सा प्रतीत होती है, और व्यक्ति को जो कार्य करना है उसमें वह जिन केंद्रीय वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है, उससे यह एकदम से उल्टी होती है। या, अगर आरंभ में वह न हो, व्यक्ति के व्यक्तित्व से बंधी न हो फिर भी जैसे ही वह अपने कार्य को चरितार्थ करने के लिये क्रिया करना शुरू करता है, इस तरह की कोई शक्ति उसके वातावरण में घुस जाती है। ऐसा लगता है कि उसका सारा उद्देश्य केवल विरोध करना, अड़ंगे लगाना और गलत परिस्थितियां पैदा करना है; एक शब्द में कहें तो व्यक्ति ने जिस काम को हाथ में लिया है उसकी समस्त कठिनाई को उसके सामने रखना है। यह चीज उन बहुत-सी बातों को स्पष्ट कर देगी जो सतह पर बहुत असंगत सी दीखती हैं।

*

आंतरिक को बाह्य का रास्ता दिखाना चाहिये, नहीं तो अपनी आंतरिक शक्ति या ज्ञान के परे हम जिस किसी कार्य को करने का प्रयास करें वह असफल या नष्ट हो सकता है।

*

दूसरों की 'सहायता' करने की कामना में न फंसो—आंतरिक स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा सही चीज करो और सही बात कहो और दूसरों के पास भगवान् से सहायता आने दो। सचमुच भागवत कृपा के सिवाय और कोई सहायता नहीं कर सकता।

*

पथभ्रष्ट मानवजाति अपने परिवेश को हमेशा सरकार और समाज के संगठन द्वारा पूर्ण बनाने के सपने लेती है; लेकिन अंदर की अंतरात्मा को पूर्ण बनाकर ही बाहरी परिवेश को पूर्ण बनाया जा सकता है। तुम जो अंदर हो उसका ही बाहर उपभोग करोगे। कोई भी संगठन तुम्हें तुम्हारी सत्ता के विधान से बचा नहीं सकता।

*

जो गरीब हैं, अशिष्ट हैं वे जनसाधारण नहीं हैं, जनसाधारण तो वे सब हैं जो तुच्छता और सामान्य मानवता से संतुष्ट हैं।

*

दुःख-दर्द पिछली भूलों के स्वाभाविक परिणाम हैं, कोई दण्ड नहीं हैं, जिस तरह आग से खेलने का स्वाभाविक परिणाम है छाला। यह अनुभूति का एक हिस्सा है जिसे अंतरात्मा अपने यंत्र द्वारा तबतक सीखती और विकसित होती है जबतक वह भगवान् की ओर मुड़ने के लिये तैयार नहीं हो जाती।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे राजनीति कहा जाता है वह बहुत राजसिक चीज है, जो सब तरह के अहंकारपूर्ण उद्देश्यों से दूषित और अस्त-व्यस्त है। हमारा रास्ता है पार्थिव चेतना को बदलने के लिये उसपर आत्मा का दबाव डालना।

*

शरीर के रूपांतर की बात सोचना एकदम से व्यर्थ है जबतक वे दूसरी चीजें चरितार्थ न कर ली गयी हों जिन्हें करना इससे कहीं अधिक आसान है,—हालांकि निस्संदेह, कोई भी आसान नहीं है। पहले अंदर की वस्तु को बदलना होगा ताकि सबसे अधिक बाहरी वस्तु उसका अनुसरण कर सके। सबसे पहले शरीर को शक्ति के प्रति खोलना चाहिये ताकि बीमारी या थकान के विरुद्ध वह शक्ति पा सके—जब ये आयें तो शरीर में इतनी शक्ति होनी चाहिये कि प्रतिक्रिया करके इन्हें निकाल बाहर करे और शरीर में शक्ति का सतत प्रवाह चलता रहे। अगर इतना कर लिया जाये तो हम बाकी शारीरिक परिवर्तन के लिये उचित समय की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

*

समस्याओं की समस्या खुद बनायी हुई है, यह है अज्ञान की गांठ : जब कोई आंतरिक अंतर्दर्शन इस गांठ को ढीला कर देता है, तो सबसे बुरी कठिनाई खत्म हो जाती है।

*

प्रकाश हमेशा बढ़ता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही बात छाया की, वह तो मात्र छाया है, बढ़ते प्रकाश में विलीन हो जायेगी।

*

प्रश्न—अहंकार के इन संघर्षों से मैं घृणा करता हूं।

उत्तर—यह स्वाभाविक है—मनुष्य के प्राण का जगत् घिनौना है, उसे बदलने की बहुत अधिक जरूरत है।

*

अपने काम के बारे में केवल तभी सोचो जब उसे कर रहे हो, उसके पहले या बाद में नहीं।

जो काम खत्म हो चुका है उसपर अपने मन को जाने नहीं दो। वह भूतकाल का है और उसे फिर से लेना शक्ति का नाश करना है।

जिस काम को करना है उसके पूर्वानुमान से अपने मन को थकाओ नहीं। जो शक्ति तुम्हारे अंदर काम कर रही है, वह अपने समय पर उसे जान लेगी।

मन की ये दोनों आदतें पुरानी गतिविधि की हैं जिनको दूर करने के लिये रूपांतर करनेवाली शक्ति उनपर दबाव डाल रही है और भौतिक मन उन्हें बनाये रखने के लिये दुराग्रही है—यही तुम्हारे तनाव और थकान का कारण है। अगर तुम यह याद रख सको कि अपने मन को तभी काम करने दो जब उसकी क्रिया की आवश्यकता हो तो तनाव कम होते-होते गायब हो जायेगा। इससे पहले कि अतिमानसिक क्रिया-कलाप जड़-भौतिक मन पर अधिकार कर ले और उसमें अपने प्रकाश की सहज क्रिया को उंड़ेल ले यही मध्यवर्ती गतिविधि है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त जीवन वैश्व शक्तियों का खेल है। व्यक्ति इन वैश्व शक्तियों को वैयक्तिक रूप दे देता है। लेकिन वह इसका चुनाव कर सकता है कि अमुक शक्ति की क्रिया का वह प्रत्युत्तर देगा या नहीं। बात यही है कि अधिकतर लोग सचमुच चुनाव नहीं करते, वे शक्तियों की लीला को भोगते हैं। तुम्हारी बीमारी, अवसाद इत्यादि ऐसी शक्तियों का बार-बार दोहराया जानेवाला खेल है। केवल तभी जब तुम अपने-आपको इनसे मुक्त कर सको तुम सच्चे व्यक्ति बन सकते और सच्चा जीवन जी सकते हो—लेकिन तुम केवल भगवान् में जीने से ही मुक्त हो सकते हो।

अपनी चेतना को भगवान् के प्रति खोलना, वर्तमान चेतना का चैत्य और आध्यात्मिक चेतना में बदलना साधना है। इस योग में इसके साथ-साथ इसका यह अर्थ भी है कि अपनी समस्त चेतना और उसकी गतिविधियों को भगवान् के अर्पण करना ताकि वे उनके अधिकार में हों और रूपांतर के लिये भगवान् उनका उपयोग करें।

—श्रीअरविन्द

नीम की यात्रा

यही कोई तीस-पैंतीस वर्ष पहले की बात है। आश्रम में बच्चों को नया-नया प्रवेश मिला था। अब उनके लिये एक छोटा-सा विद्यालय शुरू हो चुका था और एक छात्रावास की आवश्यकता सिर उठा रही थी। हर विभाग अपनी ही समस्याएं लेकर आया करता है। बच्चों के आते ही छात्रावास की भी जरूरत हुई और क्रीड़ांगण की भी।

जहां सच्ची आवश्यकता होती है वहां उसे पूरा करने का साधन भी जुट ही जाते हैं। आश्रम के मुख्य भवन से कुछ ही दूर, उस जमाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब से एक बहुत बड़ा क्रीड़ांगण बना और उसके साथ ही बन गया एक छात्रावास। छोटे-छोटे बच्चों की किलकारियों से, उनके हास्य से और उससे बढ़कर उनके बतियाने से सारा वातावरण गूंज उठा। लेकिन अभी कुछ कमी थी। लोहे और सिमेंट का मकान किसी और चीज की मांग कर रहा था।

एक दिन एक छोटी-सी गाड़ी में लदकर कुछ गमले आ गये और हर छात्र को उसकी पसंद के अनुसार एक-एक पौधे के साथ एक-एक गमला सौंप दिया गया। छोटे-से आंगन में रौनक हो गयी। लेकिन फिर भी किसी का अभाव खटकता रहा। किसी चीज की जरूरत थी, यह सब अनुभव करते थे परंतु किसकी यह कोई न कह सकता था।

*

एक छोटा-सा पौधा उस छोटे-से आंगन में लाकर रख दिया गया। बेचारा पौधा रुंआसा-सा होकर इधर-उधर देख रहा था। इधर दीवारें, उधर दीवारें, चारों ओर से हवा बंद। न यहां उसके भाई-भतीजे थे न मित्र मंडली थी। थोड़ी दूर पर छोटे-छोटे गमलों में थोड़ी-सी हरियाली दिखायी दे रही थी लेकिन उनके साथ इसका क्या मेल। हाय, किस्मत ने कहां ला पटका! कैसा होगा यहां का जीवन ?

अभी वह इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि न जाने कहां से छोटे-छोटे मानव बच्चे आ टपके। हंसते-खेलते, शोर मचाते। वह मनुष्य के नाम से ही घबराता था। उसने अपने देश में कई बार मनुष्यों को देखा था। हमेशा आरी, कुल्हाड़ी आदि साथ लिये रहते हैं और पेड़ों के जानी दुश्मन होते हैं। हे भगवान्! अब क्या होगा ?

नहीं, इन बच्चों ने तो उसे देखते ही नाचना शुरू कर दिया, उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे। कोई तने को छूता, कोई पत्तों को। सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह रहे थे : "आहा, कैसा अच्छा हुआ, यह नीम हमारे यहां आ गया! गमलों के पौधे भी अच्छे हैं लेकिन उनमें से हर एक एक-एक का अपना है। यह नीम हम सबका होगा। हम सब इसे पानी पिलायेंगे, इसकी छाया में नाच-गान करेंगे और बड़ा होगा तो इसपर चढ़ेंगे और इसकी निबोलियां खायेंगे।"

पौधा सब कुछ सुनता रहा। यह तो और तरह के मनुष्य हैं। ये उस जल्लाद जाति के नहीं हैं। जैसे पेड़ों में आम, कीकर, बबूल, तरह-तरह की जातियां होती हैं वैसे ही शायद आदमियों में भी तरह-तरह के लोग होते होंगे।

बच्चे रोज उसके पास आते, उसे पानी पिलाते, कोई ऊंचाई नापता, कोई तने को देखता। सबके मुंह से एक ही बात सुनायी देती थी : "देखें, यह कब बड़ा होता है।"

एक दिन पेड़ ने कुछ और ही दृश्य देखा। सहसा चारों ओर की चहल-पहल चौगुनी हो गयी। खिड़कियां-दरवाजे रंगे गये, दीवारें पोती गयीं और उसे भी रंगीन मालाएं पहनायी गयीं। बच्चों के उत्साह की सीमा न थी। उसने सुना, आज कोई देवी आनेवाली हैं। जंगल में रहते हुए उसने वन देवी का नाम सुना था पर उन्हें कभी देखा न था। शायद आज उसे भी उन्हें देखने का मौका मिल जाये।

नीम अपने-आप तो कहीं हिल-डुल न सकता था। उसने अपने मित्र पवन से कहा : "तेरी सब जगह पहुंच है, जाकर जरा इस देवी के बारे में पता तो कर आ।"

पवन को जाते क्या देर लगती! सारे मकान में इधर-उधर घूम आया, लोगों की बातचीत सुनी और लौट आया नीम के पास। इधर नीम उत्सुकता के मारे फटा जा रहा था, उधर पवन को समाचार पचाने में कठिनाई हो रही थी। उसने पास आने की भी प्रतीक्षा न की। दूर से ही बोल पड़ा : "अरे, भाग्यशाली है तू! सचमुच की देवी आनेवाली हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मकान देखने, शायद तुझे भी उनका स्पर्श मिल जाये। तू धन्य हो उठेगा।''

और अगले दिन नीम ने देखा, सब बच्चे अपना बढ़िया-से-बढ़िया रूप बनाये खड़े थे। देवी आनंद बरसाती हुई, इधर-उधर स्मित बिखेरती हुई, हर बच्चे को कुछ-न-कुछ देती हुई उसके पास आ पहुंची। नीम रोमांचित हो उठा। ऐसा अनुभव तो उसे कभी न हुआ था। वह देवी के चरण चूमने के लिये व्याकुल हो रहा था पर जानता था कि इसे दुर्घटना माना जायेगा। वह शांत स्तब्ध होकर खड़ा रहा।

देवी ने आकर उसे छुआ। थोड़ी देर चुप रहीं, फिर बोलीं : "हां, यह पेड़ तुम्हारे लिये बहुत शुभ है। यह अपने साथ एक आध्यात्मिक वातावरण[१] लिये रहता है। इसकी अच्छी तरह देखभाल करना।''

पेड़ निहाल हो गया। उसका दिमाग गर्व से फूल उठा।

दिन बीते, पेड़ दिन-पर-दिन बड़ा होता जाता था। बच्चों का प्यार और देवी की करुणा पाकर वह दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता था। धूप उसके साथ खेला करती थी, चांदनी उसके कानों में फुसफुसाया करती थी। पेड़ ने पहले लकड़हारे ही देखे थे। उसका ख्याल था कि आदमी बस पेड़ों को तहस-नहस करना ही जानता है, यही उसका धर्म है, पर इन लोगों का व्यवहार तो एकदम भिन्न था।

वर्ष बीतते गये। पेड़ बढ़ता गया। सहसा एक दिन देखा सब बच्चे मकान छोड़कर चले गये हैं और पवन सुनसान मकान में सांय-सांय करके बह रहा है। इससे पहले कि वह रहस्य का पता लगाये उसने देखा लकड़हारों की जाति के लोग बड़े-बड़े सब्बल, फावड़े, टोकरियां लेकर आ खड़े हुए। उसका माथा ठनका। वे बड़ी क्रूरता के साथ इसकी ओर देख रहे थे और कह रहे थे, "अब इसके लिये यहां कोई स्थान नहीं है।''

[१] श्रीमां ने नीम को 'आध्यात्मिक वातावरण' नाम दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़ सिहर उठा। "कैसे कह सकते हैं वह लोग इस तरह की बातें? कहां गये मेरे सारे मित्र? उन्होंने मुझे क्यों भुला दिया? हे देवी! क्या तुम्हारी करुणा भी मुझे भूल गयी है? मैं अभी जवान हो रहा हूं, अभी मुझे फूलते दिन ही कितने हुए हैं? नहीं; मैं नहीं मरना चाहता। अभी मुझे बहुत कुछ देखना है, बहुत कुछ करना है।"

नीम की पुकार देवी के पास पहुंचे बिना न रही। पेड़ के पुराने मित्रों में खुसुर-पुसुर शुरू हुई। पेड़ की हत्या के नाम से ही उनकी आंखें डबडबा आती थीं। उनमें से एक लड़की ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो पेड़ को मरने से बचायेगी। बस फिर क्या था, उसने दुनिया सिर पर उठा ली। उसने चारों ओर के लोगों में पेड़ के लिये एक अपनापन लगा दिया! नीम पर सद्भावनाओं की वर्षा होने लगी। पग-पग पर नयी कठिनाइयां दिखायी देती थीं। लेकिन वह इस्पात की बनी हुई थी। उसने हार मानना न सीखा था और न मानी।

निश्चय हो गया कि पेड़ को यहां से उठाकर कहीं और ले जाया जायेगा। लेकिन कहां? इतने बड़े मेहमान का स्वागत करने के लिये मेजबान भी दमखमवाला चाहिये। कइयों ने हामी भरी लेकिन हर एक में कुछ-न-कुछ कमी थी। आखिर राम-राम करके एक मेजबान ठीक हुआ। इसके पास मेहमान की देख-रेख के लिये साधन भी थे और दिल भी था।

अब सवाल था: इतना विशालकाय युवा पादप पैदल तो चलने से रहा। नीचे, ऊपर, सब ओर इतने मुसाहिब थे कि सबको ले जाना असंभव था। सलाह-मशविरे हुए और तय यह हुआ कि शाखाओं को पीछे छोड़ दिया जाये, जड़ों में जो मुख्य हैं बस उन्हें ही इसके साथ जाने की इजाजत हो। इतने बड़े राजघराने को छोटा बनाना कोई हंसी-खेल नहीं है। कितनों के दिल दुखाने पड़ते हैं, कितनों पर प्रहार करने पड़ते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खैर, जगन्नाथ की यात्रा के लिये तैयारियां होने लगीं। इस ओर शाखाएं काटी गयीं, आवश्यक जड़ों को छोड़ बाकी सबको साफ किया गया। जहां-जहां काटा था वहां-वहां मरहम पट्टी की गयी। यह तो नीम की प्लास्टिक सर्जरी हो रही थी। उधर मेजबान के यहां भी जनवासे की-सी तैयारी हो रही थी। तैयारी में पूरे दस दिन लगे। कई मित्रों ने सारी-सारी रातें आंखों-ही-आंखों में काट दीं।

अब यात्रा का दिन आया। हाथी दुबला हो तो भी भैंसे से बड़ा ही रहता है। शाखाएं कट गयीं, जड़ें कम कर दी गयीं, पेड़ अपने-आपको बहुत हल्का मान रहा था, फिर भी भार था साढ़े तीन टन। नीम को उठाकर रथ में बिठाना भी एक काम था, उलार का डर था।

खैर, किसी तरह राम-राम करके रथ यात्रा शुरू हुई लेकिन यह कठिनाइयों का अंत न था। रास्ते में कई जगह पेड़ थे, उनसे टक्कर न होने पाये, बिजली के तार थे, वे कहीं उलझ न पड़ें। उनका एक प्यार-भरा स्पर्श भी यमराज का स्पर्श हो सकता है।

जाको राखै साइयां, मेट सके कब कोय ? सब बाधाएं पार करता हुआ रथ अपने लक्ष्य तक जा पहुंचा। अब नीमराज को उठाकर उनके निश्चित स्थान पर आसीन करना था। काश, आज रामायण के बंदर यहां होते जो बड़े-से-बड़े वृक्षों और चट्टानों को बात-ही-बात में उठा लेते थे। आज का मनुष्य विज्ञान में बहुत आगे बढ़ चुका है। नीम की सवारी को रथों से उठाकर पीठिका पर रखने के लिये क्रेन तैयार खड़ा था।

वही लड़की अब यहां घरातियों की व्यवस्था करने में लगी थी। आधा विद्यालय उमड़ पड़ा था। छोटे-छोटे बच्चे, लड़के-लड़कियां भीड़ लगाये हुए थे। उन सबको ठीक रखना आसान काम न था। जरा-सी लापरवाही बड़ी दुर्घटना बन सकती थी। पेड़ प्रसन्न था। मनुष्य के नये रूप का परिचय मिल रहा था उसे। मनुष्य केवल क्रूर और आततायी ही नहीं होता, दयावान् और प्रेमी भी हो सकता है। चारों ओर शोर मच रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। एक उत्तेजना-सी फैली हुई थी।

उस शोर-शराबे में भी पेड़ को कई हृदयों से उठते हुए नीरव शब्द सुनायी दे रहे थे :"आओ, आओ, मित्र, तुम्हारा स्वागत है। तुम मनुष्य के लिये स्वास्थ्यदाता हो, भगवान् तुम्हें स्वस्थ बनायें। नया घर बड़े प्रेम के साथ तुम्हारा स्वागत करता है।"

नीम को उसके नये आवास में प्रतिष्ठित कर दिया गया। कहीं-कहीं उसकी जड़ें लाल-लाल-सी दीख रही थीं मानों सर्जरी करनेवालों की लापरवाही से कुछ रक्त चू गया है और वहां पट्टी बंधने से रह गयी है। नीम के सारे शरीर में से संतोष की आभा छटकती दिखायी दे रही थी। व्यवस्था की गयी कि उसके घावों पर धूप न पड़ने पाये। उसकी जड़ों पर शिवलिंग की तरह सारे समय टप-टप पानी टपकाने की व्यवस्था की गयी ताकी कहीं खुरेट न बन जाये, कहीं पपड़ी न जम जाये।

नीम को जरा इधर-उधर देखने की फुरसत मिली। उसने देखा पास ही, उसी आंगन में उसके तीन और साथी नीम दम साधे खड़े उसकी ओर ताक रहे हैं, एक ओर खड़ा मौलसिरी उसी पर नजर गड़ाये है। रसाल और श्रीफल तो उसके स्वागत के लिये झुक आये हैं और ये रहे वे बालक जो तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत कर रहे थे। वह प्रेम में नहा रहा था। मनुष्यों ने उस पर प्रेम की वर्षा की थी, उसे प्रेम की रस्सियों से बांध दिया था। वह भी आंखें मूंद कर देवी से याचना करने लगा कि वह इस प्रेम के योग्य बन सके, इस प्रेम का वाहन बन सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा हरे-भरे

जब तुम्हें कोई आंतरिक अनुभूति हो, तो तुम्हारे अंदर उसे दोहराने की सहज वृत्ति होती है और उसे दोहराने के लिये तुम उसी रास्ते और तरीके से आगे बढ़ते हो। उदाहरण के लिये जब कभी तुम ध्यान में बैठते हो तो तुम अपने-आपको बाहरी संपर्कों से खींच लेते हो और एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हो जिससे तुम परिचित हो गये हो, जो तुम्हें पसंद आ गयी है और जिसे तुम चेतना का पर्याप्त ऊंचा स्तर समझ लेते हो। इस तरह जब कभी तुम ध्यान के लिये बैठते हो तब तुम यंत्रवत्, बिना किसी प्रयास के अपनी सामान्य अवस्था में चले जाते हो और जितनी देर चाहो उतनी देर वहां रहते हो। यह स्पष्ट है कि अनुभूति आदत का सवाल बन गयी है, यानी, यंत्रवत् और निर्जीव है, लेकिन तुम यह देख नहीं पाते, तुम इतने ज्यादा अचेतन बन चुके हो। इसका मतलब यह है कि तुम आगे प्रगति नहीं करते, तुमने अपने-आपको मानों एक छोटे डब्बे में बंद कर लिया है। अगर तुम इस तरह चलते रहो तो तुम जीवन भर यही करते रह सकते हो, लेकिन तुम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ोगे। इसके विपरीत तुम काफी पीछे हट चुके होगे।

प्रगति का—और चिर यौवन का भी—महान् रहस्य है हर क्षण यह महसूस करना कि तुम अभी-अभी अपने जीवन और अपनी अनुभूति को शुरू कर रहे हो। हमेशा नये सिरे से शुरू करो। अगर तुम एक ही पथ पर हो और तुम्हें लगे कि सौवीं बार उसी दिशा में चल रहे हो तो तुम्हें यह अनुभव होना चाहिये कि तुम पहली बार ही यात्रा कर रहे हो, कि एक नये आविष्कार की ओर तुम्हारा यह पहला प्रयास है। सभी पुराने विचारों, धारणाओं, और अनुभूतियों को भूल जाओ जो तुम्हारे मन में भीड़ लगाये हुए हैं। उस धूल को झाड़ फेकों जो तुम्हारे दिमाग में जमी पड़ी है। अपनी चेतना को एक नवजात शिशु की चेतना की तरह स्पष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शुद्ध बना लो—बिलकुल सीधा, वयस्क दिमाग की झुर्रियों से मुक्त; तुम हमेशा एक पवित्र चेतना की सरलता और सहजता के साथ जगत् और चीजों के संपर्क में आओगे और हमेशा जगत् और चीजें तुम्हारे लिये अपने अनन्त चमत्कार, सौंदर्य और सत्य लायेंगी।

जब कभी तुम अंदर जाकर अपना संतुलन खोजो तो अपनी पुरानी पहचानों और परिचित अनुभूतियों को मत ढूंढो, अपनी पीठ पर अतीत का बोझ मत ढोओ। उसके विपरीत आगे बढ़ो, मानो एक अपरिचित पथ पर, कदम-कदम पर नये आविष्कार करते चलना है, अप्रत्याशित दृश्यों को देखते चलो। तुम अपने भौतिक शरीर पर भी परीक्षण कर सकते हो, यानी अपनी भौतिक चेतना को भी, नये आविष्कार की उस साहसिक यात्रा में अपने साथ लेकर चल सकते हो। इस तरह, उदाहरण के लिये, हो सकता है कि तुम खाने या चलने की आदत को भूल जाओ, सचमुच भूल जाओ, और नये सिरे से सीखने की कोशिश करो—उसी तरह जब तुम बच्चे थे और पहली बार चलना सीखा था। तुम्हें सचेतन रूप से शरीर की वह क्षमता प्राप्त करनी होगी जो लगभग एक अचेतन सहज क्रिया बन गयी है। यह एक अद्भुत और आनन्दप्रद अनुभूति है। स्वभावतः शारीरिक स्तर पर इस तरह का परीक्षण बहुत बार नहीं दोहराया जा सकता, न उसे बहुत दूर तक ले जाया जा सकता है। लेकिन तुम स्वतंत्र रूप से अपने आंतरिक जीवन और चेतना के साथ यह काम कर सकते हो। तुम अपने मन और प्राण को जितना चाहो कोरे कागज की तरह बना सकते हो, जीवन में एक बार ही नहीं, जीवन के हर क्षण। और फिर, देखो जगत् किस तरह तुम्हारी चेतना के साथ टकराता है, कितने अभिनव आविष्कार और जागृतियां निरंतर तुम्हारे पास आते हैं! तुम जीवन के सामान्य स्तरों पर, यानी भौतिक, प्राणिक और मानसिक स्तरों पर जिन स्पंदनों के आदी हो गये हो उनसे छुटकारा पा सकते हो। यहांतक कि तुम अपनी चैत्य रचना से भी परे जा सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, विशाल, असीम, स्वयं अनन्तता बन सकते हो जो नाम और रूप से मुक्त है। और फिर, उस पवित्र चेतना को लेकर भौतिक जीवन और रूप में, अपने शरीर और शारीरिक प्रक्रियाओं में सीधे उतर सकते हो। जगत् भी अपनी मौलिक पवित्रता, हमेशा ज्योतिर्मय और प्रतिभाशाली सत्य और सौंदर्य के साथ अपने-आपको तुम्हें समर्पित कर देगा। इस अनुभूति को तुम्हारे जीवन की सामान्य विधि होना चाहिये, तुम्हारी सत्ता की केवल पराकाष्ठा, स्थिर स्थिति ही नहीं—भले ही वह सबसे ऊंची स्थिति क्यों न मानी जाती हो। इस तरह तुम अपने-आपको और इर्द-गिर्द के जगत् को सदा अभिनव युवा और नूतन रख सकते हो।

जो उपदेशक सत्य की बात करता है वह केवल पहली बार या शुरू में कुछ बार सफल होता है जब भाषण देते समय वह खुद सचाई के साथ अपने सत्य के सत्य को अनुभव करता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है उसका सत्य धुंधला पड़ता जाता है, क्योंकि वह आदत-सा बन जाता है। तब अनुभूति को जीया नहीं जाता, उसे यंत्रवत् बांटा जाता है। जब अनुभूति नयी, ताजी और सजीव होती है तभी तुम सच्चे होते हो। लेकिन उसे हर क्षण वैसा होना चाहिये वरना वह मृत वस्तु बन जाती है, घातक होती है।

यह है आध्यात्मिक जीवन का और सामान्य जीवन का भी रहस्य। उसे सदा हरा रखने के लिये तुम्हें उसमें निरंतर नया रस डालना होगा। अपने-आपको, जीवन को अभिनव आंखों से देखो—ऐसी आंखों से जो बीती अनुभूतियों और उपलब्धियों की परतों से भारी न हों। अतीत को भूल जाओ, हमेशा शुरू से नौसिखिए की तरह शुरू करो—हर क्षण एक अभिनव प्रभाव, एक नया अंतःप्रकाश, एक अप्रत्याशित मार्ग। इसी तरह जीवन हमेशा युवा और प्रगतिशील बना रहता है।

—माताजी की बातचीत के आधार पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक युवा कलाकार के नाम

मानव प्राण की यह एक बहुत बड़ी भूल है कि वह प्रशंसा के लिये प्रशंसा चाहता है। और उसके अभाव में उदास हो जाता और यह मान बैठता है कि उसमें कोई क्षमता नहीं है। इस जगत् में तुम चाहे कुछ क्यों न करो, उसे अज्ञान और अपूर्णता में ही शुरू करना होगा। तुम्हें अपनी भूलों का पता लगाना पड़ेगा और सीखना होगा। तुम्हें भूलें कर-कर के उनका परिमार्जन करना और इस तरह काम करने का ठीक मार्ग खोजना होगा। दुनिया भर में कोई भी इस नियम से नहीं बच सका। इसलिये तुम्हें औरों से हमेशा सराहना की आशा न करनी चाहिये। इसकी जगह जो ठीक है, और अच्छी तरह किया गया है उसकी प्रशंसा और जो भूल है उसकी आलोचना। तुम जितनी अधिक आलोचना सह सको, अपनी भूलों को जितना अधिक देख सको, उतने ही अधिक अपनी क्षमता की पूर्णता तक पहुंच सकोगे। विशेष रूप से जब तुम बहुत छोटे हो, परिपक्व अवस्था तक पहुंचने से पहले, तुम आसानी से पूर्ण कार्य नहीं कर सकते। छोटी उम्र में किया गया काम हमेशा अपूर्ण होता है। उसमें प्रतिभा होती है, गुण होते हैं, भविष्य के लिये प्रतिज्ञा होती है परंतु सच्ची पूर्णता और क्षमताओं का पूरा उपयोग बाद में आता है। इस बात का लोगों को भी भान होता है परंतु वे लिखते जाते हैं या चित्र बनाते जाते हैं क्योंकि वे भलीभांति जानते हैं कि इससे उनकी क्षमताओं का विकास होगा।

रही बात औरों के साथ तुलना की। तुम्हें तुलना न करनी चाहिये। हर एक को अपना-अपना पाठ पढ़ना पड़ता है, अपना काम करना पड़ता है और उसे उसी में लगे रहना चाहिये, अपनी तुलना में औरों की कम या अधिक प्रगति की चिंता न करनी चाहिये। अगर आज वह पीछे है तो हो सकता है आगे चलकर वह पूरी तरह खिल सके। उसे उस भावी पूर्णता के लिये, अपनी क्षमताओं की पूर्णता के लिये प्रयास करना चाहिये। तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी छोटे हो और तुम्हें सब कुछ सीखना है, तुम्हारी क्षमताएं अभी कली के रूप में हैं, प्रतीक्षा करो और उनके पूरी तरह खिलने के लिये प्रयास करो। इसकी चिंता न करो कि कोई संतोषजनक परिणाम लाने के लिये महीनों या वर्षों के प्रयास की जरूरत है। पूर्णता अपने समय पर ही आयेगी। अभी तुम जो मेहनत करोगे वह उस दिशा में एक कदम होगा।

आलोचना और अपूर्णताओं की ओर अंगुलिनिर्देश का स्वागत करना सीखो—तुम यह जितना अधिक कर सकोगे उतनी ही तेजी से आगे बढ़ सकोगे।

—श्रीअरविन्द के एक पत्र से

सब कुछ दे दो

तुम जितना अधिक स्वयं को भगवान् को देते हो उतने अधिक पूर्ण रूप से, निरंतर, प्रत्येक क्षण, वे तुम्हारे सभी विचारों में, तुम्हारी सभी आवश्यकताओं में तुम्हारे साथ रहते हैं, और ऐसी कोई अभीप्सा नहीं है जिसका उत्तर तुरंत न मिलता हो; और तुम्हारे अंदर पूर्ण, सतत घनिष्ठता, पूर्ण निकटता का भाव रहता है। यह ऐसा है मानों तुम साथ लिये हो ... मानों भगवान् हर वक्त तुम्हारे साथ हों; तुम चलो और वे तुम्हारे साथ-साथ चलते हैं, तुम सोओ और वे तुम्हारे साथ-साथ सोते हैं, तुम खाओ और वे तुम्हारे साथ-साथ खाते हैं, तुम सोचो और वे तुम्हारे साथ-साथ सोचते हैं, तुम प्रेम करो और वे वही प्रेम हैं जो तुम प्राप्त करते हो। लेकिन इसके लिये तुम्हें स्वयं को पूरा-पूरा, समग्र-भाव से, अनन्य भाव से देना चाहिये, कुछ भी बचाकर न रखो, अपने लिये कुछ भी न रखो और अपने पास कुछ भी न रखो, और न कोई चीज बिखेरो ही : तुम्हारी सत्ता में छोटी-से-छोटी चीज भी, जो भगवान् को नहीं दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी है, अपव्यय है; यह तुम्हारे आनंद का अपव्यय है, यह ऐसी चीज है, जो तुम्हारे सुख को उतनी मात्रा में कम कर देती है, और जो कुछ तुम भगवान् को नहीं देते उसे मानों तुम भगवान् अपने-आपको तुम्हें दे सकें इस संभावना के मार्ग में खड़ा कर देते हो। तुम उन्हें अपने नजदीक, हमेशा अपने साथ अनुभव करते क्योंकि तुम उनके नहीं हो, क्योंकि तुम सैकड़ों अन्य वस्तुओं और व्यक्तियों के हो; तुम्हारे विचार में, तुम्हारी क्रिया में, तुम्हारी भावनाओं में, तुम्हारे आवेशों में . . . लाखों ऐसी चीजें हैं जो तुम उन्हें नहीं देते, और इसीलिये तुम उन्हें हमेशा अपने निकट अनुभव नहीं करते, क्योंकि ये सब चीजें तुम्हारे और उनके बीच इतने सारे परदे और दीवारें हैं। लेकिन अगर तुम उन्हें सब कुछ दे दो, अगर तुम कुछ भी बचाकर न रखो, तो वे हमेशा पूरी तरह, तुम जो कुछ भी करते हो, जो कुछ भी सोचते हो, जो कुछ भी अनुभव करते हो, उसमें हमेशा, हर क्षण, तुम्हारे साथ होंगे। लेकिन इसके लिये तुम्हें अपने-आपको पूरी तरह देना होगा, कुछ भी बचाकर न रखना होगा; हर छोटी-सी चीज, जिसे तुम बचाकर रखते हो, एक ऐसा पत्थर है जिसे तुम अपने और भगवान् के बीच दीवार खड़ी करने के लिये रखते हो।

—श्रीमां

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा. . . . . में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के वचन

सारी प्रकृति मूक भाषा में उसे ही पुकारती है ताकि वह अपने चरणों से उसके जीवन की दुखती हुई धड़कनों को मुक्त कर सके और मानव की धुंधली आत्मा पर लगी मुहरों को तोड़ सके और वस्तुओं के बंद हृदय में अपनी ज्वाला धधका दे। एक दिन यहां जो कुछ है वह सब उसकी मधुरता का आवास होगा, सभी परस्पर विरोधी बातें उसके सामंजस्य को तैयार करेंगी। हमारा ज्ञान उसकी ओर आरोहण करता है। हमारे आवेश उसी ओर टटोलते हैं। हम उसके चमत्कारी आनंद में निवास करेंगे। उसका आलिंगन हमारे कष्टों को आनंद में बदल देगा। हमारी आत्मा उसके द्वारा सबके साथ एक आत्मा होगी, उसके अंदर रूपांतरित होकर उसी में अनुमोदित होगी। हमारा जीवन उसके पूर्ण प्रत्युत्तर में ऊपर असीम नीरव आनंद और नीचे दिव्य आलिंगन का चमत्कार पायेगा।

इस गोचर और दृश्य जगत् का गुप्त कारण है निश्चेतन भौतिक द्रव्य में अतिचेतन आत्मा का अंतर्लयन। धरती की पहेली का संकेत शब्द है, एक छिपी हुई असीम चेतना और शक्ति का—जड़ दीखनेवाली परंतु भयंकर रूप से चालित संज्ञाहीन प्रकृति में से—क्रमशः विकास। पार्थिव जीवन महान् देव का अपना चुना हुआ आवास है और उनकी चिरकालिक इच्छा है कि उसे अंधे कारागार से भव्य भवन और स्वर्ग तक पहुंचनेवाले उच्च मंदिर में बदल दे।

*

मैं इस तर्क को नहीं समझ पाता जो कहता है कि चूंकि एक चीज पांच सौ वर्षों से चली आ रही है अतः उसे युगों तक बनाये रखना चाहिये। न तो प्राचीनता और न अर्वाचीनता ही सत्य की कसौटी या उपयोगिता की कसौटी हो सकती हैं। सभी ऋषि भूतकाल के ही नहीं थे, अवतार अब भी आते हैं, अंतःप्रकाश अब भी जारी है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

श्रीअरविन्द सोसायटी की "एनुअल जनरल मीटिंग" अक्तूबर २००१ में कलकत्ते में होगी। इसकी विस्तृत जानकारी हम इसी अंक में अन्यत्र दे रहे हैं।

पंढरवारा (महाराष्ट्र), खदकलीपुर-अमरावती (महाराष्ट्र), धर्मनगर-चन्द्रपुर (त्रिपुरा), तंजावर (तमिलनाडु), जमशेदपुर (झारखण्ड) तथा लखनऊ (उत्तर-प्रदेश)—इन स्थानों पर अप्रैल तथा मई के महीनों में छह नये केन्द्र खुले।

'ऑल इण्डिया मैगजीन' ने चार नयी पुस्तिकाएं निकाली हैं। नाम हैं—१. 'हाउ टु कल्टीवेट कांसनट्रेशन', २. 'द वे टु हैप्पीनेस', ३. 'रिमेन यंग' तथा ४. 'व्हाट इज़ हिन्दुइज़म'। प्रत्येक का दाम १५ रु. है (डाक-व्यय अतिरिक्त)। जिन्हें रस हो वे सीधा शब्द, श्रीअरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी—६०५००२ से मंगवा सकते हैं।

सोसायटी ने १९ से २५ मई तक अध्यापकों का शिविर लगाया। यह कार्यक्रम हर वर्ष मई में संपन्न होता है और सारे भारत से इसमें भाग लेने के लिये अध्यापक/अध्यापिकाएं आते हैं।

अम्बाला (हरियाणा) में सोसायटी की नयी इमारत में ६ मई २००१ को श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष पधराये गये। श्री प्रदीप नारंग की अध्यक्षता में करीब ३५० लोगों ने इसमें भाग लिया।

उज्जैन (म० प्र०) केन्द्र ने २९ अप्रैल को 'साधना तथा माताजी के कार्य' विषयक बैठक का आयोजन किया। डॉ० बी० एल० गुप्त ने भाषण के साथ-साथ श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिये।

मथुरा (उ० प्र०) में सोसायटी की नारी आयोग शाखा ने ९ मई को एक सभा का आयोजन किया। विषय था—"बच्चों का लालन-पालन कैसे किया जाये ?" श्रीअरविन्द तथा माताजी के प्रकाश में इसके बारे में २०० के करीब अभिभावकों तथा प्रशिक्षकों ने बातचीत की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SRI AUROBINDO SOCIETY

Society House, Pondicherry – 605 002

Notice for the Annual General Meeting

The Annual General Meeting of the members of Sri Aurobindo Society will be held on Saturday, the 13th October 2001, at 4.00 p.m., at Sri Aurobindo Bhavan, 8, Shakespeare Sarani, Calcutta – 700 071, to transact the following business:

1. To confirm the minutes of the last Annual General Meeting held on 21st October 2000.
2. To consider and approve the audited Balance Sheet as on 31.03.2001 and Income & Expenditure Account of the Society for the year ended 31.03.2001.
3. To consider and adopt the Executive Committee's Annual Report of Activities for the year 2000-2001.
4. To appoint an auditor for the Society for the year 2001-2002.

6. To consider any other matter with the permission of the chair.

Sd/-
(Pradeep Narang)
General Secretary

23rd April, 2001
Pondicherry

Note: The members are entitled to appoint proxy. Proxies must be deposited at the Registered Office of the Society at No. 8, Shakespeare Sarani, Calcutta – 700 071, during office hours, in advance, but not less than 48 hours before the time fixed for holding the meeting.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नवीन प्रकाशन

अभीप्सा, त्याग, समर्पण शब्द मात्र नहीं, आन्तरिक सत्ता की स्थितियाँ हैं। इनमें से प्रत्येक को उसकी पूर्णता में सिद्ध करना, अपनी सत्ता में सर्वांगीण बनाना अर्थात् सत्ता के हर अंग की चेतना को उस स्तर पर उठाना, प्रदीप की लौ का रूप प्रदान करना श्रीअरविन्द के अतिमानसिक योग में अनिवार्य चरण है। इसी विषय को सर्वसाधारण के लिये बोधगम्य बनाने का प्रयास है "दिव्य जीवन की ओर"।

पृ० १६०; मूल्य : ४०रु०।

हर विचारशील व्यक्ति के सामने आज एक प्रश्न है। "अतिमानस क्या है ?" श्रीअरविन्द के द्वारा बार-बार घोषणा करने पर भी इसके अस्तित्व में, इसके पृथ्वी पर अवतरित होने में विश्वास करना मानव बुद्धि के लिये कठिन पड़ रहा है। इसे सरल, बोधगम्य बनाने का प्रयास है "अतिमानस की ओर"। पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०।

मनुष्य की संपूर्ण सत्ता का, उसके निम्नतम भाग शरीर का भी आत्मा की दिव्यता में रूपान्तर संभव है। रूपान्तर के विषय में हमारी धारणा सुस्पष्ट हो, इसी का प्रयास है, "रूपान्तर की ओर"।

पृ० १६०; मूल्य : ५० रु०।

आगामी अतिमानसिक युग में संसार हर वस्तु का एक नया, शुद्धतम रूप देखेगा। आध्यात्मिकता अपने नये तथा शुद्धतम रूप में जगत् का त्याग नहीं करेगी। वरन्, आत्मा की दिव्यता में उसका रूपांतर संभव बनायेगी। इसी विषय की चर्चा है—"आध्यात्मिकता का नया स्वरूप"।

पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०। —सुखवीर आर्य

प्राप्ति स्थान :

श्रीअरविन्द बुक्स डिस्ट्रीब्यूशन एजेंसी
श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी -२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

भागवत कृपा वह चीज है जो तुम्हें निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर धकेलती है। उसका अपने मन से मूल्यांकन न करो, तुम कहीं नहीं पहुंच पाओगे। क्योंकि वह इतनी महान् और भव्य है जिसे मानव शब्दों और भावनाओं में उतारा नहीं जा सकता। जब भागवत कृपा कार्य करती है तो परिणाम सुखद हो भी सकता है और नहीं भी—वह किसी भी मानव मूल्य की परवाह नहीं करती। हो सकता है कि सामान्य और ऊपरी दृष्टिकोण से परिणाम भयंकर विपत्ति दीखे, लेकिन व्यक्ति के लिये यह हमेशा उत्तम होता है। वह भगवान् के द्वारा भेजा गया प्रहार है ताकि मनुष्य छलांगों में प्रगति कर सके। भागवत कृपा वह है जो सिद्धि की ओर तेज कदमों से तुम्हें आगे बढ़ाती है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

मृत्यु का रहस्य

हमने गीता में पढ़ा है कि जैसे हम जीर्ण वस्त्र को उतार कर नया धारण करते हैं वैसे ही मरण के समय शरीर, जो जीर्ण हो जाता है उसे उतार कर हम नया शरीर धारण करते हैं और ऐसे ही जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। कितने संत कहते हैं कि जब भगवान् का बुलावा आता है, तब आत्मा शरीर को छोड़कर चली जाती है। माताजी, श्रीअरविन्द ने शायद हमारी समझ में आये ऐसी भाषा में मृत्यु के कारण का वर्णन किया है।

वे कहते हैं कि जब तुम किसी भी प्रकार की प्रगति नहीं करते तब शरीर में कई प्रकार के विकार पैदा हो जाते हैं और मृत्यु-पथ पर चलने के लिये कोई-न-कोई बीमारी का बहाना आ पहुंचता है। मृत्यु का वरण मनुष्य तब भी करता है जब उसका भगवान् द्वारा दिया गया कार्य समाप्त हो गया हो क्योंकि तब शरीर को धारण करने का कारण नहीं रहता। कहा गया है न "शरीरम् हि खलु धर्मसाधनम्" धर्म का मतलब पूजा, प्रार्थना ही नहीं, बल्कि अपनी प्रकृति के लिये जो सच्चा हो उसके अनुसार कार्य करना और जीना है। कार्य-समाप्ति पर मृत्यु अनिवार्य-सी लगती है क्योंकि जिस कार्य के लिये विशेष मन, प्राण और शरीर दिये जाते हैं, वे अन्य कार्य के लिये अनुपयुक्त सिद्ध होंगे। जैसे एक योद्धा का मन, प्राण और शरीर एक वैज्ञानिक या कवि के लिये बेकार होगा।

इस विषय पर श्रीमती राधा साहा का अनुभव हमें नयी दृष्टि देता है—अधिकतर लोगों की तरह राधा को भी मृत्यु से डर लगता था। लेकिन जब उसने अपनी माता को इतनी शांति से देह छोड़ते हुए देखा, तो उसके मन में प्रश्न उठा, आखिर "मृत्यु है किस तरह की स्थिति ?" उसकी मां बहुत तरोताजा, मुक्त और जाने के लिये उत्सुक दीख रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं ! उसकी मां ने कहा था कि उनके जीवन का उद्देश्य चरितार्थ हो चुका है। वे कुछ विशेष काम करने आयी थीं और अब उन्हें आयु बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं दीखती। हालांकि वे शैया-ग्रस्त थीं फिर भी उन्हें कोई कष्ट न था। उनका ख्याल था कि अगर वे अधिक समय तक जीवित रहें तो उन्हें कष्ट होगा। माताजी की कृपा से राधा के अन्दर नयी सुबह उतरी। अब वह अपनी माता के तीन भागों को स्पष्ट रूप से देख पाती थी। एक था शरीर, जो नश्वर था, दूसरी थी उनकी आत्मा जो शाश्वत थी और तीसरा था माता का अपनी पुत्री, राधा के साथ संबंध जो हमेशा बना रहेगा। राधा ने दिव्य मां से प्रार्थना की कि अपनी मां के ज्ञान की एक किरण उसे भी मिल जाये। अपनी माता के साथ उसका जो संबंध बना रहा था उससे वह चिपकी रही और उसने अपनी मां के ज्ञान के अंश को आत्मसात् कर लिया। अब राधा को महसूस हो रहा है कि उसकी मां सारे समय उसके साथ हैं। उसे इस बात की खुशी है कि अपनी मां के संपर्क से वह वंचित नहीं है। उसे उनसे मार्ग-निर्देशन भी प्राप्त हो रहा है। मां की मृत्यु के बाद राधा ने एक भी आंसू न बहाया क्योंकि उसे लग रहा था कि उनके लिये रोना, उनका अपमान करना होगा। वह यह जानने के लिये बहुत उत्सुक है कि मौत के बाद क्या होता है। वह अपनी मां से उसके बारे में पूछती रहती है।

आशा करते हैं राधा मृत्यु के रहस्य को जान पायी होगी। ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति के लिये मृत्यु का रहस्य भिन्न होता होगा। नचिकेता ने अपने चरित्र-बल से यम का घर ढूंढ़ निकाला और यम के लाख प्रलोभनों के बावजूद उसने मृत्यु के अगम्य रहस्य को जानने के लिये अपने-आपको योग्य साबित कर दिखाया। अतः मृत्यु के रहस्य को जानने के लिये मनुष्य को अपनी योग्यता स्थापित करनी पड़ती है।

हममें से कितने . . . ?

('अवेकनिंग' से) —अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

सितम्बर

१. बच्चों को निर्भीक, स्पष्टवादी, सत्यनिष्ठ और सम्मान्य व्यक्ति बनने में सहायता करनी चाहिये जिससे कि वे अपने अंदर दिव्य प्रकृति को विकसित करने के योग्य बन सके।

२. नीरवता में जब कोई स्पन्दन किसी विशेष उद्देश्य या किसी सुनिश्चित परिणाम की प्राप्ति के लिये दिया जाता है तो वह प्रत्येक व्यक्ति के मन की ग्रहणशीलता के अनुसार उसकी चेतना में ठीक ऐसा रूप लेता है जो उसके लिये अत्यधिक प्रभावकारी, सक्रिय एवं तात्कालिक रूप में अत्यधिक उपयोगी हो सकता है।

३. जब व्यक्ति एक सामान्य संतुलन की अवस्था में होता है और सामान्य शारीरिक समस्वरता की अवस्था में रहता है तो शरीर में प्रतिरोध की अपनी शक्ति होती है, बीमारियों के प्रतिरोध का एक यथेष्ट वातावरण उसके अंदर होता है : उसका अत्यधिक भौतिक तत्त्व ऐसे सूक्ष्म स्पन्दन भेजता है जिनमें रोगों का, यहांतक कि संक्रामक कहलानेवाले रोगों का भी सामना करने की शक्ति होती है (वस्तुतः सभी स्पंदन संक्रामक होते हैं, फिर भी कुछ रोग विशेष रूप से संक्रामक माने जाते हैं)।

४. जब तुम किसी व्यक्ति के संपर्क में आते हो और उससे बात करते हो तो तुम्हें उसके अंदर की ठीक उस वस्तु से बात करनी चाहिये जो समस्त पशुता से ऊपर है, तुम्हें उसकी अंतरात्मा को संबोधित करना चाहिये, उसके शरीर को नहीं। बल्कि तुमसे और अधिक की आशा की जाती है, तुमसे चाहा जाता है कि तुम भगवान् को संबोधित करो—अंतरात्मा को भी नहीं—प्रत्येक प्राणी में स्थित एकमेव भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को संबोधित करो और उसके प्रति सचेतन बने रहो।

५. जो सब वस्तुओं में स्थित सत्य देख सकता है, उसे कभी किसी वस्तु का, चाहे वह कुछ भी हो, मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि वह प्रत्येक वस्तु को समझता और जानता है।

६. ... परापवाद है वह रस जो दूसरों की बुराई करने से मिलता है—जो इस असंयम में लिप्त होता है वह अपनी चेतना को नीचे गिराता है, पर इस असंयम के साथ जब व्यक्ति गंदी तकरार पर उतर आता है और अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करता है तो वह आत्महत्या के बराबर है, अपने अंदर आध्यात्मिक आत्महत्या के बराबर है।

७. तुम किसी चीज को उठाने के लिये झुकते हो, आलमारी के एकदम ऊपर पड़ी किसी चीज को खोजने के लिये उचकते हो, दरवाजा खोलते हो, उसे बंद करते हो, रुकावट को देखने के लिये चारों ओर मुड़ते हो, ऐसी सैकड़ों चीजें हैं जिन्हें तुम निरन्तर करते हो और जिनका तुम अपने शारीरिक शिक्षण में उपयोग कर सकते हो और वे तुम्हें सिद्ध कर दिखायेंगी कि क्रियाओं के अंदर रखी गयी चेतना का ही प्रभाव होता है, यूं ही किये जानेवाले भौतिक कर्म की अपेक्षा अगर तुम अपनी समस्त गतिविधियों के प्रति सचेतन हो जाओ तो उनका बहुत अच्छा प्रभाव होता है।

८. पूर्ण पवित्रता का अर्थ है **होना**, निरंतर अधिकाधिक पूर्ण संभूति के अंदर 'होना'। व्यक्ति को कभी दावा नहीं करना चाहिये कि वह ऐसा है : उसे सहज-स्वाभाविक रूप में वैसा **होना** चाहिये।
इसी का नाम सच्चाई है।

९. भगवान् को जीवन में संसिद्ध करना ही मानव की मानता है। सारा जीवन ही केवल एक अपरिमित और असंख्यविध अवसर है जो हमें भगवान् को खोजने, पाने और प्रकट करने के लिये दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. मस्तिष्क जब भगवान् को नहीं समझ पाता तब भगवान् हृदय के अपनी वाणी सुनाते हैं।

११. जो निःशेष-भाव से और समग्र रूप से अपने-आपको भगवान् को डालते हैं उन्हें भगवान् भी अपने-आपको दे डालते हैं। उन्हीं के लि है शांति, प्रकाश, शक्ति, सुख, स्वातंत्र्य, प्रसार, ज्ञान के शिखर औ आनंद के सागर।

१२. यदि तुम मंदिर में भगवान् की जीवंत उपस्थिति की प्रतिष्ठा करन चाहो तो तुम्हें उसे स्वच्छ रखना चाहिये। पवित्रता का अर्थ है भगवान् के प्रभाव को छोड़ कर अन्य किसी वस्तु का प्रभाव स्वीका न करना।

१३. सच्चा व्यक्ति अहं-पुरुष नहीं है, बल्कि वह दिव्य व्यक्तित्व है जे हमारे विकासक्रम के द्वारा हमारे अंदर अभिव्यक्त होने की तैयारी क रहा है।

१४. मनुष्य को अपनी कठिनाइयों से भी कहीं अधिक हठी होन चाहिये—दूसरा कोई उपाय नहीं है। भगवान् को प्राप्त करने की जी की अखण्ड इच्छा के विरुद्ध कोई चीज टिक नहीं सकती।

१५. जो जीव अभीप्सा नहीं करते वे भगवान् की असफलताएं हैं।

१६. हमारी सत्ता का सत्य है आत्मा। मन, प्राण और शरीर अपन अपूर्णताओं में इसके आवरण हैं, परंतु अपनी पूर्णता में ये इसव विविध रूप बन जायेंगे।

१७. जो हम अभी नहीं कर सकते वह इस बात का संकेत है कि हम बा में क्या कर सकेंगे। असंभवता का बोध ही सारी संभावनाओं क प्रारंभ है।

१८. हम लोगों को तो आगे ही बढ़ना होगा, क्योंकि यदि हम ऐसा न क तो हमारी काल्पनिक स्थिरता के बावजूद स्वयं काल हमें आगे की ओर ढकेल देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९. हम कितने ही ऊंचे क्यों न चढ़ जायें, हमारा चढ़ना दोषपूर्ण ही है यदि हम अपने आधार को ही भूल जायें।

२०. लक्ष्य के प्रति यदि कोई अडिग हो तो भगवान् के पथ पर कोई अंतिम असफलता नहीं आ सकती।
अपनी कमजोरियों तथा भ्रांत क्रियाओं को पहचानना तथा उनसे पराङ्मुख होना ही मुक्ति का पथ है।

२१. आंतरिक विजय से ही बाह्य विजय का आना संभव होता है।
जब कोई स्वयं मुक्त हो जाता है केवल तभी वह दूसरों को मुक्त कर सकता है।

२२. महत्तम बाधा से ही महत्तम शक्ति का उद्भव होता है।
शांति, स्थिरता और प्रकाशमय निश्चेष्टता बनाये रखने में समर्थ होने का मतलब है अमरत्व प्राप्त करने के योग्य हो जाना।
परम आंतरिक शांति से ही सबसे सच्ची अभिव्यक्ति उद्भूत होती है।

२३. चरित्र के बिना, किसी तरह के ऊंचे या सशक्त अनुशासन के बिना जीवन में कोई स्थायी शक्ति नहीं प्राप्त होती।

२४. न्याय और धर्म की स्थापना के लिये योद्धा की तलवार भी उतनी ही आवश्यक है जितनी संत की पवित्रता।

२५. परम प्रभु का सर्वांगपूर्ण यंत्र होने से बढ़कर कोई दूसरा सम्मान अथवा गौरव नहीं है।

२६. मानव और भगवान् के मिलन का सदा अर्थ होता है भगवान् का मानव में भेदन और प्रवेश तथा मानव का भगवान् में आत्मोन्नयन।

२७. तुम्हारे अंदर जो चीज साधारण जीवन से आसक्त है और जो भागवत जीवन के लिये अभीप्सा करती है, उन दोनों के बीच संघर्ष है। यह तुम्हें देखना है कि जो चीज तुम्हारे अंदर अधिक प्रबल हो उसे चुनो और उसके अनुसार कार्य करो।

२८. पहले आती है बौद्धिक वृत्ति और अभ्यास थोड़ा-थोड़ा करके बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता है। जो चीज बहुत महत्त्वपूर्ण है वह है जिसे तुम सत्य समझते हो उसे जीने और वही होने के संकल्प को जाग्रत् बनाये रखना, तब रुकना असंभव होगा और पीछे गिरना तो और भी असंभव।

२९. एकमात्र प्रत्युत्तर जो कभी नहीं चूकता, भगवान् का प्रत्युत्तर है। एकमात्र प्रेम जो कभी नहीं चूकता, भगवान् का प्रेम है।
केवल भगवान् से ही प्रेम करो और भगवान् हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे।

३०. अगर मानव मन जीवन में इतनी सारी बेकार जटिलताएं न ले आता तो जीवन काफी सरल और आसान होता।

कई जवान हैं जो बूढ़े हैं और कई बूढ़े हैं जो जवान हैं। अगर तुम प्रगति और रूपान्तर की यह लौ अपने अंदर लिये चलो, अगर तुम सब कुछ अपने पीछे छोड़ने के लिये तैयार हो ताकि तुम चुस्त कदम से आगे बढ़ सको, अगर तुम एक नयी प्रगति के प्रति, नयी उन्नति के प्रति, नये रूपांतर के प्रति हमेशा खुले रहो तो तुम शाश्वत रूप से युवा रहते हो। लेकिन अगर तुम उसी चीज को लेकर संतोष के साथ बैठ जाओ जिसे तुमने चरितार्थ कर लिया है, अगर तुम्हें यह भान हो कि तुमने अपना लक्ष्य पा लिया है और तुम्हारे लिये अपने प्रयासों के फल का उपभोग करने के सिवाय और कोई काम नहीं है तो तुम्हारा आधे से ज्यादा शरीर कब्र में पहुंच चुका है, यह क्षय की अंतिम अवस्था और सच्ची मृत्यु है।

जो कुछ कर लिया गया है वह हमेशा उसकी तुलना में कुछ नहीं है जो करना बाकी है।

पीछे मत देखो, आगे देखो, हमेशा आगे। और हमेशा आगे बढ़ते चलो।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(गतांक से आगे)

टेनिस में माताजी की राजनैयिकता का एक मजेदार प्रसंग सुनाता हूं। उनके निरीक्षण में हम लोग मैत्रीपूर्ण प्रतियोगिता खेलते थे। एक बार मेरा साथी खिलाड़ी और मैं फाइनल तक पहुंच गये और हमारा अंतिम मुकाबिला हमसे छोटी उम्र की जोड़ी से होना था जो माताजी की विशेष कृपापात्र थी। पुराणों में लिखा है कि देवों और विशेषकर देवियों के विशेष प्रिय भक्त होते थे और वे हमेशा जीत जाते थे। हमें समझना चाहिये कि उन पक्षपातों के पीछे कोई विशाल उद्देश्य होता होगा। माताजी ने हमारे खेल की चर्चा श्रीअरविन्द के आगे छेड़ी और मुझसे बड़े भोलेपन से पूछने लगीं कि खेल के हमारे दांव-पेंच क्या हैं, हमारी कैसी योजना है इत्यादि; मैं भी कम न था। मैं उनकी बातों में थोड़े ही आनेवाला था ! फिर उन्होंने परिचित कौशल का प्रयोग किया, "तुम तो जानते हो न कि यह जोड़ी बहुत अच्छा खेलती है, तुम्हारे जीतने की कोई आशा नहीं है।" इस तरह वे मुझे चिढ़ाती रहीं। श्रीअरविन्द इस वाक् चातुर्य का मुस्कुराते हुए मजा ले रहे थे। अपना काम खतम कर जाते समय मैंने चम्पकलालजी को कहा कि वे हमारी ओर से श्रीअरविन्द से प्रार्थना करें। हमारी प्रतियोगिता का आरंभ हुआ, काफी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। माताजी बड़े ध्यान से प्रतिस्पर्धा देख रही थीं। नतीजा यह हुआ कि हम बुरी तरह हार गये और दुःखी थे। ताज्जुब की बात यह है कि हम आसान शॉट भी नहीं मार पा रहे थे। उस शाम को लौटकर मैंने अपनी शर्मनाक पराजय की बात चम्पकलालजी से की। बाद में श्रीअरविन्द ने भी प्रतिस्पर्धा के बारे में पूछा तो चम्पकलालजी ने हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराजय की बात कही। उन्हें इस परिहास में मजा आया और वे जोर से हंस पड़े। मैं समझ न पा रहा था कि इसमें उन्हें इतना मजा क्यों आ रहा था! अपने शक्ति-प्रयोग की असफलता के कारण? फिर उन्होंने अपनी शक्ति का प्रयोग किया भी था या नहीं? या प्रयोग किया था माताजी के प्रियपात्रों की सफलता पर? माताजी ने अपनी ओर से उन्हें खेल का सविस्तार विवरण दिया। उन्होंने कहा, "ओह, ये लोग इतने घबराये हुए थे! मैंने उन्हें स्वस्थ, शान्त रखने की कोशिश की, किंतु सब बेकार! वे आसान शॉट भी चूक रहे थे!" मैं यूं तो कुछ न बोला किंतु अंदर ही अंदर बड़बड़ाने लगा, "हमारे लिये क्या आशा थी जब आपने हमारा सर्वनाश वैसे ही निश्चित किया था?" सर्वनाश का एक अधिक गहरा अर्थ भी है और जैसा कि मैंने संकेत किया था मेरा टेनिस-प्रेम अति उग्र हो उठा, इतना उग्र कि मैंने काम की भी अवहेलना करनी शुरू कर दी। यह ऐसा ही था जैसे पुराना प्रेम जाग उठा हो और मैं अपने आवेश में मदहोश हो जाऊं। मुझे इस मूर्खता से उबारने के लिये माताजी ने मेरी मनोवैज्ञानिक रूप से कई बार पिटाई की थी। श्रीअरविन्द ने मुझे एक बार लिखा था, "कभी नहीं! तुम्हें कभी न छोड़ेंगे, लेकिन पिटाई—काफी करेंगे।" पिटाई ज्यादातर माताजी करती थीं।

मैं उदाहरण देना चाहता हूं। केवल टेनिस के क्षेत्र की बात करूंगा। श्रीअरविन्द के महाप्रयाण के बाद मैंने हमेशा के लिये टेनिस छोड़ने का विचार किया, किंतु माताजी ने पूछा, "क्यों? तुम मेरे साथ खेलोगे।" मैं रोज टेनिस ग्राउण्ड जाता और वे मुझे खेलने के लिये बुलातीं। इससे मेरा टेनिस-प्रेम फिर जाग उठा जो श्रीअरविन्द की बीमारी के कारण लुप्त हो गया था। माताजी के साथ कुछ सेट खेलने से मैं संतुष्ट न था। इसके अतिरिक्त मेरे पास अब कोई काम भी न था, इसलिये मैंने खुलकर खेलना शुरू किया। अचानक माताजी ने मेरे साथ खेलना बंद कर दिया और कई दिनों तक मुझे नहीं बुलाया। मैं दुविधा में पड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं रोज आशा लिये जाता कि वे मुझे आज बुलायेंगी, वे कइयों को बुलातीं किंतु मेरी अवहेलना करती रहतीं। पहले की स्थिति से यह स्थिति इतनी विरोधाभासी थी कि मुझे लज्जाजनक लगती थी। मुझे इस अवस्था में अपमान लगता था। विचित्र बात यह थी कि जब मैं दूसरे खिलाड़ियों के साथ न खेलता तो वे मुझे अपने साथ खेलने का अवसर देतीं। इन दोनों घटनाओं का संबंध देखकर मुझे यही शंका हुई कि वे चाहती थीं कि मैं उन्हें छोड़कर और किसी के साथ न खेलूं। भला उन्हें कैसे पता चलता था कि कब मैं किस खिलाड़ी के साथ खेलता था और कब नहीं खेलता था, यह पहेली उन लोगों के लिये स्पष्ट थी जो माताजी से अच्छी तरह परिचित थे। फिर भी मैं टेनिस खेलना इतनी आसानी से छोड़ न पाया। फिर मैंने सोचा "मैं टेनिस क्यों छोड़ दूं ? उसमें क्या बुराई है ? अच्छी मजेदार कसरत है।" इसके अलावा मैं निश्चित रूप से देखना चाहता था कि मेरी यह शंका सच्ची है या नहीं इसलिये मैंने खेलना जारी रखा जबतक कि मुझे इसका स्पष्ट संबंध न मिल गया। वे मुझे तभी खेलने के लिये बुलातीं जब मैं किसी अन्य के साथ न खेलता। इस तरह उनकी यह उपेक्षा इतनी कष्टकर हो गयी और दूसरों के लिये इतना स्पष्ट कि मैंने सोचा, "जबतक माताजी खेलेंगी, मैं टेनिस कोर्ट में पांव न धरूंगा," किंतु कोई अदृश्य शक्ति मुझे वहां खींच ले जाती। मैं इस आशा से तो न जाता कि वे मुझे बुलायेंगी किंतु मैं अपने गर्व और अपनी प्रतिष्ठा की भावना के अधीन भी नहीं होना चाहता था। मैंने देखा कि मेरी उपस्थिति को वे ध्यान से देखती थीं। मैं उनके खेल के समय 'रेफरी' का काम करता था। मैं यह भी सोचता कि अगर उनके साथ कोई दुर्घटना घट जाये और मैं वहां न होऊं तो . . . ? (बाद में दुर्घटना हुई भी थी) श्रीअरविन्द के साथ अपनी आंतरिक बातचीत के समय मैं उन्हें क्या जवाब दूंगा ? मुझे अपनी अहमन्यता को दबाना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेनिस के बाद माताजी स्पोर्ट्स प्रतियोगिता के सत्र में स्पोर्ट्स ग्राउण्ड जाती थीं। उनके साथ वहां जाने की जगह मैं टेनिस के खेल में मग्न हो जाता। जब कभी मैं उनके साथ स्पोर्ट्स ग्राउण्ड गया तो मैंने देखा कि वे एक उड़ती निगाह से मेरी उपस्थिति को अपने मन में मानों लिख लेती थीं। उनकी ऐसी सूक्ष्म प्रतिक्रिया इतनी बार होती थी कि कोई मन्दबुद्धि व्यक्ति भी उसे समझ पाता। इस तरह हमारा निःशब्द युद्ध चलता रहा। अपमान का मेरा भाव, सच्चा मनोभाव रखने का मेरा संघर्ष, अपने हठ को पकड़े रहने की जिद और कई मनोवैज्ञानिक जटिलताओं के जाल का युद्ध था वह। अंततः लगातार मौन दबाव की विजय हुई और मैंने टेनिस छोड़ दिया। यह है मानव प्रकृति ! जब यह स्पष्ट था कि भगवान् मेरे भले के लिये कुछ करना चाहते हैं तो या तो आसक्ति के कारण, या अपनी दोष-मुक्ति सिद्ध करने के लिये या केवल आज्ञा भंग करने के लिये मैंने उनकी सहायता को अस्वीकार कर दिया। सचमुच अपनी प्रकृति को बदलना कितना कठिन काम है। गुरु ने १९३६ में यूं ही नहीं कहा था कि १५० आश्रमवासियों के स्वभाव को बदलना बड़े धैर्य का और कष्टसाध्य काम है। मजेदार बात यह है कि माताजी ने कभी शब्दों में अपनी इच्छा प्रकट नहीं की। उनकी निःशब्द और सूक्ष्म कार्य-शैली थी। उन्होंने कहीं कहा था कि अगर वे मौन मुद्रा से या दृष्टि से किसी की गति को बदल नहीं पातीं तो वे मानती थीं कि उन्होंने पूर्ण नियंत्रण नहीं पाया है। मैंने उनसे कभी पूछा न था कि टेनिस के प्रति मेरा रवैया कैसा होना चाहिये। अगर मैं पूछता तो शायद वे बतातीं। जब उन्होंने मुझसे कहा था, "तुम मेरे साथ खेलोगे," तो मैं यह बात पकड़ न पाया कि उनका मतलब था कि मैं केवल उनके साथ खेलूं। यह उनकी एक कार्य-पद्धति थी जिसका प्रयोग वे हमें बुद्धि से उच्चतर प्रत्यक्ष ज्ञान के क्षेत्र की ओर खोलने के लिये कर रही थीं।

अब मैं अपने औषध-कार्य से संबंधित उनके संपर्क के दृष्टांत दूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने जान लिया था कि औषधि और चिकित्सा के विषय में उनका ज्ञान सामान्य डॉक्टर से कहीं अधिक था। आश्रम में चिकित्सा-विभाग में काम करते समय असल में वे ही मेरा प्रत्येक कदम पर मार्ग निर्देशन करती थीं। मैं भगवान् की और मरीजों की, इस तरह दुहरी सेवा करता था। असल में मरीजों के लिये मेरे पास समय कम ही था। मेरे सिर पर एक भारी बोझ डाला गया था हालांकि वह मेरे अपने कहने से ही डाला गया था। मेरा सुझाव था कि सारे आश्रमवासियों के स्वास्थ्य, अस्वास्थ्यता का इतिहास रखा जाये, योग करने के लिये आये हुए सभी नये आश्रमवासियों के लिये स्वास्थ्य-परीक्षा अनिवार्य हो। मैं उन सबकी रिपोर्टों को, जब माताजी श्रीअरविन्द की देख-भाल के लिये आतीं तो रोज सुनाया करता। दोनों प्रश्न पूछते, सुझाव भी देते थे। इस तरह मेरा रिपोर्ट सुनाना ज्यादा डॉक्टर की परीक्षा होती गयी न कि मरीजों की। क़ेस तैयार करने में मेरी छोटी-से-छोटी लापरवाही, गलती या फिसलन को तुरंत पकड़ा जाता, किंतु किसी भी त्रुटि पर मुझे कभी डांट फटकार नहीं मिली। माताजी के किसी प्रश्न के उत्तर में मैं चुप रहता तो वे टिप्पणी करतीं, "ओह, इसे पता नहीं। अगर इसे मालूम होता तो तुरंत बोलता।" एक मजेदार प्रसंग की याद आ रही है। एक बार मैंने हमारी अक्खड़ मृदु के लिये, जो श्रीअरविन्द के लिये 'लूची' बनाया करती थी—एक दवाई बना कर दी, लेकिन उसके ऊपर दवाई पीने का निर्देशन लिखना भूल गया। उसने वह कागज उठाया और दनदनाती हुई माताजी के पास पहुंची और फट पड़ी, "माताजी, नीरदबाबू कविता है, वह न डॉक्टर है। उन्होंने मुझे दवाई कैसे लेना उसकी सूचना लिखे बिना दवाई दी है।" माताजी ने गंभीर भाव बनाकर दवाई की शीशी अपने हाथ में ले श्रीअरविन्द के पास जाकर मृदु की शिकायत सुनाई। अगर बातचीत के समय यह घटना घटी होती तो उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया होता।

अब मैं माताजी के साहस की बात बताऊंगा। उनका एक भक्त जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमवासी न था गले के कैंसर से पीड़ित था। उसने अपने नातेदार-रिश्तेदारों के आग्रह को ठुकरा दिया जो कहते थे कि उसे कैंसर की डॉक्टरी चिकित्सा करनी चाहिये। किंतु उसने निश्चय किया कि या तो वह माताजी की चिकित्सा से नीरोग होगा और उसमें असफल हुआ तो यहीं मृत्यु को स्वीकार करेगा। वह बहुत दुबला-पतला, अधीर प्रकृति का पुरुष था। उसकी सामान्य तंदुरुस्ती भी अच्छी न थी। मुझे यह काम सौंपा गया था कि मैं उसकी स्थिति का निरीक्षण करके रोज माताजी और श्रीअरविन्द को उसकी रिपोर्ट दूं। दूसरे अध्याय "देवता का प्रस्थान" में हम देखेंगे कि एक जानलेवा रहस्यमय बीमारी से पीड़ित महिला इन दोनों की शरण में आकर पूरी तरह स्वस्थ हो गयी थी। माताजी के इस अपूर्व साहस से मैं चकित रह गया किंतु उनके इस कार्य के लिये मेरे अंदर शंकाहीन श्रद्धा न थी। कैंसर की बीमारी या अन्य किसी केस के बारे में मैंने माताजी और श्रीअरविन्द से पूछा था कि क्या उन्होंने कैंसर जैसी व्याधि को अपनी शक्ति से दूर किया है? माताजी ने पूरी दृढ़ता से कहा कि न केवल कैंसर, उन्होंने अन्य बीमारियां भी अपनी शक्ति से दूर की हैं जिन्हें असाध्य माना गया था। उन्होंने श्रीअरविन्द से पूछा, "ऐसा ही है न?" मानों वे उनकी स्वीकृति चाहती हों। उन्होंने सिर हामी में झुका दिया। एक बार माताजी ने कहा था कि ऐसा कोई रोग नहीं है जिसे योग हटा न पाये। श्रीअरविन्द ने भी लिखा था, "योग रोग को निश्चित रूप से दूर कर सकता है किंतु इसकी शर्त यह है कि तुममें श्रद्धा या उद्‌घाटन अथवा दोनों हों। मानसिक सुझाव भी कैंसर को दूर कर पाता है—अगर नसीब साथ दे तो! ऐसा ही एक स्त्री के साथ हुआ था जिसका कैंसर का ऑपरेशन असफल हुआ था किंतु डॉक्टरों ने उसे झूठ मूठ कहा कि ऑपरेशन सफल हुआ है। परिणाम! कैंसर के सारे लक्षण गायब हो गये और वह महिला अनेक वर्षों के बाद किसी अन्य रोग से चल बसी।" तो, यह एक मरीज था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो पूरी श्रद्धा से माताजी की शरण में आया था। मैंने भी अपना रिपोर्ट देने का काम नियमित रूप से शुरू किया। पहले मरीज प्रणाम करने के लिये माताजी के पास आने लगा। माताजी कितनी तीव्र एकाग्रता से उसकी ओर देखती थीं यह मैंने जाना और वे इस व्यक्ति की बीमारी में कितनी तन्मयता से व्यस्त रहती थीं यह भी देखा। कभी-कभी मेरी रिपोर्ट सुनते-सुनते वे हठात् समाधि में चली जातीं और श्रीअरविन्द उनकी ओर बहुत ध्यान से देखते रहते। एक बार वे गिरने-गिरने को हुईं तो श्रीअरविन्द ने दोनों बाहें पसार कर आश्चर्य से कहा, "आह!" तुरंत माताजी ने अपना संतुलन पा लिया। इस बीमारी में सुधार बहुत ही धीरे-धीरे हो रहा था। अगर कई लक्षणों में सुधार होता तो नये उठ खड़े होते। इस तरह प्रत्येक दिन उस व्यक्ति के लक्षण घटते-बढ़ते जाते। कुछ दिन अपेक्षाकृत आराम में गुजरते। हमारी सहायता केवल मनोवैज्ञानिक होती : जैसे उनका साहस बढ़ाना और उनकी श्रद्धा को दृढ़ करना। अगर जरा-सी प्रगति दिखायी देती तो मैं प्रसन्नता से भरकर माताजी को वह रिपोर्ट देता। वे चुपचाप सुनती रहतीं। इसी बीच सगे-संबंधियों की चिट्ठियां मरीज के पास आतीं जिनमें उन्हें वापस लौटने की विनती की जाती थी। जब माताजी ने चिट्ठियों के विषय में सुना तो उन्होंने कहा, "अगर मैं इस बीमारी को हटा न पाऊंगी तो और कोई नहीं है जो उसे हटा पायेगा।" इस तरह युद्ध चलता रहा, सचमुच वह मुठभेड़ भीषण थी। माताजी के स्थिर-शक्ति संचार के कारण परिस्थिति सुधरती गयी और मैंने सोचा, "चलो, अब हमने करवट बदल ली"। माताजी ने अपनी सतर्कता को बनाये रखा और व्यर्थ शब्दों में अपनी शक्ति क्षीण न होने दी। फरवरी दर्शन के बाद बिना किसी स्पष्ट कारण, मरीज की हालत बदलने लगी। उसकी तबीयत धीरे धीरे गिरती गयी और एक या दो महीनों में उसकी जीवन धारा सूखने लगी। माताजी के अंतिम दर्शन करने के लिये मरीज को उनके पास लाया गया। वे नीचे उतर आयीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपने नरम शांति-दायक स्पर्श और दिव्य स्मित से उसकी सारी व्यथा मानों मिटा दी और उसकी मृत्यु-राह सरल और शांतिमय बना दी। बाद में जब मैंने श्रीअरविन्द से इस रहस्यमय उलटाव का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया, "दर्शन के बाद उसकी श्रद्धा डिग गयी थी और वह उसे फिर से स्थापित न कर पाया।" गले का कैंसर अनिष्टकारी सजा है; मनुष्य न खा पाता है, न पी सकता है, न बोल पाता है, यहांतक कि सांस लेना भी कठिन हो जाता है। हमारे सामने इस बीमारी का श्रेष्ठ उदाहरण श्रीरामकृष्ण हैं ही। श्रद्धा को दृढ़ और सुस्थिर रखने के लिये जो वीरोचित संकल्प बल चाहिये, वह कितने लोगों में है ? इसके अलावा उन सज्जन के लिये तो उनके परिवार का प्रतिवेष भी अनुकूल न था।

मुझे निशिकान्त की याद आ रही है जो साधक-कवि थे। वे गंभीर बीमारी से उठकर वैसी ही और एक गंभीर बीमारी में फंस गये थे। गुह्य ज्ञान के अनुसार इस बीमारी का कारण समझाते हुए माताजी ने मुझे कहा था कि जब निशिकान्त अपने जन्म दिवस पर उनसे मिलने आये थे तो उन्होंने उनकी श्रद्धा में दरार देखी थी। किंतु निशिकान्त और ही मिट्टी के बने थे, उन्होंने अपने-आपको सुधार लिया और ठीक हो गये जब कि कैंसर का रोगी ऐसा न कर पाया। हम माताजी से पूछ सकते हैं, "ऐसे केस में हाथ ही क्यों डालें ?" खैर, इस मामले में मरीज ने चुनाव किया था; उसे आम शल्य-चिकित्सा में कोई श्रद्धा न थी जिसकी सफलता अभीतक संदेहात्मक रही है। कम-से-कम यहां उसे माताजी और श्रीअरविन्द के सीधे संरक्षण और निगरानी में रहने का अवसर तो मिल रहा था ! एक भक्त के लिये इससे बढ़कर और कौन-सा वरदान हो सकता है ? अगर वह जीवित रहता तो उसके लिये गौरव की बात होती; अगर वह मर जाता तो अगले जन्म में उसका जीवन बेहतर होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी वर्ष पहले माताजी के पास कैंसर का एक केस आया था जो आश्रम के बाहर रहता था। जिससे उन्होंने जाना कि सूक्ष्म जगत् में कैंसर के ऊपर विजय पा लिया गया है और जल्दी ही हमारे जगत् में भी वह वास्तविक रूप लेगा।

(क्रमशः) —नीरदवरण

करने दे मुझको प्रणाम

तू करने दे मुझको प्रणाम।
निज चरणों में निःशेष दान।
हे साथी थोड़ा रुक जाना,
मुझको भी साथ लिये जाना,
निज पथ पर इस पथहारे को
रहता है जिस पर चिर विहान! निज चरणों में निःशेष दान!

था अंधकार ही मिला मुझे,
जब मैंने आंखें खोली थीं,
कानों में भी सुनता केवल
जो अंधकार की बोली थी।
चल रहा अंधेरे में तब से
अब कर तू मुझको किरणदान! निज चरणों में निःशेष दान!

मैं थका हुआ हूं तन मन में,
आशा का दीप नहीं जलता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांटों से भरे हुए जंगल का,
कोई अंत नहीं मिलता।
निष्प्राण चल रहे राही को
देना किंचित अवलम्ब दान! निज चरणों में मुझको प्रणाम!

जब से तेरा संकेत मिला,
लगता है मुझको अंत मिला।
इस रजनी के दिग्बंध पार
नूतन ऊषा का प्रांत मिला।
ले चल अब पार यहां से दे,
अपने कर का स्पर्श दान! तू करने दे मुझको प्रणाम!

—छोटेनारायण शर्मा
'पुष्प-गुच्छ' से

एक शिष्य के नाम पत्र

(कलकत्ते में रहते हुए इस शिष्य ने १९३१ में श्रीअरविन्द को चिट्ठियां लिखना शुरू किया था। तीन वर्ष तक श्रीअरविन्द आश्रम के सचिव नलिनीकांत गुप्त द्वारा उत्तर भेजते रहे, इसलिये उनमें से अधिकतर चिट्ठियों में शिष्य के लिये अन्य पुरुष का उपयोग है। -सं०)

गुरुदेव :

मैं आपके चरणों में नमन करता हूं। मैं आपके योगमार्ग का एक सहयात्री हूं, आपकी पद्धति की सहायता से इसका अनुसरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा हूं। सात वर्ष की साधना ने मेरे अंदर के सभी अंधेरे भागों को समर्पण के लिये प्रेरित किया है। लेकिन इस अंधकार में मेरा प्राण अभीतक दुर्बल और अशुद्धियों से भरपूर है। वह प्रतिरोध करना जारी रखे हुए है और समर्पण नहीं करना चाहता। समर्पण के इस अभाव में मेरी साधना क्रियाशील नहीं है।

कुछ समय से मैं यह समझ पा रहा हूं कि मेरे अंदर शक्ति का अभाव है और इसलिये अभीतक शक्तियों की क्रीड़ा शुरू नहीं हुई है। इसलिये मैं सारे समय भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि मुझे शक्ति, ज्ञान और आनंद प्रदान करें अन्यथा पता नहीं मैं अंधकार को सह सकूंगा या नहीं।

आप ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि मेरे लिये सबसे अच्छा क्या है, मैं अपने-आपको आपके आगे समर्पित करता हूं, वर दीजिये कि मेरे जीवन में आपकी इच्छा पूरी हो।

नलिनी :

यह पत्र बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण है और मन का पर्याप्त औचित्य और साधना की प्रकृति, उसमें बाधाओं तथा व्यक्ति के अंदर की गतिविधियों के बारे में विवेकशील अवलोकन दर्शाता है। तुम इसके साथ पत्र-व्यवहार करो और उसे प्रोत्साहन दो।

उससे कहो कि उसके सभी अवलोकन बहुत ठीक हैं और उनमें और कुछ जोड़ने की जरूरत नहीं, अगर वह सचाई के साथ और दृष्टि की इसी विवेकपूर्ण परिशुद्धता के साथ लगा रहे तो वह निश्चित रूप से प्रगति करेगा। यह साधना कठिन है और इसमें समय लगे तो मन में मैल न लाना चाहिये। अंतिम स्तरों में जाकर ही प्रगति की बहुत महान् और अविच्छिन्न तेजी की निश्चित रूप से आशा की जा सकती है। रही बात शक्ति की, तो प्राण के शुद्ध और समर्पित होने से पहले शक्ति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अवतरण में उसके अपने खतरे हो सकते हैं। उसके लिये ज्यादा अच्छा यह है कि वह शुद्धि, ज्ञान, हृदय की अभीप्सा की तीव्रता और शक्ति की जितनी क्रियाशीलता को वह सह और आत्मसात् कर सके उतनी के लिये प्रार्थना करे।

पत्र में, तुम्हें और जो कुछ जोड़ने की जरूरत लगे वह जोड़ दो।

१८ मई, १९३१ श्रीअरविन्द

भगवन्,

मुझे अपने आधार के लिये शक्ति के अभाव का अनुभव हुआ और मैंने उसके लिये माताजी से प्रार्थना की और उन्होंने मेरी सुन ली। शक्ति का अवतरण हुआ, वह प्राण में आसीन हुई और उस केंद्र से उसने अपना काम शुरू कर दिया। आंतरिक प्राण के आरोहण के साथ मेरी साधना क्रियाशील हो गयी और उसने पूरी तरह से नया रूप ले लिया। परिश्रम, बौद्धिक शुष्कता और साधना की अस्वस्थता का स्थान सहजता, उल्लास और तीव्रता ने ले लिया। शक्ति का अवतरण अपने सहवर्ती आनंद के साथ मुझे ज्यादा गहराई में ले गया। एक बिंदु पर इतने अधिक आनंद और उल्लास का अनुभव होने लगा और मुझे भगवान् के साथ इतने निकट सायुज्य का अनुभव हुआ कि मैंने सोचा कि मैं श्रीमां की गोद में ही हूं। मैंने इसके बारे में 'क' को बतलाया तो उसने कहा कि यह "चैत्य चेतना" है।

लेकिन साधना में अंधकार की क्रीड़ा भी है और वह बहुत ज्यादा तीव्र होती है। दिव्य चेतना के छिपने का अर्थ है विरोधी शक्तियों की रेल-पेल जो क्रोधोन्मत्त होती हैं, उछल-कूद करती, रंगरेलियां मनाती और सारे चैत्य-प्राण स्तर को एक हुल्लड़ में बदल देती हैं। ये शक्तियां मानसिक सत्ता के संतुलन को बिगाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती हैं और प्रकाश तथा ज्ञान की ओर खुलनेवाले सभी द्वारों को बंद करने की कोशिश करती हैं।

क्या आप 'क' के इस मत का समर्थन करते हैं कि यह गतिविधि चैत्य चेतना है ?

नहीं, यह प्राणिक चेतना का दिव्य स्पर्श के प्रति खुलना है जो हमेशा अपने साथ प्रकाश, शक्ति या आनंद को लाता है। प्राण का यह खुलना आगे की ओर बहुत बड़ा कदम है लेकिन जैसा कि उसने जान लिया है, यह अंधकार की शक्तियों के आने को नहीं रोकता। केवल चैत्य चेतना का खुलना ही उसके विरुद्ध सतत सहायक हो सकता है।

प्रकाश और अंधकार के बारी-बारी से होनेवाले इस खेल ने मेरे मन में यह डर पैदा कर दिया है कि शक्तियां अपने उद्देश्य से खेल खेल रही हैं। इस भय का औचित्य इस बात से सिद्ध होता है कि समय-समय पर आनेवाले भागवत चैत्य स्पर्श अभीतक भगवान् के प्रति एकनिष्ठ और अचल भक्ति को, सतत और कभी असफल न होनेवाली अभीप्सा को जन्म नहीं दे पाये हैं। ऐसा क्यों है ?

क्योंकि चैत्य सत्ता सामने नहीं है। केवल चैत्य सत्ता के जागने से ही इस तरह की भक्ति आ सकती है। अभी उसमें जो चीज है वह है मानसिक और प्राणिक भक्ति।

इन दिनों दो-एक गतिविधियों ने मेरा ध्यान खींचा है :

१. साधना के बारे में प्रवचन सुनने और उसके बारे में बातचीत करने की प्रबल इच्छा। साधना और अपनी उपलब्धियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बारे में बातचीत करते हुए मैं इतना भाव-विभोर हो उठता हूं कि कभी-कभी तो मुझे लगता है कि मैं अपने-आपको पार कर गया हूं। लेकिन ऐसे प्रवचन दिव्य चेतना को गहरा बनाने की जगह आधार को खाली और दीन-हीन बना देते हैं।

यह कामना प्राणिक है और प्राणिक विस्तार का स्वभाव ही होता है तपःक्षय का।

२. महत्त्वाकांक्षा का उत्कर्ष जो बहुत बार मुझे बोलने के लिये प्रेरित करता है, मेरी दृष्टि को विकृत करता और मुझे यह विश्वास दिलाता है कि ये प्रवचन किसी का बहुत भला कर सकते हैं, उसकी जीवन-दिशा को बदल सकते हैं इत्यादि।

यह भी प्राणिक है—उसे प्राणिक कामनाओं से ऊपर उठना और उनका स्थान भगवान् के लिये अभीप्सा को देना चाहिये।

१६ जनवरी, १९३२ —श्रीअरविन्द

मेरे पिछले पत्र के उत्तर ने मेरी उस गलत राय को सुधार दिया जिसके अनुसार मैं काम कर रहा था। उस समय से मेरे अंदर भगवान् के अंदर गहराई में जाने, चैत्य चेतना तक पहुंचने और उस चेतना को ऊपर लाने की दृढ़ इच्छा पैदा हो गयी। इसने इस बात पर जोर दिया कि मैं ध्यान पर अधिक बल दूं। ध्यान का अभ्यास अभीतक मुझे अचंचल और शांत स्थिति तक और एक प्रकार की गतिहीन शुद्ध अवस्था तक ले जा सका है, वहां से मैं डुबकी लगाना चाहता था और चाहता था कि भौतिक मन से दूर हो जाऊं और आत्मा के प्रदेशों में जा पहुंचूं, लेकिन मुझे प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने से रोक दिया गया। फिर भी जब कभी मैं ध्यान के लिये बैठता हूं तो मैं तुरंत निष्क्रियता की एक ऐसी अवस्था में पहुंचा दिया जाता हूं जहां मैं कभी-कभी प्रकाश की झलकें देखता हूं जो प्रायः अगोचर होती हैं, लेकिन मैं इससे आगे नहीं जा पाता, ऐसा लगता है कि दरवाजों पर अब भी अंदर से चिटकनी लगी है।

ऐसा लगता है कि उसकी साधना सामान्य रूप से और सब मिलाकर बहुत अच्छी तरह चल रही है, शुरू की स्थिति में हमेशा कठिनाई और उलझी हुई प्रगति होती है और जबतक आधार तैयार न हो जाये तबतक बंद दरवाजे खुलने में देर लगती है। अगर जब कभी वह ध्यान करने बैठता है तब निष्क्रियता और आंतरिक प्रकाश की झलकों का अनुभव करता है और अगर भीतरी लालसा इतनी मजबूत हो जाती है कि बाहरी पकड़ ढीली हो जाती है, प्राणिक उथल-पुथल का बल कम होता जाता है तो यह अपने-आपमें एक बड़ी प्रगति है, योग-मार्ग लंबा है। जमीन के एक-एक इंच को बहुत प्रतिरोध के विरुद्ध जीतना पड़ता है और इसके लिये साधक में धैर्य और एकनिष्ठ अध्यवसाय और सभी कठिनाइयों, देरियों और प्रतीयमान असफलताओं में दृढ़ रहनेवाली श्रद्धा से बढ़कर और किसी चीज की जरूरत नहीं।

९ मार्च, १९३२ श्रीअरविन्द

तुम 'प' को लिख सकते हो कि जब प्राणिक कठिनाइयां साधक पर आक्रमण करती हैं तो उसे अपनी चेतना को उनके साथ एकात्म न करना चाहिये बल्कि पीछे खड़े होकर सत्ता के अवलोकन करनेवाले भाग में आग्रह के साथ दिव्य शक्ति को पुकारना चाहिये। तब सत्ता के इस स्थिर और मौन भाग के द्वारा सहायता आयेगी।

२७ दिसंबर, १९३२ श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी (१)

आज ऋषिवर के यहां धूम थी। उनके आने में कुछ देर थी, पर उनकी सभा के सभी सदस्य आ चुके थे। इतना ही नहीं, गला फाड़-फाड़ कर, हाथ नचा-नचा कर क्रोध, घृणा और तिरस्कार दिखाते हुए जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। हर एक दूसरे से बाजी ले जाना चाहता था । खट से पश्चिम की ओर का दरवाजा खुला और चुपके-से ऋषिवर अंदर घुस आये, लेकिन सब इतने जोश में थे कि किसी का ध्यान ही नहीं गया। ऋषिवर खड़े-खड़े मुस्कुराते रहे, अचानक किसी के मुंह से निकला, 'सी . . . ' एकदम सन्नाटा छा गया और सब जरा झेंप के साथ ऋषिवर की ओर देखने लगे।

बात क्या है ? यह जोश का समुद्र कैसे ठाठें मार रहा है ? ऋषिवर ने हंसते हुए पूछा।

नहीं, ऋषिवर, हम सब न चलने देंगे। इसमें आपकी और हमारी दोनों की बदनामी है। छगन को हम आगे से यहां न आने देंगे। वह चोर है। कई आवाजों ने एक साथ कहा। बात ऐसी थी कि दो रायें हो ही नहीं सकती थीं। इस बात का विरोध करना अपना नाम चोरों में दर्ज कराने जैसा था और जो जितनी जोर से छगन को गाली दे रहा था वह मानों उतनी ही जोर से अपनी ईमानदारी की घोषणा कर रहा था।

ऋषिवर ने कहा, छगन, यह सब क्या कहते हैं ? क्या चुराया था तुमने ?

इससे पहले कि छगन कुछ उत्तर दे चार आवाजें उठीं, यह पूछिये क्या नहीं चुराता यह ! कल ही मदन एक सुन्दर-सी टोपी लाया था। वह यहां रख कर गया पानी पीने, आया तो टोपी गायब। न जाने कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे शंका हो गयी कि हो न हो, यह काम छगन का ही है। हम लोगों ने जाकर उसके घर की तलाशी ली। वहां तो मानों छाते, जूते, टोपी आदि की दूकान निकली। हम में से बहुतों को अपनी खोयी हुई चीजें मिल गयीं। बताइये, इसका साथ हमें कैसे शोभा दे सकता है ? इसका आना बंद कर दीजिये।

ऋषिवर बोले, जरा मेरी भी सुनोगे या अपनी ही हांके जाओगे ? हमने तुम्हारी बात मान ली कि छगन ने चोरी की। अब हमें यह देखना है कि उसे क्या दण्ड देना चाहिये, है न ?

सबने एक स्वर से कहा, हां, ऋषिवर, उसे निकाल दीजिये यहां से। हमें अपने साथ एक चोर नहीं चाहिये।

ऋषिवर बोले, शाबाश ! लेकिन अब जरा यह तो बताओ कि चोरी कहते किसे हैं ?

सब एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। सभी जानते हैं कि चोरी किसे कहते हैं, भला उसका मतलब कैसे बताया जाये। खैर, साहस करके मदन ने कहा, दूसरे की चीज उससे पूछे बिना या उसकी जानकारी के बिना ले लेना ही चोरी है।

ऋषिवर बोले, अच्छा, तुम नदी में से एक लोटा पानी लेकर आते हो तो यह चोरी है या नहीं।

मदन ने कहा, नहीं।

ऋषिवर ने कहा, तुम धूप या हवा की चोरी कर सकते हो ?

सबने कहा, नहीं। ये तो भगवान् की दी हुई चीजें हैं, इनकी चोरी नहीं होती।

ऋषिवर ने कहा, इसका मतलब हुआ कि भगवान् की चीज लेने में चोरी नहीं होती। अच्छा, पेड़ पर फल-फूल कौन लगाता है ?

बच्चों ने कहा, भगवान्।

ऋषिवर ने कहा, तो फिर फल-फूल की चोरी तो चोरी न होगी, इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह जमीन की बात है, जो चाहे, जहां चाहे जमीन हथिया ले।

विद्यार्थी जरा चकराये, आपस में बहस करते रहे और बड़ी देर के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि मनुष्य जिस चीज को अपनी मेहनत से कमाये वह चीज उसकी और कोई दूसरा उसे लेना चाहे तो वह चोरी।

ऋषिवर बोले, तुम लोग इतने सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहने हो, इनके लिए तुमने क्या मेहनत की थी? शायद तुम कहोगे कि तुमने नहीं तो तुम्हारे पिता ने मेहनत करके पैसा कमाया और उन्होंने तुम्हारे लिये कपड़े खरीदे। जब कि छगन ने तुम्हारे बाप की कमाई हुई चीज में से बिना अधिकार के चोरी की है। मुझे मालूम है कि छगन के बाप दिन में कम-से-कम दस घण्टे पत्थर कूटते हैं, फिर भी उन्हें इतनी मजदूरी नहीं मिलती कि वे अपने परिवार को भर पेट खाना खिला सकें। इसलिये तुम यह नहीं कह सकते कि वे मेहनत नहीं करते, इसलिये अच्छी चीजों पर उनका अधिकार नहीं है।

लड़के जरा और चकराये लेकिन ऋषिवर बोलते चले, और देखो, तुम सब साथ उठते-बैठते हो, साथ पढ़ते-लिखते हो। तुम में से कुछ बहुत बढ़िया कपड़े पहन कर आते हैं और कुछ को मोटा-झोटा, फटा-पुराना ही पहनना पड़ता है। उनके भी दिल हैं, उनके मन में भी इच्छा पैदा होती है। साधारणतः वे इच्छाओं को दबा लेते हैं पर कभी वह उछल पड़ती है और अवसर मिल जाये तो अपनी तृप्ति करवा लेती है। उनके अंदर इस तरह की इच्छा उभारने की जिम्मेदारी किस की? बिल्ली के आगे जलेबियां रख दो और उससे कहो, संयम करो। एक योगी के लिये यह चीज ठीक हो सकती है। वह सब प्रकार के प्रलोभनों में रहते हुए भी उनसे ऊपर रह सकता है, परंतु हम हर एक से इसकी आशा नहीं कर सकते। हम यह आशा भी नहीं कर सकते कि सभी आदमियों का जीवन-स्तर एक-सा कर दें, हम एक आदेश के द्वारा यह घोषणा नहीं कर सकते कि हर एक को खादी का धोती-कुरता ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहनना पड़ेगा। भिन्नता तो रहेगी ही, सब चीजें कभी एक जैसी नहीं हो सकतीं। सबके लिये रोज चार जलेबियां खाने का नियम नहीं बनाया जा सकता। चार से किसी का पेट खराब हो जायेगा और किसी के लिये चार कुछ भी न होंगी। हर मामले में यही बात है।

यह एक बहुत बड़ी समस्या है और इसका हल आसानी से नहीं हो सकता। यूं साधारण जीवन में हमें समाज के नियम तोड़ने का अधिकार नहीं है। समाज ने चोरी वगैरह के बारे में एक नियम बनाया है। हमने देखा कि नियम कच्चा है और इसमें बहुत-सी कमियां हैं। लेकिन हम नियम को तभी बदल सकते हैं जब इसकी जगह इससे भी अच्छा नियम ला सकें। नियम को तोड़कर धांधली पैदा करना तो ठीक नहीं, लेकिन कामचलाऊ रूप में हम चोरियों की खुली छूट नहीं दे सकते।

हमारा आदर्श यह है कि दुनिया में हर चीज भगवान् की है और उसका उपयोग भगवान् की इच्छा के अनुसार ही होना चाहिये। भगवान् की इच्छा पर सब कुछ लुटा देना भी धन का सदुपयोग ही होगा। यह विषय जरा कठिन है और एक बार की बातचीत में ही सबकी समझ में आ जायेगा इसकी मैं आशा नहीं कर सकता। तुम लोग अपने जीवन को ऊंचा उठाने की कोशिश कर रहे हो, तुम्हारे अंदर सचाई के लिये लगन है इसलिये तुम्हारे आगे यह बात कही है, मामूली आदमी तो इसका दुरुपयोग कर सकता है।

अब समय काफी हो गया है। आज तो हम भगवान् से यही प्रार्थना करते हैं कि वे हमें यह समझने की शक्ति दें। किसी को कुछ पूछना हो तो अगली बैठक में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् में व्यक्ति की भूमिका

हम सबको एक भूमिका पूरी करनी है, एक काम चरितार्थ करना है, एक ऐसी जगह भरनी है जिसे हम ही भर सकते हैं।

लेकिन चूंकि यह काम हमारी सत्ता की अंतर्तम गहराइयों की बाहरी अभिव्यक्ति है इसलिये हम इसके निश्चित रूप के बारे में तभी सचेतन हो सकते हैं जब हम अपने अंदर की इस गहराई के बारे में सचेतन हो जायें . . .।

हमें अपने-आपसे कहना चाहिये, "निश्चय ही ऐसी कोई चीज होनी चाहिये जो मैं और किसी की अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह कर सकता हूं क्योंकि हम में से हर एक भागवत शक्ति की अभिव्यक्ति का एक विशेष प्रकार है जो अपने सार रूप में सभी के अंदर एक ही है। वह चाहे जितना घटिया और सामान्य क्यों न हो, यही यथार्थ रूप से वह चीज है जिसमें मुझे अपने-आपको लगा देना चाहिये और उसे जानने के लिये मैं अपने रस, प्रवृत्तियों और पसंदों को देखूंगा और उनका विश्लेषण करूंगा। मैं इसे बिना घमण्ड या अतिशय विनय के साथ करूंगा। और लोग भले कुछ भी सोचते रहें मैं उसे बिलकुल सीधे-सादे ढंग से वैसे ही करूंगा जैसे मैं सांस लेता हूं, जैसे कोई फूल मधुर गंध देता है, क्योंकि मैं अन्यथा कर ही नहीं सकता।"

जैसे ही हम अपने अंदर से, भले क्षण भर के लिये क्यों न हो, सभी स्वार्थभरी कामनाओं, सभी व्यक्तिगत और स्वार्थ-भरे प्रयोजनों को लुप्त कर सकें, हम इस आंतरिक सहजता, इस गभीर प्रेरणा के आगे समर्पण कर सकते हैं जो हमें विश्व की जीवित-जाग्रत और विकसनशील शक्तियों के साथ संलाप करने योग्य बनायेगा।

जैसे-जैसे हम अधिक पूर्ण होते जायेंगे वैसे-वैसे अनिवार्य रूप से हमारे कर्म की धारणा भी अधिक पूर्ण होती जायेगी और इस बढ़ती हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता को प्राप्त करने के लिये, अपने-आपका अतिक्रमण करने के लिये कोई प्रयास बाकी न रखना चाहिये। हम जो काम करें वह अधिकाधिक प्रसन्नतापूर्ण और सहज होता जाना चाहिये जैसे कि शुद्ध झरने में से उमड़ता पानी।

—श्रीमां

गुदड़ी का लाल

नया मकान बड़ी अच्छी जगह मिला। ठीक चौराहे पर। ऊपर से नीचे की चहल-पहल बड़ी अच्छी लगती, मानों बिना पैसे का सिनेमा हो। सवेरे पौने आठ बजे चारों ओर से प्यारे-प्यारे रंग-बिरंगे मासूम फूल खिल उठते, उनकी महक, उनकी चटक और उनकी हंसी बड़ी मनमोहक होती। कोई बस्ता लिये गुनगुनाता आता, कोई सीटी बजाता तो कोई मुस्कान फैलाता, मित्रों से चुहल करता निकल जाता।

दोपहर को घर लौटता तो भीषण कोलाहल और चिल्ल-पों में से रास्ता काटकर घर पहुंचता और इसके बाद युद्ध-विराम की-सी शांति छा जाती। कभी-कभी उस निस्तब्धता को भंग करती रंग-बिरंगी आवाजें। एक दिन मोटी जोरदार आवाज सुनी, "बाबूजी ये आम कच्चे हैं, बेकार हैं। मैं कहता हूं इन्हें लेकर कूड़े में डालिये। ये दांततोड़, पेट दुखाऊ आम मुफ्त में मिलें तो भी हाथ न लगाइये।" स्वाभाविक था मेरा कुतूहल मुझे खिड़की तक खींचकर ले गया। देखता क्या हूं, लोग फेरीवाले को घेरे खड़े हैं और धड़ल्ले से बिक्री हो रही है . . . इसी तरह भिन्न-भिन्न तरह के दृश्य यहां दिखायी देते और सारा रास्ता चलचित्र की भांति दीखता।

उस रात को भयंकर शोरगुल ने मेरी नींद को झकझोर डाला। शंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई शायद शहर में दंगा-फिसाद हो गया। रोशनी किये बिना ही खिड़की से जो दृश्य देखा उसे देखकर अपनी वीरता पर तरस खाना पड़ा।

हमारे फुटपाथ पर दिन-रात अड्डा जमा रहता था। वहीं खाने, सोने और प्रेम तथा युद्ध करनेवाले रिक्शावाले ताड़ी में धुत होकर गाली-गलौज का रस ले रहे थे। उनके बीच जग्गू को देखकर मेरे अचरज का ठिकाना न रहा। एक दिन देर हो जाने के कारण मुझे रिक्शा लेनी पड़ी। मैं किराया ठीक करके ही उसपर पांव रखना चाहता था लेकिन रिक्शावाला डट गया 'साब, आपको जो ठीक लगे दे दीजियेगा, पहले बैठ तो लीजिये।'

और सचमुच मैंने उसे जो कुछ दिया उसने बिना आनाकानी के लिया। उस दिन से मुझे उसके हाल-चाल में रुचि पैदा हो गयी। पता चला कि फुटपाथ ही उसका घर है और अम्बर ही उसकी छत। दोस्त उसे जग्गू कहकर पुकारते थे और सभी रिक्शावालों से वही सबसे बढ़कर सौम्य था। मेरे अंदर उसके लिये सहानुभूति और मधुर भाव पैदा होते देर न लगी। लेकिन जग्गू का यह जंगली रूप देखकर मैं दंग रह गया। उफ, मनुष्य के कितने रूप होते हैं और हर एक कितना सच्चा मालूम होता है। मुझे पता ही न लगा कि कब तू तू मैं मैं का स्थान हाथापाई ने ले लिया। इसने अपने प्रतिद्वंद्वी को गिराकर घसीटना शुरू किया, उसने इसकी टांगें पकड़ लीं। बिना टिकट का दंगल देखने के लिये भीड़ इकट्ठी होने लगी, आसपास के मकानों की खिड़कियां खुल गयीं।

मैं इस हंगामे से उदास होकर मुड़ ही रहा था कि अचानक वातावरण में नीरवता उतर आयी। देखता क्या हूं एक सफेद उलझे बालोंवाली बुढ़िया चीथड़े लपेटे हुए अखाड़े में उतरी। उसने एक हाथ से अपनी झुकी हुई कमर को सहारा देते हुए दूसरे से जग्गू को झकझोर दिया। उसकी पैनी पतली आवाज निस्तब्धता को चीरती हुई मेरे कानों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी "बबुआ, यह क्या ? चल तेरे लिये मनपसंद खाना तैयार है। तू कितना गंदा हो गया है। जा उधर कल पर जाकर शरीर साफ कर ले। चल, मेरे साथ चल। और खबरदार फिर से नशा किया तो, मुझसे बुरा कोई न होगा। तेरी हठ के कारण मैंने थोड़ा-सा ठर्रा पी लेने दिया कि चलो थका-मांदा है, जरा ताजा हो लेगा। लेकिन यह क्या गत बना डाली तूने ?" बुढ़िया ने हाथ पकड़कर उसे घसीटा। जग्गू मेमने की तरह उसके साथ हो लिया। उसके साथियों की बातों से पता चला कि बुढ़िया जग्गू की महतारी थी।

मैं जब कभी उधर से गुजरता तो मां-बेटे के क्रिया-कलाप को ध्यान से देखा करता था। दोपहर को बारह बजे तक जग्गू लौट न आये तो बुढ़िया आसमान सिर पर उठा लेती थी। उसके मित्रों में से किसी के निहोरे करके उसे खोजने के लिये भेजती। उसके लौटने पर पहले डांट-डपट की बौछार होती। वह कहती, ऐ बबुआ, तू भी क्या सहराती बाबुओं की तरह कटी पतंग बन गया है जो किसी की परवाह नहीं करते, मां-बाप जाएं चूल्हे भाड़ में, उनकी बला से।' झबरे बालोंवाला जग्गू सिर झुकाये मां की डांट पीता रहता। इतने भारी-भरकम डील-डौलवाले जग्गू की उस समय की भाव-भंगिमा देखने लायक होती थी। कभी-कभी तो लगता था कि वह अब रोया, अब रोया।

एक दिन हमारे यहां हड़ताल थी। मैं भी रोज के कार्यक्रम से छुट्टी पाकर घर से बाहर निकला। रिक्शावालों के जमघट ने मुझे बरबस अपनी ओर खींच लिया। बड़ी सभ्यता, शिष्टता दिखाते हुए मैं उसी ओर हो लिया। जग्गू का पक्का दोस्त राजा सिर पर हाथ धरे बैठा था। एक-एक रिक्शावाला अपनी जेब टटोल रहा था, अंटी में हाथ डाल रहा था और वहां से दो-चार सिक्के निकालकर जग्गू के हाथ पर धर रहा था।

जग्गू ने राजा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "चल उठ, घबराता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या है ? हम सब हैं न तेरे साथ। ले'' और राजा ने शिथिल हाथों से पैसे ले लिये। मानों सभा भंग हो गयी। रिक्शावाले वहां से खिसकने लगे। मैं उनकी बातों पर कान लगाये था, उससे पता चला कि कल राजा कानी कौड़ी भी न कमा पाया था और उसके बाद आ गयी यह आज की हड़ताल। उसके और उसके घरवालों के लिये तो दो दिन का उपवास हो गया। उन्हींमें से एक और बोला, अरे आज उसकी यह हालत है कल हमारी हो सकती है। हम एक दूसरे का साथ न दें तो—मेरी आंखें खुल गयीं। इन अनपढ़, पिछड़े हुए लोगों में कितनी सहानुभूति है, कितना सौहार्द है। ये पाते क्या हैं ? कुछ इने-गिने सिक्के या मैले-कुचैले नोट लेकिन इनका दिल कितना उदार है, औरों के दर्द को समझता है !

और उसके साथ अपने एक गाड़ीवाले, बंगलेवाले मित्र की याद कौंध गयी। मुझे तुरंत कुछ पैसे चुकाने थे और बैंक में छुट्टी थी, मैं उनके घर जा पहुंचा और अपनी मैत्री के भ्रम में बड़े निःसंकोच भाव से उनसे एक राशि मांग बैठा और साथ ही कह दिया कल बैंक खुलने पर लौटा दूंगा। उन्होंने बहुत आर्द्र होकर नाटकीय ढंग से उत्तर दिया, 'अरे भई क्या वक्त चुना है तुमने ? इस समय तो मेरी जेब एकदम खाली है।' लेकिन विधाता भी बड़े विनोदी हैं। उसी समय टेलीफोन की घंटी बजी। उस ओर से मित्र की श्रीमती इतनी ऊंची आवाज में बोल रही थीं कि मैं एक-एक शब्द सुन सकता था। मेरे मित्र झुंझला उठे। श्रीमतीजी ने किसी दुकान से फोन किया था, उन्होंने वहां से एक कीमती साड़ी खरीदी थी, उनके पास इतना रुपया न था। नौकर के हाथों एक बड़ी राशि तुरंत मंगा रही थीं। मेरे मित्र ने झट नौकर को बुलाया और मुझसे 'अभी आया' कहकर उसके साथ पास के कमरे में चले गये।

और कुछ कहने सुनने की जरूरत न थी। मेरा मन खट्टा हो गया और मैं वहां से उठकर चला आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटपाथ का संसार अपनी गति से चलता चला जा रहा था। एक दिन वहां एक नयी हलचल देखी। एक अधेड़ भिखारिन ने आकर अपना अड्डा जमाया। झुटपुटा होते ही वह रिक्शावालों को झांसने की कोशिश करती।

एक दिन सड़क की बत्तियां जल चुकी थीं, जग्गू मां के साथ बैठा सुस्ता रहा था। दीवार की ओट से अंगड़ाई लेती हुई भिखारिन ने जग्गू को हाथ के संकेत से निमंत्रण दिया। क्षण भर के लिये उसकी आंखें चमक उठीं, पर मां की ओर नजर आते ही उसकी पलकें झुक गयीं और चेहरे पर एक अबोध बालक का भाव आ गया। भिखारिन के सारे नखरे धरे रह गये। भिखारिन ने हार न मानी। कुछ दिनों तक प्रयास करती रही परंतु जग्गू ने कभी विचलित होने का नाम न लिया।

जग्गू के लिये उसकी मां ही भगवान् का रूप थी। जीर्ण-शीर्ण चिथड़ों में चिपटी, उलझे मटमैले बालों का मुकुट पहने, झुकी कमर पर हाथ टेके बैठी थी जगज्जननी जो उसे गिरने से बचाती और ऊपर उठने का रास्ता दिखाती थी। मेरे मन ने दोनों करों से मूक नमस्कार करते हुए कहा, ये ही हैं घूरे के पास लुढ़कते गुदड़ी के लाल। इन्हें देखकर लगता है कि देश में श्रवण कुमार का रक्त सूख भले गया हो लुप्त नहीं हुआ।

—अनुबेन

यदि तुम्हारा मतलब निराशा, चित्तवृत्ति अथवा अन्य प्रतिक्रियाओं से है कि इन्हें तुम नहीं चाहते तो यह बहुत अच्छा है। इन्हें जल्दी से जल्दी चलता करो।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचूक साधन

"यदि हमें पूर्णयोग की सिद्धि के लिये प्रयत्न करना है तो यह अच्छा होगा कि भगवान् के एक ऐसे विचार को लेकर चलें जो स्वयं पूर्ण हो। हृदय में एक ऐसी अभीप्सा होनी चाहिये जो किन्हीं संकुचित सीमाओं से रहित साक्षात्कार को प्राप्त करने के लिये विशाल हो। हमें केवल एक सांप्रदायिक एवं धार्मिक बहिर्दृष्टि को ही नहीं, अपितु उन सभी एकपक्षीय दार्शनिक विचारों को भी त्यागना होगा जो 'अनिर्वचनीय भगवान्' को एक सीमित करनेवाले मानसिक सूत्र में आबद्ध कर देने का यत्न करते हैं।"

(श्रीअरविन्द : योग-समन्वय)

प्यारी मां ! "भगवान्-संबंधी पूर्ण विचार" से श्रीअरविन्द का क्या तात्पर्य है ?

प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत रुचि, अपनी समझने की संभावनाओं, अपनी मानसिक पसंदों और यहांतक कि अपनी कामनाओं के भी अनुसार अपने लिये भगवान्-संबंधी एक भावना बना लेता है। लोग जिस भगवान् को चाहते हैं, जिस भगवान् से मिलना चाहते हैं उसकी एक धारणा तैयार कर लेते हैं, और इसलिये स्वभावतः अपनी उपलब्धि को बहुत अधिक सीमित कर देते हैं।

परंतु हम यदि यह बात समझ सकें कि भगवान् के विषय में हम जो कुछ धारणा बना सकते हैं भगवान् वह सब हैं और उससे अनंतगुना अधिक हैं तो हम उनकी संपूर्णता की ओर प्रगति करना आरंभ करते हैं। मानव चेतना स्वयं अपने को सीमित करके ही सचेतन होना आरंभ करती है, उसके लिये संपूर्णता की भावना को ग्रहण करना एक अत्यंत कठिन कार्य है। पर फिर भी, उन लोगों के लिये, थोड़ा-सा प्रयास करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर, किसी पूर्ण भावना को पकड़ पाने के लिये अपने-आपको पर्याप्त मात्रा में विस्तारित करना संभव हो जाता है जो यह जानते हैं कि मानसिक क्रियाओं के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है।

तुम भगवान् के विषय में एक ऐसी धारणा बना लेते हो जो तुम्हारे स्वभाव तथा तुम्हारी अपनी धारणा के अनुकूल होती है, ठीक है न ? अतएव यदि तुम अपने-आपसे थोड़ा बाहर निकलना चाहो और पूर्णयोग के अभ्यास का प्रयत्न करो तो तुम्हें ठीक-ठीक यह समझने का प्रयत्न करना होगा कि भगवान् केवल वही नहीं हैं जैसा कि तुम उन्हें सोचते-समझते अथवा अनुभव करते हो, बल्कि वह भी हैं जो दूसरे उन्हें समझते और अनुभव करते हैं—और उसके साथ-ही-साथ कुछ और भी हैं जिसे कोई भी मनुष्य न तो समझ सकता है और न अनुभव कर सकता है।

तब, यदि तुमने इतना समझ लिया है तो भगवान्-संबंधी संपूर्णता के पथ पर तुमने पहला कदम रख दिया है।

सहजभाव से, और इस विषय में सचेतन हुए बिना ही, लोग आग्रहपूर्वक यह चाहते हैं कि भगवान् हमारी धारणाओं के अनुरूप हों। क्योंकि, बिलकुल स्वाभाविक तौर पर, यदि वे जरा भी विचार नहीं करते तो, तुमसे कहते हैं : "ओह ! यह चीज दिव्य है, यह चीज दिव्य नहीं है ! भला इस विषय में वे क्या जानते हैं ? और फिर ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने भगवत्पथ पर अभीतक पांव भी नहीं रखा है, जो यहां आते हैं और वस्तुओं या लोगों को देखते हैं और तुमसे कहते हैं : "इस आश्रम का भगवान् के साथ कोई नाता नहीं है, यह बिलकुल ही दिव्य नहीं है।" परंतु उनसे यदि यह पूछा जाये कि : "आखिर दिव्य है क्या ?" तो इसका उत्तर देना उनके लिये कठिन हो जायेगा; वे इस बारे में कुछ नहीं जानते। और लोग जितना कम जानते हैं उतना ही अधिक फतवा देते हैं; यह एकदम पक्की बात है। जितना अधिक मनुष्य जानता है वस्तुओं के विषय में अपने निर्णय की उतनी ही कम घोषणा करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक ऐसा मुहूर्त आता है जब हम बस इतना ही कर सकते हैं कि बयान कर दें; परंतु उस समय निर्णय देना असंभव हो जाता है। उस समय हम वस्तुओं को देख सकते हैं, और उसी तरह देख सकते हैं जैसी कि वे हैं—अपने पारस्परिक संबंधों और अपने स्थान में जैसी हैं, और इस ज्ञान के साथ देखते हैं कि वे अभी जिस स्थान में हैं उस स्थान और उन्हें जिस स्थान में होना चाहिये उस स्थान के बीच क्या अंतर है (क्योंकि बस यही संसार में सबसे बड़ी अव्यवस्था है), पर हम राय नहीं बनाते, केवल देखते हैं।

और एक मुहूर्त ऐसा आता है जब हम यह कहने में असमर्थ हो जाते हैं : "यह वस्तु दिव्य है और यह दिव्य नहीं है", क्योंकि एक ऐसा मुहूर्त आता है जब हम समूचे विश्व को इतने पूर्ण और व्यापक रूप में देखते हैं कि, सच पूछा जाये तो, उसकी प्रत्येक वस्तु को अस्तव्यस्त किये बिना उसमें से किसी वस्तु को निकाल लेना असंभव होता है।

एक या दो पग और भी आगे बढ़ाने पर, पूरी निश्चयता के साथ, हम यह जान जाते हैं कि जो चीजें भगवान् के विपरीत होने के कारण हमें धक्का पहुंचाती हैं, वे एकदम शुद्ध रूप में वे ही चीजें हैं जो अपने स्थान पर नहीं हैं। प्रत्येक वस्तु ठीक-ठीक अपने ही स्थान पर होनी चाहिये और, साथ-ही-साथ, वह पर्याप्त नमनीय, पर्याप्त लचकदार होनी चाहिये ताकि सुसमंजस क्रमवर्द्धमान संगठन के अंदर वह उन सब नवीन तत्त्वों को प्रवेश करने दे जो अभिव्यक्त विश्व के साथ निरंतर युक्त किये जा रहे हैं। यह विश्व अपने आंतर पुनःसंगठन के लिये सतत गतिशील है, और उसके साथ-ही-साथ यह मानों अधिकाधिक बड़ा होता जा रहा है, अथवा अधिकाधिक जटिल होता जा रहा है, अधिकाधिक पूर्ण, अधिकाधिक सर्वांगपूर्ण बनता जा रहा है—और यह असीम रूप से होता जा रहा है। और चूंकि धीरे-धीरे नवीन तत्त्व अभिव्यक्त होते हैं, समूचे पुनःसंगठन को एक नये आधार पर फिर से तैयार करना होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि एक भी क्षण ऐसा न हो जब कि प्रत्येक वस्तु सतत गतिशील न हो। परंतु यदि यह गति दिव्य व्यवस्था के अनुकूल होती है तो सुसमंजस होती है, इतने पूर्ण रूप में सुसमंजस होती है कि यह मुश्किल से बोधगम्य होती है, उसे देखना कठिन होता है।

अब, यदि कोई फिर इस चेतना से नीचे, एक अधिक बाह्य चेतना में चला जाता है तो स्वभावतः वह उन चीजों को ठीक-ठीक अनुभव करना शुरू कर देता है जो सत्य चेतना तक पहुंचने में सहायता करती हैं और उन चीजों को भी अनुभव करता है जो रास्ता रोकती हैं या पीछे खींचती हैं, यहां तक कि प्रगति के विरुद्ध संघर्ष करती हैं। और इस कारण दृष्टिकोण बदल जाता है और मनुष्य यह कहने के लिये बाध्य हो जाता है : "यह दिव्य है, या यह भगवान् की ओर जाने में सहायक होता है; और वह भगवान् के विरुद्ध है, भगवान् का शत्रु है।"

परंतु यह कर्म के लिये, स्थूल जीवन में क्रिया करने के लिये एक व्यावहारिक दृष्टिकोण है—कारण, अभीतक मनुष्य उस चेतना तक नहीं पहुंचा है जो उस सबका अतिक्रमण करती है; कारण, मनुष्य ने उस आंतरिक परिपूर्णता को नहीं प्राप्त किया है जिसे पा लेने पर मनुष्य को फिर संघर्ष नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह संघर्ष के क्षेत्र से या संघर्ष के काल से या संघर्ष की उपयोगिता से परे चला जाता है। परंतु उससे पूर्व, अपनी चेतना या कर्म में उस स्थिति को प्राप्त करने से पहले, संघर्ष अवश्य रहता है, और यदि संघर्ष रहता है तो वहां चुनाव भी रहता है और चुनाव करने के लिये विवेचन आवश्यक होता है।

और विवेचन का सबसे अचूक साधन है भागवत 'संकल्प' और 'पथ-प्रदर्शन' के प्रति सचेतन, स्वेच्छाकृत, यथासंभव, पूर्ण आत्म-समर्पण। उस स्थिति में भूल करने और झूठी ज्योतियों को सच्ची ज्योतियां मानने का कोई खतरा नहीं होता।

४ जनवरी, १९५६ 'श्रीमातृवाणी', खण्ड ८

पृ० १-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नवीन प्रकाशन

अभीप्सा, त्याग, समर्पण शब्द मात्र नहीं, आन्तरिक सत्ता की स्थितियां हैं। इनमें से प्रत्येक को उसकी पूर्णता में सिद्ध करना, अपनी सत्ता में सर्वांगीण बनाना, सत्ता के हर अंग की चेतना को उस स्तर पर उठाना, प्रदीप की लौ का रूप प्रदान करना श्रीअरविन्द के अतिमानसिक योग में अनिवार्य चरण है। इसी विषय को सर्वसाधारण के लिये बोधगम्य बनाने का प्रयास है "दिव्य जीवन की ओर"। पृ० १६०; मूल्य : ४०रु०।

हर विचारशील व्यक्ति के सामने आज एक प्रश्न है। "अतिमानस क्या है ?" श्रीअरविन्द के द्वारा बार-बार घोषणा करने पर भी इसके अस्तित्व में, इसके पृथ्वी पर अवतरित होने में विश्वास करना मानव बुद्धि के लिये कठिन पड़ रहा है। इसे सरल, बोधगम्य बनाने का प्रयास है "अतिमानस की ओर"। पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०।

मनुष्य की संपूर्ण सत्ता का, उसके निम्नतम भाग शरीर का भी आत्मा की दिव्यता में रूपान्तर संभव है। रूपान्तर के विषय में हमारी धारणा सुस्पष्ट हो, इसी का प्रयास है, "रूपान्तर की ओर"। पृ० १६०; मूल्य : ५० रु०।

आगामी अतिमानसिक युग में संसार हर वस्तु का एक नया, शुद्धतम रूप देखेगा। आध्यात्मिकता अपने नये तथा शुद्धतम रूप में जगत् का त्याग नहीं करेगी। वरन्, आत्मा की दिव्यता में उसका रूपांतर संभव बनायेगी। इसी विषय की चर्चा है—"आध्यात्मिकता का नया स्वरूप"। पृ० १६०, मूल्य : ५० रु०।

—सुखवीर आर्य

प्राप्ति स्थान :

श्रीअरविन्द बुक्स डिस्ट्रीब्यूशन एजेंसी
श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी -२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

To make progress you must throw aside all the old constructions, demolish all the preconceived ideas. Preconceived ideas are the innumerable habitual mental constructions in which you live, which are fixed and therefore have no plasticity and cannot progress. All this must be thrown aside. Then new ideas are born, active thought which is creative.

The Mother

प्रगति करने के लिये तुम्हें सभी पुरानी रचनाओं को एक ओर झाड़ फेंकना और सभी पुराने विचारों को ढा देना चाहिये। पूर्व निर्धारित विचार वे असंख्य अभ्यस्त मानसिक रचनाएं हैं जिनमें तुम निवास करते हो, वे निश्चित होती हैं, उनमें कोई नमनीयता नहीं होती। वे प्रगति नहीं कर सकतीं। इस सबको एक ओर बुहार फेंकना चाहिये। तब नये विचारों का जन्म होता है, सक्रिय विचार का जन्म होता है जो निर्माणात्मक होता है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय :

मानव प्रकृति

जब भगवान् ने विश्व की रचना की तो पृथ्वी को भी बनाया। पृथ्वी पर उन्होंने एक छोटा-सा सुन्दर स्थान बनाया जिसको उन्होंने नाम दिया, पंजाब !

इस छोटे पंजाब में, भगवान् ने एक लंबा, बलवान पंजाबी तैयार किया। यह प्राणी बड़ा फुर्तीला था, उसने उठ कर मेहनत करना शुरू कर दिया। वह मेहनती था ही, साथ-साथ बड़ी अच्छी तरह काम भी करता था।

भगवान् जो उसके काम देख रहे थे, बड़े प्रसन्न हुए और एक दिन उसके सामने प्रकट होकर बोले "मेरे प्यारे पंजाबी, तुम कितने अच्छे हो ! मैं तुम्हारी कड़ी मेहनत और अच्छे काम से बहुत खुश हूं। अब जो चाहो, मांग लो।"

पंजाबी ने उत्तर में कहा "रब, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आप मेरे काम से प्रसन्न हैं। मैं केवल बड़े, बहुत बड़े पहाड़ अपने आसपास चाहता हूं।" भगवान् ने चुटकी भर में हरे-भरे पहाड़ खड़े कर दिये और उन्हें वन, उपवन, फलोद्यान से ढक दिया। पहाड़ों से छोटे-मोटे झरने मैदानों में उतर आये। पहाड़ों से गीत गाते ये झरने मैदानों को हरियाली से ऐसा ढकने लगे कि देखनेवाले की आंखें जुड़ा जायें।

अब तो पंजाबी खुशी से उछल पड़ा। वह पहले से भी अधिक मेहनत करने लगा और उछल-उछल कर उमंग से नयी-नयी चीजें बनाने लगा।

बहुत दिनों के बाद भगवान् फिर पंजाबी के पास आये और पूछा "मेरे प्यारे पंजाबी, कैसी चल रही है ?" पंजाबी ने उत्तर दिया "मैं बहुत खुश हूं। मेरे रब, सचमुच बहुत, बहुत खुश।" भगवान् ने मृदुता से कहा "यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान कर अच्छा लगा, लेकिन सचमुच बताओ, तुम्हें अब और कुछ चाहिये ?" पंजाबी ने उत्तर दिया "आप कितने उदार और दयालु हैं ! आपकी कृपा के सिवा मैं और क्या मांग सकता हूं ? फिर भी मैं अधिक प्रसन्न रहूंगा अगर मेरे पास पांच तंदुरुस्त गायें हों। ऐसी गायें जो बहुत सारा दूध देती हों।" भगवान् ने मानों जादू से पांच मोटी-ताजी गायें पंजाबी के सामने ला खड़ी कीं।

अब तो पंजाबी संसार का सबसे सुखी आदमी था। वह पहले से भी ज्यादा व्यस्त रहता था। गायों को चराने पहाड़ों पर जाता। उनका दूध लेकर दही, मक्खन और पनीर बनाता। गायों को नहलाता, अच्छा चारा बना कर खिलाता। बस, दिन-रात काम ही काम करता रहता। पंजाबी मालामाल हो गया, उसकी मेहनत रंग लायी! ऐसे अच्छे माहौल में भगवान् फिर से अपने प्रिय पंजाबी से मिलने आये।

आते ही बोले "आहा ! फिर से मैं अपने प्यारे पंजाबी से मिलने आया। कहो, कैसा हाल है ?"

पंजाबी बोला "अच्छा हूं, बहुत, बहुत अच्छी हालत में हूं।"

भगवान् बोले, "ओह ! तुम्हारी गायें कितना बढ़िया दूध देती हैं ! मुझे यह देख कर खुशी हो रही है।"

पंजाबी खुश हुआ, "मेरे रब, यह सचमुच बढ़िया है और सुस्वादु भी है। लीजिये, दो घूंट पी कर तो देखिये।"

भगवान् ने कहा, "अवश्य, अपने प्यारे पंजाबी के दिये दूध का स्वाद लूंगा।" पंजाबी ने गिलास भर कर भगवान् को दूध दिया। उन्होंने दूध पिया और सचमुच उसका स्वाद बढ़िया था। उन्होंने पंजाबी से कहा "इतना सुस्वादु, सुगंधित दूध मैंने पहले पिया न था।" भगवान् के हाथ से खाली गिलास लेते हुए पंजाबी ने व्यापारी लहजे में कहा, "दाम होगा पांच रुपये।"

यह कहानी मजेदार तो है ही, साथ-साथ हमें मानव प्रकृति का बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटीक चित्र दिखाती है। मनुष्य साधारणतः कृतज्ञता से वंचित रहता है। किसी लेखक ने कहा था "अगर तुम्हारी कोई सहायता करे या कोई तुम पर एहसान करे तो तुम उसे सह न पाओगे।" कृतज्ञता एक ऐसी क्षमता है जो केवल आंतरिक प्रगति करने के बाद ही मनुष्य प्रकट कर पाता है। भगवान् के प्रति तो हमारी प्रतिक्रिया ज्यादा विकृत होती है। जब हम सुखी होते हैं तो उन्हें कभी याद तक नहीं करते, न कृतज्ञ होते हैं, जब दुःखी होते हैं तो ज्यादातर मनुष्य उन्हें कोसते हैं। ठीक ही कहा गया है कि —

"दुःख में सुमिरन सब करै
सुख में करै न कोय
जो सुख में सुमिरन करै
तो दुःख काहे को होय"

—अनुबेन

सूचना

पुरोधा और अग्निशिखा के संपादक श्री रवीन्द्रजी ने दिनांक २४-८-२००१ को अपना पार्थिव देह त्याग दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोग के साधक

श्री रवीन्द्रजी

रवीन्द्रजी उन थोड़े-से व्यक्तियों में से थे जिन्हें श्रीमां ने पकड़ा था। गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) से आयुर्वेद में स्नातक परीक्षा पास कर अप्रैल सन् १९३८ में (२१ वर्ष की आयु में) गांधीजी के साथ वर्धा आश्रम में रहने के लिये वे हरिद्वार से चले थे। वर्धा आश्रम में कुछ दिन ठहरे फिर रवीन्द्रजी ने साथियों से कहा, "पांडिचेरी आश्रम देखकर वापस आ जाऊंगा।" उनका विश्वास गांधीजी में था और ग्राम में रहकर रचनात्मक काम करना चाहते थे। वे ३ जुलाई १९३८ को यहां पहुंचे थे।

रवीन्द्रजी ने श्रीमां से मिलना चाहा। श्रीमां ने कहा, "कुछ दिन और ठहर सको तो मैं समय दे सकूंगी।" वे ठहर गये। श्रीमां से उनकी मुलाकात लंबी हुई और मुलाकात के बाद अपने स्थान पर आकर लगभग एक घंटे तक हंसते ही रहे। निराला था उनका मुक्त हास्य। एक दिन उनका पुराना साथी आश्रम में उनकी हंसी सुनकर खोजता हुआ उनके पास पहुंच गया था। श्रीअरविन्द ने उनकी हंसी सुनकर श्रीमां से कहा था कि उसकी हंसी बहुत तालमय है।

श्रीमां ने उन्हें भोजनालय में काम दिया था। पर थोड़े-थोड़े समय के बाद वे उनका काम बदल देती थीं। भोजनालय के सब स्थलों पर उन्होंने थोड़े-थोड़े समय के लिये काम किया था। उन्हें हर काम का और उसकी कठिनाइयों का अनुभव करा कर, अंततः श्रीमां ने उन्हें शीर्ष स्थान पर रख दिया।

वे हर छोटे-बड़े काम को करने के लिये सोत्साह तैयार रहते थे। कुछ साधकों के घरों पर टिफिन पहुंचाने की बात आयी, क्योंकि काम के कारण वे लोग भोजनालय समय पर नहीं आ सकते थे। श्रीमां ने कहा, "मेरे पास गाड़ी तो है (हाथ से खींचनेवाली) पर मेरे पास पैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, जिससे किसी आदमी को रख सकूं।'' उन्होंने झट अपने-आपको इसके लिये प्रस्तुत कर दिया। कई वर्षों तक वे गाड़ी खींचते रहे। इसीलिये तब इनका नाम पड़ा था 'वण्डी-दा'।

इसी तरह घर-घर कोयला-वितरण का काम भी उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस दिन वे काले-भभूत हो जाते थे फिर भी निःसंकोच वे इस काम को कई वर्ष तक करते रहे।

रवीन्द्रजी ने काफी समय तक नमक बनाने का कार्य भी किया था। उन दिनों ब्रिटिश भारत से यहां कुछ आ नहीं सकता था और यहां जो नमक मिलता था उसमें मिट्टी, छोटी शंख-सीपियां, मछली की हड्डियां तक मिली होती थीं। ये सवेरे साढ़े तीन बजे भोजनालय पहुंच जाते। प्राप्त नमक को पानी में घोल, कपड़े से छानकर, कड़ाहे में पानी सुखाकर नमक बनाते थे। यह नमक बनाना श्रीमां ने उन्हें सिखाया था। यही नमक हमारे भोजनालय में काम आता था।

श्रीमां उन पर बहुत विश्वास करती थीं। हर जिम्मेदारी का काम उन्हें सौंपती जाती थीं। नये आनेवाले व्यक्तियों को कहां काम देना, यह भी उन पर आ पड़ा था। आरंभ में श्रीमां से परामर्श करके, बाद में अपने-आप देते थे।

ज्योतिन्-दा के देहावसान के पश्चात् लाँडरी और बेकरी का काम भी श्रीमां ने उन्हें संभालने को कहा।

हिन्दी साहित्य की इन्होंने जो सेवा की है वह अकल्पनीय है। श्रीमां और श्रीअरविन्द की पुस्तकों का जितना अनुवाद हिन्दी भाषा में उपलब्ध है उतना किसी अन्य भाषा में नहीं। इसका अधिकतर श्रेय रवीन्द्रजी को ही जाता है। और यह गंभीर और कठिन काम उन्होंने किया इतने सारे दायित्वों को संभालते हुए : भोजनालय, लाँडरी, बेकरी की पूरी व्यवस्था, फलों के थैले भरना, साधकों और आगंतुकों को अलग-अलग विभागों में काम देना, उन सबकी आवश्यकताओं और समस्याओं को सुनना, श्रीमां के लिये पेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार करना, अपने शिक्षा-केंद्र में हिन्दी कक्षाएं लेना, 'अग्निशिखा' और 'पुरोधा' दो मासिक पत्रिकाएं चलाना—इन सबको संभालते हुए।

हमारी परस्पर की बातचीत में अंग्रेजी के कुछ शब्द आ ही जाते हैं पर रवीन्द्रजी के हिन्दी बोलते हुए ऐसा नहीं होता था। एक बार दिल्ली कॉलेज के कुछ विद्यार्थी आये थे। भोजनालय में खाना खा रहे थे। उनकी रवीन्द्रजी से मिलने की इच्छा हुई। वे उस समय वहीं थे। उन लोगों के साथ रवीन्द्रजी की १५ मिनट तक बातचीत हुई। बाद में एक छात्र ने कहा "कैसी विचित्र बात है १५ मिनट की बातचीत में उनके मुंह से अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं निकला ! और यह अनुभव हम सबका है।

सन् १९७२ में, श्रीअरविन्द की शताब्दी के अवसर पर, सरकार ने रवीन्द्रजी से अनुरोध किया कि वे श्रीअरविन्द और श्रीमां पर कुछ पुस्तकाकार रूप में लिखें। वे इसके लिये तैयार न थे, इसलिये कि कौन भला इनके बारे में लिख सकता है, इनका जीवन तो ऊपरी तल पर नहीं जिया गया। सारी बात उन्होंने श्रीमां के सामने रखी। श्रीमां ने कहा "तुम नहीं लिखोगे तो सरकार किसी और से लिखवा लेगी और वह और भी खराब चीज होगी। अच्छा है, तुम ही लिखो।" इसके बाद ही उन्होंने श्रीअरविन्द-श्रीमां पर हिन्दी और अंग्रेजी में कई पुस्तकें लिखीं : 'लाल कमल', 'श्वेत कमल', 'श्रीअरविन्द : जीवन और दर्शन', 'श्रीअरविन्द : शाश्वत के प्रतिनिधि', 'White Lotus', 'Red Lotus' आदि।

अभी पिछले वर्ष हिन्दी में इतना कार्य करने के उपलक्ष्य में बंगाल सरकार ने इन्हें 'श्रीअरविन्द पुरस्कार' से सम्मानित किया था।

सन् १९६८ में रवीन्द्रजी ने श्रीमां को लिखा था :

माताजी,

मैं भोजनालय में तीस वर्ष काम कर चुका हूं। अगर आपको लगे कि भविष्य की आवश्यकताओं की दृष्टि से मेरे स्थान पर युवकों को रखना ज्यादा अच्छा रहेगा तो मैं खुशी से पीछे हट जाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमां ने उत्तर दिया "काम के लिये अधिक अच्छा है कि तुम जारी रखो क्योंकि तुम मुझे बुला सकते और अनुभव कर सकते हो। एक युवक शायद अधिक ऊर्जा से तो भरा होगा पर वह मानेगा कि वह स्वयं काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे बने रहने के लिये ईमानदारी, सचाई तथा अन्य अच्छे कारण भी हैं जिनका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं।"

फलों के थैले भरना जैसा साधारण काम भी श्रीमां ने कितने जतन से सिखाया था और कैसी साधना थी शिष्य की। श्रीमां कहती थीं—फलों की ट्रे ले आओ और इसे पकड़े रहो। मां स्वयं एक-एक बैग उठातीं, खोलतीं, उसमें फल डालकर बांधकर रखतीं। एक-एक घंटा लग जाता था और ये ट्रे थामे खड़े ही रहते। एक दिन श्रीमां ने कहा, 'ये ५ थैले तुम भरो'। बाद में मां ने देखा, समझाया कहां ठीक नहीं हुआ। इस तरह एक महीने तक उनसे थैले भरवाती रहीं और देखती व समझाती रहीं कि कैसे देना होता है। उसके बाद बोलीं 'अब तुम भरो'। इस प्रकार श्रीमां ने उन्हें स्वयं प्रशिक्षित किया था।

भौतिक में साधना के फलस्वरूप इस समय भौतिक की कई कठिनाइयां उभर कर ऊपर आ गयी हैं और साधना की अच्छी अवस्थाएं पीछे धकेल दी गयी हैं। उनकी भी भौतिक कठिनाइयां रहीं, काफी शारीरिक कष्ट सहना पड़ा। पर अंतिम दिन (२४.८.०१) उन्होंने अपना शरीर बड़ी शांति में छोड़ा।

इन अंतिम दिनों उनका मन इसी में घूमता था कि 'दिव्य जीवन' पुस्तक का अनुवाद उर्दू भाषा में हो गया है या नहीं, चीनी भाषा में हो गया है या नहीं, रूसी भाषा में हो गया है या नहीं, इस संबंध में किस-किस को पत्र लिखना होगा, क्या करना होगा इत्यादि—यही था इन दिनों उनके चिंतन का विषय।

इन कर्मयोग के साधक श्री रवीन्द्रजी को मेरा श्रद्धा पूर्वक नमन।

—ज्ञानवती गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. जिस व्यक्ति में जीवन और उसकी कठिनाइयों का धीरज और दृढ़ता के साथ सामना करने का साहस न हो वह साधना की ज्यादा बड़ी आंतरिक कठिनाइयों का सामना कभी न कर पायेगा। इस योग का पहला पथ यह है कि जीवन और उसकी मुसीबतों का शांत मन, दृढ़ साहस और दिव्य शक्ति पर पूरे भरोसे के साथ सामना किया जाये।

२. किसी प्रकार के अनुत्साह को अपने अंदर न आने दो। भागवत कृपा पर किसी प्रकार का अविश्वास न करो। अगर तुम अपनी श्रद्धा और अभीप्सा के साथ दृढ़ता से चिपके रहो तो तुम्हारे बाहर जो भी कमजोरियां हैं उन सबमें से एक गुप्त शक्ति तुम्हें पार कर देगी . . . लेकिन मार्ग पर दृढ़ बने रहो—तब अंत में चीजें अपने-आप खुल जायेंगी और परिस्थितियां आंतरिक भाव के आगे झुक जायेंगी।

३. तुम्हारी कठिनाई का और कोई कारण नहीं है, तुम उसके खटखटाने को तत्परता से सुनते हो और झट दरवाजा खोल देते हो।

४. अगर तुम केवल भगवान् को ही चाहते हो तो यह पूरी तरह निश्चित है कि तुम भगवान् तक पहुंचोगे। लेकिन हर कदम पर शंकाएं और खीझ देर लगाती हैं और आंखों के सामने बाधा डालनेवाला पर्दा डाले रखती हैं, हर कदम पर जब आदमी कुछ आगे बढ़ता है तो विरोधी शक्तियां उसके पैरों के बीच शंका की यह रस्सी फेंकती हैं और ठोकर के साथ रोकने की कोशिश करती हैं—यह तो उनका पेशा ही है। तुम्हें यह कहना चाहिये, "चूंकि मैं सिर्फ भगवान् को ही चाहता हूं इसलिये मेरी सफलता निश्चित है। मुझे पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ते जाना है और स्वयं भगवान् का हाथ गुप्त रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके रास्ते पर उन्हीं के समय पर मुझे उनके पास ले जायेगा।" इस बात को तुम्हें अपने आगे सतत मंत्र की तरह रखना चाहिये।

५. भौतिक जगत् के जो दुःख-दर्द और दुर्गति अवचेतना में निराशा को जन्म देते हैं उन्हें खत्म करने का एकमात्र उपाय है भगवान् के साथ पूर्ण ऐक्य और उनकी पूर्ण अभिव्यक्ति। भगवान् के साथ पूर्ण ऐक्य में ही चेतना शाश्वत आनंद पा सकती है और यह सचेतन ऐक्य ही पार्थिव जीवन का सच्चा लक्ष्य है।

६. कठिनाइयों के कारण हिम्मत न हारो। जब भी कोई जीवन में कुछ प्राप्त करना चाहता है तो कठिनाइयां आती ही हैं। उन्हें तपस्या के रूप में लो जो तुम्हें मजबूत बनाती हैं और तुम आसानी से उन पर विजय पा सकोगे।

७. यह कभी न भूलो कि कठिनाइयां जितनी बड़ी होती हैं, हमारी संभावनाएं भी उतनी ही बड़ी होती हैं। जिनमें बहुत क्षमताएं हैं, जिनके आगे महान् भविष्य है, उन्हें ही ज्यादा बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

८. चाहे और किसी भी बात पर शंका कर लो पर यह निश्चित है कि जो केवल भगवान् को चाहता है वह भगवान् तक जरूर पहुंचेगा— यह दो और दो चार से भी बढ़कर निश्चित है। प्रत्येक साधक के हृदय की गहराई में यह श्रद्धा होनी चाहिये। यह हर बार कदम लड़खड़ाने पर, हर प्रहार और हर अग्नि-परीक्षा के समय उसे सहारा देगी। मिथ्या विचार अभीतक तुम्हारे मन पर अपनी छाया डालते हैं और तुम्हें यह श्रद्धा पाने से रोकते हैं। उन्हें एक ओर धकेल दो तो तुम्हारी कठिनाई की कमर टूट जायेगी।

९. अगर हम कठिनाइयों को प्रगति के सबसे अधिक प्रभावशाली मार्ग के रूप में देखें तो उनकी कटुता जाती रहती है और उन्हें सहना आसान हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. जब हम सभी परिस्थितियों में भगवान् को पुकारना और अपने जीवन की सभी घटनाओं में उन्हें साझीदार बनाना सीख लेते हैं तो सारा जीवन आनंद बन जाता है क्योंकि भगवान् हर चीज को अपने आनंद से ढक लेते हैं।
११. सभी कठिनाइयों का इलाज तभी हो सकता है जब अपनी इच्छा और सुविधाओं पर अहंकारभरी एकाग्रता बंद हो जाये।
१२. मैं समझ सकती हूं कि जीवन कठोर है लेकिन भगवान् की शक्ति असीम है और जो ईमानदारी से उसके लिये प्रार्थना करते हैं उन्हें हमेशा मिल सकती है।
१३. यह प्राचीन कथन ठीक था कि "हम और हमारा आदि स्रोत, हम और हमारे भगवान् एक हैं।"
१४. सुखी होना जीवन का लक्ष्य नहीं है। साधारण जीवन का लक्ष्य है अपने कर्तव्य को पूरा करना; आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य है भगवान् को पाना।
१५. सच्चा मनोभाव न तो संन्यासी बनना है और न कामना में लिप्त होना।
१६. हमेशा अपनी चेतना के शिखर पर बने रहो और तुम्हारे साथ जो कुछ घटित होगा वह हमेशा सर्वोत्तम होगा।
१७. अपने-आपको बदल दो और परिस्थितियां भी बदल जायेंगी।
१८. प्रयास और संघर्ष के बिना जीवन में कुछ भी नहीं प्राप्त होता।
१९. बाहरी इन्द्रियानुभूतियों में उतना मत निवास करो, हृदय की गहराई में प्रवेश करो। वहां शाश्वतता की शांति विद्यमान है और वह तुम्हारी सहायता करेगी।
२०. जितनी बड़ी कठिनाई आती है उतनी ही बड़ी विजय भी आती है। बस, सहन करो और तुम अवश्य विजयी होगे।
२१. ज्ञान मन में से नहीं आता, वह आता है अंतरात्मा की गहराइयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा उच्चतर चेतना से।

२२. केवल जान भर लेने से क्या लाभ ? मैं तुमसे कहता हूं ज्ञान के अनुसार कर्म कर और वही बन जा। क्योंकि इसी के लिये भगवान् ने तुझे इस मानव शरीर में भेजा है।

२३. यदि तेरा उद्देश्य महान् हो और साधन छोटे, फिर भी कर्म कर, क्योंकि केवल कर्म के द्वारा ही ये तेरे लिये वर्धित और विकसित हो सकते हैं।

२४. सच्ची भावना में किया गया कर्म ध्यान ही है।

२५. भगवान् के लिये कर्म करना शरीर से उनकी प्रार्थना करना है।

२६. यदि तुम कुछ भी न करो तो तुम्हें कोई अनुभव नहीं होगा। सारा जीवन ही अनुभव का क्षेत्र है। प्रत्येक क्रिया—व्यक्ति जो भी कर्म करता है और उसके अंदर जो भी विचार आता है—एक अनुभव हो सकती है। कर्म विशेष रूप से अनुभव का स्वाभाविक क्षेत्र है जहां व्यक्ति को उस उन्नति को चरितार्थ करना चाहिये जिसे वह अपने अंदर करने का प्रयत्न कर रहा है।

२७. नियमित हो सकने की क्षमता एक बहुत बड़ी शक्ति है,—इससे व्यक्ति अपने समय का और अपनी गतिविधियों का स्वामी बन जाता है।

२८. यह बात बिलकुल सच है कि भौतिक वस्तुओं में एक चेतना होती है जो रख-रखाव का अनुभव करती और उसका उत्तर देती है, और लापरवाह स्पर्श या रूखे व्यवहार को झट महसूस करती है। इस बात को जानना तथा अनुभव करना तथा चीजों के साथ सावधानी बरतना सीखना चेतना की एक महान् प्रगति है।

२९. अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति में, चाहे वह बौद्धिक हो या सक्रिय, तुम्हारा एकमात्र मंत्र होना चाहिये 'स्मरण और समर्पण'। तुम जो कुछ भी करो वह सब भगवान् के अर्पण रूप हो। यह तुम्हारे लिये एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर अनुशासन बन जायेगा और अनेक मूर्खतापूर्ण और निरर्थक काम करने से तुम्हें रोक देगा।

३०. अपने काम में जब तुम यह देखो कि कोई वस्तु तुम्हें बाहर से तंग कर रही है तो अपने अंदर झांको और तुम पाओगे कि उससे मिलती-जुलती कठिनाई तुम्हारे अपने अंदर है। अपने-आपको बदल लो और बाहर की परिस्थितियां बदल जायेंगी।

३१. जो नयी ज्योति पृथ्वी पर उदित हुई है उसकी ओर अपने-आपको खोल दो और एक ज्योतिपूर्ण पथ तुम्हारे सामने प्रसारित हो जायेगा।

जय श्रीअरविन्द

श्रीअरविन्द सनातन ज्योतिर्मय जगदीश्वर जय!
चिर सुषुप्ति में नये जागरण के सूर्योदय जय!
धरती पर आलोक-भरा आया तेरा स्यन्दन,
पुलकित प्राणों से हम करते उसका अभिनन्दन! श्रीअरविन्द ...

कालातीत काल के पथ पर अंधकार में आये,
जहां नहीं थी राह बना आलोक रथी आये;
नये फूल डालों पर वन में नयी चेतना मन में,
धरती के जीवन में आया नूतन भाग्योदय। श्रीअरविन्द ...

—छोटेनारायण शर्मा
'पुष्प-गुच्छ' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(गतांक से आगे)

इसी समय मुझे एक साधक की जटिल बीमारी का सामना भी करना पड़ा था। वह पक्का अंग्रेज था, शुष्क किंतु शिष्ट, सुसंस्कृत और संवेदनशील कवि किंतु बेचारे का स्वास्थ्य बचपन से कभी अच्छा न रहा और बड़ी आयु में उसकी मानसिक स्थिति भी डांवाडोल थी। मैं कुछ वर्षों से उसकी जिगर और अजीर्ण की बीमारी, जो दीर्घकाल से उसे परेशान करती थी, उनकी चिकित्सा कर रहा था। तब एक नये रोग ने उस पर आक्रमण किया। इन सब चीजों के कारण या स्वभाव से ही वह बहुत आशावादी न था। इन सबके अलावा उसे गठिया और पोलियो भी हो चुका था। माताजी और श्रीअरविन्द उसके इस मिजाज को अच्छी तरह जानते थे और मुझे समझाया कि मैं भी उसके साथ इसी विचारशीलता से पेश आऊं जिस तरह वे पेश आते थे। श्रीअरविन्द की शक्ति ने उसे बहुत अच्छे कवि में परिवर्तित कर दिया था। मैं विस्मित हो रहा था कि इतने कमजोर शरीर से वह योग कैसे कर रहा था। खैर, वह मेरा सिरदर्द न था। उसकी नयी बीमारी का निदान करने में असफल हुआ तो मैंने दूसरे डॉक्टरों को बुलाया और जैसा कि ऐसी स्थिति में होता है, हर डॉक्टर की राय भिन्न थी। विशेष परीक्षण करने के लिये अस्पताल में विशेष सुविधाएं भी न थीं। अब उसे ज्वर आता था, पीलिया हो गया था, फोड़े तथा जोड़ों में दर्द भी हो रहा था, जैसे शारीरिक शिकायतों की एक भीड़ इकट्ठी हो गयी थी जिसके कारण वह बेहद चिड़चिड़ा हो गया था। वह सोक्रेटीस की तरह मुझसे अपनी अस्वस्थता के बारे में क्या और कैसे के तरह तरह के प्रश्न पूछता रहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, और उसका अंतिम प्रश्न होता था वह कब स्वस्थ होगा ? मैं माताजी और श्रीअरविन्द के सामने उसका स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता और बहुत बार वे उसका पक्ष लेते। वे उसकी जिज्ञासा को सराहते और जो भी दवाई दी जाती उसे निगलने के उसके इंकार को उचित समझते। मैंने जब श्रीअरविन्द को बताया कि 'मेन्चेस्टर गार्डियन' के धूल भरे पुराने अंकों को हटाने का वह विरोध करता है, तो श्रीअरविन्द ने उसकी भावना को समर्थन दिया। एक दिन माताजी ने मुझे कहा कि मैं जब श्रीअरविन्द को पंखा झल रहा था तो उन्होंने अंतर्दर्शन देखा कि वह मरीज मुझे कह रहा था "तुम मुझे ठीक क्यों नहीं करते ?" दूसरी ओर श्रीअरविन्द ने मुझे कहा था कि मरीज अपने बीमार शरीर से तंग आ चुका था और उसे छोड़ना चाहेगा। हमारे व्यक्तित्व का निर्माण कितने परस्पर विरोधी पक्षों से बना है! मेरी आंतरिक टिप्पणी यह थी कि माताजी की गुह्य दृष्टि हमारी सारी गतिविधियों को देख सकती है। अगर केवल वे हमें उपाय बता देतीं! इस प्रश्न के उत्तर में श्रीअरविन्द ने टाल-मटोल-सा जवाब दिया था, "तुम क्यों चाहते हो कि हम तुम्हारा काम करें ?" खैर, उसका मतलब क्या था, वह मैं समझ गया। एक विनोदपूर्ण प्रसंग है जो इस मरीज की बीमारी से जुड़ा है, इसे लिखना पाठकों के लिये मजेदार होगा। माताजी ने चिकित्सा के काम के दौरान कहा था कि मुझे अंतःप्रज्ञा की शक्ति को विकसित करना चाहिये। उसे विकसित करने की मेरी एक पद्धति थी कि ध्यान करते समय किसी विशेष केस के बारे में मैं ऐसा कुछ देख पाऊं, सुन पाऊं या अनुभव करूं जो मेरी सहायता करे। इस विशेष बीमारी के असमंजस में मैंने इसी पद्धति को अपनाया। कई असफलताओं के बाद मैंने ध्यान में जो देखा, वह था बैगुन! जब श्रीअरविन्द और अपने साथियों के आगे मेरे मुंह से यह निकल पड़ा तो सब ठहाका मार कर हंस पड़े। तब से वे लोग मेरा मजाक "नीरद का बैगुन अंतर्ज्ञान" कह कर उड़ाया करते!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस करुण कहानी का अंत यह था कि केस में कोई सुधार दीखता न था; एक के बाद एक उलझनें बढ़ती गयीं। सबसे बढ़कर मुश्किल यह थी कि उसकी बाह्य चेतना दिव्य शक्ति को सक्रिय उत्तर दे न पा रही थी। माताजी ने अंत में यही देखा कि मरीज को बचाने का एकमात्र उपाय यही था कि उसे बैंगलोर में हमारे परिचित कुशल जर्मन डॉक्टर के पास भेजा जाये। श्रीअरविन्द ने मुझे मरीज की बीमारी के इतिहास की स्पष्ट और पूरी रिपोर्ट तैयार करने का आदेश दिया, और माताजी को वह रिपोर्ट सुनाकर, फिर डॉक्टर के पास भेजने के लिये कहा। जब वह रिपोर्ट तैयार हुई तो मैंने माताजी और श्रीअरविन्द दोनों को सुनायी। श्रीअरविन्द ने कहा, "उत्तम"! सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई। मेरी रिपोर्ट पढ़कर डॉक्टर मरीज को लेने के लिये यहां आ पहुंचे। वे हमारे विचार से सहमत थे कि यह रक्त-विषयन का केस होगा। जब मरीज के जाने का समय आया तो माताजी अपनी छत पर उसके लिये खड़ी रहीं, काफी समय बीता, फिर मरीज की कार उनके सामने आयी, तब माताजी और मरीज काफी देर तक एक दूसरे को देखते रहे। मरीज को पूर्वाभास हो गया था कि वह लौटकर न आ पायेगा।

हम इस घटना से दुःखी थे किंतु हमारे पास और कोई विकल्प न था। दूसरे दिन तार आया कि मरीज ने अचानक रेल में अचेत होकर देह छोड़ दिया। जैसे ही मैंने यह सुना मेरा सिर चकराने लगा और मुझे श्रीअरविन्द के पास बैठ जाना पड़ा। यह बड़ा भीषण धक्का था! शव परीक्षा से यह पता चला कि हृदय के आवरण में सूजन थी और हृदय के पीछे थोड़ा-सा द्रव जम गया था किंतु निदान में उसका कोई चिह्न न दिखायी दिया था।

अब मैं चिकित्सा-इतिहास को एक, दो सफल उदाहरण देकर समाप्त करूंगा। चंपकलाल की यौगिक शक्ति द्वारा रोग-मुक्ति का असाधारण केस था। उनके आंख के श्वेतपटल पर फोड़ा और परितारिका शोथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(iritis) हो गया था। मैं उनको शहर के आंख-विशेषज्ञ के पास ले गया। उन्होंने उनको पूरा विश्राम करने की सलाह दी। अब उनको श्रीअरविन्द की सेवा का काम छोड़ना पड़ा। इस काम के इंकार ने उन्हें आंख की पीड़ा से भी ज्यादा कष्ट दिया। एकदम हताश होकर वे बिस्तर पर गतिहीन असहायता में कई दिन तक लेटे रहे किंतु उनकी हालत में कोई सुधार न आया। माताजी और श्रीअरविन्द शांति से चंपकलाल के विषय में मेरी रिपोर्ट सुनते। एक दिन माताजी उनको देखने स्वयं चली गयीं। लौटकर उन्होंने श्रीअरविन्द से कहा "यह केस गंभीर है। उसे एक क्षण भी बिस्तर पर पड़े रहना न चाहिये। उसको अपना काम शुरू कर देना होगा।" मैं सुनकर स्तब्ध रह गया और कुछ समझ न पाया कि किस आधार पर उन्होंने यह वक्तव्य दिया होगा। वह आत्मपरक था या वस्तुनिष्ठ था ? बेशक चिकित्सा के अपने कई उदाहरणों से मैंने देखा था कि उनकी दृष्टि हमारी नजर से परे देखती है। चंपकलाल की आंख से पट्टी खोली गयी और वे अपना काम करने लगे। ताज्जुब की बात यह थी कि किसी भी चिकित्सा के बिना वे दो-तीन दिन में ठीक हो गये। दिव्य शक्ति की सहायता के अलावा श्रीअरविन्द की भौतिक निकटता के मनोवैज्ञानिक सक्रिय अनुभव का भी उसमें काफी बड़ा हाथ होगा।

यौगिक रोग-मुक्ति का एक छोटा प्रसंग मेरे केस में भी हुआ था। जब मैं श्रीअरविन्द की सेवा कर रहा था, मेरे पेट में ऐसा तीक्ष्ण दर्द उठा कि मुझे काम छोड़कर लेटना पड़ा। श्रीअरविन्द को मेरा हाल सुनाया गया। मैं फर्श पर दर्द से छटपटा रहा था, तब अचानक मैंने अपने अंदर से आवाज सुनी, "एकदम शांत बने रहो।" अपने संकल्प बल पर पूरा जोर लगाकर मैं लकड़ी के तख्ते-सा लेटा रहा। मुझे पता नहीं कब गहरी नींद आ गयी, ऐसी नींद मानों मॉरफीन का इंजेक्शन दिया गया हो। जब मैं जाग गया तो बिलकुल सामान्य था।

अभी तक हम लोगों ने देखा है कि उचित मनोवैज्ञानिक स्तर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव ने दिव्य शक्ति के हस्तक्षेप को रोका था। अब हम एक ऐसी गंभीर बीमारी का केस देखेंगे जिसके लिये श्रीअरविन्द ने कहा था कि दिव्य हस्तक्षेप का प्रभाव पूरी तरह सफल रहा।

मरीज 'स' एक दुबला पतला प्रायः चालीस साल का आदमी था। उसे अम्ल पित्त की तकलीफ थी, वह चिकित्सा के लिये मेरे पास आया। किंतु चूंकि वह बेहद पेटू था इसलिये रोगमुक्ति के मुख्य अंग को निभा न पाता, और वह था भोजन। १९३४ में जब मुझे दवाखाने का काम सौंपा नहीं गया था, उसने मुझे अपने यहां चाय पीने का निमंत्रण दिया। मैंने माताजी से इजाजत चाही क्योंकि तब हमें साधना के अलावा किसी भी बाह्य कार्य के लिये उनकी अनुमति लेनी चाहिये, ऐसा नियम था। तब श्रीअरविन्द ने कहा, " 'स' की वानगियां न खाना अच्छा होगा। इसकी पकाने की लत ने फिर से उसमें भोजन की लालसा जगायी है और वह फिर से बीमार पड़ गया है जब कि मैंने उसे पूरी तरह रोगमुक्त किया था।"

उसके एक वर्ष बाद—शायद १९३५ में वह पहली बार मेरे पास अपनी चिकित्सा के लिये आया था। मैंने अपने डॉक्टरी रिपोर्ट में श्रीअरविन्द को लिखा, " 'स' का रहस्य खुल गया। कच्चे आमों के साथ-साथ उसने कई रसगुल्ले भी उड़ाये थे। भोजन का यह मामला उस पर प्रायः हावी हो गया है।" श्रीअरविन्द ने उत्तर में लिखा, "मैंने ऐसा ही सुना है। प्रायः क्यों ? हमने हमेशा के लिये उसका स्टोव हटा दिया है। थोड़ा बचकाना उपाय है किंतु और क्या किया जा सकता है ?" मैंने रिपोर्ट लिखना जारी रखा और उन्होंने उत्तर दिया, ठीक है। चिकित्सक डॉक्टर उसकी बीमारी की वापसी से अचरज में पड़ गये थे। फिर उन्हें पता चला कि जब वे बाहर जाते थे तो 'स' चुपचाप उठकर स्टोव पर अपने लिये खाना पकाता था। जिह्वा लिप्सा उसके लिये अपने जीवन से भी ज्यादा मूल्यवान थी। कुछ पांच महीनों के बाद मेरे पास श्रीअरविन्द का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र आया, "क्या 'स' की हालत खतरनाक स्थिति में है या संकटपूर्ण है ? अगर ऐसा हो या ऐसी स्थिति हो जाये तो किसी फरासीसी (फ्रेंच) डॉक्टर को बुलाना चाहिये, वही इस केस की जिम्मेवारी ले लेगा . . . माताजी को रात को जगाया गया और उन्हें बताया गया कि 'स' की हालत बहुत नाजुक है, उसे हिचकियां आ रही हैं। मैं मानता हूं कि अभी तक फ्रेंच डॉक्टर को बुलाया गया होगा। अगर मामला गंभीर हो तो हमें दिन में दो तीन बार समाचार भेजना उचित होगा।" मैंने उत्तर लिख भेजा, "'स' की हालत न तो खतरनाक है, न संकटपूर्ण। यह केस अत्यधिक अम्लता का है। उसने काफी वमन किया है और अब उसे थोड़ा आराम हुआ है। पर मैं सुन रहा हूं कि वह हमारे विख्यात होमियोपेथ डॉक्टर 'र' से इलाज करवाना चाहता है। अगर आपकी अनुमति हो तो मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" श्रीअरविन्द ने मुझे लिख भेजा, "मैं चाहता हूं कि तुम अपनी चिकित्सीय भावना को अभी के लिये भावशून्य कांच के केस में रख कर एक कोने में बिठा दो . . . और 'स' की परिचर्या और अन्य व्यवस्था करने में होमियोपेथ की सहायता करो।" मैंने मरीज 'र' को सौंप दिया और श्रीअरविन्द के आदेशानुसार परिचर्या का काम करता रहा। वे यह भी चाहते थे कि मैं मरीज की रिपोर्ट पहले की तरह उन्हें भेजता रहूं। मरीज ने प्रचुर मात्रा में रक्त वमन करना शुरू किया और मल में भी रक्तस्राव था। मैंने गुरु से पूछा कि दिव्य शक्ति को कार्य करने के लिये क्या बहुत ब्योरेवार रिपोर्ट आवश्यक है ? उन्होंने उत्तर दिया, "एकदम आवश्यक ! गलत सूचना या महत्त्वपूर्ण बातों को छिपाने से परिणाम भयंकर हो सकते हैं।" मैंने रिपोर्ट भेजी, "उसकी स्थिति रात को खतरनाक हो सकती है। दो चीजें करनी चाहिये। उसकी हिचकियां रुकनी चाहिये और उसे नींद आनी चाहिये। इस समय वह बहुत कमजोर है। आपको विश्वास है कि वह स्वस्थ होगा ?" उनका उत्तर आया, "नहीं। इस केस के आरंभ से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बहुत विश्वास नहीं है . . . परिस्थितियां बहुत ही प्रतिकूल रही हैं और स्वास्थ्य लाभ के लिये दिव्य शक्ति को वह प्रत्युत्तर नहीं मिल रहा जिसके कारण स्वास्थ्य लाभ हो। केवल समय का प्रश्न रह जाता है। मुझे लगता है कि यह पुराना रोग है जो हठात् तीव्र और खतरनाक हो उठा है। अगर कल सुबह तक स्वास्थ्य में सुधार न हो तो हम फिलेअर[१] को बुलायेंगे। आशा है कि सब कुछ समय पर होगा।''

अगले दिन मरीज की हालत अचानक अच्छी होने लगी और खतरे से बाहर हो गयी। माताजी का नीचे सबको आशीर्वाद देने के लिये उतरने के साथ-साथ मरीज गहरी नींद सो गया और उसकी हिचकियां अल्प समय के लिये रुकी रहीं। इस समय मुझे लगा कि मरीज ने संकट रेखा लांघ ली है। मेरी इस धारणा का समर्थन करते हुए श्रीअरविन्द ने लिखा, ''ऐसा ही कुछ था—खतरे के टलने की और दिव्य शक्ति के संचार का भाव था . . . स्थिति में इतना अंतर आ गया है कि 'स' के शरीर ने दिव्य शक्ति को प्रत्युत्तर देना शुरू किया है जब कि पहले वह बिलकुल अनुकूल न था। अब विरोधी शक्तियों का प्रभुत्व नहीं है जो पहले था। परंतु हम इस बीमारी के परिणाम के बारे में निश्चित हो सकें इससे पहले मरीज की दिव्य शक्ति के प्रति प्रतिक्रिया बढ़ती रहनी चाहिये। हिचकियों के डटे रहने का दुराग्रह एक काला दाग है जो मिट जाना चाहिये।''

बहुत दिनों के लंबे और कठिन रतजगे, माताजी और श्रीअरविन्द की अथक एकाग्रता, मेरे मरीज के स्वास्थ्य लाभ की दैनिक रिपोर्ट, होमियोपेथ की भूलचूक और कारगर दवाइयों के बाद मरीज चंगा हो गया। मुझे पता न चला कि श्रेय किसको मिलना चाहिये—दिव्य शक्ति को या होमियोपेथ को। एक यह अनुमान भी था कि मरीज के संपूर्ण समर्पण ने

[१] फ्रेंच शल्य-चिकित्सक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चमत्कार को संभव बना दिया। जब उसे इतनी अधिक मात्रा में रक्त वमन करते देखा था तो मैंने उसके अच्छे होने की आशा छोड़ दी थी। ऑपरेशन का प्रश्न न उठा था क्योंकि स्थानिक अस्पताल के सर्जन इतने काबिल न थे। श्रीअरविन्द ने उनके नाम का सुझाव इसलिये दिया था ताकि हम कानून से बचे रहें क्योंकि हमें यहां चिकित्सा करने का अधिकार नहीं दिया गया था। जिस होमियोपेथ को यह केस सौंपा गया था उस पर भी मुझे बहुत श्रद्धा न थी हालांकि शहर में उसने बहुत नाम कमाया था। मरीज के पक्ष में मैं एक बात कहना चाहूंगा कि उसने कभी आशा नहीं छोड़ी और वह पूरी तरह सचेतन रहा। अगर कभी मैं चिंतित हो उठता तो वह मुझे ढांढस बंधाता, "डॉक्टर, यह मत सोचना कि मैं मरने जा रहा हूं।" श्रीअरविन्द ने मुझे लिख भेजा, "उसे योग-शक्ति में आस्था है, इसके कारण सहायता मिलती है।" इस रोग-मुक्ति को लेकर मेरी जो त्रिशंकु हालत थी उससे मुक्त होने के लिये मैं श्रीअरविन्द का स्पष्ट उत्तर चाहता था कि इस केस में किस तत्त्व ने मुख्य भूमिका निभायी—दिव्य शक्ति ने या डॉक्टर ने। मुझे डॉक्टर के ऊपर शंका थी क्योंकि उसने बहुत गड़बड़ी की थी जिन्हें श्रीअरविन्द ने पकड़ लिया था और उसे ठीक करने के लिये उन्हें दिव्य शक्ति का प्रयोग करना पड़ा था। श्रीअरविन्द ने केस पर प्रकाश डालते हुए पूरी व्याख्या के साथ उत्तर दिया, "जैसा कि बहुत बार होता है उसके हृदय ने जब गंभीरता से अशिष्ट ढंग से चलना शुरू किया तब उस खतरे की प्रतिक्रिया में एक बड़ी शक्ति नीचे उतरने लगी और 'स' के शरीर ने उसे अच्छा प्रत्युत्तर दिया—उस प्रत्युत्तर ने ही उसे बचाया, समर्पण ने नहीं ..." मैं मानता हूं कि 'र' की दवाइयों की अपेक्षा दिव्य शक्ति को ज्यादा श्रेय मिलना चाहिये। फिर भी दवाइयां उपयोगी थीं और अनिवार्य सहायता दे रही थीं। जब भी महान् दिव्य शक्ति उतरती थी तभी 'स' उछल कर आगे बढ़ता था, और हर बार दिव्य शक्ति द्वारा निर्देशित राह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उछलता था, पहली छलांग में हृदय स्वस्थ हो गया, दूसरी में जिगर रोगमुक्त हुआ और तीसरी में अम्लता की अति दूर हो गयी। दो बार 'र' बाधा और साथ-साथ सहायक भी था, पहली बार अपने उस परेशान करनेवाले निर्णय के कारण जब उसने 'यलो फीवर' को उसके शरीर में जगाया—यह ठीक था कि पित्त को निकाल बाहर करना जरूरी था किंतु इस खतरनाक उपाय से नहीं; दूसरा अवसर तब था जब उसने 'नींबू के पानी' का अत्यधिक उपयोग किया, नारंगी का रस था उपयोगी किंतु उसकी भी अति हो गयी थी। जैसे ही उसने अपनी पहली भूल सुधार ली पित्त स्वतः ठीक हो गया—उसी तरह जब दूसरी भूल को कुछ हद तक सुधारा और नारंगी के रस के साथ उचित ढंग से दवाई दी तो बाकी सब सुधरने लगा . . . अगर ऐसा ही था, तो हम कह सकते हैं कि दिव्य शक्ति को कार्य करने का सीधा अवसर मिला—उसे सहायता मिली, बाधा नहीं।"

तो असंख्य केसों में यह एक ऐसा केस है जिसको मैंने कदम-कदम पर ध्यान से देखा है और श्रीअरविन्द के अपने शब्द दिव्य शक्ति द्वारा रोग मुक्ति की सचाई का आश्वासन देते हैं।

(क्रमशः) —नीरदवरण

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा....... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथ्यात्व

माताजी ने कहा है कि मिथ्यात्व परम पुरुष की वेदना है। इस मिथ्यात्व का इलाज करने के लिये, इसे लुप्त करने के लिये परम प्रभु और उनकी शक्ति—परमजननी दोनों सृष्टि की अतल गहराइयों में उतरे। धरती पर जो अंतरात्माएं हैं वे उसी दिव्य उपस्थिति की चमकती हुई चिंगारियां हैं।

मनुष्य इस चिंगारी के सिवा और कुछ नहीं है। वे परम पुरुष से निकली हुई चिंगारियां हैं जो अज्ञानभरी पार्थिव चेतना का जामा पहने हुए हैं। हम कह सकते हैं कि अंतरात्मा एक जादुई लालटेन है जिसे चारों तरफ फैले हुए भौतिक जगत् के अंधकार को प्रकाशित करने के लिये धरती पर उतारा गया है। अपने व्यष्टिगत रूप में हर अंतरात्मा अनोखी और बेजोड़ है, हर एक को अपनी निजी भूमिका निभानी है, एक छोटे से कोने को साफ करके पारदर्शक बनाना है। इनमें से हर एक का भगवान् के साथ अपना अलग ही संबंध है।

यह सत्य तो है लेकिन है एकांगी। इसके पूरक अन्य सत्य भी हैं। मनुष्य एक ऐसी सत्ता नहीं है जो संसार की और सब सत्ताओं से बिलकुल अलग-थलग हो। अपने अनोखेपन के बावजूद अपने पृथक् रूप के बावजूद वह सबके साथ एक है, वह सारी पार्थिव चेतना का प्रतिनिधि है, बल्कि यूं कहें कि वह अपने अंदर सारी पार्थिव चेतना को लिये रहता है। मानव में पार्थिव चेतना के प्रत्येक तत्त्व का अनुरूप बिंदु मौजूद है। वह सारी धरती के शुभ और अशुभ, अच्छे और बुरे का मिश्रण है। एक छोटा-सा ब्रह्माण्ड है। कह सकते हैं यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे, एक छोटे पैमाने पर वह सारी पार्थिव चेतना का नमूना है। व्यक्तिगत चेतना जितनी अधिक विकसित हो उतना ही अधिक यह साम्य स्पष्ट और प्रकट होता जाता है। संसार भर में जो कुछ अच्छा है वह सब कुछ तुम्हारे अंदर है और जो कुछ बुरा है वह सब कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अंदर है। कोई भी मनुष्य शुद्ध रूप से संत या देवदूत नहीं है, कोई भी मनुष्य पूरा-पूरा शैतान नहीं है।

अन्य योगमार्गों पर योगी संसार के साथ नाता जोड़नेवाले धागों को यथासंभव काटते जाते थे। वे मुक्ति का अपना एक ख्याल बना लेते थे और उसके लिये जो कुछ अनावश्यक हो उसे अपने से दूर करने की कोशिश करते थे। केवल उन्हीं धागों को रखते थे जो उनकी दृष्टि में उन्हें अपने बनानेवाले के साथ ज्यादा आसानी से जोड़ते हों। यह एक बहुत व्यावहारिक और क्रियात्मक उपाय था और शायद उन लोगों के लिये बहुत अच्छा था जो पार्थिव चेतना और भौतिक जगत् के अंधेरे से अपने लिये व्यक्तिगत मुक्ति चाहते थे।

लेकिन हम समस्त पार्थिव चेतना के मिथ्यात्व और अज्ञान से मुक्ति चाहते हैं। हमारे लिये यह काफी नहीं है। हमें अपना भार उठाना होगा। हमें सारे जगत् के सामूहिक प्रयास में भाग लेना होगा। अगर हम में से कोई एक भी प्रगति करता है तो वह सारी धरती के लिये करता है। अगर किसी एक व्यष्टिगत चेतना में एक जरा-सा अशुभ भी समाप्त किया जाता है तो उसका असर सारी धरती पर होता है। अगर एक व्यक्ति अपनी चेतना में एक रोग को दूर कर ले तो सारी धरती को लाभ पहुंचता है। वस्तुतः जबतक सब कुछ ठीक न हो जाये, तबतक कुछ भी ठीक नहीं होता। सामूहिक साधना का यह एक मर्म है। इसीलिये हमारे मार्ग पर अपनी प्रगति को नापना या यह देखना कि हम कितने आगे बढ़े, बहुत कठिन है। हम सब एक साथ, एक स्तर पर खड़े हैं और एक ही प्रयास में लगे हैं।

सारा संसार रोगों से भरा है। वे शरीर के रोग मालूम होते हैं पर सचमुच अपनी तह में सब के सब चेतना के रोग हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में, सभी स्तरों पर हमें उनका सामना करना पड़ता है और पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक क्षेत्र को लो, वहां भी वही एक कहानी है। वहां राजनीतिक रोग है जो एक समूह की चेतना का रोग है। हर दल में, हर समूह में व्यक्ति की तरह चेतना रुग्ण है। वह अहंकेंद्रित है और औरों को जो होता हो, होता रहे वह अपने सीमित हितों को पूरा करने में लगी रहती है। सवाल यह है कि स्वयं अपने ऊपर किस तरह संयम रखा जाये और इस कार्य में दूसरों की सहायता कैसे की जाये ?

इस प्रकार की किसी भी समस्या को हल करने के लिये हमें अपने अहं से बाहर निकलना होगा। अपने-आपको सबके साथ एक अनुभव करना होगा। अपनी चेतना को इतना विशाल बनाओ कि तुम सबकी चेतना के साथ एक हो सको। यही है एक उपाय। तुम्हें अपने अंदर से विकसित होना होगा, अपनी सत्ता के स्रोत से ही विकसित होना होगा। हर देश की एक अंतरात्मा होती है। तुम्हें उसके बारे में सचेतन होना होगा, उसे पहचानना और उसका हुकुम मानना होगा तब समस्या का रूप बदल जाता है, सच्चा उपचार मिल जाता है।

जीवन की सभी समस्याओं के साथ यही बात है।

(नलिनीकान्त गुप्त की एक वार्ता पर आधारित)

श्रीअरविन्द के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

कल दोपहर मैं "क" और "ख" के साथ उस्टेरी झील पर घूमने गया था। हम वहां दो घंटे रहे और हमने बाजार से खरीदे हुए केले खाये। लौटने के बाद मुझे कुछ अजीब-सा लगने लगा और ध्यान के समय तक मुझे शरीर कुछ अस्वस्थ-सा लगने लगा और बुखार-सा आ गया। जुकाम भी तकलीफ दे रहा है। जब से मैं पांडिचेरी आया हूं, यह जुकाम मुझे तंग कर रहा है। कॉलिज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दिनों में और उसके बाद भी मेरा शरीर भोजन की अव्यवस्था और मौसम की विषमता की कठिनाई सह सकता था। लेकिन इधर डेढ़ वर्ष से वह बहुत संवेदनशील और छुई-मुई हो गया है। वह पहले की तरह शारीरिक श्रम तथा उद्योग नहीं सह सकता और न ही अव्यवस्थाओं का सामना कर सकता है, पता नहीं क्यों ? सामान्य मान्यता यह है कि साधना की प्रगति के साथ-साथ शरीर अधिकाधिक अपराजेय हो जाता है और सहनशक्ति दसगुनी बढ़ जाती है लेकिन मेरे मामले में तो बात एकदम उल्टी है। क्या आप बताने की कृपा करेंगे कि ऐसा क्यों है ? कृपया यह भी बतलाइये कि क्या मेरा झील पर जाना और केले खाना अनुचित था ?

इस तरह कहीं दूर जाने से पहले माताजी को सूचना दे देना ज्यादा अच्छा है ताकि जाते समय तुम उनकी सुरक्षा में रहो। बाजार के केले खाना और विशेषकर यदि वे विलियानूर के बाजार के थे, निश्चय ही गलत था। माताजी ने बहुत बार इसके बारे में सावधान किया है और "क" यह जानता है। योग की एक विशेष अवस्था में शरीर बहुधा संवेदनशील हो जाता है लेकिन साथ-ही-साथ उच्चतर शक्ति का भी विकास होना चाहिये जो रक्षा करे और सभी आक्रमणों को पीछे धक्का दे दे।

नवंबर या दिसंबर, १९३४

तुम जिन अनुभूतियों के बारे में कह रहे हो वे निश्चित रूप से चैत्य सत्ता के जगने और क्रियाशील होने के चिह्न हैं। चैत्य प्रभाव तले तुम्हारे आंतरिक मन और प्राण तथा भौतिक चेतना के सूक्ष्मतर भागों में परिवर्तन तथा परिष्करण की प्रक्रिया चल रही है। जब ये पूरी तरह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे भर जायेंगे और तैयार हो जायेंगे तब बाहरी चेतना को भी चैत्य-शासन के तले रखा जा सकता है जो समस्त सत्ता के चैत्यीकरण को ले आयेगा—यही है अवतरण के लिये उत्तम अवस्था।

४ दिसंबर, १९३४

मैं बहुत काल से, कलकत्ते से चली आ रही उन शारीरिक गड़बड़ों की ओर आपका ध्यान खींचे बगैर नहीं रह सकता जो अबतक डटी हुई हैं। कब्ज, भोजन का अच्छी तरह से न पचना और शरीर में एक तरह का भारीपन, ये शिकायतें बनी ही रहती हैं।

कृपया मुझे बतलाइये कि मैं इन पर विजय कैसे पा सकता हूं; खाना कम करके या गड़बड़ों के बने रहने के बावजूद उनपर किसी तरह का ध्यान न दे कर ?

खाना कम करना सामान्यतः सहायक नहीं होता। हर एक के लिये अलग-अलग उपचार होते हैं—हमें इसका पता लगाना होगा कि तुम्हारे लिये कौन-सा है।

७ दिसंबर, १९३४

माताजी ने तुम्हारी चिट्ठी का तथा तुमने जो निर्देशन मांगे थे उनका उत्तर मौखिक रूप से दे ही दिया है। जैसा कि उन्होंने कहा, तुम्हारी एकाग्रता हृदय-केंद्र में होनी चाहिये और बाकी चीजों को—सिर के ऊपर उठना इत्यादि—साधना की स्वाभाविक प्रक्रिया में अपने-आप आना चाहिये। हृदय के द्वारा तुम्हें माताजी का स्पर्श तथा अपनी समस्त सत्ता में उनकी शक्ति के क्रिया-कलाप का स्पर्श अधिकाधिक मिलेगा।

९ दिसंबर, १९३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज मेरे पास मेरे भाई की चिट्ठी आयी। ऐसा लगता है कि मेरे योगाभ्यास से वह सहानुभूति रखता है लेकिन जैसा हमेशा होता है, वह यह प्रश्न उठाता है कि अगर इस योग में कई वर्ष लग जायें और यह जीवन से अलग, आश्रम जीवन बिताना अनिवार्य कर दे तो इसे जीवन में योग भला किस तरह कहा जा सकता है और योग करने के पुराने रूढ़िगत तरीकों और श्रीअरविन्द के योग में क्या फर्क है ? वह मुझसे पूछता है, "इसे भी संन्यास-योग क्यों न कहा जाये ?" यह बाहर के लोगों का वही घिसा-पिटा तर्क है क्योंकि वे वस्तु के मनोविज्ञान तक पहुंचने की कोशिश कभी नहीं करते। मुझे इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिये क्या ? अगर देना चाहिये तो क्या ?

तुम अपने भाई को यह उत्तर दे सकते हो कि योग-जीवन और सामान्य जीवन एक ही चीज नहीं हो सकते—योग करने का कोई अर्थ ही न रह जायेगा अगर तुम दूसरों की तरह उसी समान तरीके से और समान उद्देश्यों के लिये जियो। आश्रम के जीवन का लक्ष्य है आध्यात्मिक चेतना पर आधारित जीने के एक नये मार्ग को तैयार करना—यह जीवन की एक नयी नींव को रखने की तैयारी है जिसमें समस्त कर्मों को स्वयं अपने लिये नहीं बल्कि भगवान् के लिये करना चाहिये।
३१ दिसंबर, १९३४

यह जुकाम मुझे छोड़ना नहीं चाहता। मेरे शरीर में लंबे आवास के कारण यह मुझसे आसक्त-सा हो गया दीखता है। यह स्वभाव में तमस् की बाहरी अभिव्यक्ति नहीं है क्या ? इस जुकाम से कैसे पिंड छुड़ाऊं जो एक दुःस्वप्न की भांति मेरे शरीर में निवास करता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह का जुकाम कब्ज के होने तथा यकृत के बुरी तरह काम करने से होता है। अगर ये दूर हो जायें तो बहुत संभव है कि जुकाम चला जाये।

५ जनवरी, १९३५

छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया है : "वह स्वर्णिम पुरुष जो सूर्य के अंदर दिखलायी देता है उसकी सुनहरी डाढ़ी और सुनहरे बाल हैं, वह पूरा सुनहरा है, क्या यह अतिमानसिक पुरुष का वर्णन है जिसके बारे में नीचे के मंत्र में कहा गया है कि वह अपने से नीचे के सभी लोकों का स्वामी है और देवों की कामनाओं को पूरा करनेवाला है ?

बहुत संभव है कि यह अतिमानसिक पुरुष का रूपक वर्णन हो।

"वह इस जगत् से नीचे के सभी जगतों का ईश है और मनुष्य की कामनाओं का ईश है।" (१-७-६) क्या यह उस चैत्य सत्ता का वर्णन नहीं है जिसके लिये कहा गया है कि वह नीचे के सभी जगतों का ईश और मानव कामनाओं को पूरा करनेवाली है ?

चैत्य सत्ता कामनाओं को पूरा करनेवाली नहीं होती—यह तो यहां अभिव्यक्त सभी वस्तुओं में वह भागवत स्फुलिंग है जो चैत्य सत्ता में विकसित होता और क्रम-विकास को आधार देता है। यह वही है जो प्राणिक तथा शारीरिक कोषों के विघटन के बाद भी बना रहता है और फिर से जन्म लेता है।

जनवरी, १९३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कभी मैं ध्यान में गहरा उतरने लगता हूं तो नींद मुझ पर हावी हो जाती है। उंनींदेपन की यह प्रवृत्ति अब अनुभव-विरोधी सिद्ध हो रही है और यह प्रत्येक आंतरिक उद्घाटन का दुराग्रह के साथ विरोध करती है। यहांतक कि जब मैं अपने कमरे में इधर-उधर टहलते समय ध्यान में गहरा उतरने की कोशिश करता हूं तो यह उंनींदापन मेरी पलकों पर बोझिल हो उठता है। इसके अतिरिक्त, छह या सात घंटों की शांत नींद के बाद भी सवेरे बिस्तर से उठते समय मैं सोता-सोता-सा अनुभव करता हूं। इस भौतिक जड़ता की सच्ची प्रकृति के बारे में मुझे बताइये और इस पर विजय पाने का उपाय बतलाइये।

यह शरीर को भी साधना की एकाग्रता में अंतर्गत करने के लिये पड़नेवाले दबाव की यांत्रिक प्रतिक्रिया है। सबसे अच्छा तो यह हो कि इस पर ध्यान मत दो; जैसे-जैसे चेतना बढ़ेगी और भौतिक को अपने संतुलन में ले लेगी वैसे-वैसे यह अपने-आप ही दूर हो जायेगा। किसी भी प्रकार के शारीरिक कष्टों के बारे में हमें बताना अच्छा है।

१९३५ —श्रीअरविन्द

मैं इस तर्क को नहीं समझ पाता जो कहता है कि चूंकि एक चीज पांच सौ वर्षों से चली आ रही है अतः उसे युगों तक बनाये रखना चाहिये। न तो प्राचीनता और न अर्वाचीनता ही सत्य की कसौटी या उपयोगिता की कसौटी हो सकती हैं। सभी ऋषि भूतकाल के ही नहीं थे, अवतार अब भी आते हैं, अंतःप्रकाश अब भी जारी है।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधना के रूप में किया गया कर्म

मैंने भक्ति पर कभी प्रतिबंध नहीं लगाया। मुझे ख्याल नहीं है कि मैंने कभी किसी समय ध्यान पर प्रतिबंध लगाया हो। मैंने अपने योग में भक्ति और ज्ञान दोनों पर जोर दिया है और साथ ही कर्म पर भी, भले ही मैंने शंकर या चैतन्य की तरह उनमें से किसी एक को ऐकांतिक महत्त्व न दिया हो।

तुम जिस कठिनाई का अनुभव करते हो या कोई भी साधक साधना में जिस कठिनाई का अनुभव करता है वह सचमुच ध्यान, भक्ति या कर्म का प्रश्न नहीं है। कठिनाई तो यह है कि कौन-सी मनोवृत्ति अपनायी जाये या कौन-से प्रवेश-मार्ग को, तुम उसे जो चाहो कह लो, अपनाया जाये।

अगर तुम अभीतक काम करते हुए सारे समय भगवान् को याद नहीं रख सकते तो इसका बहुत महत्त्व नहीं है। अभी के लिये इतना काफी होगा कि शुरू में स्मरण और समर्पण करो और अंत में धन्यवाद दो। या अधिक-से-अधिक, जब कभी जरा विराम हो तब भी स्मरण कर लो। तुम्हारा तरीका मुझे दुष्कर और कष्टकर मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है कि तुम मन के एक ही भाग से याद करने और काम करने की कोशिश करते हो। मुझे पता नहीं कि यह संभव है या नहीं। जब लोग काम करते हुए सारे समय स्मरण करते हैं (यह किया जा सकता है) तो यह सामान्यतः अपने मन के पिछले भाग से करते हैं या धीरे-धीरे दोहरे विचार या दोहरी चेतना की क्षमता पैदा की जाती है—एक आगे जो कार्य करती है और दूसरी भीतर जो साक्षी भाव से देखती और स्मरण करती है। एक और तरीका भी है जो एक लंबे समय तक मेरा तरीका रहा है—एक ऐसी अवस्था जिसमें कर्म व्यक्तिगत विचार या मानसिक क्रिया के हस्तक्षेप के बिना स्वचालित रूप से चलता रहता है, जब कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना भगवान् के अंदर नीरव-निश्चल बनी रहती है। लेकिन यह चीज इतनी ज्यादा प्रयास के द्वारा नहीं आती जितनी सरल सतत अभीप्सा और उत्सर्ग की इच्छा से आती है—या फिर चेतना की ऐसी गति से आती है जो भीतरी और यंत्रीय सत्ता को अलग करती है। अभीप्सा और उत्सर्ग की इच्छा जो महत्तर शक्ति को कार्य करने के लिये बुलाती है—यह एक ऐसा तरीका है जो बड़े परिणाम लाता है—चाहे कुछ लोगों में यह बहुत अधिक समय ले। यह जानना साधना का एक बड़ा रहस्य है कि मन के प्रयास से सब कुछ करने की जगह, पीछे या ऊपर की शक्ति के द्वारा कैसे काम करवाया जाये। मेरा मतलब यह नहीं है कि मन का प्रयास अनावश्यक है या उसका कोई परिणाम नहीं आता। हां, जब वह सारा काम अपने-आप ही कर लेना चाहता है तो वह आध्यात्मिक मल्लों के सिवा बाकी सबके लिये श्रमसाध्य हो जाता है। मेरे कहने का यह भी मतलब नहीं है कि वह दूसरा मार्ग हमारा वांछित छोटा रास्ता है। जैसा कि मैं कह चुका हूं कि हो सकता है कि परिणाम के आने में बहुत समय लगे। साधना की हर पद्धति में धैर्य और दृढ़ निश्चय आवश्यक हैं।

बलवान् के लिये बल ठीक है। लेकिन अभीप्सा और उसे उत्तर देनेवाली भागवत कृपा कपोल कल्पनाएं नहीं हैं। वे आध्यात्मिक जीवन की महान् वास्तविकताएं हैं।

*

ध्यान भगवान् की ओर जाने के लिये एक रास्ता है और महान् रास्ता है लेकिन उसे छोटा या सुगम उपाय नहीं कहा जा सकता। अधिकतर लोगों के लिये यह लंबा और बहुत कठिन और ऊंची चढ़ाई का मार्ग है। वह किसी हालत में भी छोटा तो नहीं हो सकता जबतक कि वह अपने साथ अवतरण न लाये और उस हालत में भी वह केवल जल्दी में डाली गयी एक नींव होता है, बाद में ध्यान को बड़े परिश्रम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ उस नींव पर एक बड़ी अधिरचना बनानी होती है। यह बहुत अनिवार्य है लेकिन इसमें छोटा या सुगम कुछ नहीं है।

कर्म कहीं अधिक सरल मार्ग है बशर्ते कि तुम्हारा मन भगवान् को छोड़कर कर्म पर स्थिर न हो जाये। लक्ष्य होना चाहिये भगवान्, कर्म केवल साधन हो सकता है। कविता आदि का उपयोग अपनी आंतरिक सत्ता के साथ संपर्क बनाये रखने के लिये होता है और वह अंतर्तम के साथ संपर्क की तैयारी में सहायक होता है लेकिन तुम्हें वहीं पर रुक न जाना चाहिये, तुम्हें वास्तविक सद्वस्तु की ओर बढ़ते जाना चाहिये। अगर तुम साहित्यिक व्यक्ति, कवि या चित्रकार बनना चाहते हो और इसे ही अपने-आपमें सार्थक मानते हो तो फिर यह योग की भावना नहीं रहती। इसीलिये कभी-कभी मुझे कहना पड़ता है कि हमारा काम केवल कवि, चित्रकार आदि नहीं, योगी बनना है।

प्रेम, भक्ति, समर्पण, चैत्य उद्घाटन ही भगवान् की ओर के सुगम मार्ग हैं या हो सकते हैं क्योंकि अगर प्रेम और भक्ति बहुत प्राण-प्रधान हों तो आनंदमय उत्कंठा और विरह, अभिमान (रूठना) और निराशा के बीच उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है जिससे यह छोटा रास्ता न रहकर बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बन जाता है, सीधी उड़ान की जगह अपने अहंकार के चारों ओर गोल-गोल चक्कर रह जाते हैं।

मैंने हमेशा कहा है कि साधना के रूप में किया गया कर्म यानी भगवान् से ऊर्जा के सैलाब की तरह, भगवान् को अर्पण किया जानेवाला कर्म, या भगवान् के लिये किया जानेवाला कर्म या भक्तिभाव से किया गया कर्म साधना के लिये प्रबल साधन होता है और ऐसा कर्म इस योग में विशेष रूप से जरूरी है। योग के तीन स्तंभ हैं—कर्म, भक्ति और ध्यान। तुम तीनों का, दो का या एक का उपयोग कर सकते हो। ऐसे लोग हैं जो निश्चित रूप से ध्यान नहीं कर सकते जिसे ध्यान कहा जाता है लेकिन वे कर्म या भक्ति या दोनों के द्वारा प्रगति करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म और भक्ति द्वारा तुम ऐसी चेतना विकसित कर सकते हो जिसमें अंत में स्वाभाविक ध्यान और उपलब्धि संभव हो जाते हैं।

(श्रीअरविन्द के पत्रों से)

भागवत कृपा और कर्मफल

आपने यहां कहा है कि हम "कर्म की बेड़ी से बंधे हैं", पर कभी-कभी जब भागवत कृपा कार्य करती है तो यह उलटा . . .।

बिलकुल, भागवत कृपा कर्म को एकदम उलट देती है। यूं समझो वह उसे धूप में रखे मक्खन की तरह पिघला देती है।

मैं अभी यही बात कर रही थी। तुमने अभी जो कहा वह उसी बात को और तरह से कहने का ढंग है। मैं अपने-आपको तुम्हारे स्थान पर रखकर पूछ रही थी : यह लो, अगर तुम्हारे अंदर काफी सच्ची अभीप्सा है या काफी तीव्र प्रार्थना है तो तुम किसी ऐसी चीज को उतार कर ला सकते हो जो सब कुछ बदल सकती है, सब कुछ—सचमुच वह सब कुछ बदल सकती है। एक उदाहरण दिया जा सकता है जो बहुत ही सीमित और बहुत छोटा है पर वह तुम्हें यह चीज अच्छी तरह समझा सकता है। एक पत्थर बिलकुल यांत्रिक ढंग से गिरता है; मान लो, एक खपरा गिरता है (अगर वह ढीला हो जाये तो गिर ही पड़ेगा, गिरेगा न ?), लेकिन अगर, उदाहरण के लिये, उधर से गुजरते हुए किसी आदमी से प्राणिक या मानसिक नियति आ जाये, वह आदमी यह न चाहे कि पत्थर गिरे और वह अपना हाथ आगे कर दे तो वह जमीन पर न गिरकर उस आदमी के हाथ पर गिरेगा। तो इस आदमी ने पत्थर या खपरे की नियति बदल दी। यहां एक और नियति आ गयी और किसी के सिर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरने की जगह पत्थर हाथ पर गिरता है और किसी की हत्या नहीं करता। यह एक और लोक से हस्तक्षेप है, एक सचेतन संकल्प का हस्तक्षेप है जो न्यूनाधिक अचेतन यांत्रिकता में प्रवेश करता है।

तो कर्म-फल कठोर नहीं है ?

नहीं, बिलकुल नहीं। सभी धर्मों में ऐसे लोग हैं जिन्होंने यह बात कही है, जिन्होंने दृढ़ निरपेक्ष नियम बनाये हैं, लेकिन मेरा ख्याल है कि यह अपने-आपको प्रकृति के स्थान पर रखकर तार खींचने के लिये था। इस प्रकार की सहजवृत्ति हमेशा प्रकृति का स्थान लेकर लोगों के तार खींचना चाहती है। इसलिये उनसे कहा जाता है : "तुम जो कुछ करते हो उसका एकदम निश्चित फल होता है . . .।" विकास के एक निश्चित क्षण में इस प्रकार की धारणा लोगों को पूरी तरह निश्चेतन अहंकार में रहने से रोकने के लिये, वे जो कुछ करें उसके परिणामों से पूरी तरह निश्चेतन रहने से बचाने के लिये जरूरी है। आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है। मेरा ख्याल है इन्हीं की संख्या अधिक है। वे अपने आवेगों के अनुसार चलते हैं और अपने-आपसे यह तक नहीं पूछते कि उन्होंने जो कुछ किया है उसका उनके अपने लिये और औरों के लिये कोई परिणाम भी होगा। इसलिये अच्छा है कि कोई तुमसे सीधा, कड़ी नजर के साथ कहे : "सावधान, इसके परिणाम बहुत लंबे समय तक चलेंगे।" और फिर दूसरे आकर कहते हैं : "तुम्हें अगले जन्म में इसका फल भोगना पड़ेगा।" वैसे तो यह ऊट-पटांग कहानियों में से है . . .। पर इसमें कोई हर्ज नहीं : यह भी लोगों के भले के लिये हो सकती है। ऐसे धर्म हैं जो कहते हैं : "ओह ! तुमने पाप किया तो हमेशा के लिये नरक में जा पड़ोगे।" तुम कल्पना कर सकते हो ! . . . तो लोग इतना ज्यादा डर जाते हैं कि वे थोड़ी देर ठहरते हैं, उन्हें अपने आवेग के अनुसार चलने से पहले सोचने का जरा सा समय मिल जाता है—और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी हमेशा नहीं। कभी-कभी विचार बाद में आता है, जरा देर में।

यही सुनिश्चित नहीं है। कुछ कम या अधिक सच्ची मानसिक रचनाएं हैं जो चीजों को बिलकुल छोटे-छोटे, साफ टुकड़ों में काट देती हैं और तुमसे कहती हैं: "यह करो या वह करो। अगर यह न किया तो वह होगा।" ओह! ऐसा जीवन भी क्या मुसीबत है! लोग पागल हो जाते हैं, वे भयभीत होते हैं! "बात ऐसी है या फिर ऐसी ?" और वे उसे न तो इस रूप में चाहते हैं, न उस रूप में। तब वे क्या करें?—उन्हें बस एक ऊंची मंजिल पर चढ़ जाना चाहिये। उन्हें दरवाजा खोलने की चाबी देनी चाहिये। जीने पर एक दरवाजा जिसकी चाबी की जरूरत है। जैसा कि मैंने अभी कहा, काफी सच्ची अभीप्सा या काफी तीव्र प्रार्थना ही उसकी चाबी है। मैंने "या" कहा तो है पर मुझे नहीं लगता कि यहां "या" है। कुछ लोग हैं जिन्हें एक चीज ज्यादा अच्छी लगती है, औरों को दूसरी। लेकिन दोनों में जादुई शक्ति है। तुम्हें जानना चाहिये कि उसका उपयोग कैसे किया जाये।

दोनों में कोई चीज बहुत सुन्दर है। मैं एक दिन तुम्हें उसके बारे में बताऊंगी, मैं तुम्हें बताऊंगी कि अभीप्सा में क्या है और प्रार्थना में क्या, और दोनों ही क्यों सुन्दर हैं . . .। कुछ लोगों को प्रार्थना पसंद नहीं: अगर वे अपने हृदय की गहराई में जायें तो देखेंगे कि यह घमंड है—उससे भी बढ़कर, मिथ्या अभिमान है। और फिर ऐसे लोग हैं जिनमें कोई अभीप्सा नहीं होती। वे कोशिश करते हैं फिर भी अभीप्सा नहीं कर सकते। यह इसलिये क्योंकि उनके अंदर संकल्प की ज्वाला नहीं होती, यह इसलिये कि उनमें नम्रता की ज्वाला नहीं होती।

दोनों की जरूरत होती है। अपने कर्म को बदलने के लिये बहुत ज्यादा नम्रता और बहुत प्रबल संकल्प होना चाहिये।

यह लो, फिर मिलेंगे, मेरे बच्चो।

३ जून, १९५३ 'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५, पृ० ८५-/19

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त २००१, श्रीअरविन्द की १२९वीं जयन्ती के अवसर पर आश्रम में श्रीअरविन्द का कमरा दर्शनार्थ खोला गया फिर समाधि के चारों ओर ध्यान और शाम को क्रीड़ांगण में मार्च-पास्ट और ध्यान हुआ। दर्शन के अवसर पर जो फोल्डर बंटा उसमें चित्र के साथ श्रीअरविन्द के ये वचन अंकित थे—

"अगर तुम्हारे हृदय और आत्मा में आध्यात्मिक परिवर्तन के लिये सच्ची अभीप्सा है तो तुम्हें मार्ग मिल जायेगा और मार्ग निर्देशक भी मिलेगा। आत्मा के द्वार खोलने के लिये केवल मानसिक जिज्ञासा और प्रश्न पर्याप्त नहीं है।"

वडोदरा (गुजरात) शाखा ने ३ से ९ जून तक का सात दिवसीय कोर्स किया जिसमें शाखाओं के कार्यकर्ताओं को केन्द्रों को किस तरह स्थापित करना और उसे कैसे चलाना चाहिये उसका निर्देशन दिया गया। कार्यक्रम में माताजी और श्रीअरविन्द की मुख्य पुस्तकों पर भाषण भी दिया गया।

वडोदरा शाखा की विमेन्स काउंसिल ने १० जून को, एक दिवस का शिविर आयोजन किया, जिसमें माताजी और श्रीअरविन्द की दृष्टि में 'प्रार्थना' पर प्रकाश डाला गया।

१७ जून २००१ को शाखा ने श्री पूजालाल द्वारा अनूदित श्रीअरविन्द के महाकाव्य "सावित्री" का तीसरे संस्करण का विमोचन किया। उस दिन पूजालाल की जन्म शताब्दि भी थी।

धारी (गुजरात) की शाखा ने २९ मई को अपना वार्षिकोत्सव मनाया। २३ जून को ध्यान कक्ष और पुस्तकालय का निर्माण शुरू हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनाएं

विमेन्स काउंसिल, सोसायटी बीच ऑफिस, पांडिचेरी में "द सीकिंग फॉर क्लेरिटी" पर २१, २२ और २३ नवम्बर तक सेमिनार करेगी।

डायरियां : आश्रम की २००२ की डायरी का आकार ६"×९" होगा जिसमें एक पृष्ठ पर दो तारीखें होंगी। श्रीअरविन्द के माताजी के विषय में लिखे गये उद्धरण होंगे। उसका मूल्य रु० ४८ होगा और भेजने का और पैकिंग का खर्च अतिरिक्त होगा। प्राप्ति-स्थान 'शब्द' में नवम्बर से मिलेगी।

वाक् ट्रस्ट भी २००२ के लिये ७.२५"×९.७५" आकार की डायरी प्रकाशित कर रहा है जिसमें माताजी द्वारा दिये गये आध्यात्मिक अर्थों के साथ चार रंगों के २८ फूलों के चित्र होंगे। इसका मूल्य, रु० १५० होगा, पेकिंग और भेजने का खर्च अतिरिक्त होगा। यह डायरी नवम्बर से वाक् में मिलेगी।

नया प्रकाशन

आर० वाय० देशपांडे द्वारा लिखी पुस्तक "नगिनभाई टेल्स मी" प्रकाशित हुई है, जिसकी पृष्ठ संख्या—८२ और मूल्य, रु० ६० है। प्राप्ति-स्थान : 'शब्द', श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी—६०५००२; उसमें एक साधक के जीवन के अंतिम तीन वर्ष की अनुभूतियों का वर्णन भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

Dryness is ordinarily the sign of too great a concern with oneself (whether material or spiritual) and a consequent narrowing of consciousness which is no longer sufficiently in communion with the divine forces.

The remedy : a completer self-giving to the Divine.

8 December 1940 — The Mother

सामान्यतः शुष्कता अपने बारे में बहुत अधिक चिन्ता करना है (चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक) तथा परिणाम-स्वरूप चेतना की संकीर्णता का चिह्न है जो भागवत शक्तियों के साथ काफी घनिष्ठता में नहीं रहती।

उपचार है : भगवान् के प्रति अधिक पूर्ण आत्मोत्सर्ग।

८ दिसंबर १९४० —श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

श्रद्धा

आजकल भारत में भी लोगों की श्रद्धा डगमगा रही है। जिनमें थोड़ी-बहुत श्रद्धा है, उनमें से अधिकतर व्यापारियों-सी श्रद्धा रखते हैं। ऐसे कितने लोग हैं जो आपद्-काल में भगवान् को पुकारते हैं और कहते हैं, "हे भगवान्, अगर मेरा यह काम पूरा हुआ तो तुम्हें पूरी पोशाक का चढ़ावा दूंगा या इतने हजार रुपये हुंडी में डालूंगा, मानों भगवान् के पास धन-सम्पत्ति की कमी हो ! वे ही मनुष्यों को दौलत और सब तरह की सुविधा देते हैं। खैर, अधिकतर लोग सच्ची श्रद्धा से दूर चले गये हैं, लेकिन अब भी सच्चे श्रद्धालु भारत में हैं और शायद उन्हीं के बल-बूते पर यह राष्ट्र आगे बढ़ रहा है।

करीब दो सौ वर्ष पहले स्वामी विवेकानन्द के साथ घटी एक घटना की याद हो आयी। स्वामीजी शिकागो की "पार्लामेण्ट ऑफ रिलीजियन्स" में प्रभावशाली भाषण देकर अभी भारत लौटे थे। अमरीका में उनके भाषण से कितने लोगों में भगवान् के प्रति उत्सुकता जागी थी, कितने लोगों का जीवन बदल गया था ! लेकिन अभी भारत में सामान्य लोग उन्हें पहचान नहीं पाये थे। हां, भारत के प्रगतिशील लोग उनसे परिचित हो चुके थे।

एक दिन एक छोटी रियासत के राजा के निमंत्रण पर स्वामीजी उनके महल में पधारे। जब वे जाने लगे तो राजा ने उन्हें कुछ धन या जो भी वे चाहें देना चाहा किंतु स्वामीजी ने इंकार करते हुए कहा कि वे केवल रेल के तीसरे दर्जे का टिकट चाहते हैं। राजा ने वह सहर्ष दिलवा दिया।

स्वामीजी राजस्थान के किसी स्टेशन से रेलगाड़ी में सवार हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान में उस समय पानी बिकता था—क्योंकि पानी की कमी थी। रेल के डिब्बे में कई लोग बैठे थे। उनमें एक छोटा-मोटा व्यापारी था जिसे संन्यासियों से सख्त नफरत थी। उसके विचार से साधु परजीवी, मुफ्तखोर होते हैं, ऐसे युवकों को मेहनत कर कमाना चाहिये। स्वामीजी को देखकर उसकी जीभ कुछ कहने को मचल उठी। चूंकि स्वामीजी के पास एक पैसा भी न था वे पानी खरीद न पाये। उस व्यापारी के पास एक सुराही भर पानी था और टोकरी भर खाना! उसने स्वामीजी से कहा, "आपके पास पानी तक खरीदने के लिये पैसा नहीं है?" स्वामीजी चुप रहे। व्यापारी बार-बार पानी पीता, कुछ चबाता जाता और उन्हें ताने देता जाता। "आपके भगवान् को परवाह नहीं है कि आप, उनके भक्त कितने कष्ट भुगत रहे हैं।" अंत में स्वामीजी ने कहा, भगवान् उनके पैसों की थैली रखते हैं और वे ही उनकी आवश्यकताएं पूरी करते हैं इसलिये वे अपने ऊपर भार लादे नहीं फिरते।

दोपहर के समय वे उत्तर प्रदेश के किसी स्टेशन पर पहुंच गये जहां से उन्हें एक घण्टे बाद गाड़ी बदलनी थी। उस छोटे स्टेशन पर एक-दो पेड़ को छोड़कर और कोई विश्राम-स्थान न था। व्यापारी महाशय पेड़ की छाया में दरी बिछा कर, खाना सजा कर बड़े मजे से भोजन करने लगे और कुछ न कुछ स्वामीजी को सुनाते गये क्योंकि वे भी उसी पेड़ की छाया में बैठे थे। हठात् उन लोगों ने देखा कि एक आदमी उनकी ओर तेजी से चला आ रहा था। उसके एक हाथ में चटाई थी, दूसरे में ढकी हुई टोकरी और बड़ा गिलास था। उसने चटाई बिछायी, केले के पत्ते पर तरकारियां, पूरी, दो तीन मिठाइयां सजायीं और गिलास लिये स्वामी विवेकानन्द के पास हाथ जोड़े आया। उसने कहा, "स्वामीजी, भोजन कीजिये।" स्वामीजी ने कहा, "भाई, निश्चय ही कुछ भूल हुई है। तुम मुझे जानते तक नहीं। मैं यहां पहली बार आया हूं। मेरे लिये तुम भोजन कैसे ला सकते हो! यह किसी और के लिये होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस आदमी ने नम्रता से कहा, "स्वामीजी, यह भोजन आप ही के लिये है। मैं खाना बेचता हूं। आज सवेरे मैंने कुछ तरकारियां, पूरियां और मिठाइयां बनायीं और बेच दीं। चीजें बेचकर मैं घर जाकर लेट गया। नींद में मुझे रामजी अपने सामने दिखायी दिये। अपने चरण-स्पर्श से उन्होंने मुझे जगाया। मैंने समझा स्वप्न होगा, करवट बदलकर फिर सो गया। इस बार रामजी ने चरण से मुझे झकझोरा और कहा, "उठो, मेरा एक भक्त संन्यासी, स्टेशन पर भूखा-प्यासा बैठा है। उसके लिये भोजन और पानी लेकर जाओ। मैं जाग उठा और भोजन बनाकर दौड़ा हुआ आया। कृपा कर हाथ-पैर धो लीजिये। आपके कारण मुझे अपने रामजी के दर्शन हुए और उनका स्पर्श भी मिला।" यह कहकर उसने स्वामीजी को दण्डवत प्रणाम किया। स्वामीजी की आंखों से अश्रुधारा बह रही थी।

यह है अटल श्रद्धा का परिणाम ! हम भी इस तरह की श्रद्धा पाने के लिये प्रयत्न कर सकते हैं। क्या पता तब हमारा जीवन-पथ भगवान् की कृपा से थोड़ा सहज, सरल हो जाये !!

—अनुबेन

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा... ... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय-वन्दना

रवीन्द्रजी को भगवदवतार, भगवती माता के साथ अंतरंग संबंध में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह अंतरंगता उन्हें मिली कैसे ? इसका रहस्य क्या है ?

श्रीअरविन्द ने लिखा है, "अर्जुन समसामयिक महापुरुषों में श्रेष्ठ नहीं थे। (वहां थे व्यासदेव, भीष्म पितामह, विदुर, युधिष्ठिर, उद्धव, अक्रूर आदि) फिर भी जगत्प्रभु ने अर्जुन को ही वरण किया था। यह पुरुषोत्तम का अन्याय या पक्षपात नहीं है, यह उत्कर्ष है पूर्ण श्रद्धा और आत्मसमर्पण का फल। जो पुरुषोत्तम पर पूर्ण श्रद्धा रख, उन्हीं पर निर्भर रह, कोई दावा न कर अपने शुभ और अशुभ, मंगल और अमंगल, पाप और पुण्य का समस्त भार उन्हें अर्पण करते हैं, अपने प्रिय कर्म में आसक्त न हो उनके आदेशानुसार कर्म करने के इच्छुक, अपनी प्रिय वृत्ति को चरितार्थ न कर उनके द्वारा प्रेरित वृत्ति को ग्रहण करते हैं, स्वप्रशंसित गुण का साग्रह आलिंगन कर उनके दिये गुण और प्रेरणा को उन्हीं के काम में प्रयुक्त करते हैं वे श्रद्धावान् अहंकार रहित कर्मयोगी ही पुरुषोत्तम के प्रियतम सखा और शक्ति के आधार होते हैं।"

रवीन्द्रजी में आत्मोत्सर्ग का माद्दा शुरू से था। स्नातक परीक्षा पास कर देश पर आत्मोत्सर्ग करने के इरादे से ही वे उस समय के शीर्षस्थ नेता गांधीजी की सेवा में वर्धाश्रम पहुंचे थे।

माताजी से मिलने के बाद उन्हें लगा कि इन श्रीमां के प्रति आत्मनिवेदन राष्ट्र के और अपने सर्वाधिक हित में है। इसके बाद उन्होंने न दिन देखा, न रात; न देखा अपना भोजन, अपनी नींद या अपना विश्राम। देखी केवल मां की इच्छा, मां की प्रसन्नता। अगर सवेरे साढ़े तीन बजे काम पर पहुंचना है तो साढ़े तीन बजे उपस्थित हैं, अगर रात साढ़े ग्यारह बजे तक जागने की जरूरत है तो साढ़े ग्यारह तक काम में लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिफिन गाड़ी खींचने के काम से व कोयला-वितरण के काम से, इन्हें छोटा समझ कर, वे कतराये नहीं। एक दिन दक्षिण अफ्रीका से दो व्यक्ति (सेठ) आये थे। वहां रवीन्द्रजी के एक सहपाठी ने उनसे कहा था, भारत जा रहे हो तो पाण्डि में मेरे सहपाठी रवीन्द्र से मिलकर जरूर आना। जिस दिन वे आये, वह कोयला-वितरण का दिन था। स्वागत-कक्ष में पहुंचने पर उन्हें कहा गया : 'जरा बैठिये, रवीन्द्र अभी आता होगा।'

थोड़ी-सी देर बाद आते हुए, कोयले से काले-भभूत बने व्यक्ति को दिखा कर द्वार पर खड़े साधक ने कहा, "यह है रवीन्द्र।" ऐसे कुली व्यक्ति से मिलने में उन्हें संकोच हुआ। उनके सहपाठी की नमस्ते उन्हें जताकर, तुरंत हाथ जोड़कर जिस होटल में ठहरे थे वहीं वापस चले गये, फिर नहीं आये।

ऑरोविल के उद्घाटन के समय उन्हें निरंतर व्यस्त रहना पड़ा। चौथे दिन प्रातः उठे तो कमजोरी महसूस हुई, तब ख्याल गया कि तीन दिन से उन्हें भोजन खाने की भी फुर्सत नहीं हुई है।

उनका सारा जीवन ऐसे-ऐसे अनेक प्रसंगों से भरा पड़ा है जो दिखाते हैं कि उन्होंने कभी अपनी ओर नहीं देखा, देखा केवल मां के काम को।

श्रीमां के किसी काम को न करना तो वे जानते ही न थे। छोटा हो, बड़ा हो, कठिन हो, कैसा भी हो वे हमेशा करने को तत्पर रहते थे। यह नहीं कि वे केवल अधिक काम करनेवाले थे बल्कि मां के संपर्क के साथ काम करनेवालों में से थे। इसीलिये मां ने कहा था, "काम की दृष्टि से एक युवा व्यक्ति अधिक ऊर्जा से भरा होगा पर वह समझेगा कि वह स्वयं काम कर रहा है जब कि तुम मुझे बुला सकते और अनुभव कर सकते हो। अच्छा है तुम काम जारी रखो।"

ऐसे एकनिष्ठ, सत्य-हृदय, सर्वतोभावेन अपने-आपको उत्सर्ग करने-वाले साधक को अंतिम दिनों ऐसा कष्ट सहना पड़ा, कठिनाइयां झेलनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ीं—यह आश्चर्य की बात लग सकती है। पर देशभक्तों के कष्ट, उनकी यातनाएं उनकी कुर्बानियों के रूप में याद किये जाते हैं। भौतिक में साधना के फलस्वरूप उठी कठिनाइयों में हिस्सा बंटानेवाले ये साधक भी आगामी दिव्य जाति के लिये पथ-प्रशस्त करनेवाले वीर सेनानी हैं और आगे चलकर इनकी कुर्बानियां याद की जायेंगी।

सत्य हृदय से, पूर्णपन से अपने-आपको दे देनेवाले जो-जो साधक हैं वे मशाल हैं, प्रेरणा-स्तम्भ हैं, उन्हीं में रवीन्द्रजी भी एक हैं। इस अवसर पर उनकी स्मृति हमारे अंदर फिर से ऐसी प्रेरणा को जगानेवाली हो।

—'हृदय'

दैनन्दिनी

नवम्बर

१. यह भूल है। तुम जिन भौतिक चीजों का इस्तेमाल करते हो उनकी देख-रेख न करना अचेतना और अज्ञान का चिह्न है।
२. अगर तुम भौतिक चीजों की देख-रेख नहीं कर सकते तो तुम्हें उनका उपयोग करने का कोई हक नहीं।
३. स्वयं भगवान् तक, सत्ता के हर स्तर पर, एक सौंदर्य पाया जाता है। जड़-भौतिक सौंदर्य तो उस सौंदर्य का बहुत ही बुरा अनुवाद है।
४. कठिनाइयों को जीतने के लिये चेतना को अपने सामान्य स्तर से ऊंचा उठने की कोशिश करनी चाहिये।
५. मनुष्य को अपने अंदर के सद्भावनावाले भाग को तबतक अधिकाधिक शक्तिशाली बनाना होगा जबतक उसके अंदर अक्खड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग को वश में करने और उसे रूपांतरित होने के लिये बाध्य करने की शक्ति न आ जाये।

६. चैत्य वाणी नीरव होती है—वह शब्दों की बजाय एक समझ या ज्ञान के रूप में प्रकट होती है।

७. मानसिक पुरुष की वाणी की अपेक्षा चैत्य संदेश को सुनना कहीं अधिक मुश्किल है।

८. मानसिक पुरुष की आवाज अचूक नहीं होती और उसमें भूल करने की संभावना रहती है। चैत्य कभी भूल नहीं करता।

९. अगर तुम अपना ध्यान विक्षोभ की ओर मोड़ दो तो तुम उसे महसूस करते हो लेकिन अगर तुम अपना ध्यान प्रकाश और आनंद की तरफ मोड़ो तो तुम उसमें जीते हो।

१०. ऐकांतिक भाव से परम प्रभु का आदेश सुनने का प्रयत्न करो। अगर तुम पूरी तरह सच्चे हो तो वे ऐसा उपाय ढूंढ़ लेंगे कि तुम इस आदेश को सुन पाओ और निश्चित रूप से पहचान सको। ऐसा आश्वासन उन सबको दिया गया है जो परम सत्य के अनुसार जीना चाहते हैं।

११. भागवत उपस्थिति को कभी न भूलो।

१२. शांत रहना अच्छा है। इस अवस्था के बारे में बोलकर, शांति को बिगाड़ देने का खतरा न मोल लो।

१३. केवल आंतरिक शांति में ही तुम्हारा समर्पण पूर्ण हो सकता है।

१४. अगर तुम यह निश्चय कर लो कि तुम जो कुछ दोगे उसके बदले में कुछ न मांगोगे तो तुम जल्दी ही प्रेम के अतुलनीय आनंद को पा लोगे।

१५. अपने मन में नीरव बनो, अपनी चैत्य सत्ता के एकांत में प्रवेश करो और तुम मुझे वहां पाओगे।

१६. श्रद्धा आध्यात्मिक सद्‌गुण की अभिव्यक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७. आध्यात्मिक जीवन के लिये **धीरज** अनिवार्य शर्तों में से एक है। तुम्हें सीखना होगा कि ग्रहण करने के लिये प्रतीक्षा कैसे की जाये।

१८. यदि हम जगत्-सत्ता को शाश्वत सत्-पुरुष के आत्मानंद के साथ संबंध की दृष्टि से देखें तो हम उसका इस रूप में अवलोकन, वर्णन और अनुभव कर सकते हैं कि यह एक लीला है, बच्चे के आनंद, कवि के आनंद, अभिनेता के आनंद, और यांत्रिक के आनंद के रूप में यह वस्तुओं की आत्मा का एक खेल है, जो आत्मा चिर युवा और चिर अक्षय है और अपने-आपको अपने ही अंदर आत्म-सर्जन और आत्म-रूपायन के अहेतुक आनंद के लिये बनाती और फिर-फिर बनाती रहती है—वही खेल है, वही खिलाड़ी है और वही खेल का मैदान भी है।

१९. मृत्यु का अस्तित्व इसलिये है कि शरीर के अंदर स्थित सत्ता अभी इतनी विकसित नहीं हुई है कि परिवर्तन की आवश्यकता के बिना उसी शरीर में विकसित होती जाये और स्वयं शरीर भी पर्याप्त रूप से सचेतन नहीं है। अगर स्वयं मन, प्राण तथा शरीर अधिक सचेतन तथा नमनीय होते तो मृत्यु आवश्यक न होती।

२०. गपशप करना हमेशा हानिकर होता है।

२१. जब तुम विक्षोभ का अनुभव करो तो तुम्हें किसी शांत स्थान में बैठकर तबतक शांति का आवाहन करना चाहिये जबतक तुम्हें ऐसा न लगे कि बाधा विलीन हो गयी है।

२२. **प्रश्न**—कभी-कभी आप मेरे बहुत करीब होती हैं और कभी बहुत दूर प्रतीत होती हैं।

उत्तर—यह, तुम जिस चेतना में हो, उसकी अवस्था पर निर्भर है।

(माताजी)

२३. तुम्हें अपनी भौतिक चेतना को अंदर से अनुशासित करनां चाहिये और अंदर से ही तुम्हारे भौतिक जीवन के लिये बाहरी व्यवस्था भी आयेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यानी भौतिक चेतना को ऐसी शक्ति के द्वारा अनुशासित करना चाहिये जो अंदर से क्रिया करती है।

२४. भागवत प्रेम पाने के लिये बाकी समस्त प्रेम को छोड़ देना होगा।

२५. अगर तुम सचमुच अच्छी तरह से काम करना सीखना चाहते हो तो तुम्हें नम्र बनना होगा, अपनी अपूर्णताओं के बारे में अभिज्ञ बनो और प्रगति करने की इच्छा को हमेशा बनाये रखो।

२६. तुम शेखी बघारकर प्रगति नहीं कर सकते।

२७. प्रश्न—हे मां, मैं आपकी उपस्थिति का अनुभव क्यों नहीं करता?
उत्तर—मानसिक गतिविधि की अतिशयता ही तुम्हें मेरी उपस्थिति का अनुभव करने से रोकती है।

२८. दृढ और ज्योतिर्मय शांति में प्रवेश करो। वहां तुम उत्तम रूप में (भगवान् के साथ) ऐक्य को चरितार्थ कर सकोगे।

२९. प्रश्न—माताजी, क्या आप जानती हैं कि मैं सारे समय काम के बारे में सोचता हूं—जो शायद बहुत अच्छी बात नहीं है।
उत्तर—इसके विपरीत यह बहुत अच्छा है, यह तुम्हें एकाग्र होना सिखाता है।

३०. यह बात ध्यान में रखो कि संभावनाओं को उपलब्धियों में बदलने के लिये बहुत समय, प्रयास और धैर्य की आवश्यकता होती है।

तुम्हारा यहां से चला जाना इसमें जरा भी सहायक नहीं होगा। बाह्य उपाय व्यर्थ हैं; परिवर्तन "अंतर" में होना चाहिये। अपने निश्चय पर दृढ़ रहो। और फिर मेरी सहायता भी काम करेगी।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागरण गान

जागो भोर भई
रे पंथी संध्या के भूले, तू अबतक सोया !
कैसी रात अंधेरा कैसा जिसमें तू खोया ?
नहीं नहीं बेला खोने की, आयी स्वर्णमयी—जागो भोर भई।

बिखरे चांद-सितारों के दल, फैल रहा उजियारा,
पंथी तोड़ बंद नयनों के तू भी तम की कारा,
देख जगाने आयी तुमको उषा ज्योतिर्मयी—जागो भोर भई।

जिसने तुझे भुलाया हरदम, जिसने तुझे रुलाया,
रहे भागते उसके पीछे, उसको गले लगाया,
रे मरीचिका के अनुगामी, गति यह तृषामयी—जागो भोर भई।

भूल गये देख विषमय फूलों की झूठी माया
जाना था जिस पथ पर तुझको तूने उसे भुलाया
ले जाने को पार स्वयं आयी हैं जगन्मयी—जागो भोर भई।

—छोटेनारायण शर्मा
'पुष्प-गुच्छ' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(गतांक से आगे)

कुछ शब्दों में किसी केस की दिव्य शक्ति द्वारा सफल होने की या असफल होने की बात कहना संभव नहीं—श्रीअरविन्द ने कभी नहीं कहा है कि दिव्य शक्ति अमोघ है। केवल अतिमानसिक शक्ति ही अमोघ है लेकिन उसे नीचे उतारना बहुत कठिन है। उसे छोड़कर सब कुछ संभावना का खेल है जहां बहुत से तत्त्व भूमिका निभाते हैं: जैसे डॉक्टर, मरीज और परिवेश। हम जैसा मानते हैं उस तरह दिव्य शक्ति जादू-टोना नहीं है। वह शक्ति बहुत-सी बातों को महत्त्व देती है, खास कर मरीज की श्रद्धा और उद्घाटन, जैसे कि इस केस में हमने देखा। अगर मरीज की आत्मा शरीर छोड़ना चाहती हो तो दिव्य शक्ति उसे रहने के लिये बाधित न करेगी। संक्षेप में, यह शक्तियों का जटिल जाल है जिसमें एक केस दूसरे केस से भिन्न होता है और ऐसा कोई सामान्य नियम नहीं है जो सब पर लागू होता हो। फिर भी अगर दो केस असफल हुए हैं तो गंभीर बीमारियां सफलता से दूर हुई हैं और सफलता का कारण दिव्य शक्ति रही है इसमें संदेह नहीं रहता।

दो ऐसे अवसर भी आये थे जब मैंने माताजी की चिकित्सा की थी। सामान्यतः वे डॉक्टरों की चिकित्सा से दूर रहती थीं। उनके डॉक्टर थे श्रीअरविन्द। एक बार जब अकारण ही उनका हाथ फूल गया तो श्रीअरविन्द ने मुझे देखने की आज्ञा दी। मैंने कुछ शर्माते हुए उनकी उपस्थिति में ही माताजी के हाथ की जांच की। डॉक्टर मणीलाल और मुझमें यही अंतर था। वे चिकित्सा एकदम डॉक्टर की तरह बिना संकोच के करते थे। माताजी का केस मामूली था और गरम पानी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेंक से सूजन ठीक हो गयी। दूसरा अवसर तब आया जब माताजी के कान में दर्द हो रहा था, शायद किसी कीड़े ने काटा होगा। श्रीअरविन्द ने पूछा कि क्या मैं कुछ कर सकूंगा! मैंने कान की जांच की तो देखा कि अंदर एक छोटे-से स्थान पर रक्तस्राव हो रहा था। माताजी ने पूछा कि क्या कीड़ा अभीतक अंदर है; मैंने कहा नहीं है, किंतु जब मैंने कान में दवाई की बूंदें डालने का प्रस्ताव रखा तो उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, मुझे किसी दवाई की आवश्यकता नहीं है!" माताजी और श्रीअरविन्द दवाइयों को अभिशाप मानते थे। अपने लंबे यौगिक जीवन में उन्होंने अपनी सभी बीमारियों को अपनी दिव्य शक्ति द्वारा ही ठीक किया था। श्रीअरविन्द की बीमारी के अंतिम दिनों में ही दवाइयों का उपयोग हुआ था और माताजी की बीमारी में भी उनका बाद में उपयोग हुआ था। इस बदलाव के लिये विशेष कारण थे। श्रीअरविन्द के केस में मैंने "देवता का प्रस्थान" नामक अध्याय में इसके कुछ कारण बताये हैं।

माताजी के शरीर पर दवाइयों के पड़ते प्रभाव के बारे में श्रीअरविन्द ने मुझे लिखा था, "माताजी के शरीर पर दवाइयों का प्रभाव तुम्हारे शरीर या अन्य किसी के भी शरीर पर पड़ते प्रभाव से भिन्न होता है और उन दवाइयों की प्रतिक्रिया उनके लिये अनुकूल नहीं होती। उनकी भौतिक चेतना साधारण मनुष्यों से भिन्न है। हालांकि साधारण मनुष्यों में भी प्रतिक्रिया सर्वसम नहीं होती जैसा 'सायन्स' चाहता है कि हम मानें।"

अब मैं माताजी के अन्य कार्यक्षेत्र की ओर जाऊंगा जिसे हम यौगिक कार्य कह सकते हैं, हालांकि उसे ऐसा नाम देना ठीक न होगा। माताजी के कहने के अनुसार कोई भी क्रिया यौगिक या अयौगिक नहीं हो सकती; उनका कहना है कि सारा जीवन योग है। जैसा कि बहुधा लोग उसे गलत अर्थ देते हैं कि हर कार्य यौगिक होते हैं, उनके उपर्युक्त वाक्य का अर्थ वह नहीं है। उनके कहने का अर्थ यह है कि प्रकृति का क्रम-विकास रहस्यमय ढंग से और धीरे-धीरे तथा अनुक्रमिक रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक जीवन के लिये तैयारी कर रहा है। इसलिये प्रत्येक पार्थिव क्रिया के पीछे दिव्य उद्देश्य रहता है। इसी कारण माताजी और श्रीअरविन्द प्रकृति के समस्त क्षेत्र को योग का क्षेत्र मानते हैं। किंतु उनका ध्येय है जीवन के सामान्य क्रिया-कलापों का रूपांतर करना। वे चाहते हैं कि सामान्यतः जीवन के क्रिया-कलाप जो अज्ञानपूर्ण मोड़ लेते हैं उसे त्याग कर उन क्रिया-कलापों के अंदर निहित दिव्य सत्य को बाहर प्रकट किया जाये। वे चाहते हैं कि इस अवस्था को पाने के लिये हम सदा आध्यात्मिक चेतना में रहें ताकि जो भी जीवन के क्रिया-कलापों को हम अपनाएं वे योग के अंग बन जायें और उनका रूपांतर हो पाये। मैंने कहा था कि श्रीअरविन्द की दुर्घटना ने माताजी का सारा कार्यक्रम उलट-पुलट कर दिया था : जैसे प्रणाम, मुलाकातें और ध्यान के कार्यक्रमों को उन्होंने छोड़ दिया था या कुछ समय के लिये स्थगित कर दिया था। उस समय मानों भूतकाल से उन्होंने पूर्ण विच्छेद कर दिया था। और उतना ही नहीं बच्चों के और उनके मां-बाप के आने से हमारी जीवन प्रणाली भी काफी बदल गयी थी। बाद में पुरानी चीजें लौट आयीं किंतु नये रूप में। अब पहले की भांति सात-आठ घण्टों के दर्शन न थे, दो या तीन घंटों तक प्रणाम न चलता था न ही सांध्य ध्यान। उदाहरण के लिये, अब माताजी प्रणाम के लिये मुख्य सीढ़ी के सिरे तक सवेरे दस बजे आ खड़ी होतीं और एक पूरा दल उनसे मिलने चला आता और यह नीति जो प्रायः दो-तीन घंटों तक चलती रहती थी उस सारे समय माताजी खड़ी रहतीं! हम श्रीअरविन्द के कमरे से लोगों को व्यक्तिगत या विभाग के विषय में देर तक माताजी के साथ बात करते सुनते थे। उस समय माताजी देश और काल को भूल जाती थीं। वे बहुत देर तक शिकायतें, रिपोर्ट वगैरह सुनती रहतीं और कभी-कभी किसी विषय पर बहुत देर तक चर्चा करती रहतीं जब कि संकरी सीढ़ी पर खचाखच भीड़ प्रतीक्षा करती रहती थी। जैसा मैंने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, यह उनकी कार्य करने की एकलव्य-सी ऐकांतिक एकाग्रता थी। जो काम हाथ में आये उसी पर ध्यान देना, यही उनकी नीति थी। हमने उनकी यह लाक्षणिकता कई प्रसंगों पर देखी है; जैसे बड़े दिन के लिये वे यूरोपीय और अमरिकी आश्रमवासियों के लिये उनकी राष्ट्रीयता को ध्यान में रखकर विशेष 'टोकरियां' भेजतीं। बड़े दिन से पहले वे कुर्सी या छोटे मोढ़े पर बैठ जातीं और कुछ साधिकाओं की सहायता से उनमें चीजें सजातीं। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि, आवश्यकता और झुकाव के बारे में सोचकर वे चॉकलेट, चीज़, फल इत्यादि से उनकी टोकरियां भर देतीं। जब वे यह काम करतीं तो समय उनके लिये मानों स्थगित हो जाता था। हम श्रीअरविन्द के कमरे में उनके भोजन के आने की प्रतीक्षा करते रहते और आपस में मजाक करते कि माताजी अपने असली वातावरण में हैं, क्योंकि दिव्य मां होने के बावजूद उनका मानवीय मातृत्व भुलाया न जाता था।

प्रणाम के कार्यक्रम के बाद—असल में वह प्रणाम न था बल्कि लोगों को माताजी फूल देतीं और उस समय लोग अपनी आवश्यकता वगैरह के बारे में बातचीत कर पाते। उसके बाद प्रायः दोपहर के एक बजे वे दर्शन-कक्ष में क्लास लेतीं जिसमें ज्यादातर प्रश्न और उत्तर होते। वह क्लास कुछ-कुछ हमारी श्रीअरविन्द के साथ होती सांध्य-वार्ता से प्रभावित थी। चूंकि प्रश्न और उत्तर फरासीसी भाषा में होते थे इसलिये केवल उस भाषा के जानकार ही क्लास में आ पाते थे। कुछ समय बाद अपवाद स्वरूप न जाननेवालों को भी आने दिया जाता था। तब कुछ लोग प्रश्न अंग्रेजी में पूछने लगे। मैं भी उस क्लास में जाने के लिये बहुत उत्सुक था, एक कारण यह भी था कि तब श्रीअरविन्द के पास हमारा कोई काम न था। वह समय श्रीअरविन्द का नीरवता का समय था जो क्लास के बाद जब माताजी उनके लिये भोजन लातीं तभी टूटती। मैंने कुछ वाक्य फरासीसी में लिखकर क्लास में आने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी अनुमति चाही। उन्होंने वह चिट्ठी श्रीअरविन्द के सामने पढ़ी और हंसकर बोलीं, "वह अपनी फरासीसी का ज्ञान दिखाना चाहता है!"

खैर, क्लास का आरंभ हो गया। जहां तक मुझे याद है "प्रेयर एण्ड मेडिटेशन" में से पढ़कर उसीके विषय में प्रश्न पूछे जाते थे। केवल आध्यात्मिक विषय पर प्रश्न पूछने की इजाजत थी। बाद में जब प्रश्न कम होते गये तब मेरा ख्याल है कि क्लास में अन्य प्रश्नों की छूट दी गयी थी। उस समय फरासीसी भाषा जाननेवाले व्यक्ति कम थे। माताजी इतनी तेजी से बोलती थीं कि मुझे पता नहीं कितने व्यक्ति उनकी बात समझ पाये होंगे। यहीं श्रीअरविन्द और माताजी में फर्क था। चूंकि माताजी स्वभाव से शक्तिस्वरूपा थीं, दिव्य ऊर्जा थीं इसलिये वे 'पुरुष' की भांति आचरण, कार्य और वाणी में मंदगामी, और आरामपरक न होती थीं। फिर भी मैंने यह भी बताया है कि वे असाधारण रूप में धैर्यशील थीं और बहुत लंबे अरसे तक एक कार्य को करते रहने की क्षमता रखती थीं।

यह हमारे लिये सचमुच नया अनुभव था, क्योंकि तबतक हमारी पहुंच व्यक्तिगत थी और ज्यादातर व्यावहारिक मार्गदर्शन तक ही सीमित रहती; कभी भी बौद्धिक वार्तालाप न होता था और माताजी हमेशा हमारे बौद्धिक प्रश्नों के प्रति उदासीन रहतीं। यह पहला अवसर था जब वे समूह के सामने खुलीं और बौद्धिक जिज्ञासा को प्रत्युत्तर देने के लिये तैयार हुईं, फिर भी मुख्य विषय था आध्यात्मिकता। स्वाभाविक रूप से इन वार्तालापों से मुझे श्रीअरविन्द के साथ हमारी बातचीत की याद हो आती और उन दोनों की बातचीत का विरोधाभास सुस्पष्ट हो रहा था और अपने मन में दोनों की तुलना किये बिना न रह पाया। ये वार्तालाप दो भिन्न व्यक्तित्वों के लाक्षणिक भेद को तीव्रता से प्रकट करते हैं हालांकि उनकी चेतना एक थी। इस वार्तालाप में माताजी का व्यक्तित्व सारे वातावरण में छाया रहता था। उनका स्वर, मिजाज और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार में ऐसी गंभीरता, ऊर्जा और शक्ति रहती कि पूरे ध्यान से सुनना पड़ता था। परिहास का उसमें स्पष्ट स्थान तो न था किंतु विनोद की कौंध होती रहती। उनकी आंखें सबके ऊपर लगी रहतीं, प्रश्न करनेवाले को उत्तर देते समय भी वे मानों सबको उत्तर देती थीं। इसलिये लापरवाह या उदासीन रहना संभव न था। जब हमारे विद्यार्थी माताजी के निर्देशन में एक नाटक का मंचन कर रहे थे तो उन्होंने सख्ती से बच्चों से कहा कि उन्हें पूरा पूरा मौन रहना होगा। जैसा कि मैंने पहले संकेत किया है श्रीअरविन्द के और माताजी के व्यवहार में तीव्र भेद यह था कि श्रीअरविन्द निर्वैयक्तिक थे। वे आहिस्ता-आहिस्ता धीमे स्वर में बोलते थे जिसमें स्वराघात न होता। हमारे ऊपर कोई दबाव न था, हम मानों मित्र के साथ बातें कर रहे थे। मैत्री में हंसी मजाक और गंभीरता सब चलता है। फिर भी श्रीअरविन्द हमारे लिये श्रीअरविन्द रहते; उनके प्रति हमारा सम्मान कम न होता था। उन साक्षी-पुरुष की चेतना के सामने भी हममें से कई किसी विषय पर इतनी सरगर्मी से चर्चा करते थे कि अपना आपा खो बैठते थे। ऐसी परिस्थिति माताजी के सामने असाधारण होती। एक सीधी सादी उपमा में कहें तो वे दोनों माता-पिता के जैसे थे। दोनों वत्सल थे किंतु एक थे कृपालु, उदार, विशाल हृदय और दूसरी तरफ मां, सुदृढ़ होते हुए भी अविवेकी अनुशासन को न चलने देती थीं। दोनों दिव्य एकमेव के दो रूप हैं—निर्वैयक्तिक और वैयक्तिक, पुरुष और प्रकृति के रूप और दोनों का सौजन्य वर्णनातीत है। हमें माताजी से प्रश्न पूछने की आजादी थी, फिर भी प्रश्न पूछना हमेशा इतना आसान न था क्योंकि माताजी पूछे गये प्रश्नों के सीधे उत्तर न देतीं बल्कि प्रश्नकर्ता की चेतना के अनुसार उस चेतना को उत्तर देती थीं क्योंकि उनके लिये चेतना का महत्त्व था और उनकी आंतरिक दृष्टि के लिये हमारी चेतना खुली पुस्तक-सी थी। माताजी की क्लास काफी समय तक चलती रही और कमरा हमेशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खचाखच भरा रहता था। अफसोस की बात यह है कि उस क्लास की बातचीत नियमित रूप से लिपिबद्ध न हो सकी, पहला कारण यह था कि माताजी तेजी से बोलती थीं और दूसरा कारण यह था कि फरासीसी जाननेवाले व्यक्ति कम थे। बाद में उन्होंने केवल अंग्रेजी जाननेवालों के लिये अंग्रेजी में क्लास लेना शुरू किया। मेरे थोड़े-से लिखे हुए प्रश्नों में एक या दो को यहां उद्धृत करता हूं।

क्रोध का स्रोत क्या है और उससे पिंड कैसे छुड़ाया जाये ?

अभी यहां कोई गुस्से में है ? (हंसी) स्रोत की बात छोड़ दें तो जब तुम्हें गुस्सा आता है तो उसका अर्थ यह होता है कि तुमने अपने ऊपर नियंत्रण गंवा दिया है। जहां तक उससे पिंड छुड़ाने की बात है, तुम्हें ऐसा करने के लिये दृढ़ संकल्प करना चाहिये। (हंसी) नहीं, मैं मजाक नहीं कर रही हालांकि तुम्हें ऐसा लगा हो। चूंकि लोग ठोस निर्णय नहीं ले पाते, अपनी इच्छा शक्ति का सुदृढ़ता से उपयोग नहीं करते इसलिये उनके काम प्रभावशाली नहीं होते। मनुष्य की सत्ता में ऐसे परस्पर विरोधी भाग होते हैं जहां एक भाग निर्णय लेता है तो वहां दूसरे भाग उस निर्णय के मुकाबले में खड़े हो जाते हैं। वे पीछे छिपे हुए पाये जाते हैं। जैसे ही एक भाग कहता है, "मैं फिर से गुस्सा नहीं करूंगा।" वह छिपा हुआ भाग कहता है, "आह, मेरे दोस्त, रुके रहो, क्रोध के अवसर को आने दो।" और फिर जब अवसर आता है तो मनुष्य अपना निर्णय भूल जाता है और अपने-आपको क्रोध में झोंक देता है। अगर तुम सचमुच यह जानो कि कैसे निर्णय लेना चाहिये तो फिर तुम्हारे निर्णय को कोई भी तत्त्व मिटा न पायेगा। मैं तुम्हें एक उदाहरण देती हूं। मेरा बड़ा भाई जो मुझसे १८ महीना बड़ा था, अपने बचपन में बहुत ही जल्दी उत्तेजित हो जाता था। मैं उसके गुस्से को उकसाने में निष्णात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। हम दोनों में बहुत प्रेम था, किंतु जब उसे गुस्सा आता तो वह बेकाबू हो उठता। एक दिन हम क्रोके[१] खेल रहे थे तब या तो वह हार गया इसलिये या किसी और कारण से आग-बबूला हो गया और मुझे जोर से मुंगरी मारी। सौभाग्यवश मैं छोटी-मोटी चोट खाकर बच गयी। और एक बार जब हम दोनों एक कमरे में बैठे थे, तो उसने एक कुर्सी उठाकर मेरे ऊपर फेंकी, मैं उसी समय नीचे झुक गयी और कुर्सी मेरे सिर के ऊपर से निकल गयी। आखिरी बार जब हम लोग घोड़ागाड़ी से उतर रहे थे तब उसने मुझे गाड़ी के नीचे धकेल दिया; सौभाग्यवश घोड़ा हिला-डुला नहीं। मेरी मां ने उससे कहा "एक दिन तुम अपनी बहन को मार डालोगे।" तब उसकी अक्ल ठिकाने आ गयी और वह अपनी मूर्खता के परिणाम को समझ पाया। उसी दिन उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह जीवन में कभी गुस्सा नहीं करेगा और सचमुच उसने कभी गुस्सा नहीं किया। बाद में जब वह ऊंचे सरकारी पद पर काम करता था तब लोगों ने मुझसे कहा था कि उन्होंने उसे एक बार भी गुस्सा करते नहीं देखा।

उसी एक अनुभव से बार-बार गुजरना आवश्यक क्यों है ?

मेरा कहने का मतलब था कि पहले अपने-आप हठाग्रह और संप्रदायों को चरितार्थ किये बिना उसे दुहराते रहना न चाहिये। उदाहरण के लिये लोगों को यह कहने की आदत है, "भगवान् सर्वत्र हैं, चूंकि सब चीजों में भगवान् विद्यमान हैं इसलिये सब कुछ अच्छा है।" ऐसी बातें करने का तुम्हें तब तक अधिकार नहीं है जबतक तुम स्वयं उसे चरितार्थ न

[१] एक फरासीसी खेल जिसमें मुंगरी से गेंद को कई छोटी-छोटी लोहे की कमानियों से गुजारना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर पाओ। इस तरह बोलने से वे वाक्य अपनी शक्ति गंवा देते हैं और केवल एक सिद्धांत बन जाते हैं। अगर तुम दूसरों से सुने और दूसरों के अनुभूत सत्य को केवल दोहराते जाओ, तो उस बात से अन्य लोगों को कोई फायदा न होगा। तुम्हें अपने-आप उस स्थिति से गुजरना होगा, उसे अलग-अलग पहलुओं से देखना होगा, जीना होगा और उसमें से कुछ नवीन तत्त्व खोजना होगा। उसके बाद ही तुम्हारी बात रोचक और प्रभावशाली होगी।

माताजी के भाई के प्रति हम कृतज्ञता के ऋण के देनदार हैं। भारत में अंग्रेज सरकार की जोड़-तोड़ ने पांडिचेरी में आश्रम के अस्तित्व के लिये खतरे की घण्टी बजा दी थी। माताजी के भाई ने पेरिस स्थित कोलोनियल ऑफिस में परोक्ष हस्तक्षेप करके आश्रम के उस बड़े संकट को हटा दिया था।

अब मैं माताजी के दिन के अंतिम कार्यों की बात करना चाहता हूं। इन कार्यों को मैंने स्वयं देखा और दूसरे लोगों से सुना भी है। ऐसे आश्चर्यजनक कार्य की मैं कल्पना ही नहीं कर पाता और ऐसा कार्य केवल वे ही कर सकती हैं, क्योंकि उनकी प्रेरणा कवि निशिकान्त की उक्ति के अनुसार "भगवत-श्वेत स्रोत" से आती है, किसी मानव बुद्धि से नहीं। मेरा मतलब उनका सांध्य ध्यान और प्रणाम स्वीकारने के कार्यक्रम से है। मैंने इस कार्यक्रम का जिक्र पहले भी किया है। ध्यान की शुरूआत बहुत युक्तिसंगत समय पर हुआ करती थी, यानि शाम को ८ बजे। माताजी सीढ़ी के बीच आकर खड़ी रहतीं और नीचे बैठे लोग उनके साथ आधे घंटे तक ध्यान करते। उसके बाद माताजी ऊपर आकर श्रीअरविन्द के कमरे में झांक जातीं। कुछ देर बाद उनका रात्रि-भोजन लेकर आतीं। एक दिन उन्होंने श्रीअरविन्द से कहा, "बहुत समय के बाद देवगण ध्यान के लिये आये थे।" यह वक्तव्य श्रीअरविन्द के निम्न-लिखित काव्य की पंक्ति की याद दिलाता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बृहत् पृष्ठभूमि पर देवों के शांत मुखड़े
लाते अनंतताओं का चमत्कार।"

हमेशा की तरह सांध्य ध्यान का समय धीरे-धीरे बदलने लगा, यहां तक कि वह रात के ग्यारह बजे तक पहुंच गया, फिर बाद में बारह, आगे चलकर एक बजने लगा और फिर ध्यान के स्थान पर प्रणाम होने लगा। कैसा समय था प्रणाम का! समय का इस तरह बदलना उसी निश्चित समय पर होता था जब माताजी बहुत बार समाधि में चली जाती थीं। उस समय बहुत-से लोग आश्रम के प्रांगण में सो जाते, खासकर जवान लड़के और लड़कियां। तब हाराधन, आश्रम के पुराने साधक, घोषणा करते, "माताजी आ गयीं, माताजी आ गयीं!" सब झटपट खड़े हो जाते और माताजी के पास जाने के लिये पंक्ति में खड़े हो जाते। उस समय भी माताजी समाधि में होतीं—उनके नेत्र मुंदे हुए होते, सिर झुका हुआ रहता और हाथ में फूल होता था। हठात् उनकी समाधि टूट जाती और कुछ लोग जल्दी जल्दी फूल लेकर निकल जाते, फिर से वे समाधि में चली जातीं। जब श्रीअरविन्द विश्राम करते तब हम छत से यह सब देखने बाहर आ जाते। हम देखते कि पंक्ति चल रही है और अचानक काफी देर तक रुक गयी, फिर से तेजी से चली और फिर रुक गयी! उस निस्तब्ध मध्य रात्रि में माताजी सचमुच अपनी महिमा और गौरवमय सौंदर्य में पूरी पूरी देवी लगतीं। कुछ साधक उनके सामने बैठ जाते और ध्यान करते या उस अद्भुत दृश्य को देखकर अपने नेत्रों को तृप्त करते!

ऐसे समय मेरा एक भतीजा मेरे साथ रहता था। उसका स्वभाव बहुत स्वतंत्र था। वह रात को देर से आता, सवेरे देर से उठता। वह कलाकार था इसलिये स्वभाव से लापरवाह और अस्तव्यस्त बन गया था। मैंने उसको सही राह पर लाने की कोशिश की किंतु असफल रहा। मैंने माताजी से उसकी शिकायत की, उनके उत्तर ने मुझे चकरा दिया; वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलीं, "यह कैसे, वह मेरे पास आता रहता है !" मेरी समझ में न आया कि समस्या का हल इस उत्तर में कहां है ! मेरी समस्या वैसी की वैसी बनी रही और एक दिन मैंने उसे एक हल्की चपत लगा दी और माताजी को जाकर बताया कि मैंने क्या किया था। उन्होंने कहा, "इसीलिये वह तुम्हारी बात नहीं सुनता।" इस उत्तर से भी मैं भौंचक्का रह गया क्योंकि उन्होंने कारण को ही परिणाम बताया। फिर भी मैं उनके साथ बहस करना नहीं चाहता था। मेरी आंखों में एकटक देखते हुए उन्होंने कहा, "सुनो ! मैं एक कहानी कहूंगी। तुम जानते हो न कि मेरा एक भाई था। हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। वह रात को देर से आया करता और फिर पिताजी उसे पीटते। एक दिन मैंने पिताजी से कहा, 'उसे और एक बार पीटा तो मैं घर छोड़कर चली जाऊंगी।' उस सख्त धमकी ने भाई की पिटाई बंद करवा दी। तब मैं बहुत छोटी थी।" उसके बाद मैंने भतीजे को उसके भाग्य पर छोड़ दिया। आजतक माताजी की यही राय है और अभिभावकों, अध्यापकों और कप्तानों को उनका स्थायी हुकुम है कि बच्चों को किसी प्रकार की सजा न दी जाये।

(क्रमशः) —नीरदवरण

— — — —

तुम एक नया जीवन चाहते हो यह ठीक है। तुम इस बात का निश्चय रखो कि इसके लिये मैं यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करूंगी। मुझे इस बात का विश्वास है कि नये सिरे से अपने-आपको पाने में तुम्हें ये वस्तुएं—पढ़ाई में अध्यवसाय, कार्य में अनुशासन और व्यवस्थित जीवन—बहुत अधिक सहायता पहुंचायेंगी।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग में कर्म के लिये उचित हेतु

सामान्य जीवन में कर्म व्यक्तिगत लक्ष्य और मानसिक या नैतिक नियंत्रण के आधीन कामना की तुष्टि के लिये किया जाता है जिसमें कभी-कभी मानसिक आदर्श का स्पर्श भी होता है। गीता के योग में अपने कर्म को यज्ञ के रूप में भगवान् के अर्पण किया जाता है। उसमें कामना पर विजय, निरहंकार, अनासक्त कर्म, भगवान् के लिये भक्ति, वैश्व चेतना में प्रवेश, सभी प्राणियों के साथ ऐक्य की भावना और भगवान् के साथ एकता का भाव होता है। यह योग इन चीजों में, अंतिम लक्ष्य के रूप में, अतिमानसिक प्रकाश और शक्ति को नीचे उतारता और प्रकृति का रूपांतर, इन दो चीजों को जोड़ देता है।

*

साधारणतः मनुष्य प्राणमय सत्ता की सामान्य प्रेरणा से, आवश्यकता, धन, सफलता, पद, शक्ति, ख्याति, क्रियाशीलता के वेग की कामना और अपनी क्षमताओं की अभिव्यक्ति के सुख के लिये कर्म करते और उसे आगे चलाते हैं। वे अपनी क्षमता, कर्म करने की शक्ति, अपनी प्रकृति और अपने कर्म के परिणामस्वरूप अपने सौभाग्य या दुर्भाग्य के अनुसार सफल या असफल होते हैं। जब तुम योग को अपनाते हो और अपना जीवन भगवान् को अर्पित करना चाहते हो तो प्राणमय सत्ता के इन साधारण प्रयोजनों को खुल खेलने का अवसर नहीं मिलता। उनके स्थान पर मुख्य रूप से चैत्य और आध्यात्मिक प्रेरणा आ जानी चाहिये जो तुम्हें पहले जैसी शक्ति से काम करने योग्य बनायेगी परंतु वह काम अब अपने लिये नहीं, भगवान् के लिये होगा।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक दृष्टि से शुद्ध करनेवाला एकमात्र काम वह है जो किसी निजी हेतु के बिना, ख्याति, सार्वजनिक मान्यता या सांसारिक बड़प्पन की कामना के बिना, अपने मानसिक प्रयोजनों या प्राणिक लोभ-लालसा या मांगों के आग्रह के बिना, भौतिक पसंदों, अहम्मन्यता, भद्दे स्वाग्रह, पद या प्रतिष्ठा की मांग के बिना केवल भगवान् के लिये और भगवान् की आज्ञा से किया जाता है। योग के जिज्ञासु के लिये अहंकारपूर्ण भाव से किया गया कोई भी काम, वह अज्ञानमय जगत् के लोगों के लिये चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, किसी काम का नहीं होता।

*

परिवार, समाज, देश बृहत्तर अहंकार हैं, वे भगवान् नहीं हैं। तुम उनके लिये तभी कार्य कर सकते हो और यह कह सकते हो कि तुम केवल भगवान् के लिये काम कर रहे हो जब तुम उस उद्देश्य के लिये काम करने के लिये भगवान् के आदेश के बारे में या अपने अंदर काम करनेवाली दिव्य शक्ति के बारे में सचेतन हो। अन्यथा यह मन का एक विचार मात्र है जो देश आदि को भगवान् के साथ मिला देता है।

*

आत्म-समर्पण तुम्हारे द्वारा किये गये किसी कार्य विशेष पर निर्भर नहीं होता, वह निर्भर है उस भाव पर जिसके साथ समस्त कर्म किया जाता है, वह चाहे किसी तरह का क्यों न हो। कोई भी काम जो अच्छी तरह, सावधानी के साथ भगवान् के प्रति यज्ञ के रूप में किया जाता है, जिसमें कामना और अहंकार न हों, जो मन की समता, सौभाग्य या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्भाग्य में स्थिर शांति के साथ, भगवान् के लिये किया जाये, निजी लाभ, पुरस्कार या परिणाम के लिये नहीं। काम यदि इस चेतना के साथ किया जाये कि सभी कर्म दिव्य शक्ति के हैं तो वह कर्म द्वारा आत्म-समर्पण का एक साधन बन जाता है।

*

तुमने शक्ति का उपयोग कर्म के लिये किया और जबतक तुमने उस कर्म में लगे रहना पसंद किया तबतक उसने तुम्हें सहारा दिया। यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है कि जो काम किया जा रहा है वह धार्मिक है या धर्महीन प्रकार का है, महत्त्व है उस आंतरिक मनोभाव का जिसमें काम किया जाता है। अगर वृत्ति चैत्य नहीं, प्राणिक है तो तुम अपने-आपको काम में फेंक देते हो और आंतरिक संपर्क खो बैठते हो। अगर चैत्य वृत्ति है तो आंतरिक संपर्क बना रहता है, तुम्हें अनुभव होता है कि शक्ति काम में सहारा दे रही है या काम कर रही है और साधना प्रगति करती है।

*

सबसे अधिक महत्त्व है उस भाव या चेतना का जिसमें कार्य किया जाता है, भिन्न-भिन्न स्वभावों के लिये बाहरी रूपों में बहुत भिन्नता हो सकती है। यह तबतक रहता है जबतक तुम्हें भागवत शक्ति को अपने कामों को हाथ में ले लेने और करने का स्थायी अनुभव नहीं हो जाता। बाद में शक्ति ही निश्चित करती है कि क्या किया जाये और क्या न किया जाये।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सच नहीं है कि शारीरिक कार्य मानसिक कार्य से घटिया है। बुद्धि का घमण्ड ही ऐसा दावा करता है। भगवान् के लिये किये गये सभी काम समान रूप से भागवत होते हैं। अपने व्यक्तिगत विकास, ख्याति या मानसिक संतोष के लिये किये गये मानसिक कार्य की अपेक्षा भगवान् के लिये किया गया शारीरिक कार्य अधिक दिव्य है।

*

यह उपयोगिता का प्रश्न बिलकुल नहीं है यद्यपि जब तुम लग कर करते हो तो तुम्हारा काम बहुत उपयोगी होता है। काम साधना का अंग है और साधना में उपयोगिता का प्रश्न नहीं उठता—यद्यपि बाहरी सामान्य जीवन में भी उपयोगिता ही एकमात्र माप नहीं है। प्रश्न है भगवान् के प्रति अभीप्सा का, क्या वह तुम्हारे जीवन का केंद्रीय लक्ष्य है, तुम्हारी आंतरिक आवश्यकता है या नहीं।

*

यदि तुम्हारे अंदर कार्य करने के लिये जरूरी प्रकाश न हो तो काम पर यह आग्रह बेकार है। "योग के अंदर जीवन का समावेश होना चाहिये, बहिष्कार नहीं" का यह अर्थ नहीं है कि अब जीवन जिस तरह का है, उसे उसी तरह लड़खड़ाते अज्ञात, दुःख दैन्य और मानव इच्छा, तर्क-बुद्धि, प्रेरणा और उसके द्वारा प्रकट होनेवाली सहज वृत्ति के साथ स्वीकार कर लिया जाये। कर्म के समर्थक यह सोचते हैं कि मानव बुद्धि और ऊर्जा हमेशा नये कदम उठाकर सब कुछ ठीक कर सकती है लेकिन बुद्धि के विकास और ऊर्जा के ऐसे आश्चर्यजनक उत्पादन के बाद भी, जिसका इतिहास में कोई प्रतिरूप नहीं है, जगत् की जो वर्तमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था है वह उनकी उस भ्रांति के खोखलेपन का सुस्पष्ट प्रमाण है जिससे वे आक्रांत हैं। योग का आधार यह है कि चेतना के परिवर्तन से ही जीवन के सच्चे आधार को पाया जा सकता है, वस्तुतः उसका नियम है, "भीतर से बाहर की ओर"। लेकिन भीतर का मतलब ऊपरी सतह से पाव इंच नीचे नहीं है। तुम्हें गहराई में जाकर अंतरात्मा को, अपने-आपको, अपने अंदर दिव्य यथार्थता को पाना चाहिये। तभी हमारा जीवन, हम अभी जो हैं उस अपूर्ण और अपर्याप्त वस्तु के अंधे और बार-बार चक्कर लगाते हुए अस्तव्यस्त धब्बे न रहकर हम जो हो सकते हैं उसकी सच्ची अभिव्यक्ति बन सकता है। चुनाव है पुराने गड़बड़झाले में इस आशा से ठोकरें खाते हुए भटकने में कि हम किसी आविष्कार पर जा टकरायेंगे या पीछे हटकर अपने भीतर तबतक प्रकाश खोजने में जबतक हम अपने भीतर और बाहर परम देव को खोज न लें और उनकी रचना न कर सकें।

*

तुमने जो लिखा है उससे मालूम होता है कि तुम्हारे अंदर काम के बारे में एक गलत धारणा थी। आश्रम में काम मानवजाति अथवा 'आश्रम के साधक' कहानेवाले उसके एक अंश की सेवा के लिये नहीं है। यह सुखभरे सामाजिक जीवन और साधकों के बीच भावुकता और आसक्तियों के प्रवाह, प्राणिक गतिविधियों की अभिव्यक्ति, कुछ लोगों के या सबके साथ मुक्त प्राणिक आदान-प्रदान के लिये अवसर भी नहीं है। यह काम भगवान् की सेवा और भगवान् के प्रति आंतरिक उद्घाटन के क्षेत्र के रूप में, केवल भगवान् के प्रति समर्पण, अहंकार और सभी सामान्य प्राणिक गतिविधियों के त्याग, चैत्य उत्थान के प्रशिक्षण, निःस्वार्थता, आज्ञाकारिता, सीमित व्यक्तित्व के सभी मानसिक, प्राणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या अन्य प्रकार के स्वाग्रह के त्याग के लिये है। आत्म-पोषण यहां पर लक्ष्य नहीं है, सामूहिक प्राणिक अहं का निर्माण भी लक्ष्य नहीं है। कर्मयोग का लक्ष्य है अपने छोटे-से अहं का भगवान् के साथ ऐक्य में विलयन, शुद्धि, समर्पण, अपने निजी विचारों और निजी भावों पर आधारित अपने निजी अज्ञानभरे पथप्रदर्शन के स्थान पर भगवान् के पथप्रदर्शन को लाना, अपनी निजी इच्छा को भगवान् की इच्छा के अर्पित करना।

अगर तुम्हें यह अनुभव होता है कि मनुष्य तुम्हारे निकट हैं और भगवान् तुमसे दूर हैं और तुम सीधे भगवान् की सेवा और भगवान् के प्रेम की जगह मानवों की सेवा और उनके प्रति प्रेम के द्वारा भगवान् को खोजते हो तो तुम गलत सिद्धांत का अनुसरण कर रहे हो क्योंकि यह मानसिक, प्राणिक और नैतिक सिद्धांत है, आध्यात्मिक जीवन का सिद्धांत नहीं।

—श्रीअरविन्द

एक प्रयत्न

यदि कोई अभिव्यक्ति हो तो क्या वह शुद्ध रूप में आध्यात्मिक होगी, अर्थात्, क्या केवल वे ही लोग उसे देखने-समझने में समर्थ होंगे जो योग करते हैं, या तथ्यों के जगत् में भी उसके परिणाम उत्पन्न होंगे ?

मेरे बच्चे ! तुम इसे भविष्यकाल में क्यों रख रहे हो ?

वर्षों से संसार में असामान्य, विलक्षण परिणाम उत्पन्न होते रहे हैं। परंतु इसे देखने के लिये, मनुष्य में थोड़ा ज्ञान होना चाहिये; नहीं तो वह उन्हें बिलकुल मामूली और साधारण बातें समझ लेता है—क्योंकि मनुष्य यह जानता भी नहीं कि वे होती कैसे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतएव यह चीज भी शायद ठीक वैसी ही होगी; ऐसी संभावना है कि बहुत प्रबल परिवर्तन होंगे, अद्‌भुत कर्म संपन्न होंगे और, हे भगवान्! मनुष्य कहेंगे "परंतु यह, स्वभावतः ही, यह वैसा है," क्योंकि मनुष्य यह नहीं जानता कि यह कैसे हो जाता है।

संसार में क्रिया ?—वह निरंतर हो रही है। वह ऐसी चीज है जो फैलती है और सर्वत्र कार्य करती है, सब जगह नवीन प्रोत्साहन, नवीन जागृति, नवीन भावनाएं, संकल्प-शक्ति के नवीन कर्म प्रदान करती है—सर्वत्र। पर फिर भी, मनुष्य चूंकि यह नहीं देखता कि यह कैसे हो रहा है, वह समझता है कि यह वही चीज है जिसे "एकदम स्वाभाविक" कहा जाता है।

यह बिलकुल स्वाभाविक है, परंतु सामान्य भौतिक प्रकृति की स्वाभाविकता से भिन्न दूसरी प्रकार की स्वाभाविकता इसमें है।

निस्संदेह, यह कहना काफी युक्तिसंगत है कि परमात्मा के कार्य को देखने के योग्य बनने के लिये मनुष्य को परमात्मा का ज्ञान अवश्य होना चाहिये। यदि तुम्हें परमात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं है तो तुम भला उन्हें कार्य करते हुए देखने में कैसे समर्थ होगे ? क्योंकि परमात्मा जो कुछ करते हैं उसका परिणाम भौतिक जगत् में आवश्यक रूप से भौतिक होता है; और इसके भौतिक होने के कारण तुम इसे बिलकुल स्वाभाविक समझते हो। प्रकृति जो कुछ करती है उसके बारे में तुम क्या जानते हो, और जो कुछ परमात्मा करते हैं उसके बारे में तुम क्या जानते हो ? वह सब कुछ जो प्रकृति करती है—मैं यहां भौतिक प्रकृति की बात कह रही हूं—उसके संबंध में हम बहुत थोड़ा जानते हैं, प्रायः कुछ नहीं जानते, क्योंकि उसे जानने के लिये हमें अनवरत उन चीजों के बारे में जानना होगा जो उन सब बातों को उलट देती हैं, जिनपर हम पहले विश्वास करते थे कि हम जानते हैं। और, इसलिये जो कुछ शुद्ध रूप में प्रकृति का कार्य है और जो कुछ प्रकृति के माध्यम से संपन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनेवाला परमात्मा का कार्य है उन दोनों के बीच कैसे विभेद किया जा सकता है ? हमें अवश्य जानना होगा कि एक से दूसरे को कैसे अलग पहचाना जाता है ? और उन्हें कैसे पहचाना जाये जब कि हमारी चेतना इस विषय में बिलकुल सुस्पष्ट और सुनिश्चित नहीं है कि परमात्मा क्या हैं ? उन्हें कैसे पहचाना जाये, और उनके 'कार्य' को कैसे देखा जाये ? यह मुझे बहुत सरल तर्क प्रतीत होता है।

संसार तो चलता रहेगा। चीजें होती रहेंगी। और संभवतः केवल मुट्ठीभर लोग ही ऐसे होंगे जो यह समझेंगे कि वे कैसे हुई हैं। बस।

और वर्तमान समय का यदि कोई व्यक्ति संसार की उस स्थिति में, जैसी कि यह दो या तीन हजार वर्ष पूर्व थी—ओह, शायद इससे भी कम, एक या दो हजार वर्ष पूर्व थी—अचानक, बिना किसी अवस्थांतर के जा गिरे तो वह इसके मुकाबले ऐसी दम घोंटनेवाली स्थिति होगी कि शायद बहुत कम लोग उसे बर्दाश्त करने में समर्थ हों। परंतु यह चीज चूंकि "इस भांति", प्रकृति की रोचक धीमी गति के साथ, उसकी सब प्रकार की मौजों के साथ हुई, मनुष्य इसे एकदम स्वाभाविक समझता है और इस ओर ध्यान भी नहीं देता।

जब यह कहा जाता है कि यदि कोई सत्य-चैतन्य में प्रवेश कर जाता है, यदि कोई अपनी चेतना को बदल देता है तो उसके लिये स्वयं जगत् भी बदल जाता है, यह कोई बिम्ब नहीं होता, यह कोई पुष्पिता वाणी नहीं होती। और यह कोई बाहरी रूप या प्रभाव भी नहीं होता: मनुष्य साधारण चेतना में रहते हुए जैसा देखता है उससे भिन्न रूप में देखने लगता है; संबंध भिन्न हो जाते हैं; कारण भिन्न हो जाते हैं, कार्य भिन्न हो जाते हैं। और किसी ऐसी वस्तु को देखने के बदले जो पारदर्शक नहीं होती (मनुष्य यह नहीं देख सकता कि पीछे क्या है, वह जो देखता है वह ऊपरी सतह, पपड़ी होती है; केवल वही चीज है जो दिखायी देती है और मनुष्य यह भी नहीं देख सकता कि कौन-सी चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे चलाती है, उसे अस्तित्ववान् बनाती है), प्रत्येक वस्तु भीतर से बाहर की ओर उलट जाती है, और इसीलिये, यह कृत्रिम और असत्य, और लगभग अस्तित्वहीन प्रतीत होती है। और इसलिये, जब मनुष्य वस्तुओं को इस प्रकार, सामान्य ढंग से, समझे, अपने-आपको बिना थकाये, ध्यान और एकाग्रता का अभ्यास करने के लिये तथा इस भांति वस्तुओं को देखने के लिये प्रबल प्रयत्न करने के लिये विवश हुए बिना देखता है, जब यह उसका सामान्य, स्वाभाविक दर्शन होता है, तब वह एक पूर्णतः भिन्न ढंग से वस्तुओं को समझता है—स्वभावतः ही संसार भिन्न प्रकार का होता है !

एक प्रारंभिक यात्रा अनिवार्य है और जो इस छोटी-सी प्रारंभिक यात्रा को कर चुके हैं, वे नाना प्रकार की वस्तुओं, नाना प्रकार के अनुमानों और प्रश्नों को फिर से अपने आगे नहीं रख सकते।

परंतु सचमुच, अपने विषय पर वापस आयें, जो कुछ मैं सरल ढंग से कहना चाहती हूं वह बहुत सीधा-सा यह है कि जब मुझसे एक संदेश देने को कहा जाता है (चूंकि मुझसे मांगा जाता है इसलिये देती हूं), मुझसे मांगा जाता और कहा जाता है : "ओह ! हम उसे छपाना चाहते हैं, क्या आप उसे हमारे पास भेज सकेंगी ?" तब, मैं क्या करती हूं ? मैं उस वर्ष की ओर ताकती हूं जो आनेवाला है (उसके विषय में कुछ कहने के लिये उसकी ओर ताकना आवश्यक होता है), मैं उस वर्ष की ओर आंख दौड़ाती हूं जो आनेवाला है और फिर, उसकी ओर देखते हुए मैं उसी समय लोगों की सभी कल्पनाओं को, उनके सभी अनुमानों को और उस तथाकथित आश्चर्यपूर्ण वर्ष में होनेवाली वस्तुओं के विषय में उनके सभी आविष्कारों को देखती हूं। मैं उन सब चीजों की ओर ताकती हूं और उसके साथ-ही-साथ यह देखती हूं कि वह क्या है—वह एकदम पहले से ही क्या है, वह कहीं पर पहले से ही वैसा होता है—और तुरंत मैं बहुत स्पष्ट रूप में यह जान लेती हूं कि सबसे अच्छी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह है कि यह न कहा जाये कि वह क्या होगा। और चूंकि लोग बहुत अधिक बाजे-गाजे और घोषणाओं की आशा करते हैं, इसलिये मुझे जो कहना था वह कह दिया, बस इतना ही। उससे अधिक कुछ नहीं। जो कुछ मेरे कहने का मतलब था वह बस, इतना ही था, "आओ, उस विषय में हम कोई चर्चा न करें, यदि तुम सहमत होओ, यही अधिक अच्छा है, यही श्रेयस्कर है।" मैंने इसके सिवा और कुछ नहीं कहा है : "उसके विषय में कुछ न कहना अधिक अच्छा है, उसके विषय में बहुत अधिक शोर-गुल मत मचाओ, क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं। वस्तुओं के गभीरतर विधान के अनुसार, उस व्यक्ति की तरह आश्चर्यचकित हुए बिना होने दो जो समझता नहीं और मुंह बाये देखता रहता है।"

और सबसे बढ़कर, मेरे पास आकर यह न कहो : "आप जानती हैं, वह ऐसा होगा।" क्योंकि, बस यही चीज है जो उसे अत्यंत कठिन बना देती है। मैं यह नहीं कहती कि जो कुछ होना है वह नहीं होगा, पर यदि हम उसके विषय में चर्चा करेंगे तो वह शायद बहुत अधिक कठिनाइयों के साथ आयेगा। अतएव यह कहीं अधिक अच्छा है कि चीजों को होने दिया जाये।

और अंततः, यदि मनुष्य बहुत संयत—बहुत प्रशांतचित्त होना चाहे तो उसे अपने-आपसे केवल यह पूछना चाहिये : "अच्छा, दस हजार वर्ष में, यह सिद्धि जिसे हम प्राप्त कर रहे हैं, उसका क्या रूप होगा ? काल की गति के बीच एक अगोचर बिंदु, एक प्रकार की तैयारी, भावी सिद्धि की ओर जाने का एक प्रयत्न।" ओह ! यह कहीं अधिक अच्छा है कि हम इतने उत्तेजित न हों। आओ, हम जो कुछ कर सकते हैं करें और शांत बने रहें। बस।

हां, अब, कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जरा चाबुक लगाने की आवश्यकता होती है जैसे मनुष्य मलाई को फेंटता है। परंतु उन्हें कवियों के पास जाना चाहिये, मेरे पास नहीं। मैं कवि नहीं हूं, मैं बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करके ही संतुष्ट रहती हूं। मैं कथनी की अपेक्षा करनी को ही अधिक पसंद करती हूं।

४ जनवरी १९५६ 'श्रीमातृवाणी', खण्ड ८
पृ० १२-१५

मृत्यु के बाद

(कुछ लोग कहते हैं कि आत्मघात करने से वे इस प्रपंच से छुटकारा पा सकते हैं। क्रोध, निराशा और कष्ट में यमराज को निमंत्रण देनेवालों की कमी नहीं है। आत्मघात या साधारण मृत्यु के बाद क्या होता है इसका कुछ परिचय श्रीअरविन्द से सुनिये। यह लेख आर्काइव्ज के दिसंबर १९७७ में छपे ईशोपनिषद् के भाष्य से लिया गया है। —सं०)

आसुरी या देहहीन जगत्, जहां आत्महत्या करनेवाले दण्डित होते हैं, घोर अंधकार और दुःख के जगत् हैं जो उस देवलोक से दूसरे ध्रुव पर हैं जहां प्रकाश और आनंद का राज्य है। ये जगत् पुण्य कार्यों का पुरस्कार होते हैं। धरती के नीचे पाताल और पाताल के नीचे नरक—ये आसुरिक जगत् हैं। सत्ता के शिखर पर स्वर्ग, सूर्यालोक में देवों का जगत् है। निश्चय ही यह सब पुराणगाथा और रूपक है लेकिन आसुरिक जगत् एक वास्तविकता है। वे स्वयं हमारी सत्ता में अधोलोक की गहराइयों में उदासी, विषाद और कुढ़न के जगत् हैं। जगत् एक ऐसा स्थान नहीं है जहां पहाड़ियां, पेड़ और पत्थर हों। वह जीवात्मा की एक अवस्था है, बाकी सब परिस्थितियां और स्वप्न के ब्योरे हैं। श्रुति परलोक में आत्मा के लोक **'अमुष्मिन् लोके लोक'** की बात करती है। इस प्रसंग में इस शब्द का उपयोग उसके तात्त्विक अर्थ आत्मा की स्थिति या अवस्था के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ में है और उसका आलंकारिक अर्थ है ऐसा जगत् जिसमें ऐसी अवस्था हो। भ्रांति के प्रभाव तले आत्मा जिस मानसिक अवस्था को मूर्तरूप देती है उसके दृश्य प्रतिवेश, गोचर प्रतिमाएं और आभास उस जगत् की रचना करते हैं जिसमें वह रहती है। यह जरूरी नहीं है कि मर्त्य लोक यह धरती ही हो। जिस पर हम मनुष्य रहते हैं क्योंकि इसके अतिरिक्त मर्त्य सत्ताओं के और भी निवास-स्थान हो सकते हैं, मर्त्यलोक है स्थूल शरीर में नश्वरता की अवस्था। स्वर्गलोक है सूक्ष्म शरीर में आनन्द की अवस्था, नरक सूक्ष्म शरीर में दुःख-दैन्यभरी अवस्था है और ब्रह्मलोक है कारण शरीर में भगवान् के साथ रहने की अवस्था।

जीवात्मा जब मर्त्य स्थिति में होती है तो स्वप्न देखनेवाले की तरह धरती और उसकी सब चीजों को मर्त्य अवस्था में देखती और अपने-आपको किसी क्षेत्र विशेष में गिरिमालाओं और नदी-पर्वतों के बीच देखती है। उसी तरह जब वह सूक्ष्म शरीर में घोर तमस् की अवस्था में हो तो अपने-आपको ऐसे स्थान पर पाती है जो घन अंधकार और अकथनीय दुःख-दैन्य से भरी हो। कल्पना यह की जाती है कि यह अंधलोक धरती के नीचे, सूर्य से विमुख है। धरती मर्त्य अवस्था में हमारा स्थान है और यह लोक मर्त्य अवस्था से भी नीचे है। यह घन अंधकार का लोक है। क्योंकि शाश्वत की भव्यता में प्रकट होनेवाला प्रकाश जीवात्मा की चेतना में बिलकुल नहीं पहुंच पाता, उसकी संपूर्ण चमक-दमक को माया का ग्रहण लग जाता है। नरक, पाताल, धरती, स्वर्ग, सूर्यलोक, चन्द्रलोक, गोलोक, ब्रह्मलोक—ये सब काल्पनिक लोक और स्वप्न हैं क्योंकि वे सब स्वयं जीवात्मा के अंदर हैं और उसके बाहर केवल चित्रों और बिम्बों के रूप में हैं। फिर भी जबतक हम स्वप्नद्रष्टा हैं तबतक हम सपनों की भाषा में बोल और सोच सकते हैं।

तो यह है आसुरिक जगत्। जब कोई बहुत कष्ट में, बहुत दुःख में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या मन की बहुत उत्तेजना में मरता है और उसके अंतिम विचार भय, क्रोध, कष्ट या त्रास के होते हैं तो उसके सूक्ष्म शरीर में जीवात्मा मन से इन संस्कारों को बरसों तक, शायद शताब्दियों तक हटा नहीं पाती। आत्महत्या के बारे में भी यही बात है। वह जुगुप्सा, अधीरता, कष्ट या क्रोध और भय के कारण इस अवस्था में जा गिरती है क्योंकि यही भाव उसके अंतिम क्षण में प्रधान होते हैं। आत्महत्या नियत समय पर योगी का बिना किसी आवेग के समाधिस्थ होकर शरीरत्याग नहीं है। यह आवेग और घृणा से भरा देहत्याग है जिसमें अंतरात्मा के बिछुड़ते समय विक्षोभ या कटुताभरी रहती है, अतः वह जिस स्थिति में जाती है वहां भी शांति और मधुरता की स्थिति नहीं हो सकती। यह मृत्यु का विधान है। मृत्यु तीव्र एकाग्रता की घड़ी होती है जब बिछुड़ती हुई आत्मा अपने मर्त्य जीवन के संस्कार उसी तरह जुटाती है जैसे कोई सेना अपनी यात्रा के लिये चारा इकट्ठा करती है और उस समय जो भी संस्कार प्रधान होते हैं वही उसके भावी जीवन की स्थिति का नियंत्रण करते हैं :

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद् भावभावितः॥

"हे कौन्तेय! मनुष्य अंत में शरीर छोड़ते समय मन के जिन संस्कारों को याद करता है वह उसी अवस्था में जाता है और उन्हीं संस्कारों के प्रभाव में रहता है।'' अतः मुक्ति की बात छोड़ दो तो भी शुद्ध और उदात्त जीवन जीने का और शांत तथा प्रभावशाली मृत्यु का बहुत महत्त्व है। क्योंकि मृत्यु के समय के विचार और संस्कार आत्मा को स्थूल शरीर और उसके प्राणिक क्रिया-कलाप अथवा नीच, दुष्टतापूर्ण और निम्न मानसिक कामनाओं के साथ जोड़ते हैं तो आत्मा लंबे समय तक अंधकार और दुःख-दर्द की तामसिक अवस्था में रहती है जिसे हम साधारणतः पाताल और अधिक तीव्र रूप में हो तो नरक कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अगर उस समय ऐसे विचार और संस्कार प्रधान हों जो आत्मा को मन की उच्चतम कामनाओं के साथ जोड़ते हैं तो अंतरात्मा तेजी से प्रकाश और सुख की राजसिक स्थिति में चली जाती है जिसे हम स्वर्ग, बहिश्त या पेराडाइस कहते हैं। वहां से अंतरात्मा फिर मर्त्य शरीर में लौट आती है। लेकिन अगर उस समय ऐसे विचार और संस्कार प्रधान हों जो उच्चतर प्रज्ञा या आत्मा के आनन्द के साथ नाता जोड़ते हैं तो अंतरात्मा तेजी से उच्चतम आनन्द की अवस्था में चली जाती है जिसे हम कैलास, वैकुण्ठ, गोलोक या ब्रह्मलोक कहते हैं जहां से आत्मा विश्व के इस युग में नहीं लौटती। लेकिन अगर हम इस आत्मा का परमात्मा के साथ तादात्म्य करना सीख लें तो मृत्यु से पहले ही हम शाश्वत बन जाते हैं और मृत्यु के बाद उससे भिन्न नहीं होते। माया की तीन अवस्थाएं हैं—तामसिक माया, राजसिक माया और सात्त्विक माया। हमें क्रमशः इन्हें पार करना होता है ताकि हम वहां पहुंच सकें जो माया नहीं है। यही एकमेव शाश्वत सत्य है। हम अपने शरीर को समाधि की अवस्था में छोड़कर अप्रकट, अमर्त्य आनन्द की अवस्था में जा पहुंचते हैं जिसके बारे में भगवान् ने कहा है—तद् धाम परमं मम।

सोसायटी समाचार

७५ वर्ष पहले २४ नवंबर को श्रीअरविन्द के प्रयास को सफलता प्राप्त हुई। इसी दिन भौतिक तत्त्व में अधिमानस के देवत्व का अवतरण हुआ था। यह अवतरण अतिमानस के अवतरण की तैयारी थी। अतिमानस के अवतरण से "मानव जाति जिस उच्चतम पूर्णता का स्वप्न देख रही है, वह चरितार्थ होगी।"

इस सिद्धि के तुरंत बाद श्रीअरविन्द संपूर्ण रूप से एकांत में रहने लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि वे अपने काम में एकाग्र हो पायें : वह काम था अतिमानस का अवतरण। माताजी २४ अप्रैल १९२० को जापान से पांडिचेरी आ गयी थीं। अनुयायियों की संख्या भी बढ़ने लगी थी। "आश्रम की स्थापना या आश्रम ने अपने-आपको १९२६ में स्थापित किया था।" इस प्रश्न के उत्तर में कि "१९२६ में कौन-सी तारीख से माताजी ने आश्रम का पूरा काम अपने हाथ में लिया था?" श्रीअरविन्द ने उत्तर दिया, "१५ अगस्त के शायद कुछ दिनों के बाद। जब मैं पूरी तरह निवृत्त हुआ, तब उन्होंने पूरा भार अपने ऊपर लिया।"

श्रीअरविन्द ने घोषणा की थी, ऐसी संस्थाएं जिस साधारण उद्देश्य से स्थापित होती हैं उससे भिन्न उद्देश्य से आश्रम की स्थापना हुई है। जीवन का उद्देश्य संसार का त्याग नहीं बल्कि जीवन के भिन्न रूप और विकास क्रम के अन्य प्रकार के केन्द्र को व्यावहारिक रूप देने के लिये स्थापित हुआ है। क्रम-विकास और जीवन के नये रूप का अंतिम लक्ष्य यही है कि वे उच्चतर आध्यात्मिक चेतना से अनुप्राणित हों और आत्मा के महानतम जीवन को मूर्त रूप दे पायें।"

इस वर्ष २४ नवंबर को आश्रम में और सारे भारत और विदेशों में सोसायटी के केन्द्र और शाखाओं में श्रीअरविन्द के सिद्धि-दिवस की जयंती मनायी जायेगी।

केन्द्रों के समाचार

रतलाम (मध्यप्रदेश) सोसायटी की शाखा ने जुलाई में तीन-दिवसीय 'प्रिय मातृभूमि' नामक युवा शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर का संचालन और मार्गदर्शन कैवल्य स्मार्त (सूरत), एस. आर. ठाकर (उज्जैन) और महेश बैरागी (इंदौर) ने किया। शिविर में भारत की संसार में भूमिका, श्रीअरविन्द आश्रम, श्रीअरविन्द सोसायटी और ओरोविल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया-कलापों की चर्चा हुई। शारीरिक शिक्षा का महत्त्व भी बताया गया था।

कर्णाटक में १ अगस्त को प्रदेश स्तर पर सोसायटी के केन्द्र और शाखाओं का सम्मेलन गुलबर्गा शाखा ने किया। गुलबर्गा शाखा ने २ अगस्त को श्रीअरविन्द के देहावशेष की स्थापना का तीसरा वार्षिकोत्सव मनाया।

श्री प्रदीप नारंग दोनों उत्सवों में उपस्थित थे। उन्होंने नाचवर गांव और बिदार के कॉलेजों में जाकर विद्यार्थियों और अध्यापकों को श्रीअरविन्द का परिचय दिया।

१५ अगस्त को चिंचवाड़ (पुणे, महाराष्ट्र) में एक नये केन्द्र का उद्घाटन हुआ। डॉ० एस. एन. भावसार ने पूर्णयोग में प्रतिविकास और विकास की संकल्पना पर भाषण दिया। भारत की स्वाधीनता के अवसर पर दिया गया श्रीअरविन्द का संदेश भी सुनाया गया। माताजी द्वारा दिये गये फूलों के आध्यात्मिक अर्थों के साथ फूलों की प्रदर्शनी भी हुई थी।

नागपुर (महाराष्ट्र) शाखा ने १ और १५ अगस्त को सुबह के नियमित ध्यान चक्र के २५ वर्ष की पूर्ति और स्वाध्याय सत्र के १५ वर्ष की पूर्ति का उत्सव मनाया।

सूरत (गुजरात) शाखा ने १५ अगस्त २००१ को अपना वेबसाइट आरंभ किया। उसका पता है www.sriaurobindocentresurat.org.। यह वेबसाइट सूरत शाखा के क्रिया-कलापों के और अपनी पत्रिका "ऑरोमा" का समाचार देगा।

अगरतल्ला, बैंगलोर, धारी और सोसायटी के अन्य केन्द्रों से भी १५ अगस्त को श्रीअरविन्द के जन्म दिवस के उत्सव मनाने की खबरें आयीं।

बीच ऑफिस में श्रीअरविन्द इंटरनेशनल इन्स्टीटयूट फॉर इंटीग्रल हेल्थ एण्ड रिसर्च (SAIIIHR) ने त्वचा की बीमारी पर २६ अगस्त २००१ को वर्कशाप का आयोजन किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

17/12/2001
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya LIBRARY HARIDWAR

संदेश

5.3.59

Turn your mind completely away from your difficulty, concentrate exclusively on the Light and the Force coming from above; let the Lord do for your body whatever He pleases. Hand over to Him totally the entire responsibility of your physical being.

This is the cure.

With my blessings.

The Mother

अपने मन को कठिनाई की ओर से पूरी तरह मोड़ लो, ऐकांतिक रूप से ऊपर से आनेवाली शक्ति और प्रकाश पर एकाग्र होओ; परम प्रभु तुम्हारे शरीर के लिये जो चाहते हैं वही उन्हें करने दो। अपनी भौतिक सत्ता का समस्त उत्तरदायित्व पूरी तरह से उनके हाथों में सौंप दो।

यही उपचार है।

मेरे आशीर्वाद के साथ।

(५ मार्च, १९५९)

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

क्या पाठ ?

२१वीं सदी के अंत में भारत ने एक छोटा प्रलय ओड़िसा में देखा जिसमें वर्षा और तूफानी हवा ने समुद्र को ऐसा मथ डाला कि वह अपनी सीमा पार कर हजारों गांवों और असंख्य लोगों, पशु-पक्षियों और वृक्षों को मिटाता गया। ओड़िसा का नक्शा ही बदल गया। उस समय वहां कई लोगों ने जिस श्रद्धा का सहारा लिया और जिस तरह वे बच गये वह ऐसा उदाहरण बन गया है कि हम उन्हें न केवल बधाई दे सकते हैं बल्कि उनका अनुसरण करने की प्रेरणा भी पाते हैं। तो यह था गत वर्ष का भीषण पाठ !

जब २२वीं सदी का आरंभ हुआ तो हम यह आशा संजोये हुए थे कि चलो, अब तो नयी शताब्दी हमारे लिये प्रगति लायेगी, सुंदर, शिव और शुभ के आगमन से हमारा जीवन सही दिशा में चलना शुरू करेगा किंतु . . . क्या हुआ ? इस वर्ष २००१ में और भारत की स्वाधीनता के शुभ दिन २६ जनवरी को अप्रत्याशित महा विनाश ने उसे अशुभ में बदल दिया। उस विशाल घटना की तुलना में अन्य स्थानों की विपत्तियां कम कष्टकर लग रही थीं। भारत के कई स्थानों पर भूकम्प का ऐसा प्रकोप जागा कि कुछ स्थानों पर अभी तक लोग भयभीत हैं और रात को तंबू में रहना चाहते हैं। अभीतक जब यह वर्ष प्रस्थान की तैयारी कर रहा है तब भी कच्छ, जहां भूकम्प ने ऐसा तहलका मचा दिया था कि आज तक लोग जीवन की सामान्य सुविधाओं से वंचित हैं।

हमें इन प्राकृतिक विनाशों के विषय में सजग होकर सोचना होगा। ऐसा माना जाता है कि जब मनुष्य विपरीत दिशा में जाने लगते हैं तब प्रकृति भी अपने स्वस्थ रूप को भूल कर ऋतुओं को असमय लाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या उन्हें बिलकुल रोक देती है। हम आजकल देख रहे हैं कि कहीं भूकम्प होता है, कहीं अतिवर्षा होती है तो कहीं अकाल होता है। हमें गहराई में जाकर अपनी दिनचर्या पर, अपने जीवन की दिशा पर और अपने चरित्र पर नज़र डालनी चाहिये और जहां कहीं अपने अंदर दुर्बलता या दोष दिखाई दे उसे बदलने के लिये भागवत कृपा को पुकारना चाहिये। हमारे लिये यही एकमात्र उपाय है।

व्यक्तिरूप से भी 'पुरोधा' और 'अग्निशिखा' के लिये यह वर्ष बड़ा दुःखदायी रहा। जिस व्यक्ति ने सारे जीवन आश्रम में हर छोटे-बड़े काम सहर्ष स्वीकार कर माताजी के इस कथन को चरितार्थ किया कि भगवान् की दृष्टि में कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है। झाड़ू लगाने से ले कर भार उठाना, पढ़ना-पढ़ाना, कई विभागों के अध्यक्ष होना—इस तरह के कई काम भगवान् की सेवा के रूप में करके उन्होंने माताजी का उपर्युक्त वाक्य अक्षरशः चरितार्थ किया। 'पुरोधा' और 'अग्निशिखा' के संपादक श्रीरवीन्द्रजी का निधन २४ अगस्त को हुआ। हमने इसे श्रीमां की इच्छा मानकर स्वीकार किया है। दोनों पत्रिकाओं को हम उनकी राह पर चलाने की कोशिश करते रहेंगे।

रवीन्द्रजी की रचनाएं कई रंगों में रंगी हुई हैं। उन्होंने हल्के-फुल्के लेख और कहानियां लिखी हैं और साथ ही गंभीर लेख और कहानियां भी लिखी हैं। इस अंक में उनके हल्के-फुल्के तथा रोचक रंग में रंगी कुछ पुरानी कहानियां पाठकों के सामने प्रस्तुत हैं।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक की एक शाम

रात के बारह बज चुके हैं। सारा घर सुनसान है। सड़क पर कभी-कदास एक कुत्ता रोने लगता है। अब तो सिनेमा से लौटनेवालों की भी कोई आवाज सुनायी नहीं देती, मन जाने कैसा हो रहा है, पर अभी तो संपादकीय लेख लिखना है। कल सवेरा होते ही प्रेसवाले तकाजा करेंगे और यहां एक शब्द भी तैयार नहीं।

बैठा रहा। कब से कागज-कलम लिये बैठा रहा कि एक जोरदार संपादकीय लिख डालूं। लोग बनारसीदास चतुर्वेदी और महावीरप्रसाद द्विवेदी को भूल जायें पर मुश्किल यह है कि केवल इच्छा करने से ही काम पूरा नहीं हो जाता। आज शाम के सात बजे से लिखने का प्रयास करता रहा। मैं बैठा ही था कि बाहर से आवाज आयी, अरे, कोई है? ओहो, यह तो बलिया के प्रसिद्ध वकील दीनानाथ जी थे। आइये, आइये कहकर उनका स्वागत किया और मन में सोचा, अब आध-पौन घंटा तो गया ही समझिये। वे बोले, भई, एक जरूरी काम से आया था। तुम्हें फुर्सत न हो तो पीछे आ जाऊंगा। मैंने कहा, कहिये, क्या काम है? अभी निबटा लीजिये न। वे जरा पसरकर बैठ गये और बोले, बात यह है कि मुझे आपकी पत्रिका बहुत पसंद है। मैं चाहता हूं कि इसकी दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की हो। आज से नहीं, बरसों से मैं इसके बारे में गहराई से विचार करता आया हूं। मैं चाहता हूं कि किसी तरह पत्रिका की प्रगति हो, इसे ज्यादा अच्छी बनाया जाये। "आपकी बड़ी कृपा है" मैंने कहा, "आप किस रूप में इसकी सहायता कर सकते हैं?"

"मैं कह तो रहा हूं, बरसों लगा दिये सोचने में और मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हमारी पत्रिका का स्तर जरा और ऊंचा होना चाहिये। आखिर यह आपकी अपनी चीज तो है नहीं, यह तो हम सबकी चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आप इसे जरा अधिक रोचक, जरा अधिक आकर्षक, जरा अधिक सार-गर्भित बना दें, बस फिर देखिये, सारे हिन्दुस्तान में आपकी पत्रिका फैल जायेगी।''

"आपकी बात तो ठीक है पर कोई सुझाव भी तो दीजिये, आपने जो बातें कहीं वह तो कोई भी किसी भी पत्रिका के लिये कह सकता है।''

"नहीं, आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। मैं बहुत दिनों से आपका प्रशंसक रहा हूं, अब भी आपकी पत्रिका पर फिदा हूं, इसीलिये तो यह कहने के लिये आ गया, नहीं तो, कौन किसकी परवाह करता है। अब आपको मैं क्या सुझाव दूं आप स्वयं जानते हैं। हमारा काम तो बस इतना ही है कि इस बात की ओर आपका ध्यान खींच दें, आगे आप स्वयं कर ही लेंगे।'' मैं अपने समय की हत्या देखकर बौखला रहा था। मैंने कहा, "अच्छा, आप अपने सुझाव लिखकर दे जाइये, मैं उनपर विचार करूंगा और उनसे लाभ उठाने की कोशिश करूंगा।''

"अच्छा, ऐसा ही सही।'' उठते हुए वकील साहब फिर बैठ गये और बोले, "हां, एक और छोटा-सा काम था। आज सोमवार है। श्रीमतीजी ने प्रधानमंत्री शास्त्री के कहने में आकर शाम को पकाने की छुट्टी कर दी है और इधर मेरे पेट में चूहे नहीं बिल्लियां कूद रही हैं। सोचा, तुम्हारे यहां तो कुछ-न-कुछ होगा ही, जरा पेट में डालकर पानी पी लूंगा। खाली पेट पानी पीने से मुझे उबकाई आने लगती है।''

अब समझ में आया उनकी सहानुभूति का रहस्य। खैर, दो केले पड़े हुए थे, उन्हें देकर जान छुड़ायी और फिर से लिखने बैठा। सोचा, संसार में चारों ओर संघर्ष चल रहा है, चलो, शांति पर लिखा जाये। लेकिन यह क्या ? फिर से दरवाजे पर ठक-ठक। उठा, दरवाजा खोला तो मेरे पड़ोसी तनसुखलालजी थे। विवश होकर उनका स्वागत किया। यह पड़ोसी के नाते मेरे ऊपर अपना अधिकार ही समझते हैं और जब चाहे आ धमकते हैं। लेकिन आज कुछ ज्यादा खुश दिखायी दे रहे थे। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले कि मैं कुछ पूछूं वे बोले, भई, इस बार तुम्हारा अंक तो बड़ा सुन्दर निकला है। चित्र अच्छे हैं, कहानियां अच्छी हैं और तुम्हारे लेखों का तो कहना ही क्या है। ऐसे देखने में तो तुम बड़े धीर-गंभीर दिखायी देते हो पर लिखते हो तो बस हास्य का परनाला बहा देते हो। (हमारे घर के पास ही नगरपालिका का बम्बा है, गनीमत है कि लालाजी ने हास्य का बम्बा नहीं बता दिया।) और तुम्हारा हास्य कितना शिष्ट, शालीन और, और . . . मेरा मतलब अच्छा होता है। कहीं कोई गन्दी बात नहीं, कोई फूहड़पने की बात नहीं और फिर भी उसे पढ़कर हंसी के फुहारे छूट जाते हैं, मुस्कान की पिचकारियां चलने लगती हैं और, और हां, मेरा मतलब खूब हंसी आती है। मैं तो रिक्शा में सफर करते समय इसे हमेशा अपने साथ रखता हूं और जब पढ़ता हूं लोट-पोट हो जाता हूं। सड़क पर चलनेवाले मुंह बाये खड़े रह जाते हैं और मेरी ओर देखते रहते हैं। उन्हें लगता होगा कि कहीं से सनकी आ गया है। अरे, कई बार तो रिक्शावाला भी पेट पकड़ लेता है। और कहीं रिक्शा में बैठते समय पत्रिका भूल जाऊं तो बस घर लौटकर श्रीमतीजी की मुसीबत, आखिर ऐसी भी क्या लापरवाही!

तनसुखजी बोलते ही जा रहे थे। अपनी प्रशंसा सुनना किसे नहीं अच्छा लगता। मेरे पड़ोसी होने के नाते तनसुखजी अपने-आपको साहित्यिक नहीं तो साहित्यिक की दुम तो जरूर मानने लगे हैं और अपनी भाषा को अलंकारों से भरने का प्रयास करते हैं। लेकिन जैसे ज्यादा मिठाई खाकर मन भर जाता है उसी तरह ज्यादा प्रशंसा सुनकर मेरा भी मन भर गया। तनसुखजी आदमी होशियार हैं, झट ताड़ गये और सीधे मतलब की बात पर आ गये। बोले, भई, मैं चाहता हूं कि समस्त हिंदी-भाषी संसार के घर-घर में, द्वार-द्वार पर, देहली-देहली पर तुम्हारी पत्रिका पहुंच जाये। मैं इसके लिये पूरा प्रयास भी कर रहा हूं। आज ही रिक्शावाला यूनियन के उपमंत्री से बातचीत करके आया हूं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक रिक्शावाले को तुम्हारी पत्रिका का अवैतनिक प्रचारक बन जाना चाहिये। एक रिक्शा में दिन में कम-से-कम दस सवारियां तो बैठती ही हैं और हमारे शहर में दो सौ रिक्शाएं तो हैं ही। अगर एक-एक रिक्शावाला पांच-पांच सवारियों को भी एक-एक प्रति बेचे तो पांच दूनी दस यानी एक हजार प्रतियां रोज बिक जायेंगी। एक-एक प्रति पर एक-एक पैसा कमीशन हो तो रिक्शावाला यूनियन को बैठे बिठाये एक हजार पैसे यानी दस रुपये रोज की आमदनी हो जायेगी। दस रोज यानी तीन सौ रुपये महीने में मिल जायें तो हम लोग रिक्शावालों की अलग बस्ती बसा देंगे जहां उन्हें सब तरह की सुविधाएं दी जायेंगी और इस सबका श्रेय होगा आपकी पत्रिका को।

ये सब बातें सुनकर हंसिये मत। तनसुखजी सचमुच हमारे भले के लिये योजना बना रहे थे। उनका अपना इसमें क्या स्वार्थ हो सकता है? अगर ऐसे हितैषी मिल जायें तो बस हमारी पत्रिका की आर्थिक समस्या चुटकियों में हल हो जायेगी। तनसुखजी ने घड़ी की ओर देखा, साढ़े आठ बज चुके थे। हड़बड़ाकर उठे और दरवाजे की ओर बढ़े। चार कदम जाकर ही वापिस आये और बोले, "हां, एक बात तो भूला जा रहा था। आपके भतीजे को आपकी पत्रिका बहुत पसंद है। वह ग्राहक बनने के लिये जिद कर रहा है। मैंने कहा, अब घर की तो बात है, आपको छः रुपये कैसे दिखाऊं, भतीजे से पैसे लेने के नाम से ही आप नाराज न हो जायेंगे! खैर, तो एक प्रति उसके नाम भेज दिया कीजिये। यह लीजिये उसका पता।"

अब काम करने में मन नहीं लगा। रोज हजार प्रतियां बिकने के स्वप्न सिर में चक्कर काटने लगे। उधर प्रेस भी मेरी ओर घूर रहा था। मैं कमरे में टहलने लगा। कोई नौ बजे होंगे कि श्री निमुच्छ नारायणजी ने धीरे से प्रवेश किया। ओहो, अब ख्याल आया। तनसुखजी के बाद मैं दरवाजा बंद करना भूल गया था। खैर, अब आ ही गये तो इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत भी करना ही पड़ेगा। यह सज्जन मेरे घर से तीन मील दूर रहते हैं। इतनी रात को आये हैं तो जरूर कुछ विशेष काम होगा। "कहिये, इस समय कैसे कष्ट किया ?" मैंने पूछा। निमुच्छ नारायणजी बोले, "भई, बहुत दिनों से मिलने की इच्छा थी लेकिन इधर समय ही नहीं मिल पाया। आप भी तो काम-काजवाले आदमी हैं, मैं आऊं और आप न हों तो इतना परिश्रम बेकार जाये। इसलिये सोचा, चलो, ऐसे समय पहुंच जायें जब आप घरपर अवश्य हों और हों भी अकेले।"

"क्या ऐसी क्या बात है जिसके लिये मेरा अकेला होना जरूरी है ?"

"यूं तो कुछ नहीं। . . . बात यह है कि इन दिनों कुछ ऐसे जोर का प्रवाह शुरू हो गया है कि रोके नहीं रुकता। मैंने सोचा जरा आपको भी दिखा लूं।"

अब मुश्किल यह है कि मैं एक समय वैद्य रह चुका हूं। वैद्य लोग जब प्रवाह की बात करते हैं तो साधारणतः उनका मतलब होता है प्रवाहिका या एक प्रकार के अतिसार से। मैंने समझा, इन बेचारे को बहुत जोर का अतिसार हो गया है और यह मेरे वैद्यरूप के पास इलाज कराने आये हैं। मैं झट बोल पड़ा, "परंतु देखिये, वैद्यक छोड़े तो एक जमाना बीत चुका है। अब तो नून-तेल-लकड़ी में ही लगा रहता हूं। ऊपर से हमारे नगर की साहित्य-गोष्ठी ने इस पत्रिका का भार भी मेरे सिर पर डाल दिया है। इसलिये मुझे माफ कीजिये।"

"अरे, क्या बातें करते हैं आप भी। मैं कोई बीमार थोड़े ही हूं जो किसी वैद्य के पास जाऊं, अजी साहब, मुझे उस तरह का प्रवाह नहीं, कविता का प्रवाह तंग कर रहा है। उठते-बैठते, खाते-पीते सब समय कविता ही उतरती रहती है। नौकर से बोलूं तो कविता में, श्रीमतीजी की कढ़ी की तारीफ करूं तो कविता में। अरे, अभी उस दिन बड़ी मुश्किल में पड़ गया। मैं पान लेने गया। दुकान पर तमोलिन बैठी थी। मैंने झट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ मटकाते हुए सस्वर कहा, दे दो बीड़ा एक पान का। उसने ऐसी आंखें तरेरीं कि कविता वहीं भूलकर मैं भाग लिया। एक और दिन की बात है मकान मालिक घर का किराया लेने आ गया। मैंने कहा, सेठजी, किराये की बातें न तुम करो, पैसा हो फालतू तो हमारी नजर करो।" सेठजी भन्ना उठे। वह तो मेरे भाग्य अच्छे थे कि उसी समय उनके कोई परिचित सज्जन उधर से आ निकले और मेरी जान बच गयी। इसी तरह प्रायः हर रोज कुछ-न-कुछ मुश्किल आती रहती है। एक रात नयी-नयी कविता उतरी। मैंने गाना शुरू कर दिया। सच कहता हूं झपताल, तीन ताल, नैनीताल, ठुमरी, दादरा, बुलन्दशहर सब तरह की राग-रागनियों का एक में समावेश कर दिया था। शायद तानसेन और बीथोवन भी ऐसे संगीत को न तैयार कर सकते, पर अरसिक पड़ोसियों को क्या कहूं? पहले मुझे चुप करने की कोशिश की। लेकिन ऐसे टुटपुंजिया लोगों के रोकने से भला मेरा प्रवाह रुक सकता है? मैं गाता चला गया। उन्होंने सोचा, जरूर कोई साया-वाया है। बस आव देखा न ताव जाड़े की रात में दो बाल्टी ठंडा पानी मेरे ऊपर डाल दिया। लेकिन मैं भी कोई ऐसा-वैसा कवि नहीं हूं। ठिठुरते हुए मैंने कहा—

क्यों डाला ठंडा पानी
रात माघ की ठंडी होती
ऊपर से वर्षा भी आती
मुझे अगर कहीं निमोनिया हो जाये
तो तुम क्या कर लोगे?

आखिरी पंक्ति मैंने कुछ ऐसे ललकार कर कही कि सबके सब भाग गये।

मैं वहां से उठा, कपड़े बदलना जरूरी था। सूखे कपड़े लेने गया तो देखा कि उनपर एक छिपकली रानी विराजमान हैं। अब मैं आपसे क्या छिपाऊं, छिपकली से अपने राम जरा दूर ही रहते हैं। यानी मुझे उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डर ... ऊं, ... नहीं लगता। डर की क्या बात है भला, लेकिन उसे देखते ही मुझे उसके पूर्वजों की याद आ जाती है। शायद चीन के ड्रैगन ही हमारे यहां छोटे होकर छिपकली का रूप धारण कर लेते हैं। इसीलिये मैं उनसे जरा सावधान रहता हूं। खैर, उसे देखते ही मैंने कहा :

छिपकली, छिपकली, छिपकली
मगरमच्छ की मौसी है तू, ड्रैगन की तू नानी
मेरे कमरे में क्यों आयी, फेंकू तुझपर पानी।''

बस साहब, मेरी कविता सुनते ही छिपकली मेरे कपड़ों पर से हट गयी। तो देखा आपने, उन्मत्त भीड़ पर, छिपकली आदि पर मेरी कविता का कैसा असर होता है। मैं सोच रहा था कि यह आपके साथ बड़ा अन्याय होगा कि इधर तो धारा-प्रवाह कविता निकलती जाती हो उधर आपको जरा-जरा-सी तुकबन्दियों के लिये कवि कहानेवालों का मुंह ताकना पड़े। न हो, अगली बार एक कविता-विशेषांक निकाल दीजिये। मच्छर, मक्खी, पिस्सू से लेकर खाद्यान्न समस्या, शस्त्रास्त्र उत्पादन, निःशस्त्रीकरण, आज की कविता, राष्ट्रपति की पगड़ी और फजलमियां का हुक्का आदि सब प्रकार के विषयों पर कविता, गीत, गद्यगीत, महाकाव्य सब तरह की चीजें दे दूंगा। आप चाहें तो आधी दरजन कृतियों पर अपना नाम दे दीजिये। प्रथम श्रेणी के कवियों में आपकी भी गिनती हो जायेगी।''

सचमुच यह कविता सुनते-सुनते मेरे ऊपर अर्धमूर्च्छा-सी छा गयी थी। मैं गुम-सुम पड़ा था कि अचानक तार का चपरासी आया। मेरे कार्यालय में बैरंग चिट्ठियां तो कई बार आयी हैं पर तार आने का यह पहला अवसर है। धड़कते दिल से हड़बड़ाकर उठा। तार लेकर खोला। हमारे यहां के सर्वप्रिय नेता का तार था। उन्होंने अपने जिले की ओर से युद्धकोष में पांच लाख देने का वचन दिया है और सर्वमान्य पत्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाते मुझसे कम-से-कम दस हजार की आशा कर रहे हैं। तार हाथ से छूट गया और मैं धड़ाम से जमीन पर। उफ ! सर्वमान्य पत्र के संपादक से दस हजार की मांग। सर्वमान्य कहाने के बाद कैसे कह दूं कि यहां तो दस हजार पैसे भी नहीं दिखायी देते ... उफ ... !

मेरा पहला खोज-कार्य

माता-पिता से हमेशा यही सुना कि बेटे तुम्हें बड़ा आदमी बनना है। हम तो खैर, कुछ नहीं कर सके पर तुम्हारी तो अभी आयु है। एक बार फिर से दिखा दो कि इस धरती पर अब भी बड़े-बड़े विद्वान् और वैज्ञानिक हो सकते हैं। विद्यालय में घुसा तो अध्यापक महाशय ने वही रट लगायी। श्रेणी में बड़ा आदमी बनने के सूत्र लिखवा दिये; आब्राहम लिंकन, विंस्टन चर्चिल, प्रफुल्ल चन्द्र राय और आइंस्टाइन के बचपन की कहानियां सुना-सुनाकर मेरे दिमाग में यह घुसाने की कोशिश की कि मैं सचमुच बड़ा आदमी बनने योग्य हूं—इतना ही क्यों, मैं अभी से बड़ा आदमी हूं, सिर्फ मेरा बड़प्पन परदे के पीछे छिपा है। परदा हटा नहीं कि मेरे बड़प्पन से दुनिया की आंखें चौंधिया जायेंगी।

परिणाम क्या हुआ ? पढ़ाई-लिखाई तो साढ़े बाईस और मैं लग गया अन्वेषण कार्य में। मुझे सबसे छोटी आयु में नोबेल पुरस्कार पाना था। अब चिंता केवल एक थी, किस चीज की खोज करूं ? इसी पर सिर मारते-मारते बहुत दिन बीत गये। मेरी महत्त्वाकांक्षा तो बढ़ती जाती थी पर अभी खोज का विषय निश्चित न हो पा रहा था। मैंने सुन रखा था कि कबीर दास जी कुछ पढ़े-लिखे न थे। जो मन में आ जाती बोल देते थे और आजतक उन जैसा कवि दीपक लेकर ढूंढ़ने से भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला। शेक्सपीयर के बारे में भी यही सुना था। अतः मैंने यही सोचा कि खोज का विचार छोड़कर बड़ा आदमी बनने के लिये कविता, नाटक आदि लिखना शुरू कर दूं। क्या मालूम इसी में नोबेल पुरस्कार मिल जाये। एक दिन पिताजी ने मेरे कागज देख लिये। मेरी सारी की करायी मेहनत चूल्हे के सुपुर्द हो गयी और जो कड़ाके की डांट पड़ी वह अलग। इसमें मेरा तो कुछ न बिगड़ा, दुनिया ने एक होनहार कवि खो दिया। हिन्दुस्तान यह कह सकने से वंचित रह गया कि आज भी यहां की धरती से ऐसे लाल उत्पन्न हो सकते हैं जो कबीर और शेक्सपीयर को अपनी जेब में रख सकें। खैर, इतनी जरा-जरा सी बातों से हिम्मत हार जाऊं तो मैं बड़ा आदमी बन चुका। मैंने फिर से लंगर-लंगोटा कस लिया। लेकिन इस बार वैज्ञानिक बनने की ठानी। कहते हैं कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक खोजने चलते हैं कुछ और पा जाते हैं कुछ और। रेडियम, पेनिसिलीन आदि की खोज ऐसे ही तो हुई थी। मैं भी कोई छोटी-मोटी खोज शुरू कर दूं। किसी दिन अंधे के हाथ बटेर लग ही जायेगी।

अब सवाल यह पैदा हुआ कि खोज कहां से शुरू की जाये। इस सवाल को हल करते देर न लगी। हमारे आंगन में कहीं से मकई का एक भुट्टा आ गिरा। शायद कोई पक्षी गिरा गया होगा। भुट्टे को देखते ही मेरे दिमाग में बिजली की मोटर लग गयी। मैंने सोचा इसे लेकर तो हम बहुत-सी चीजें बना सकते हैं। सबसे पहले इसके ऊपर जो पत्ते हैं उनसे पैराशूट न सही साधारण छतरियां तो बन ही सकती हैं। मैंने एक को अलग करके उसपर लोटा भर पानी डाला। मैंने देखा सारा पानी ऐसे बह गया जैसे किसी प्लास्टिक की छतरी पर से। बस काम बन गया। अब मुझे एक ऐसी मशीन बनानी है जिससे ये पत्ते सिलाई के बिना आपस में जुड़ जायें और छतरी का आकार ले लें। यह काम मुश्किल न होना चाहिये। आखिर बड़, पीपल, पलाश के पत्तों से छतरियां बनती ही हैं। ताड़ के पत्ते भी छतरियां और टोप बनाने के काम आते हैं। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला भुट्टा इस काम में क्यों नहीं आ सकता। अच्छा लीजिये पहला अन्वेषण होगा ऐसी मशीन का जो पत्तों को जोड़कर छतरी का रूप दे सके। दूसरे नंबर पर बारी आयेगी भुट्टे के बालों की। कहते हैं आजकल विदेशों में नकली बालों का रिवाज बहुत बढ़ता जा रहा है। गंजों की टांट छिपाने के लिये और सुन्दरियों को नये-नये फैशन का अवसर देने के लिये तरह-तरह के बाल तैयार किये जाते हैं। अभीतक इस काम के लिये मनुष्यों के बालों का ही उपयोग होता है। मैं अपनी प्रयोगशाला में इसके लिये परीक्षण करूंगा फिर मेरा कारखाना भी डॉलरों के लिये चुम्बक बन जायेगा।

और हां, भुट्टे के बीच में यह जो कड़ा डंठल-सा होता है यह भी तो बहुत उपयोगी हो सकता है। दूसरे महायुद्ध के दिनों में जापानवाले नारियल का पानी पीकर उसमें बारूद भर देते थे और वह उनका सस्ता बम होता था। हम भी भुट्टों को मिसाइल की जगह काम में ला सकते हैं। आकार तो स्वयं प्रकृति ने ऐसा ही दिया है। जरा कल्पना कीजिये, शत्रु सेना पर भुट्टे के डंठलों के मिसाइल बरसने लगेंगे तो उसका क्या हाल होगा। बस इसी को कहते हैं हर्रा लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आये। बस आप दाद दीजिये मेरी योजनाओं की। आप देख सकते हैं मेरी तीनों योजनाएं देशभक्ति के रंग में सराबोर हैं। इनके कार्यान्वित होते ही पहली के कारण कपड़े की बचत होगी, दूसरी के कारण डॉलरों की वर्षा होगी और तीसरी भारतवर्ष की सुरक्षा में सहायक होगी।

इतना सोचते-सोचते दिमाग थोड़ा थक चला था। अभी मकई के दाने बाकी ही थे। भड़भूंजे के यहां इनकी खीलें बनती हैं। क्यों न मैं भी कोई ऐसी तरकीब निकालूं जिससे भड़भूंजे के यहां गये बिना ही खीलें तैयार हो जायें। बस ख्याल का आना था और मैं काम में लग गया। आप कहीं यह न कहें कि मैं ख्याली पुलाव पकाया करता हूं इसलिये अच्छी तरह जान लीजिये कि चौथी चीज में योजना बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना ही लग जाना जीभ के लालच के कारण न था बल्कि शुद्ध वैज्ञानिक कुतूहल था।

मैंने भाड़ कभी देखा न था। मां जब बहुत नाराज होती थीं तो कहा करती थीं भाड़ में जा। सुना था शब्दकोश ऐसी हर बात में सहायक होता है। पिताजी के शब्दकोश में देखा उसमें भाड़ का अर्थ दिया था भड़भूंजों की भट्ठी जिसमें अनाज भूना जाता है। इतना तो हम पहले ही जानते थे, यह बताकर कोशवाले ने कौन सा नया भाड़ झोंका। खैर, भगवान् भला करे हमारी अन्वेषण वृत्ति का, आड़े वक्त वही काम आयी। जून-जुलाई की गरमियां थीं। सबके सब ऊपर खर्राटे ले रहे थे। एक मैं ही अपनी छोटी बहन ऊषा के साथ रसोई घर में घुसा परीक्षण की तैयारी कर रहा था। उसे परीक्षण की परवाह न थी। वह खीलें चबाने के लिये उत्सुक थी, इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ कि उसका भाई कितनी महान् गवेषणा में लगा है।

खैर, मैंने मां का स्टोव जलाया और उसपर टीन का डब्बा रखा। जब तपकर लाल हो गया तो भुट्टा उसमें डाल दिया। डालते ही कुछ ऐसी चिरायंध आयी कि तौबा, तौबा। डब्बे को धक्का देकर गिरा दिया। भुट्टा जमीन पर आ रहा। अब देखा कि उसके बालों की परीक्षा करते हुए मैंने अपने बाल के साथ उनकी तुलना की थी। इसी तुलना में दो एक बाल लगे रह गये थे। चलो कोई हर्ज नहीं, हर बड़े काम में बाधाएं तो आती ही हैं। मैंने हिम्मत न हारी। लेकिन अब डब्बा तो बेकार हो चुका था। पास ही एक प्लास्टिक की थाली पड़ी थी, मैंने उसी का उपयोग कर डाला लेकिन भुट्टे को उसपर रखा जाये इससे पहले ही थाली राख बन गयी। ऊषा को नींद आ रही थी। उसका धैर्य टूट गया और वह चली गयी। अब मैं अकेला था। मैंने मां का कटोरदान उठाया, उसमें भुट्टा रख दिया और स्टोव पर चढ़ा दिया। इस बार विजय निश्चित थी। मैंने निश्चय कर लिया कि खीलें और किसी को न दूंगा, अपने परिश्रम का फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप ही चखूंगा। पर मेरे मन कछु और है विधना के कछु और। मैंने भुट्टा चूल्हे पर रखा कि मेरा पड़ोसी राधे आ गया। वह चिल्लाकर बोला, "अरे तू यहीं बैठा है ? आज तो विद्यालय में परीक्षा का परिणाम सुनाया जायेगा।" यह सुनते ही मैं उसके पीछे हो लिया। परिणाम का बहुत दिनों से इन्तजार था। उसका नाम सुनते ही मेरा परीक्षण दिमाग से उतर गया। अब आगे की बात मेरी बहन शांता से सुनिये।

"मैं ऊपर से आयी तो देखा रसोईघर का दरवाजा खुला हुआ है। मैंने समझा हो न हो मां ही जल्दी में बंद करना भूल गयी हैं। यह अच्छा मौका मिला उनसे बदला लेने का। हमेशा कहा करती हैं, शांता तूने यह नहीं किया और वह नहीं किया। आज सब दिन का बदला चुका लूंगी। मैंने झट दरवाजा बंद किया और पास पड़ा हुआ ताला दबा दिया। अब मैं मां के जागने का इन्तजार करने लगी। थोड़ी देर में सारे घर में अन्न जलने की दुर्गंध आने लगी। मां जाग गयी, पिताजी जाग गये। सबको तलाश हुई कि यह गंध कहां से आ रही है। मेरा माथा ठनका। चुपके से नीचे गयी, सचमुच गंध रसोईघर से आ रही थी। साथ ही धुआं भी निकल रहा था। अब मेरे अंदर काटो तो लहू नहीं। मुझे पता नहीं ताले की चाबी कहां रहती है, छिप-छिप कर इधर देखा, उधर देखा, कुछ पता न लगा। सारा घर नीचे उतर आया। हर एक को चाबी की तलाश थी। मां जानना चाहती थीं कि अंदर आग किसने सुलगायी। पिताजी को चिंता थी कि ताला किसने लगाया। मैं अपराधी का-सा चेहरा लिये बाजार की ओर भागी। वहां से ताला खोलनेवाले को ले आयी। लेकिन मेरे आने से पहले ही भाई कहीं से आ टपका। वह पक्का चोर है। उसने एक तार से ताला खोल दिया। लोग अंदर घुसे, चूल्हे पर भुट्टा या भुट्टे का कोयला देखकर सब इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह काम हो न हो शांता का ही है। ऐसा बेशऊर और कौन हो सकता है। चलिये यह अच्छा हुआ। चले थे नमाज माफ कराने और रोजे गले पड़ गये। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा घर भाई की प्रशंसा कर रहा है जिसने ताला खोलकर घर की रक्षा कर ली और गालियों की बौछार हो रही है बेचारी मुझ पर।"

तो आपने मेरे पहले अन्वेषण की कहानी सुन ली। मैंने भी भुट्टे का रहस्य किसी को नहीं बताया। मेरे नाम पर तो कोई कलंक नहीं लगा। उधर मैं परीक्षा में पहला आया था—यह न पूछिये कि किस तरफ से, इसलिये मुझे उसी की चिंता थी। कहीं पिताजी को पता लग गया तो ...। इसी चिंता में आगे के परीक्षणों को भूल गया। देखें अब कब अवसर मिलता है।

आपसे मिलिये : आप हैं—

काजी साहब

हमारे काजी साहब हैं बड़े भलेमानस। सारा गांव उन्हें अच्छी तरह पहचानता है और वे भी गांव के बच्चे-बच्चे से परिचित हैं। जरा लंबा-सा शरीर, गेहुंआ रंग, सिर घुटा हुआ, चेहरे पर छोटी-छोटी कतरी हुई मूछें और बड़ी-सी खिचड़ी दाढ़ी। मुंह पर हवाइयां उड़ती रहती हैं और चलते हैं ऐसे मानों पांच मन का बोझा ढो रहे हों। अगर आपको इस तरह का कोई आदमी मिल जाये और आप देखें कि वे टखनों से ऊंचे पायचोंवाला पाजामा पहने हुए हैं, तन पर ढीला-ढाला कुरता है और सिर पर दो तोले भार की छोटी-सी कशीदेवाली टोपी है, तो बस समझ लीजिये कि ये ही हैं हमारे काजी साहब और बड़े अदब से एक अर्ज कर दीजिये।

काजी साहब सदा से ऐसे न थे। जिन लोगों ने काजी बनने से पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें देखा है वे आपको बतायेंगे कि कमरुद्दीन मियां बड़े चुस्त चालाक शख्स, हट्टे-कट्टे युवक थे। बोलते थे मानों फुलझड़ियां छूटा करती थीं, उनके अट्टहास सारे गांव में गूंजा करते थे। कोई मेला नहीं, कोई तमाशा नहीं जहां कमरुद्दीन सबसे आगे न रहते हों और राहगीरों से छेड़खानी न किया करते हों। पढ़ाई-लिखाई में भी बहुत पीछे रहनेवालों में कभी उनकी गिनती नहीं हुई थी। तेज साइकल चलाने में, जंगलों में घुसकर झरबेरी इकट्ठी करने में और पेड़ पर चढ़कर मधुमक्खी के छत्ते तोड़ लाने में ये मियां सबसे आगे रहा करते थे। पर ये बातें अब भूली-बिसरी कहानियां बन चुकी हैं।

"ख्वाब था जो कुछ कि देखा, जो सुना अफसाना था।"

खैर साहब, कमरुद्दीन के चचाजान ने निश्चय किया कि कमरमियां को काजी की पदवी संभालनी चाहिये। आखिर यह पद इसी खानदान में कई पीढ़ियों से चला आ रहा है, घर में चांद-सा बेटा है तब इस पद को हाथ से क्यों छोड़ा जाये ? अब कमरमियां को ग्रहण लगना शुरू हुआ, दिन-रात शरीअत और फिकहा का अध्ययन करना पड़ता, और कुछ करने लगते तो चारों तरफ से आवाजें उठती हैं ! देखो तो मुआ काजी बनने चला है और ऐसी हरकतों से बाज नहीं आता। नौज, ये भी क्या गजब है, आखिर चौदहवीं सदी है ना !

धीरे धीरे कमरमियां के दिमाग में घुसता गया कि वे गांव के बड़े आदमी हैं और सारे गांव का भार उनपर है। वे ही ठीक करें तो दुनिया ठीक हो सकती है नहीं तो . . . वे परिणाम की कल्पना करते-करते कांप उठते थे। भूल गये वे खेल-कूद, बिसर गयी वे चुहलें और शरारतें। अब तो वे पुराने कमरमियां न थे, वे थे जनाब काजी कमरुद्दीन साहब। सवेरा होते ही फजर की नमाज पढ़ते और निकल पड़ते गांव का चक्कर लगाने। मौला की गाय ने दूध नहीं दिया, उलटी एक लात लगा दी। काजी साहब वहां बैठ जाते, सोचते, आखिर यह क्यों हुआ, कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाय पर कोई साया-वाया तो नहीं आ गया। उसके लिये झाड़-फूंक, गंडा-तावीज सब कुछ करने की ठानी पर किया कुछ नहीं क्योंकि कुछ करने की फुर्सत ही कहां मिलती है उनको। वे अभी गाय के बारे में सोच ही रहे थे कि पड़ोस के मकान से छनऊ के रोने की आवाज आयी। बस फिर क्या था उनकी चिंता का विषय बदल गया। सोचा छनऊ क्यों रोता होगा कहीं सवेरे ही सवेरे बिच्छू ने काट लिया हो तो . . . नहीं, बिच्छू नहीं हो सकता, शायद ततैया हो पर ततैया के काटे का इलाज तो मैं जानता नहीं। बिच्छू होता तो कुछ अमल भी कर देता लेकिन ततैया, कमबख्त ततैया—उसकी नानी मरे, बेचारे बच्चे को रुला रहा है। इतना पतला सिकुड़ा सा होता है, पीला-पीला रंग मानों कामला हो गयी हो और चला है बेचारे छनऊ को काटने। अब उसका क्या होगा ? छनऊ के अब्बा भी तो घर पर नहीं होंगे। आह ! बड़े भले हैं बेचारे, कभी जरूरत हो चट हाजिर हो जाते हैं। आजकल काजी को पूछता ही कौन है, अगर हमारे मुस्लिम राज का जमाना होता तो ... इसी चिंता में काजी साहब वहीं मौला की खाट पर लंबे हो गये और उनकी नाक से जोर-जोर से छई छूं की आवाजें आने लगीं।

आंखें बंद करते ही काजी साहब ने देखा कि वे फीरोजशाह तुगलक के जमाने में हैं। अपने शहर के बड़े काजी हैं और सब तरह के झगड़ों का निबटारा करना उन्हीं का काम है। एक आता है तो एक जाता है। किसी का गधा चोरी चला गया तो किसी की गाय पड़ोसी के खेत में घुस गयी, किसी ने बिस्मिल्लाह कहे बिना जानवर पर छुरी चला दी। एक से बढ़कर एक मामले काजी साहब के सामने पेश किये जा रहे थे और वे बड़ी गंभीरता से दूध का दूध पानी का पानी करते जा रहे थे। चेहरे से मतानत टपक रही थी। अल्लाह का नूर अपनी बहार दिखा रहा था। इतने में एक ततैया उड़ता हुआ आया और साहब की दाढ़ी में घुस गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काजी साहब अल्लाह अल्लाह, लाहौल वला कुव्वत कहते हुए उठे और लगे सिर पांव रखकर दौड़ने। यार लोगों ने पूछा, काजी साहब माजरा क्या है ? बच्चों ने पीछा किया काजी साहब सुनिये तो, लेकिन कौन सुने, किसकी सुने। काजी साहब ने न आव देखा न ताव, घुस गये पड़ोस के मकान में। घर में तहलका मच गया। अब काजी साहब भी होश में आये, जरा दम लिया और फिर बोले, साहिबान घबराइये मत, खुदा का करम है यह सब ख्वाब था और कुछ नहीं। बड़ा आग्रह करने पर काजी साहब ने बताया कि जब उन्होंने छनऊ के रोने की आवाज सुनी तो उन्होंने सोचा कि शायद उसे ततैया ने काटा होगा। बस फिर क्या था दिमाग में चाबी चढ़ गयी और वे छनऊ की चिंता में डूब गये और वहीं से निद्रादेवी की गोद में जा पहुंचे। वहां उन्होंने एक स्वप्न देखा, गांव में ततैये ही ततैये हैं और काजी साहब सारे गांव की रक्षा करने की फिक्र में हैं। इतने में एक ततैया उनकी दाढ़ी में घुस गया और वे मानों पगहा तुड़ा कर भागे, यह जा वह जा। पर, काजी साहब कहने लगे, अल्लाह मियां का करम है कि वह सिर्फ ख्वाब ही था लेकिन अब मैं इस फिक्र में हूं कि अगर सचमुच ततैये हमला कर बैठें तो सारे गांव की हिफाजत कैसे की जाये। यह समस्या तो वाकई में बहुत बड़ी थी और सब लोगों ने काजी साहब को चिंता-सागर में अकेला छोड़कर अपने-अपने घर की राह ली।

काजी साहब जब चिंतित होते तो उन्हें किसी चीज का भी होश न रहता था। हमने देखा है कि कई बार काजी साहब ने अपने सामने बिछे दस्तरखान को हाथ तक नहीं लगाया। कई बार चाय पड़ी-पड़ी ठंडी हो गयी है और काजी साहब को पता तक नहीं लगा। इन कारणों से काजी साहब का कहना है कि वे दिन पर दिन दुबले होते जा रहे हैं। दूसरों की चिंता के मारे खाना गले से नहीं उतरता और वजन कम होता जा रहा है। और चिंताएं तो हैं ही और उनके ऊपर यह एक और आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमी है कि अगर खुदा न खास्ता इन्हें कहीं कुछ हो गया तो गांव की चिंता कौन करेगा ? यूं पराये दुःख में मजा लेनेवाले सब जगह होते हैं। हमारा गांव भी अपवाद नहीं है। कुछ मनचले बददिमाग कहते हैं कि काजी सचमुच दुबला नहीं हो रहा, वह चिंता करता हुआ जिस घर में घुस जाता है वहीं तर माल पर हाथ साफ करता है। और फिर दूसरे घर की राह लेता है। उनका कहना है कि चिंता करके लोगों के यहां तर माल उड़ाना और उनकी सहानुभूति प्राप्त करना तो इसने अपना पेशा ही बना लिया है। लेकिन जब काजी साहब अपने-आप कहते हैं कि वे दुबले हुए जा रहे हैं, चिंता के मारे न दिन को खा पाते हैं न रात को सो पाते हैं तो भला विश्वास कैसे न किया जाये। अगर ऐसा न होता तो वे कहते ही क्यों ?

लेकिन हां, एक बात और है जिसके बिना काजी साहब का वर्णन अधूरा रह जायेगा। तुमने कृष्णचन्द्र की लिखी हुई 'गधे की आत्मकथा' तो पढ़ी ही होगी। कहीं से वह हमारे गांव में भी आ गयी। काजी साहब ने जो सुना तो बड़े लाल पीले हुए। गांव के हर एक आदमी से कह आये कि भई इस किताब को न पढ़ना। यह तो भले आदमी के पढ़ने लायक किताब नहीं है, मैं तो इसी फिक्र में हूं कि कैसे इस किताब की होली करवा सकूं। लोगों को कुतूहल हुआ कि बात क्या है, इस किताब पर क्यों बरस रहे हैं काजी साहब। दो चार सिरफिरे इसकी टोह लगाने लगे। मालूम हुआ कि यह किताब दिखाकर किसीने काजी साहब से पूछ लिया कि मौला कहीं यह आपकी आत्मकथा तो नहीं है ? कहनेवाले ने तो यूं ही कहा था पर काजी साहब को याद हो आयी एक कहानी। बचपन में सुना था कि एक मौलवी साहब बहुत अच्छा पढ़ाते थे। गांव के लोग कहते थे कि यह मौलवी तो गधे को भी आदमी बना सकता है। पहुंचते-पहुंचते यह बात गांव के धोबी के कानों तक पहुंची। उसके कोई संतान न थी। उसने सोचा, चलो मौलवी साहब को एक गधा दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आऊं वे उसे आदमी बना देंगे और मुझे एक पला-पलाया बेटा मिल जायेगा। दूसरे दिन एक गधे को लेकर धोबी मौलवी साहब की खिदमत में हाजिर हुआ। मौलवी साहब पहले तो सकपकाये फिर बोले, अच्छा इस गधे को यहीं छोड़ जाओ और दो साल तक यहां मुंह न दिखाना। धोबी ने बड़ी आशाओं के साथ दो वर्ष काटे और दो वर्ष होते ही मौलवी साहब के यहां जा पहुंचा। मौलवी साहब इतने दिनों में सारी बात भूल चुके थे। इधर धोबी चिल्ला रहा था—लाइये मौलवी साहब हमारा आदमी दे दीजिये। जान छुड़ाने के लिये मौलवी साहब ने कह दिया, अरे भाई! वह तो बड़ा होनहार था, वह बहुत जल्दी आदमी बन गया, अब जौनपुर का काजी है।

हमारे काजी साहब इस बात को भूल नहीं पाते। रह-रह कर उनके मन में संदेह उठता है कहीं मेरे पीछे भी कुछ ऐसा ही इतिहास न हो। कभी धोबी को आते देख लें तो उनका मुंह फक् पड़ जाता है। अब गधे की आत्मकथा का नाम जो सुना है तो उन्हें चिंता है कि कहीं वह उनकी पोल न खोल दे। किताब को पढ़कर तसल्ली कर लेना चाहते हैं पर पढ़ते हुए डर भी लगता है। इस बार सचमुच वे चिंता के मारे घुले जा रहे हैं। तुम्हारे पास कोई इलाज हो तो बताना।

हमारे लिये भगवान् जो कुछ चाहते हैं वह सर्वदा सर्वोत्तम शुभ होता है, वह केवल हमारा अज्ञान ही होता है जो हमें उस शुभ को देखने और अनुभव करने से रोकता है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे घर मेहमान आये

तुम सब तो अपनी-अपनी कहानी सुना चुके, लो अब मेरी सुनो... चौकड़ी मारकर बैठते हुए भीष्म ने कहा। तुम्हारी सबकी कहानियों को मात न कर दिया तो मेरा नाम भीष्म नहीं। तुम भी क्या कहानी सुनाते हो, न ओर न छोर। किसी ने कहा, मेरे घर चोर आया था, मैंने पिताजी के उस्तरे से उसकी नाक काट ली; किसी ने कहा, मैं घोड़े पर सवार होकर खेतों की तरफ चला गया, वहां शेर को देखकर मेरा घोड़ा भागा। मैं लपककर घोड़े से कूद पड़ा और डटकर शेर का मुकाबला किया। अरे, ये सब तो घिसी-पिटी कहानियां हैं, इनमें धरा क्या है ? कहानी तो वह है जो मैं सुनाने चला हूं।

यमुना बोली, अरे कुछ कहेगा भी या यूं ही शेखी बघारता जायेगा ?

कीर्ति ने कहा, हां, 'खोदा पहाड़ और निकला चूहा' वाली बात होगी। कहानी की तारीफ तो गुब्बारे की तरह फूलती जा रही है पर जब कहानी सुनायेगा तो गुब्बारे की सारी हवा गायब हो जायेगी।

भीष्म ने कहा—अच्छा, तुम लोग कहानी सुनना चाहते हो तो सुनो और नहीं तो अपना रास्ता नापो :

"नहीं, नहीं, सुना, सुना," सब लोग एक स्वर से बोल उठे और भीष्म ने बोलना शुरू किया। इस साल हमारे गांव में बहुत जाड़ा पड़ रहा है। सुना है कि छत पर दूध रख दो तो आइसक्रीम बन जाती है। तुम लोगों ने तो ऐसा जाड़ा कभी देखा भी न होगा। कमरे के अंदर आग जलाकर बैठो तब कहीं जान में जान आती है, नहीं तो हवा ...

यमुना बोल पड़ी—"अरे भीष्म, तू तो कहानी सुनानेवाला था, यह सब क्या है ?" भीष्म—"तो और क्या कर रहा हूं ? तुम सुनो भी। तो हां, वहां हमारे बहुत से चाचा, मामा, फूफा रहते हैं। इतनी सर्दी जो पड़ी तो सबने सोचा, चलो बच्चों को पांडिचेरी ही भेज दें। सैर की सैर हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगी और सर्दी से बचे रहेंगे। आखिर वहां अपने रिश्तेदार भी तो हैं। न हुआ तो उनके घर बीस-पचीस दिन रह आयेंगे। बस, विचार का आना था और मेरे मामाजी ने सब बाल-बच्चों को समेटा और सीधे यहां आ धमके। अधिक नहीं कुल जमा १२ बच्चे और तीन स्त्रियां थीं। हमारे घर आते ही वह शोर और गुलगपाड़ा शुरू किया कि बस क्या कहूं। अड़ोस-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गये कि आखिर बात क्या है। उन लोगों का शोर अलग कान खाये जा रहा था। मेरी मां बेचारी परेशान। सिर के बाल तक खड़े हो गये। एक बच्चा सीधा उनके रसोईघर में घुसा और वहां रखी हुई सब मिठाई हथिया ली, कुछ खाता जाता था कुछ गिराता जाता था। और थोड़ी इधर-उधर साथियों को दे रहा था। दूसरे दो बच्चे जो उठे तो उन्होंने मेरे पलंग पर धमा-चौकड़ी शुरू कर दी। यमुना, तेरे जैसी एक लड़की थी उसने तो बस सीधा मां के सिंगारदान पर हमला कर दिया और तेल फुलेल निकाल-निकाल कर बालों में, मुंह पर और पैरों पर मलना शुरू कर दिया। अब मां बेचारी करें भी तो क्या करें। वे अकेली जान और यहां यमदूत पूरे एक दर्जन। अब मां को पता लगा कि मैं नटखट नहीं बल्कि बहुत सीधा-सादा हूं, बल्कि यूं कहिये उन बच्चों की तुलना में मैं देवता हूं।''

कीर्ति ने भक्ति-भाव का प्रदर्शन करते हुए हाथ जोड़कर कहा—क्या कहने हैं देवताजी के।

भीष्म बोलता गया, एक दिन में ही उन लोगों ने हमारी जो मुसीबत कर डाली कि बस! मेरे पिताजी बहुत बड़े विद्वान् हैं, उन्हें प्रायः ही व्याख्या देने के लिये बाहर जाना पड़ता है, कभी-कभी तो दो-दो महीनों के बाद लौटते हैं। पर उनका कमरा सचमुच देखने लायक है। न जाने कहां से नयी-पुरानी मूर्तियां इकट्ठी की हैं। कांच का सामान भी बहुत है। मैं तो उन चीजों के नाम भी नहीं जानता पर हैं बड़ी सुन्दर और चमकदार। देखते ही लेने को मन करता है। पर उन्होंने समझा दिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे सब उनके काम की चीजें हैं इसलिये हम लोग तो उस कमरे में पांव भी नहीं रखते। पर मेहमानों पर तो रोक-टोक नहीं होती। सब-के-सब अंदर घुसकर अपनी-अपनी पसंद की चीजें उठा-उठा कर वहीं खेलने बैठ गये। वहां कांच का एक गोला है, पिताजी कहते हैं कि यह धरती है। मेरी फूफी की बेटी को वह पसंद आ गया। मामा के बेटे ने पत्रिकाएं फाड़-फाड़ कर क्रिकेट के चित्र इकट्ठे करने शुरू किये और छोटे-से बंदर गोपू ने पिताजी का फाउंटेन पेन लेकर चित्र बनाना शुरू किया। हे भगवान्! मां सचमुच पागल हुई जा रही थीं। उधर पन्द्रह-बीस का खाना पकाना, फिर बीच में उन लोगों की फरमाइशें, हमारी शिकायतें और अब ऊपर से यह। बेचारी अकेली जान करें भी तो क्या करें। सिद्धो जाकर मेरी मां के पीछे छिप गयी। लड़का ऐसे सस्ते में छोड़नेवाला न था। वह भी पीछे दौड़ा और अब दोनों मां की साड़ी पकड़े उनके चारों ओर गोल-गोल चक्कर लगाने लगे। मां साड़ी सम्हालें या इनके चक्करों से बचें या गोले की सुध लें! उन्होंने सब कुछ भगवान् पर छोड़कर अपनी आंखें बंद कर लीं और रामरक्षा का पाठ करने लगीं। सिद्धो का दम फूलने लगा। उसे लगा कि कांच का गोला अब हाथ से जायेगा। उसने आव देखा न ताव, गोले को उठाकर गोपू की ओर फेंक दिया। बेचारा कांच का गोला। उसके चीनी के जैसे दाने बन गये और सारे आंगन में फैल गये। अब एक नयी मुसीबत आयी; सबके सब चिल्ला-चिल्ला कर एक-दूसरे को सावधान कर रहे थे। हर एक को डर था कि कहीं दूसरे के पैरों में कांच न चुभ जाये। लेकिन यह सब करते-करते दो-तीन के पैरों में से तो खून की धारा बह चली। अब कौन कांच साफ करे और कौन पट्टी बांधे। बच्चों के साथ जो स्त्रियां आयी थीं उनमें से दो तो पांडिचेरी का बाजार देखने चली गयी थीं और तीसरी इन बच्चों के लिये मकान में जगह कर रही थी।

जैसे-तैसे दो-चार दिन बीते। हमारे मेहमानों की गतिविधि जैसी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैसी ही बनी रही। बेचारे अड़ोस-पड़ोसवाले भी तंग आ गये। पास के चाटवाले के यहां उधार चढ़ गया, कपड़े की दूकान से बिल आ गया। शृंगार की सामग्री की दुकान का आदमी अलग दरवाजा खटखटाने लगा और मजा यह कि सारे हिसाब मेरी मां को ही चुकाने पड़ते थे। आखिर इतने दिनों के बाद मेहमान लोग अपने घर पर आये थे, उनसे पैसा कैसे मांगा जाता ?

मां के बटुए का भार कम होता जा रहा था। उनके शरीर का खून सूखा जा रहा था। पर मेहमान खूब मौज में थे। उनका अपना घर जो ठहरा। लेकिन भगवान् की दया सब पर होती है। हमारी पड़ोसिन ने कहा, सुना है पांडिचेरी में बच्चे चुरानेवाले आये हैं। बात का बतंगड़ बनते कितनी देर लगती है! कुछ ही घंटों में हमारे मेहमानों ने कहानी बना ली कि पांच-सात बच्चे चुराये जा चुके हैं और चोरी इसी मुहल्ले में हुई है। चलो, अच्छा ही हुआ। डर के मारे हमारे मामा साहब की सिट्टी-पिट्टी गुम। तीनों स्त्रियों का हाल बेहाल और बच्चे भी सचमुच चुप। आखिर उन लोगों ने ठीक किया कि शाम की गाड़ी से ही भाग चलें। चलिये, हमारे प्राण तो बचे। हम सब बड़े उत्साह के साथ उन्हें पहुंचाने स्टेशन तक गये, फिर आने के लिये भी कहा और हंसी-खुशी घर की ओर लौटे। रास्ते में मां कह रही थीं, अच्छा हुआ, तेरे पिताजी यहां नहीं थे नहीं तो न जाने क्या होता। जब आकर देखेंगे कि उनकी इतनी सारी चीजें नष्ट हो गयी हैं तो न जाने क्या कहेंगे।

हम लोग ये बातें करते-करते जीने पर चढ़ रहे थे। ऊपर पहुंचते न पहुंचते देखा एक नया होल्डऑल रखा है, पास में एक टोकरी है। आह, अभी घाव भरने लगा था कि फिर चोट! शायद कोई नया मेहमान आ धमका हो। मुझे जो आया गुस्सा तो होल्डऑल में मारी लात और वह जीने में लुढ़कता-लुढ़कता नीचे जा पहुंचा। पिताजी अपना संदूक लिये हुए ऊपर चढ़ रहे थे। इसे नीचे जाते हुए देखा तो घबराये; वे एक तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों या इसे रोकें। उससे पहले ही होल्डऑल ने उन्हें टक्कर दी। वे अपने-आप तो किसी तरह बच गये पर हाथ का संदूक गिर गया और उसका सामान भी इधर-उधर फैल गया। हम लोग तो पिताजी को देखते ही डर के मारे सिर पर पैर रखकर भागे, उधर मां की हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। वे भी भागीं। मैंने खिड़की की आड़ में से झांका, पिताजी जीने के नीचे खड़े थे। अधखुला मुंह ऊपर की तरफ उठा हुआ था, एक हाथ से चश्मा ठीक कर रहे थे और दूसरे से कूल्हे को सहला रहे थे। चेहरे से लगता था मानों सारी परिस्थिति को समझने का असफल प्रयास कर रहे हों।

हमारे जीजाजी

आज हमारे जीजाजी का पचासवां जन्मदिन है। सारे देश में उनकी स्वर्ण-जयन्ती बड़े समारोह से मनायी जा रही है। कहीं उन्हें कवियों का सिरमौर बताया जा रहा है तो कहीं दार्शनिकों का मुकुट-मणि। बहुतों का कहना है कि वे इतने महान् हैं कि उनका मूल्य आंकना हमारे बूते से बाहर है।

खैर, वे किसी के नेता हों, किसी के लिये कवि हों, हमारी बला से, हमारे लिये तो वे बस जीजाजी हैं, इससे ज्यादा या कम कुछ नहीं। कई दिनों से सोच रखा था कि आज की शाम जीजी के साथ बितायी जाये और उनसे जीजाजी के जीवन की मजेदार घटनाएं सुनी जायें। शाम होते ही मैं, अशरफ और स्वामीनाथन मिलकर जीजी के यहां जा धमके। हम तीनों में बड़ी गाढ़ी छनती है और जहां बंदरपना करना हो हम तीनों इकट्ठे ही जाया करते हैं।

जीजी हम लोगों की प्रतीक्षा ही कर रही थीं। जीजाजी तो कहीं समारोह में गये हुए थे, उन्हें आज भला दम लेने की भी फुर्सत कहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। जीजी बेचारी पुराने ढर्रे की हैं। भीड़-भड़क्के से या समारोह आदि के नाम से उनकी नानी मरती है। यूं दो चार मिल बैठें तो वे अच्छा रंग जमा देती हैं। अच्छा, तो पहुंचते ही हम सबने एक आवाज में कहा, "जीजी, आज तो बस जीजाजी की बातें सुनेंगे।" जीजी ने पहले तो महंगा बनने की कोशिश की, इधर-उधर के बहाने किये, पर आखिर बोलीं, "अच्छा, तुम लोग भी तो उन्हें जानते हो, पहले तुम लोग कुछ सुनाओ फिर मेरी बारी।" हम लोग जीजी के इस स्वभाव को अच्छी तरह जानते थे। इसलिये पहले से ही तैयार होकर गये थे।

अशरफ ने कहा, जीजी तुम जानती हो कि जीजाजी कॉलिज में हमारे बड़े भाई साहब के साथ पढ़ा करते थे। भाई साहब इनकी बहुत-सी कहानियां सुनाया करते हैं। उन दिनों ये कविता लिखना शुरू कर चुके थे और कवियों के जो लक्षण सुन रखे थे उन सबमें पूरा उतरना चाहते थे। कभी धोती-कुर्ते पर नेकटाई लगा आते, कभी एक पांव में काला और दूसरे में लाल जूता पहन आते। लोग कहते थे कि ये जानबूझ कर बनते हैं, पर बात ऐसी नहीं थी। एक दिन देखा रजाई ओढ़े हुए कॉलिज में घुस आये। सब एकाएक हंस पड़े तो हजरत चकराये कि आखिर बात क्या है। किसी ने रजाई का एक कोना पास की एक कुरसी से बांध दिया पर इन्हें पता न चला। दूसरी ओर से साथियों ने चिढ़ाना शुरू किया। ये नाराज होकर लौट पड़े तो साथ में कुरसी भी घसिटने लगी। बस मजा आ गया। ऐसी बातें तो रोज हुआ करती थीं। एक दिन हमारे एक विद्यार्थी के कई रिश्तेदार कहीं बाहर से आये। उन्होंने भोलेबाबा को देखा तो त्योरियां चढ़ा लीं। (तब तो ये हमारे जीजाजी न थे, लोग इन्हें भोलेबाबा ही कहा करते थे।) सबको आश्चर्य हुआ। उनसे पूछा, आप इन्हें जानते हैं क्या ? बोले, जानते हैं, ये मियां तो हमारे पक्के दोस्त हैं। अभी कुछ दिन पहले हम पीलीभीत जा रहे थे। ये सज्जन भी हमारे साथ रेल के डब्बे में थे। क्षमा करना, बंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह उचक कर ऊपर की पटरी पर जा विराजे और थोड़ी ही देर में इनकी नाक बजने लगी—घर्रर घूं, घर्रर घूं। हम सबको बड़ा मजा आया। जान-पहचान न होते हुए भी इनमें रस पैदा हो गया। अगला स्टेशन जो आया तो एक आदमी इनका सूटकेस लेकर नौ दो ग्यारह होने लगा। हम लोगों ने उसे धर दबोचा। सूटकेस छुड़ाया और दो-चार चप्पलें लगाकर उसे बिदा किया। लेकिन मजाल है इनके कान पर जूं तक जो रेंगी हो। मजे से नासा संगीत चलाते रहे। खैर, हमने जबरदस्ती जगाया, सारा हाल सुनाया, पर धन्यवाद देना तो एक ओर रहा, उल्टे हमसे ही अनखा गये कि इतनी जरा-सी बात के लिये उनके आराम में बाधा डाली। हमने भी ठान ली कि अब चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये हम इनके मामले में न पड़ेंगे। पर ये भला ऐसे ही छोड़नेवाले न थे। नींद टूट गयी तो ऊपर ही बैठे बत्तीसी चलाना शुरू किया। पहले तो कुछ कुडुम कुडुम करते रहे फिर एक बरतन खुलने की आवाज आयी और साथ ही नीचे बैठे हुए व्यक्ति पर कुछ छींटे गिरे। वह जरा गरम मिजाज का था। झट बोला, यह क्या बदतमीजी है। खाना हो तो नीचे उतरकर खाओ। ये जरा सकपकाये। झपटकर नीचे उतरने लगे तो दाल का कटोरा उलट गया और बदतमीजी पर टोकनेवाले सज्जन पूरी तरह दाल से नहा गये। इन्होंने आव देखा न ताव, पास में बैठी हुई एक महिला की चादर खींचकर उससे बदतमीज महाशय का मुंह पोंछने लगे और कहने लगे, नहीं, नहीं, शांत रहिये, गुस्सा क्यों करते हैं, अभी साफ किये देते हैं। चादर खींचने से महिला ने जो चिल्लाना शुरू किया कि बस तोबा। सारे डिब्बे में कुहराम मच गया और हंसते-हंसते हमारे पेट में बल पड़ गये। अब बताइये इन महाशय को हम भूल सकते हैं क्या ?

अशरफ की कहानी पर हम सब लोटपोट हो गये। जीजी भी प्रवाह में बह गयीं, बोलीं, अरे यह क्या है, इससे बढ़कर मैं सुनाऊं। हम यही तो चाहते थे। तीनों के मुंह से एक साथ निकला, हां जीजी सुनाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीजी ने कहा, बहुत दिनों की बात है। मेरी मंगनी तो हो चुकी थी पर शादी होने में देर थी। मैं अपने साथ पढ़नेवाली तीन लड़कियों को लेकर घूमने निकली। अशरफ, तुम्हारी मौसी भी मेरे साथ थी। ओह, उन दिनों तो वह पहले नम्बर की शैतान थी। घूमते-घूमते शाम हो गयी। रमजान का महीना था। हम एक मस्जिद के पास जा पहुंचीं जहां अश्र की नमाज पढ़ी जा रही थी। हमें वह वातावरण बहुत अच्छा लगा। हम तीनों चारों लड़कियां वहीं रुक गयीं और मस्जिद के बाहर एक अंधेरी जगह पर बैठ गयीं ताकि हमारी ओर किसी का ध्यान न खिंचे। हम अभी बैठी ही थीं कि एक मरदुआ वहां आ पहुंचा और सीधा हम लोगों के बीच में आ बैठा। हम सब सकपका गयीं। अंधेरे में चेहरा तो दिखता न था, ऊपर से लबादा पहने हुए और भी भयंकर लग रहा था। सच, मेरी तो नीचे की सांस नीचे और ऊपर की ऊपर रह गयी। करूं तो क्या करूं, अशरफ की मौसी की भी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। हम सब सिकुड़ी जा रही थीं और वह बराबर फैलता जा रहा था। या अल्लाह, अब करें भी क्या ? बाहर निकलना आसान न था। वह ऐसी जगह बैठा था कि उसे छुए बिना इधर-उधर हिलना भी असंभव था। आवाज करें तो पास ही नमाज हो रही थी। खैर, हम में से एक हिम्मत करके ज्यूं त्यूं बाहर आ गयी। उसकी देखा-देखी मैं भी सरक आयी। अब हम दोनों ने ठीक किया कि नमाज खतम होते ही अशरफ के अब्बा को बुला लेंगे और इस मरदूद को हवालात की हवा खिलायेंगे। हमारी ये योजनाएं बन ही रही थीं कि उस भले आदमी ने पैर पसार दिये और अशरफ की मौसी चिल्लाकर भागी—उई कहां से आ गया है यह मुआ से ढूंढ शरीफजादियों को तंग करने। उसने जो सुना तो वह भी चौंका और थोड़ी देर खड़ा हो गया। हमने सोचा, मासूम लड़कियों की मुसीबत आयी। भीड़ ने रस्ता से बाहर आया और बोला, "क्या बात है ? कौन तंग कर चिल[illegible] आप लोगों को ?" और जानते हो कौन था वह ? मुझे अभीतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शर्म आती है, वे तुम्हारे यही जीजाजी थे। हम लोग बिना जाने उनकी कोठरी के सामने बैठ गये थे। वे कहीं दूर घूमने गये हुए थे, वापस आये तो अपनी शराफत के कारण हम लोगों को हटाया नहीं, अपने-आप भी बाहर ही बैठ गये और हम लोगों ने क्या-क्या कल्पना कर डाली।

"हां, यह तो ठीक है जीजी, यह घटना तो मैं अपनी मौसी से भी सुन चुका हूं।" अशरफ ने हम लोगों की हंसी बंद हो जाने पर कहा। लेकिन वे कहा करती थीं कि एक बार जीजाजी तुम्हें भी किसी स्टेशन पर भूल आये थे, उसकी क्या कहानी है? "अरे! तुम लोग भी बड़े वैसे हो," जीजी ने गुस्से का ढोंग करते हुए कहा, सारे देश में आज उनका जयजयकार हो रहा है और तुम उनका मजाक उड़ाने में लगे हो, नहीं सुनाती, जाओ, अपने घर का रास्ता नापो।

हमने देख लिया कि जीजी के ओठों की एक कोर में मुस्कुराहट छिपी थी। इससे शह पाकर हम सबने कहना शुरू किया, नहीं, नहीं जीजी! हम उनका अपमान थोड़े ही कर रहे हैं। हम भी तो उनके पराक्रम सुन-सुन कर खुश हो रहे हैं। अच्छा, हां फिर क्या हुआ जीजी। जीजी ने देखा, पिण्ड छूटना मुश्किल है तो बोलीं, लो सुनो, पर इसके बाद और कुछ नहीं। "हां, हां, स्वीकार है" हमने एक स्वर में कहा।

जीजी ने कहना शुरू किया। हमारे ब्याह के कोई चार-पांच वर्ष बाद की बात है। मुनिया तब तीन-साढ़े तीन वर्ष की रही होगी, तुम्हारे जीजाजी को दक्षिण यात्रा की सूझी। मेरा उनके साथ पहला सफर था। काजीपेट तक तो जैसे-तैसे काम चलाया। उसके बाद मुझे मुश्किल होनी शुरू हो गयी। अपरिचित लोग, नयी भाषा, न मैं वहां की समझूं न वहां के लोग मेरी समझें। आजकल की तरह उन दिनों हिन्दी स[illegible]था? वाले हर जगह न मिलते थे और मैं अपनी थोड़ी बहुत अंग्रे[illegible]भी प्रवाह गृहस्थी के काम में भूल चुकी थी। हम ढाई व्यक्तियों की द[illegible]म यही निराली थी। खैर, एक जगह रेल बदलनी थी, हम लोग उतरे। स्टे[illegible]।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नाम तो अब याद नहीं, पर हां, वहां आसपास कोई आबादी नहीं मालूम होती थी। पता लगा, हमारी अगली गाड़ी के आने में अभी पांच घंटे की देर है। तुम्हारे जीजा के पांव में चक्कर तो था ही, मुझसे बोले, तुम यहीं बैठी रहो, मैं जरा चक्कर लगा आऊं। मैं इनके स्वभाव से परिचित हो चुकी थी। पांच मिनट के लिये कह जाना और दो-दो घंटे लगा देना इनके लिये मामूली बात थी। मैंने मना किया, पर मेरी सुनता ही कौन था। मैं भी तो स्टेशन पर झगड़ा न कर सकती थी। चुप होकर बैठ गयी। वे चले गये। एक घंटा, दो घंटे बीत गये पर इनका कहीं पता ही न था। मैं चुपचाप बैठी रही, मुनिया ने रोना शुरू किया। खाने को दाना नहीं, पीने को पानी नहीं, ढंग से बैठने को जगह नहीं। अब करूं भी तो क्या करूं ? उफ ! मुसीबत आ गयी। किससे पूछूं ! कुली बार-बार कुछ गिटपिट कह जाता, स्टेशन के बाबू लोग चक्कर लगा जाते। चायवाले, मिठाईवाले आ-आ कर अपनी बोली में कुछ कह जाते। मैं सहमी हुई तो वैसे ही थी, इन सब बातों ने मुझे और भी डरा दिया। हे भगवान्, रक्षा करना ! मुनिया को रोते देख एक खिलौनेवाला आ गया और तरह-तरह के खिलौने दिखाने लगा। यह एक नयी मुसीबत थी। मुनिया हठ कर बैठी और मेरे पास कानी कौड़ी भी न थी। पैसे तो उन्हीं के पास थे।

मेरे अंदर का डर, मुनिया की हठ और इनकी चिंता। एक मुसीबत हो तो सामना करूं। आखिर मैं भी न रोक सकी, मेरी आंखें भी बरसने लगीं। हमारी गाड़ी आयी और चली गयी पर उनका कहीं पता न था। मुनिया को रोते देखकर स्टेशन मास्टर को तरस आ गया, वह अपने घर से दूध लाकर दे गया। अब मेरे चारों ओर भीड़ लगनी शुरू हो गयी। थोड़ी देर में तुम्हारे जीजाजी बड़ी तेजी से इधर आते हुए दिखायी दिये। भीड़ ने रास्ता छोड़ दिया। उन्होंने झट सामान उठाना और कुली-कुली चिल्लाना शुरू कर दिया मानों रेल छूटने के लिये तैयार खड़ी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी ने कहा, गाड़ी कहां है जो आप इतनी जल्दी कर रहे हैं ? सिर खुजाते हुए बोले, हैं, गाड़ी अभीतक नहीं आयी ? हम जरा घूमने चले गये थे। वहां एक जगह छतरी भूल आये। उसे तलाश करने में कुछ देर हो गयी। तंग आ गये इन रेलवालों से, कितनी देर कर दी। हमें पता होता तो थोड़ी सैर ही कर आते।

और अगली गाड़ी में अभी दस-बारह घंटों की देर थी !!

छिप्पी, सिप्पी

छिप्पी, अरी ओ छिप्पी ! कहां गयी नासपीटी, जब देखो इधर-उधर भागी-भागी फिरती है। कभी घर में मन ही नहीं लगता इसका। कभी जरूरी काम हो तो छिप्पी रानी गायब, कभी दुःख-दर्द की बात हो तो उसका पता नहीं। इससे तो मर जाये तो अच्छा हो।

छिप्पी, ओ छिप्पी कहां जा मरी। बोलती क्यों नहीं ? जरा देखूं इस तरफ न हो कहीं। इधर अच्छे-अच्छे पतिंगे दिखायी दे रहे हैं। उन्हीं की ताक-झांक में होगी। इसका तो कभी पेट ही नहीं भरता, देखना एक दिन ऐसी मोटी हो जायेगी कि छत पर चलते हुए गिर-गिर पड़ेगी तब पता लगेगा इसे।

छिप्पी . . . ओ छि . . . प् . . . पी . . .। ऊं हुं कोई जवाब नहीं। मेरी बाईं आंख फड़क रही है। कहीं कुछ हो न गया हो उसे। मेरे मुंह से भी कैसी-कैसी बातें निकल गयीं उसके लिये। हे इष्टदेव, हे मकर महाराज, हे गृह-गोधिका देवी, मेरी छिप्पी की रक्षा करना, असावधानी में मेरे मुख से जो बातें निकल गयी हों उनपर ध्यान न देना। उन्हें मिथ्या कर देना, तुम्हें दो पतिंगों का भोग चढ़ाऊंगी।

हमारे घर की छिपकली इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उसके चेहरे पर परेशानी झलक रही थी। उसने फिर से आवाज लगायी—अरी ओ छिप्पी, और कहीं एक कोने में से एक बड़ी-सी छिपकली दौड़ी आयी और मानों पहली के साथ आलिंगन में बंध गयी।

पहली जिसका नाम सिप्पी था, खुशी के मारे नाच उठी और छिप्पी को डांटते हुए बनावटी क्रोध में बोली—अरे कहां गयी थी मरी ? तुझे ढूंढ़कर परेशान हो गयी। मुझे डर था कि कहीं मर-मरा न गयी हो। इस तरह अकेले-अकेले भाग जाने की आदत बहुत बुरी है। तुझसे कितनी बार कहा है कि कहीं जाना हो तो कहकर जाया कर नहीं तो दिल में धुकधुकी होने लगती है।

छिप्पी ने आधी बातें भी सुनीं या नहीं इसमें शंका है। वह बड़ी उतावली से बोली, अरी भैना तू समझती नहीं है। इन मनुष्यों के साथ रहते-रहते तेरी बुद्धि भी मनसा गयी है। अरे देख, सुन, हमारा यह महल खतरे में है। हमारी बिरादरी की छिपकलियां, गिरगिट, बामनी सब इधर-उधर जंगलों में, पेड़ों के नीचे, मिट्टी में रहती हैं। खाली हमारे लिये ही देवी गृहगोधिका ने यह शानदार मकान बनवा दिया है। ऐसी अच्छी दीवारें और छतें हमारी जाति में और किसको प्राप्त हैं ? लेकिन हमारी बढ़ती देखकर दुनिया के और प्राणियों को हमसे ईर्ष्या होने लगी है, उनमें विशेषकर यह दोपाया मनुष्य तो सबसे ज्यादा भयंकर है। मैंने देखा कि कल दोपाये यह मकान देखने आये थे। उन्होंने हमसे पूछने की जरूरत न समझी। बस दो-चार आदमियों ने मिलकर गिटपिट की और निश्चय कर लिया कि इस घर में डेरा डालेंगे।

और मजे की बात यह है कि आदमी देखने में तो इतना लंबा, चौड़ा, मोटा-ताजा होता है पर उसमें बुद्धि का नामो-निशान तक नहीं होता। वह घर की इतनी सुंदर छत और ऐसी अच्छी दीवारें छोड़कर फर्श पर रहता है, उसका उठना-बैठना, खाना-पीना और मरना सभी फर्श पर होते हैं। कोई भले घर की छिपकली इस तरह फर्श पर रहना पसंद न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी। हो सकता है, हमारी इष्ट देवी ने ही हमारी रक्षा करने के लिये उसकी मति बदल दी हो। वरना कहीं यह भी हमारी तरह छत पर चलना शुरू कर देता तो हमें बहुत असुविधा होती।

सिप्पी रानी, मैं तुम्हें न मिली तो तुमने न जाने क्या-क्या सोच लिया होगा पर मैं उन मनुष्यों की बातचीत सुनने के लिये गयी थी जो हमारे महल में आने की सोच रहे हैं। आदमी हमारे जैसा नहीं है। उसमें नर और मादा के लिये अलग-अलग नाम होते हैं। सिर पर लंबे-लंबे बाल और पींपनी-सी बोली से तुम मादा आदमी को पहचान सकती हो। हमारे लिये इनकी मादा ज्यादा खतरनाक होती है। मैंने सुना तो बहुत कुछ है पर इसे तो मैंने अपनी आंखों से देखा है। मुझे देखते ही इस मादा आदमी की आंखों से आग निकलने लगी और वह लाठी लेकर मेरे पीछे पड़ गयी। कौन जाने वह हमारी देखा-देखी छत पर बसने की न सोच रही हो। अगर ऐसा हुआ तब तो हमारी मुसीबत आ जायेगी। हमारे सारे कीड़े-मकौड़े, तिलचट्टे मिलकर भी उसका एक कौर न बन सकेंगे और इधर हमें उपवास करना पड़ेगा!

सिप्पी बोल उठी, अरी, तू चिन्ता न कर। मैं नर आदमी और मादा आदमी दोनों को अच्छी तरह पहचानती हूं। उनके लिये हमारी बराबरी करना असंभव है। ऐसा मोटा-मोटा शरीर, भद्दे-से हाथ-पांव, उसे भला छिपकलियों की तरह चलना ही कहां आता है जो वह हमारी तरह छत या दीवार पर रह सके। वह तो गंवार गिरगिटों की तरह सिर उठा-उठा कर, पूंछ पर खड़ा होकर चलने की कोशिश करता है। जब कोई छिपकली मर जाती है तो उसका शरीर छप् से नीचे गिर जाता है या फिर शिकार करने के लिये वह नीचे छलांग मारती है और अपने शिकार को मुंह में लेकर वापस आ जाती है पर यह आदमी तो मानों हमेशा ही मरा रहता है क्योंकि उसके लिये छत पर चलना असंभव है। उसे गृहगोधिका देवी ने धरती पर भेजा इसीलिये है कि वह हमारे लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर-से-सुंदर दीवारें और छतें बनाये। उनका आदेश है कि हम भी उसे कृपा करके अपने फर्श पर पड़ा रहने दें। हां, इनमें से कोई-कोई बड़ा दुष्ट होता है और हमारी जाति के विरुद्ध बगावत का झंडा बुलंद कर देता है पर हमें भी ऐसी-ऐसी तरकीबें याद हैं कि बच्चूजी का मिजाज ठीक हो जाये।

अरे, ऐसी एक-आध तरकीब मुझे भी तो बता दे सिप्पी। कहीं तुम न हो और मुझ अकेली को इसका सामना पड़ जाये तो मैं भी उसे मजा चखा सकूं। सिप्पी ने कहा, तेरी जिद है तो बताये देती हूं लेकिन तू अभी छोटी है, तुझे ठीक उपयोग करना नहीं आयेगा और तू मुश्किल में पड़ जायेगी। यह कहते-कहते सिप्पी ने बताया कि एक बार ऐसे ही कुछ आदमी छिपकली के महल में घुस आये और वहां की छिपकलियों को तंग करने लगे। सारे छिपकली-राज्य में खलबली मच गयी और उन्हें अपना मरण-दिवस सामने दिखायी देने लगा। उस समय एक बूढ़ी छिपकली आगे आयी। उसने बहुत से घाटों के पतिंगे चखे थे। उसने कहा, तुम लोग मेरे ऊपर छोड़ दो, मैं इन हत्यारों को ठीक कर दूंगी। और उसने क्या किया जानती हो ? ये सब आदमी मिलकर दावत कर रहे थे। वह जाकर उनके भोजन में कूद गयी। उसने अपनी जान दी पर हम लोगों की रक्षा करती गयी। सारी-की-सारी आदमी सेना टप-टप करके मर गयी। आखिर छिपकली का रस सिर पर लेना हंसी-खेल नहीं है।

छिप्पी मारे खुशी के उछल पड़ी। उसने कहा—जय हो बुढ़िया छिपकली की। चलो हम लोग उसके मान में कोई स्मारक खड़ा करेंगे। जिसने हमारे लिये अपने प्राण दिये उसके लिये हम भी कुछ दान देंगे। सिप्पी मुस्कराकर बोली—मुझे डर है तू भी कहीं आदमी न बन जाये। अरे स्मारक खड़ा करना कुलीन छिपकलियों का नहीं, आदमियों का ढंग है। वे आज खुश होंगे तो स्मारक खड़ा करेंगे, उसे फूल पहनायेंगे और न जाने क्या-क्या करेंगे, और कल नाराज हो गये तो स्मारक को तोड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोड़ कर फेंक देंगे। उनकी चाल न चलियो मेरी भैना, आदमी में हमारे सीखने लायक कुछ भी नहीं है। और हमारे पास ऐसा बहुत कुछ है जो हम उसे सिखा सकते हैं।

और दोनों खुशी-खुशी मानों गलबहियां करती हुई अपने भोजन की टोह में निकल गयीं।

सोसायटी समाचार

'सावित्री' स्वाध्याय सत्र—डॉ० मंगेश नाडकर्णी सावित्री के अगले सत्र का संचालन, जो संभवतः अन्तिम सत्र होगा, २३ फरवरी से ५ मार्च २००२ तक रोज सवेरे ९ से पौने बारह तक सोसायटी के बीच ऑफिस में करेंगे। सत्र निःशुल्क है।

२००२ का पॉकेट कैलेण्डर—सन् २००२ का फोल्डर के आकार का एक जेबी कैलेण्डर सोसायटी ने निकाला है जिसमें श्रीमां के चित्र के साथ उनके दो संदेश भी छपे हैं। सोसायटी के सभी सदस्यों को जनवरी २००२ के अंक के साथ यह फोल्डर मिलेगा। जो केन्द्र, शाखाएं तथा व्यक्ति इसकी अतिरिक्ति प्रतियां चाहते हों वे पूरी रकम के साथ कृपया इस पते पर अपना आदेश भेज दें—जनरल सेक्रेटरी, श्रीअरविन्द सोसायटी, नं. १ रंगपिल्लई स्ट्रीट, पांडिचेरी - ६०५००१। प्रत्येक फोल्डर का दाम १ रु० है, दस प्रतियों का डाक-खर्च ३ रु० है, रजिस्ट्री के साथ १७ रु० पड़ेगा। अधिक जानकारी के लिये उपर्युक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें।

न्यू कॉन विभाग ने सन् २००२ के अवसर पर 'हेल्थ एण्ड फिटनेस' नामक नयी डायरी छापी है। इसका दाम ६० रु० है और ३५ रु० डाक-खर्च। इच्छुक व्यक्ति स्पलेण्डर, ओरो सर्विस, नं. १६ गुबैर एवेन्यू, पांडिचेरी - ६०५००१ से सीधा पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की छोटी-छोटी कई पुस्तिकाएं प्रकाशित हुई हैं जिनमें विभिन्न विषयों पर श्रीमां तथा श्रीअरविन्द के वचन संकलित हैं। उदाहरण के तौर पर: जीवन का लक्ष्य, आंतरिक शांति, भगवान् में श्रद्धा, भय—उसका कारण और उपचार इत्यादि। प्रत्येक पुस्तिका का मूल्य १ रु० है, डाक-व्यय अतिरिक्त। अधिक जानकारी के लिये कृपया जनरल सेक्रेटरी, श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी - ६०५००२ से सीधा संपर्क करें।

नया प्रकाशन—जुगल किशोर मुखर्जी ने अपना नया प्रकाशन हमारे सामने प्रस्तुत किया है—"द एसेण्ट ऑफ साइट इन श्रीअरविन्दोज़ सावित्री"। जुगल दा आश्रम में पिछले ५२ वर्षों से रह रहे हैं और आश्रम-विद्यालय के उच्चतर चर्या के छात्रों को विभिन्न विषय पढ़ाते हैं। पुस्तक पठनीय और मननीय है।

तिरुपति, नैरोबी तथा गुलबर्गा के सोसायटी के केन्द्रों से समाचार आये हैं, लेकिन स्थानाभाव के कारण हम उन्हें विस्तार से छापने में असमर्थ हैं।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा . . . . में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SRI AUROBINDO SOCIETY

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Society House, Pondicherry-605 002

Notice for an Extraordinary General Meeting

An Extraordinary General Meeting of the members of Sri Aurobindo Society will be held at Kolkata on Saturday the 5th January 2002 at 3.30 PM at the registered office at Sri Aurobindo Bhawan, No.8, Shakespeare Sarani, Kolkata-700 071 to consider the following :-

Several alterations approved by the General Body were sent to the Registrar of Societies, West Bengal, at Kolkata from time to time to record the alterations but due to non-availability of records in the office of the Registrar of Societies, Kolkata, the alterations could not be recorded. Now that the records have become available the Registrar has accepted all other alterations except an alteration in rule 3 (b) effected in the year 1996 and 1997 on the ground that the General Secretary cannot be the formal head of Sri Aurobindo Society also. This was verbally communicated by the Registrar to the General Secretary. The Executive Committee has examined the objection raised by the Registrar and found substance in it, especially in the light of the further modification made in the same rule in the year 1997 wherein the designation of the General Secretary has been changed to "Member Executive – Administration". The Executive Committee, therefore, recommends to the General Body for accepting the objection raised by the Registrar and to delete the words "And the General Secretary will also be the formal head of Sri Aurobindo Society" from the altered position column of our application in Form IV submitted to the Registrar on 20.06.1996 and deletion of the same words from the previous position column of our application in Form IV submitted to the Registrar on 12.03.1997.

Sd/-

16th November 2001 (Pradeep Narang)
Pondicherry General Secretary

Note : The members are entitled to appoint proxy. Proxies must be deposited at the Registered Office of the Society at No.8, Shakespeare Sarani, Kolkata-700 071, during office hours, in advance, but not less than 48 hours before the time fixed for holding the meeting.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Uk 13/11/2002
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya LIBRARY

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

२४ अप्रैल, १९५६

धरती पर अतिमानस का अवतरण अब एक प्रतिज्ञा भर नहीं है बल्कि ठोस तथ्य, यथार्थता बन चुका है।

वह यहां काम में लगा है, और एक दिन आयेगा जब एकदम से अंधा, एकदम से अचेतन, यहांतक कि एकदम से अनिच्छुक व्यक्ति भी उसे पहचानने को बाधित होगा।

*

मैं ऐसी अतिमानसिक अभिव्यक्ति की बात कर रही हूं जो सबके लिये, यहांतक कि अधिक-से-अधिक अज्ञानी के लिये भी प्रत्यक्ष हो—जिस तरह जब मानव अभिव्यक्ति हुई तो वह सबके लिये प्रत्यक्ष थी।

*

एक नया जगत् जन्म ले चुका है।

जिन चीजों के लिये वचन दिया गया था वे चरितार्थ हो गयी हैं।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

त्वमेव सर्वम्

नयी शताब्दी का आरंभ हो उससे पहले ही हम उसकी पदचाप सुन रहे थे। बीसवीं सदी के अंतिम वर्ष में हमने प्रलय का नर्तन देखा। ऐसा लगा मानों महाकाल समुद्र के ऊपर तांडव कर रहे हैं और उनके नृत्य के साथ समुद्र अपनी सीमा तोड़ कर हुंकार करता हुआ महाविनाश के लिये बिजली की गति से ओड़िसा पर कहर ढाने के लिये तूफानी वेग से बढ़ गया। न जाने कितने गांव, कितने पशु, पक्षी और मनुष्य समुद्र के उदर में समा गये !

इस बार नयी सदी के नव वर्ष का हमने हर्ष के साथ स्वागत किया, किंतु . . . किंतु क्या हुआ ? इस बार महाकाल का तीसरा नेत्र गुजरात की ओर खुला ! कैसा हाहाकार मच गया ! मां धरती, जिसकी सहनशीलता पर हम पूरे भरोसे से खेल रहे थे, उसका पता नहीं किस दुःख से हृदय फटा जा रहा था और उसके शिशु अनाथ होकर बिलख-बिलख कर रो रहे थे, "मां की गोद कहां गयी ?" और यह तहलका हुआ भी भारत के गणतंत्र के शुभ उत्सव के दिन !! नयी सदी के दूसरे वर्ष का आरंभ होने जा रहा है किंतु उससे पहले तूफान के लक्षण दिखायी दे रहे हैं। आतंकवादी ओसामा बिन लादन ने अमरीका-सी महाशक्ति को चुनौती दी। उसके सैन्य बल, अकूत संपत्ति और उसकी राजनैतिक श्रेष्ठता के बावजूद अमरीका की यह दुर्दशा देखकर भी विश्वास नहीं होता कि यह वही अमरीका है जिसने मित्र-राष्ट्रों से मिलकर हिटलर जैसे तानाशाह को पराजित किया था।

तो क्या यह वर्ष भी सत्यानाश ही ढाएगा ? हर वर्ष इस तरह के विध्वंस का अर्थ क्या है ? संसार पर क्या कोई आसुरी शक्ति राज कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है कि मानव उसके सामन बौना बना असहाय होकर बस महाविनाश को देख भर पाता है ?

माताजी ने किसी को वर्षों पहले लिखा था, "हर रोज चीजें ज्यादा से ज्यादा बिगड़ती हुई मालूम पड़ती हैं . . . हमें एक ऐसे जगत् की स्थापना की आवश्यकता पर विश्वास होता जा रहा है जो घिसे-पिटे रास्तों से दूर हो, जो जीवन का नया पहलू हो, जिसमें नयी और अधिक सत्य ज्योति को अभिव्यक्त करने की क्षमता हो . . . एक ऐसा नया जगत् आ सके जो स्वार्थी प्रतियोगिताओं और अहंकारपूर्ण संघर्षों पर आधारित न हो कर सबके कल्याण, ज्ञान और प्रगति के लिये व्यापक, उत्सुक प्रयास पर आधारित हो। एक ऐसा समाज जो धन और भौतिक शक्ति की जगह आध्यात्मिक अभीप्सा पर आधारित हो।''

माताजी की यह शुभेच्छा इसलिये थी कि हम सावधान होकर अपने अंदर झांक कर और बाहर देख कर कुछ ऐसा काम करें जिससे हम और समाज ऊर्ध्वगामी हो पाएं। किंतु आज हम चारों ओर देखें तो पाते हैं कि धन, अधिकार के लिये प्रतियोगिताएं तीव्र होती जा रही हैं। पिछले तीन वर्षों से त्रिपुरारि की क्रोधाग्नि हमें यही इंगित कर रही है कि मनुष्य अधिक-से-अधिक भौतिक जीवन, उसके प्रलोभनों और आकर्षणों में फंसता जा रहा है।

माताजी धैर्य की मूर्ति हैं। उन्होंने कई वर्ष बाद अधिक कड़ी चेतावनी दी थी। सन् १९६७ के नव वर्ष संदेश में वे कहती हैं,

> "मनुष्यो, देशो और महाद्वीपो !
> चुनाव अनिवार्य है :
> सत्य या फिर रसातल।''

जब माताजी से पूछा गया कि रसातल का अर्थ क्या है तो उन्होंने कहा, "ठीक इस समय बहुत तनाव है। ऐसी स्थिति है मानों युद्ध का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरंभ होनेवाला है। यह अंधा आवेग है जिसे मनुष्य अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में ला रहे हैं।"

यह वाक्य कितना सच्चा है। आज ओसामा बिन लादन तीसरे महायुद्ध की घोषणा कर रहा है!

ऐसी अवस्था में भयभीत होना स्वाभाविक है किंतु माताजी कहती हैं कि भय अविश्वास से आता है। जब मनुष्य धन, व्यापार, अधिकार से आसक्त होता है और उन्हें गंवाने से घबराता है, तब भय का प्रवेश होता है क्योंकि मनुष्य को भगवान् पर न श्रद्धा रहती है न भरोसा।

तो अगर हम भगवान् की ओर पूरी तरह मुड़ें और यह समझ लें कि उनके जैसा हमारा हितैषी और प्रेमी न माता-पिता हैं, न मित्र, और न परिवार; तो हम भय से मुक्त होंगे। तब जैसी भी परिस्थिति सामने आ जाये उसको हम शांति से स्वीकार करेंगे।

यही मार्ग हमें और संसार को रसातल से बचा सकता है। हमें सच्चे दिल से यह प्रार्थना दोहरानी चाहिये—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव।

—अनुबेन

जब कोई पूर्ण रूप से भगवान् को समर्पित हो जाता है तो उसके लिये दूसरों की रायों का बहुत कम महत्त्व रह जाता है।

('श्वेत गुलाब' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जनवरी

१. किसी चीज से न डरो : भगवान् हमेशा हर सच्ची अभीप्सा का उत्तर देते हैं और उन्हें पूरे हृदय के साथ जो कुछ दिया जाये उसे लेने से कभी इंकार नहीं करते। इस तरह तुम इस निश्चिति की शांति में रह सकते हो कि तुम्हें भगवान् ने स्वीकार कर लिया है।

२. साधक : मां, मेरा जीवन शुष्क है। वह हमेशा ऐसा ही रहा है, मेरे जीवन की शुष्कता बराबर बढ़ती रहती है।

श्रीमां : यह किन्हीं बाहरी परिस्थितियों पर नहीं, तुम्हारी भीतरी स्थिति पर निर्भर है। यह इसलिये होता है क्योंकि तुम अपने मन के बहुत ही छिछले स्तर पर रहते हो। तुम्हें अपनी चेतना में कुछ गहराई पाने की कोशिश करनी चाहिये और फिर वहीं निवास करना चाहिये।

३. हर एक से बस उतनी ही मांग की जाती है जितना उसके पास है, जितना वह है, उससे अधिक नहीं पर उससे कम भी नहीं।

४. खोजने में एक आनंद है, प्रतीक्षा करने में आनंद है, अभीप्सा करने में आनंद है, कम-से-कम उतना ही अधिक जितना अधिकार कर लेने में है।

५. साहसी बनो और अपने बारे में इतना अधिक न सोचो। तुम दुःखी और असंतुष्ट इसलिये रहते हो क्योंकि तुम अपने छोटे-से अहंकार को अपनी तन्मयता का केंद्र बना लेते हो। इन बीमारियों का बड़ा इलाज है, अपने-आपको भूल जाना।

६. चैत्य पुरुष दुःखी नहीं होता; मन, प्राण और अज्ञानी मनुष्य की सामान्य चेतना दुःख झेलती है।

७. साधक : मेरे हृदय को खाली न छोड़ो मां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमां : मैं हमेशा तुम्हारे हृदय में रहती हूं।

८. साधक : मेरे अंदर चैत्य पुरुष सोया हुआ है।

श्रीमां : चैत्य सोया हुआ नहीं है। उसके साथ संबंध ठीक तरह से नहीं बना है क्योंकि मन बहुत ज्यादा शोर मचाता है और प्राण बहुत बेचैन है।

९. अपने हृदय को बेकार की बातों से भरने की जगह तुम्हें बड़े आग्रह के साथ उसे हर चीज से खाली करना चाहिये, पूरी तरह सभी चीजों से खाली, चाहे वे छोटी हों या बड़ी—ताकि उस महान् रिक्तता की शक्ति "अद्भुत उपस्थिति" को वह अपनी ओर खींच सके। तुम्हें उस परम कृपा का उसके योग्य मूल्य चुकाना सीखना चाहिये।

१०. निश्चय ही उदास और दुःखी होकर तुम भगवान् के पास नहीं पहुंचते। तुम्हें हमेशा अपने हृदय में दृढ़ श्रद्धा और विश्वास तथा मस्तिष्क में विजय की निश्चिति रखनी चाहिये। मेरे और तुम्हारे बीच जो छायाएं आती और मुझे तुम्हारी दृष्टि से छिपाती हैं उन्हें निकाल बाहर करो। निश्चिति के शुद्ध प्रकाश में ही तुम मेरी उपस्थिति के बारे में सचेतन हो सकते हो।

११. तुम जितने अधिक दुःखी होओगे और रोना-धोना करोगे उतने ही अधिक मुझसे दूर होते जाओगे। भगवान् दुःखी नहीं हैं और भगवान् को पाने के लिये तुम्हें समस्त दुःख और समस्त भावुक दुर्बलता को अपने से बहुत दूर फेंकना होगा।

१२. प्राण कामनाओं और ऊर्जाओं, आवेगों और प्रेरणाओं का, भीरुता और साथ ही शौर्य का स्थान है। उसमें लगाम लगाने का अर्थ है इन सबको भागवत इच्छा की ओर मोड़ना और उस इच्छा के आधीन करना।

१३. हमेशा प्रलोभन से बचना ज्यादा अच्छा होता है।

१४. तुम्हें केवल शांत विश्वास के साथ डटे रहना चाहिये और प्राण हड़ताल करना भूल जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. अवसाद हमेशा विवेकहीन होता है और तुम्हें कहीं नहीं ले जाता। वह योग का सबसे सूक्ष्म शत्रु है।

१६. एक प्रार्थना—हे प्रभो, मेरी समस्त सत्ता को जगा ताकि वह तेरे लिये आवश्यक यंत्र, पूर्ण दास हो सके।

१७. **साधक** : मैं जानता हूं मेरे अंदर बहुत-सी गलत चीजें हैं लेकिन कोई खास आधारभूत गड़बड़ भी होनी चाहिये, मां, वह क्या है ?

श्रीमां : तुम्हारे लिये कोई विशेष बात नहीं है। एक ही कठिनाई सभी मनुष्यों में मौजूद है—भौतिक मन का घमंड और उसकी अंधता।

१८. **साधक** : प्यारी मां, मुझ गरीब के लिये आपका प्यार ध्रुवतारा है और मैं उसके लिये कृतज्ञ हूं।

श्रीमां : मेरे प्यारे बालक, मेरा प्रेम तुम्हें लक्ष्य तक ले जाना चाहता है और उसकी विजय निश्चित है।

१९. भागवत प्रेम तुम्हारा लक्ष्य हो।
शुद्ध प्रेम तुम्हारा मार्ग हो।
अपने प्रेम की ओर सच्चे रहो और तुम सभी कठिनाइयों पर विजय पा लोगे।

२०. अर्पण का रूप चाहे जैसा हो जब वह सचाई के साथ किया जाता है तो हमेशा अपने अंदर भागवत प्रकाश की एक चिनगारी लिये रहता है जो पूर्ण सूर्य में विकसित हो सकती और समस्त सत्ता को आलोकित कर सकती है।

२१. तुम मेरे प्रेम के बारे में विश्वस्त रह सकते हो, तुम मेरी सहायता के बारे में विश्वस्त रह सकते हो।

२२. मेरे बहुत प्यारे बालक,
मेरे प्रेम में निवास करो, उसे अनुभव करो, उससे भर जाओ और सुखी रहो—कोई चीज मुझे इससे ज्यादा खुश नहीं कर सकती।

२३. **साधक** : प्यारी मां, जैसे-जैसे मेरा शरीर दुर्बल होता जायेगा, प्राणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामनाएं धीरे-धीरे गायब हो जायेंगी न ?

श्रीमां : हर्गिज नहीं, बल्कि इसके एकदम विपरीत। प्राण की कामनाओं को जीतने के लिये तुम्हारे अंदर बढ़िया संतुलन और अच्छा स्वास्थ्य होना जरूरी है।

२४. जो चीज महत्त्वपूर्ण है वह है भय को उठा फेंकना। भय ही तुम्हें बीमार करता है और भय के कारण ही रोगमुक्त होना इतना कठिन होता है। सारे भय को जीतना चाहिये और उसके स्थान पर भागवत कृपा पर पूर्ण विश्वास लाना चाहिये।

२५. दवाइयों के बिना काम चलाने के लिये तुम्हारे अंदर दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये।

२६. तुम्हें कभी आशा या श्रद्धा न खोनी चाहिये—कोई चीज असाध्य नहीं है। और भगवान् की शक्ति पर कोई हदबंदी नहीं की जा सकती।

२७. तुम्हें आंतरिक शांति को पाना और हमेशा बनाये रखना चाहिये। वह शांति जो शक्ति लाती है, उससे ये सब छोटी-मोटी विपत्तियां गायब हो जायेंगी।

२८. तुम्हारे लिये यह बहुत ज्यादा अच्छा होगा कि तुम अपने-आपको इसमें व्यस्त न रखो कि दूसरे क्या कहते हैं।

२९. जब तुम निर्दोष हो तो तुम्हें दुर्व्यवहार के बारे में एकदम उदासीन होना चाहिये क्योंकि तब तुम्हारे अंदर कोई ऐसी चीज नहीं होती जिसके लिये तुम अपने-आपको दोष दो और अपने-आपको दिलासा देने के लिये तुम्हारे पास अंतःकरण की स्वीकृति होती है।

३०. अगर तुम विरोधी शक्तियों को तृप्त करना शुरू करोगे तो वे तुमसे अधिकाधिक खींचना शुरू करेंगी और कभी संतुष्ट न होंगी।

३१. चिंता न करो। बस अपने अंदर सदा चीजों को अच्छी तरह करने का संकल्प रखो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धांजलि श्री रवीन्द्रजी को

रवीन्द्र

"मैं तुम्हें पहले से ही एक सच्चा सेवक मानती हूं पर मैं चाहती हूं कि तुम एक सच्चे बालक भी बन जाओ जिससे तुम इसका पूरा-पूरा आनंद पा सको।"

रवीन्द्र को माताजी का एक पत्र

*

रवीन्द्र के गुजर जाने से इस आश्रम का एक और मुख्य सहारा हमसे छिन गया। उसकी सेवाएं इस आश्रम-जीवन में अनेक और बहुविध रही हैं। हम उसे भागवत चेतना के एक सेवक के रूप में जानते हैं। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिस पर मां बहुत भरोसा करती थीं। संक्षेप में उसकी जीवनकथा इस प्रकार है :

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से अप्रैल १९३८ में वह आयुर्वेद का स्नातक बना। उन दिनों अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता के लिये संघर्ष चल रहा था। मातृभूमि की सेवा-भावना से ओतप्रोत वह गांधीजी के पास आया, उनके वर्धा आश्रम में कुछ महीने रहा। उसने श्रीअरविन्दाश्रम के बारे में बहुत सुना हुआ था और उसे कभी देखने की इच्छा भी उसके मन में थी।

यह सुयोग उसे मिला जुलाई १९३८ में। ३ जुलाई १९३८ को वह आश्रम देखने के लिये आया। मां से उसने मिलने की इच्छा प्रकट की। मां ने अनुग्रह कर उसे इसकी स्वीकृति दे दी। यह मुलाकात करीब एक घंटा चली। मुलाकात के बाद उसे लगा कि इन भगवती मां के चरणों में अपना जीवन अर्पित करना कहीं अधिक श्रेयस्कर होगा। इस समय उसकी आयु २१ वर्ष की थी।

उसे भोजनालय में काम दिया गया। उन दिनों यहां पांडिचेरी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा नमक उपलब्ध नहीं होता था, उसे मां ने नमक बनाने का काम सौंपा। वह रात ३ बजे भोजनालय पहुंच कर साधकों के उपयोग के लिये नमक तैयार करता था। उसकी सचाई और लगन मां से छिपी न रहीं। मां ने भोजनालय के अनेक काम दे कर उसे प्रशिक्षित किया और अंत में द्युमान् भाई के निरीक्षण में भोजनालय का प्रमुख बना दिया। साधकों को घर-घर टिफिन कैरियर पहुंचानेवाली गाड़ी को खींचने का तथा कोयला-वितरण का काम भी वह काफी समय तक करता रहा।

मां ने तब उसका रहने का कमरा बदल कर आश्रम के मुख्य भवन में उसे कमरा दे दिया। साधकों के फलों के थैले भरने में सहायता करने के लिये वे उसे भोर में घोर अंधेरे अपने पास बुला लेतीं। प्रत्येक व्यक्ति को कैसे फल देना चाहिये इसके लिये मां ने उसे इन्हीं दिनों प्रशिक्षित किया था।

समय के साथ-साथ मां का विश्वास उसपर बढ़ता गया। नवागन्तुकों को, मां से परामर्श कर, कार्य देना उस पर आ पड़ा। ज्योतिन्-दा के निधन के पश्चात् 'लाण्डरी' और 'बेकरी' का कार्यभार भी मां ने उसे संभालने को कहा।

वह अपने शिक्षाकेंद्र में हिन्दी पढ़ाता था और हिन्दी-विभाग का अध्यक्ष था। 'अग्निशिखा' और 'पुरोधा'—हिन्दी की ये दो मासिक पत्रिकाएं भी वह चलाता था। उसने श्रीअरविन्द और श्रीमां की अनेक पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद किया है।

बंगाल सरकार ने गतवर्ष उसकी हिन्दी की सेवाओं से प्रसन्न होकर उसे 'श्रीअरविन्द पुरस्कार' से सम्मानित किया था।

२४ अगस्त २००१ को यद्यपि उसने अपना शरीर छोड़ दिया फिर भी उसकी विशुद्ध हिन्दी में बातचीत की गूंज और खिलखिलाती हंसी की गूंज हमारी स्मृति में बनी रहेगी और हमेशा इस कर्मयोगी की याद दिलाती रहेगी। —रवीन्द्रजी के मित्र, एक वरिष्ठ साधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवीन्द्रजी : एक मस्तमौला अनासक्त साधक-साहित्यकार

१६वीं दिसम्बर १९८७ से २३ दिसम्बर २000 के दौरान कई बार श्रद्धेय रवीन्द्रजी से भेंट करने का सौभाग्य मिलता रहा। १८वीं दिसम्बर, २000 के दिवस उनसे हम पति-पत्नी मिलने गये तब मन ही मन यह स्वीकार कर लिया था कि अब वे अधिक नहीं रहेंगे। तथापि स्वभाव तो था उनका मस्तमौलेपन का। अनन्य थी श्रीअरविन्द और श्रीमाताजी के प्रति उनकी श्रद्धा-भावना। अतः जब-जब उनसे मुलाकात होती तब-तब वे मां और श्रीअरविन्द को अपनी बातों में जरूर लाते।

मेरे ज्येष्ठ पुत्र चि० अशेष की वजह से सर्वप्रथम रवीन्द्रजी से बातें करने का अवसर प्राप्त हुआ—सन् १९८७ में १६वीं दिनांक को, जो हम दोनों पिता-पुत्र की अंग्रेजी जन्म-तिथि है। इसी कारण शायद अब सब कुछ क्रमशः स्मरण हो रहा है कि रवीन्द्रजी से मिला और फिर लगातार उनसे मैं मिलता ही रहा। श्रद्धेय रवीन्द्रजी की प्रतिभा ऐसी थी कि हम ज्यादातर साहित्य, भाषा और सामाजिक-परिप्रेक्ष्य की ही बातें करते, चि० अशेष के बारे में तो कभी-कभी ही। वह भी तभी जब वे उसकी बात निकालते। साथ ही चि० अशेष का भी आग्रह था कि पिता के द्वारा बेटे के लिये किसी भी प्रकार की सिफारिश न हो। मैंने रवीन्द्रजी को एक बार इतना ही कहा था कि "काश ! मैं भी यहां आ पाता !" और तब रवीन्द्रजी का उत्तर था, "यहां भी हिन्दी का काम करना।"

वस्तुतः संतान जब मां की गोद में हो फिर औरों को चिंता करने की आवश्यकता रहती ही नहीं है। अतः मेरी मनःस्थिति ठीक ऐसी ही रहती, इस कारण श्री रवीन्द्रजी से विभिन्न विषयों पर बातें होती रहतीं और उनसे बहुत कुछ ज्ञान-प्राप्ति भी होती।

गुजराती साहित्य के बारे में, हिन्दी साहित्य के बारे में और साथ ही प्रादेशिक अंचल के साहित्य के बारे में उनकी जानकारी काफी गहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उन्हीं के मुख से सर्वश्री मगनभाई देसाई, ठाकोरभाई देसाई, उमाशंकर, सुन्दरम् व राजेन्द्र शाह तथा निरंजन भगत के नाम सुने थे। एक बार जब ठाकोरभाई देसाई की बात चली तब बड़े जोरों से ठहाके के साथ उन्होंने कहा था,

"ये तो ठाकोरभाई आठवें वाले न ?"

वाह ! गुजरात में भाषायी हलचल कैसी है इसकी जानकारी भी उन्हें थी !

और जब गुजराती पत्रिका "कुमार" व "कविलोक" के संपादक—डॉ० धीरुभाई परीख व कमलाबहन आये, साथ में श्रीमती विदुलाबहन भी थीं, तब रवीन्द्रजी से रविशंकर रावल, बचुभाई रावत, बुध-सभा आदि की चर्चाएं काफी की थीं। डॉ० धीरुभाई तो उनसे काफी प्रभावित हुए और उन्होंने आगे जाने का जो कार्यक्रम बनाया था वह वहीं पोंछ डाला और श्रीमती कमलाबहन से कहा कि "हम तो यहीं रहना चाहते हैं। हमें अब आगे नहीं जाना।" फिर दो दिन पश्चात् डॉ० धीरुभाई ने पूछा, "रवीन्द्रजी से मिलने चलें ?" वे भी उनका आदर करने लगे थे।

एक बार मुझसे रहा नहीं गया और प्रश्न निकल गया कि आप मूलतः कहां के हैं ? अर्थात् किस प्रदेश के ?

उत्तर मिला : "मैं तो माताजी का हूं।" मैंने प्रश्न को मोड़-मोड़कर उनके मुख से अंचल विशेष जानना चाहा, पर उत्तर तो नहीं मिला। हां, उनसे मुक्त ठहाके तो कई बार मिलते रहे। अतः उस बार भी वही मिले। और फिर जब मुझे छानबीन के पश्चात् जानकारी मिली कि वे तो हैं पंजाब के ! तब यह उनसे कहने पर वे इतनी जोरों से हंस पड़े कि ठहाके पर ठहाके लगाते गए।

आदरणीय रवीन्द्रजी के प्रति मेरा अहोभाव और आकर्षण बढ़ता गया था उसका कारण था उनकी बहुभाषायी शक्ति। वे अनेक भाषाएं जानते थे और अत्यंत सरलता से बोल भी लेते थे। मैं तो उनके साथ अक्सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में ही बातचीत करता पर वे मुझे देखते ही कहते,

"केम! आवी गया ? क्यारे आव्या ? बंने जणां आव्या छो ने ?"
(ओह आ गये ? कब आये ? दोनों आये हो न ?)

फिर तो एक बार उन्होंने कह ही दिया कि "बार-बार आने-जाने के बदले अब यहीं रह जाओ ! 'अहियां ज वसी जाव'।"

इस बीच अगर कोई मराठी भाषी आता तो मराठी में, तमिलभाषी आता तो तमिल भाषा में और मलयाली व्यक्ति आता तो वे मलयालम में उससे बातचीत करने लगते। मैंने देखा कि डॉ० प्रभाकर माचवे की तरह उनकी जबान पर देश की कोई भी भाषा अत्यंत सरलता और स्वाभाविकता से अभिव्यक्त होती थी। फिर अगर संभावना होती तो उस प्रदेश के समाचार व साहित्य की चर्चा भी वे करने लगते। अतः उनकी भाषायी बहुज्ञता के बारे में यह कहना समीचीन होगा कि डॉ० प्रभाकर माचवे के बाद मैंने यह पहला आदमी देखा जो सरल व प्रतिभा-संपन्न, स्वाभाविक सहृदयी और सारस्वती व्यक्तित्ववाला था।

आश्चर्य तो इस बात का है कि रवीन्द्रजी ने खास तौर से हिन्दी में इतना ढेर-सा काम किया पर अपना नाम दिये बगैर। इसका यही कारण हो सकता है कि आश्रम में जो साधक सेवा व साधना-प्रवृत्त हैं वे सब समर्पित भावना से दिये गये कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं और श्रीमां का स्मरण करते हुए समर्पण-भावना से काम में जुटे रहते हैं। यही बात मैंने रवीन्द्रजी में देखी। जब भी मैंने उन्हें पाया, वे लिखते-पढ़ते ही दिखायी दिये। श्रीअरविन्द और श्रीमां का साहित्य उन्होंने हिन्दी में रूपांतरित करने का कर्मयोग किया और उसी में अपने जीवन को उन्होंने समर्पित कर दिया, फिर नाम का क्या महत्त्व है ? आज के निरे भौतिकवादी युग में श्रीअरविन्दाश्रम, पांडिचेरी में सद्‌गत बालकृष्ण पोद्दार, द्युमान्‌जी, चम्पकलालजी व रवीन्द्रजी जैसे महानुभावों का स्मरण करता हूं तो यह सच ही है कि हम जो बार-बार सत्‌युग और कलियुग की बात करते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब इस यथार्थ को देखकर कहना पड़ता है कि हम सत्युग में ही जी रहे हैं . . .। अगर चारों ओर अपनी नजरों के एन्टिना को घुमाएं तो जहन में व चक्षुओं के स्क्रीन पर और हृदय की आंतरिक सतहों पर दिखायी देंगे अच्छे और अच्छे ही आदमी। साथ ही, अनेक गुनी अच्छाइयां भी और श्रीअरविन्द आश्रम जैसी कई संस्थाएं भी जो इस धरा पर से नकारात्मक को दूर करने, करवाने का कार्य करती रही हैं।

अतः ऐसे महासागर में एक बूंद के समान श्रद्धेय रवीन्द्रजी भी थे। वैसे तो शारीरी तौर पर वे पंचमहाभूत से संपन्न थे इसीलिये उन्हीं में पुनः लौट गये हैं, जैसे

जल में कुंभ
कुंभ में जल,
बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ
जल जल ही समाया
यह तत्त्व कह्यो ज्ञानी

कबीरजी ने कितने पते की बात बतायी है। कुंभ तो क्षणजीवी ही होता है, जहांतक आवश्यकता रही कुंभ बना रहा। जब नियंता को लगा कि अब समय आ गया है कि जल जल में समा जाये, द्वैत नहीं अद्वैत बन जाये तब रवीन्द्रजी हमारे मध्य से चले गये। तथापि वे उपस्थित हैं। मुझे इन शारीरिक चक्षुओं से श्रीअरविन्द व माताजी के दर्शन का सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हुआ पर सर्वश्री चंपकलालजी, बालकृष्णजी, द्युमान्जी आदि चेहरों को आज भी इन चक्षुओं से देख पाता हूं। उसी प्रकार मेरे हिये के चक्षुओं में रवीन्द्रजी भी हैं। संध्या को वे अपने समाधि-निकटस्थ कमरे में काम करके लौटते थे, बाद में बोझिल देहयष्टि की वजह से वे पहली मंजिल पर ही रहते थे, नीचे नहीं उतरते थे। वह बैठक, वह स्थान, उनका ग्रन्थालय, पुस्तकों का ढेर सब कुछ मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां सी/५ "ओजस्", अहमदाबाद में बैठे-बैठे देख रहा हूं . . .। वैसे उनकी अनमोल कृतियों के द्वारा तो हम उनसे सदैव मिलते रहेंगे।

हिन्दी और भारतीय भाषा-साहित्य का एक महाज्ञानी अत्यंत सरलता से जी कर उस ऊंचाई पर कर्मरत रहा कि उसने सदा औरों को प्रकाश देना चाहा, उसने अपने लिये कभी कुछ न रखा। इसके साथ ही इस यथार्थ को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि हिन्दी भाषा-साहित्य के क्षेत्र से इन पंक्तियों के लेखक का संपर्क और जुड़ाव रहा है इसीलिये निःसंकोचपूर्वक इस यथार्थ को प्रस्तुत करना चाहूंगा कि वे अत्यंत ऊंचाई पर थे, लेकिन अपने को कभी भी उन्होंने पद, पुरस्कार, सम्मान के लिये आगे नहीं किया। अहंरिक्त और अनासक्त शब्द-योगी ही ऐसा कर सकता है! सचमुच आदरणीय रवीन्द्रजी सदा स्मरणीय रहेंगे ही।

—डॉ० रजनीकान्त जोशी

नानी की कहानी

नानी-दादी से किसको प्यार नहीं होता ? और फिर वे इतनी अच्छी-अच्छी कहानियां भी तो सुनाती हैं। तो लीजिये सुनिये, ऐसी ही एक नानी की कहानी—

कब, क्यों, कैसे मेरा नाम नानी पड़ा—यह तो बिलकुल याद नहीं, यह बात तो बचपन की यादों में विलीन हो गयी, परंतु अंत तक मैं उनके लिये 'नानी' ही बनी रही और वे मुझे हमेशा नानी कहकर ही पुकारते थे। कई बार कहा करते थे—मुझे अपनी नानी से बहुत प्यार मिला है। पर पता नहीं क्यों उन्होंने मुझे अपनी नानी बना लिया। सचमुच, नानी होने के नाते मुझे रवीन्द्रजी से बहुत प्यार मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४७ की बात है। फरवरी में मैं Dortoir (आश्रम का पहला छात्रावास) में रहने गयी। पहली मुलाकात उनसे वहीं हुई—वह भी खाने के समय। दोपहर के खाने के समय वे हमेशा हमारे भोजनालय में टहलते थे, खानेवालों की दो पंक्तियों के बीच। एक तरफ लड़के बैठते, दूसरी तरफ लड़कियां, और बीच में, कमरे की एक तरफ से दूसरी तरफ, रवीन्द्रजी तबतक टहलते, जबतक सबका खाना समाप्त न हो जाता। खाना जूठा छोड़ना तो बिलकुल मना था। जो थाली में ले लिया उसे खतम करना ही पड़ता था—'ओक्खे-सोक्खे' होकर खाना ही पड़ता था। उस छोटी उम्र में तो हम बच्चे ठीक अनुमान ही नहीं लगा पाते कि कितना लेना चाहिये—जोरों की भूख, थाली भर कर ले लिया। और फिर अगर पूरा नहीं खा सके तो मुश्किल। तब खाना खत्म करवाने के लिये, हर एक का अपना-अपना तरीका होता बच्चों को खिलाने का। अनुबेन (अव्वी) और कुसुमबेन (बाइयु) हमारे Dortoir की दो दीदियां—आकर पास बैठ जातीं और बचे हुए खाने को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर कहतीं—यह तेरी मां का हिस्सा है, इतना-सा खा ले। और हम मासूम बच्चे खा लेते, बस जरा-सा। फिर दूसरा हिस्सा पिताजी का, बस इतना-सा, वह भी पेट में चला जाता। इस तरह थाली साफ हो जाती। सचमुच, बच्चों को बहकाना कितना आसान होता है! पर रवीन्द्रजी का तरीका और भी अनोखा होता—खासकर मेरे साथ। जैसे ही पेट भर जाता मैं उठ खड़ी होती—बस, और नहीं खा सकती। तब वे मुझे कंधों से पकड़कर जरा-सा हिला देते—जैसे भर जाने पर बर्तन को हिलाया जाता है, ठीक वैसे ही—फिर क्या, बैठकर थोड़ा-सा और खा लेती। इस तरह दो-तीन बार हिलाने से पूरा खाना अंदर चला जाता!

परंतु यह उपाय तो केवल मेरे साथ ही काम करता। दूसरे बच्चों के अपने-अपने निराले तरीके थे। अधिकतर तो धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा, कुटुर-कुटुर कर १२.३० बजे तक खाते रहते फिर रवीन्द्रजी का आश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापिस जाने का समय हो जाता। दोनों दीदियां भी ऊपर चली जातीं। बस, इसके बाद तो पांच मिनटों में सबका खाना झट से खत्म हो जाता। एक कटोरे में बचा हुआ खाना भरकर, दूसरे कटोरे से ढककर उठ जाते और बर्तन मांजने के लिये रख आते—काम पूरा। परंतु एक लड़के ने तो सबसे अनोखा तरीका अपनाया। वह जो सब्जी नहीं खा सकता उसे, सबकी आंखें बचाकर, निक्कर की जेब में डाल लेता। एक दिन दाल भी डाल ली जेब में ! अगले दिन, कपड़े धुलते समय दीदी को रहस्य का पता लगा। क्या पता उन्हें गुस्सा आया या हंसी ऐसे बचपने पर !

बचपन की आदतें तो जिन्दगी भर के लिये बन जाती हैं। यह घटना कई बरस बाद की है जब मैं Dortoir से घर पर रहने आ गयी थी। लीजिए सुनिए—

दर्शन का दिन, भोजनालय में काम और बाद में वहीं भोजन भी करती थी। भोजनालय के कटोरे तो आप सबने देखे ही होंगे, कितने बड़े-बड़े हैं ! ठीक अनुमान नहीं लगा पायी कितना लूं, फलस्वरूप सब्जी बच गयी—'ओक्खे-सोक्खे' होकर भी नहीं खायी गयी। जब थाली मांजने के लिये देने जा रही थी, रवीन्द्रजी को सामने खड़े देखा। बिना सोचे झट से खाली कटोरे से बची हुई सब्जी ढक दी। जब उनके पास तक पहुंची खुद पर बहुत ही हंसी आयी। और जब उन्हें बताया तो वे ठहाका मारकर हंस पड़े। ऐसी होती हैं बचपन की आदतें—अच्छी हों या बुरी !

रवीन्द्रजी को कभी हंसते सुना है ? लीजिए उनकी हंसी के बारे में भी बताती चलूं—आश्रम में कौन उनकी हंसी से परिचित न होगा। उनका परिचय ही उनकी हंसी से दिया जाता था—रवीन्द्र कौन हैं ? वही न जो दिल खोलकर हंसते हैं ?

हर दर्शन के दिन भोजनालय में सुबह ४.३० बजे केले धोने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम होता था। Dortoir से हम कई बच्चों को रवीन्द्रजी बुलाकर अपने साथ ले जाते थे। मैं तो अब Dortoir में नहीं थी। तो मैं कैसे अकेली जाती ? एक उपाय सूझा। मैंने रवीन्द्रजी से कहा कि भोजनालय जाते समय आप पारुदी के घर के कोने पर खड़े होकर जोर से हंस देना, मैं आ जाऊंगी। मेरा घर तो अगले रास्ते पर ही है, आसानी से सुनायी दे जायेगी आपकी हंसी सुबह के शांत वातावरण में। इस पर तो वे और भी ठहाका लगाकर हंस पड़े। कई बार तो हम बच्चों की समझ में ही नहीं आता कि उन्हें हंसी किस बात पर आयी। बड़े होने पर, माताजी-श्रीअरविन्द की किताबें पढ़ने पर, समझ में आया कि खुलकर हंस सकना अन्तरात्मा का लक्षण है। जो इतना हंस सकता है उसके अंदर कितनी खुशी भरी होगी ! श्रीअरविन्द ने सावित्री ग्रंथ में कहा है—laughing out an unmeasured happiness—असीम आनन्द का अट्टहास। किसी ने एक बार श्रीअरविन्द से शिकायत की कि रवीन्द्रजी इतनी जोरों से हंसते हैं कि आश्रम की शांति भंग हो जाती है। श्रीअरविन्द ने उत्तर दिया—He has a rhythmic laugh (उसकी हंसी लयात्मक है)। ऐसी लयात्मक हंसीवाले का जीवन कितना लयबद्ध होगा ! वास्तव में वे तो हमेशा माताजी की ताल पर ही चलते थे। माताजी ने जो कह दिया वह उनके लिये शिरोधार्य और उसके अनुसरण में न कभी कोई कमी न हिचक। इसीलिये तो कई 'कड़वे' काम माताजी रवीन्द्रजी को सौंपती थीं, क्योंकि वे जानती थीं कि रवीन्द्रजी उनकी आज्ञा का पालन बिना आनाकानी के करेंगे। माताजी ने कह दिया, फिर उन्हें तनिक भी परवाह नहीं थी कि लोग क्या कहेंगे। इसी कारण से लोग उन्हें बहुत कठोर व्यक्ति समझते थे। परंतु 'कहां मनुष्य है जिसे कमी खली न प्यार की' ? उनकी कठोरता के पीछे छिपी हुई थी सबके लिये सद्भावना और प्यार की स्निग्धता और सुकुमारता जो उत्पन्न हुई माताजी के प्रति भक्ति, निष्ठा और दृढ़विश्वास से। इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थन वे सभी करेंगे जो उनके निकट संपर्क में आये। खासकर हम Dortoir के बच्चे तो अपने 'वण्डी-दा' को बहुत चाहते थे। यह 'वण्डी-दा' कौन और क्यों। जाते-जाते यह भी सुन लीजिये—

शुरू-शुरू में, कई सालों तक, यह भी एक काम रवीन्द्रजी को सौंपा गया था—टिफिन गाड़ी खींचकर साधकों के घर उनका खाना पहुंचाना (जो साधक भोजनालय में खाने नहीं आ सकते थे।) तमिल में गाड़ी को वण्डी कहते हैं। इसलिये उनका नाम पड़ गया वण्डी-दादा (वण्डी-दा)। Dortoir में तो हम सब बच्चे उन्हें वण्डी-दा ही पुकारते थे। याद नहीं कब रवीन्द्रजी कहना शुरू किया—शायद बड़े होने पर, बड़ों को सुनकर।

माताजी ने रवीन्द्रजी से क्या-क्या काम नहीं कराया, उन्हें किस-किस काम में प्रशिक्षण नहीं दिया। माताजी का काम करना ही उनका जीवन था—सुबह से शाम तक लगे रहते थे। सुबह के दो-तीन बजे से लेकर रात के ग्यारह-बारह बजे तक, बिना थके। उनका शरीर प्रभु का मन्दिर था जिसे उन्होंने श्रद्धा, भक्ति, प्रेम द्वारा माताजी के काम में लीन होकर इतनी सुन्दर तरह गढ़ा था। तभी तो उनके शरीर में इतनी उज्ज्वलता थी, वह मातृ-आभा से झलकता था। धन्य थे वे।

जब अंदर की गति तेज होती है, तब बाहर की गति अपने-आप ही मन्द पड़ जाती है। अगर हम खुद न कर सकें तो हमसे करायी जाती है। यही शायद उनकी बीमारी का कारण था, ताकि वे तेजी से अपना जीवन-लक्ष्य प्राप्त कर लें।

—सुमेधा वर्मा

भगवान् के लाखों रूप हैं और वह प्रत्येक मनुष्य को उसकी अभीप्सा और आवश्यकता के अनुसार अपना एक रूप दिखाते हैं।

('श्वेत गुलाब' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रवीन्द्रजी—एक कर्मवीर

यूं तो आश्रम में हर साधक अपनी अहमियत रखता है, किंतु श्री रवीन्द्रजी का नाम उन गणमान्य साधकों की श्रेणी में आदर से लिया जायेगा जो आश्रम के मजबूत स्तम्भ के रूप में पहचाने जाते थे। जिनकी अपनी एक विशेष पहचान थी, एक निराला व्यक्तित्व था।

आज से लगभग ३८ वर्ष का वह दिन मेरी आंखों के सामने नाच रहा है जब प्रथम बार मेरा परिचय उनके साथ हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष के नाते हुआ था। उस दिन से अबतक अनगिनत सुखद घटनाएं उनके साथ जुड़ी हुई हैं। मैं हमेशा उनकी नजरों में 'छुई-मुई' व 'बिना बोतल के मधु' रही।

अध्यापक के रूप में पाया कि रवीन्द्रजी अनुशासन-प्रिय अध्यापक थे। ऊपर से कठोर दिखनेवाले भीतर से संवेदनशील थे। गंभीरता का जामा ओढ़े रहने के साथ-साथ छात्रों के प्रति कोमलता के भाव भी छिपाये रहते थे। हम सब छात्र उन्हें हंसोड़ व्यक्ति के रूप में भी जानते थे।

धीरे-धीरे रवीन्द्रजी को एक कर्मठ इंसान के रूप में पहचाना। काम, काम, बस काम। एकनिष्ठ हो श्रीमां का काम करना ही उनके जीवन का प्रथम व अंतिम लक्ष्य रहा। उन्हें कभी किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होते नहीं देखा। एक बार मैंने उनसे एक छोटा-सा प्रश्न किया था। "रवीन्द्रजी, आप हमेशा काम में लीन रहते हैं, कभी थकते नहीं?" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मधु, माताजी के काम में थकान कैसी?" यह प्यारा-सा उत्तर पाकर मैं भाव-विह्वल हो गयी थी। कितनी सार्थकता व प्रेरणा थी उनके इस संक्षिप्त उत्तर में।

'सादा जीवन उच्च विचार'—यह उक्ति रवीन्द्रजी के जीवन में अक्षरशः खरी उतरी। स्वयं के लिये न कोई चाह, न कोई मांग।

रवीन्द्रजी शारीरिक रूप में हमारे बीच नहीं रहे किंतु उनकी छवि हमेशा हमारे दिलों में अंकित रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक उच्च कोटि के साधक, अच्छे अध्यापक, कर्मठ व्यक्ति, अच्छे सलाहकार, आश्रम के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष, लेखक व अनुवादक के प्रति अंतिम हृदयाञ्जलि अर्पित करने के लिये मेरा मस्तक स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है।

—मधु आर्य

श्री रवीन्द्रजी : एक प्रखर आत्मा

संस्मरण

करीब बीस साल पहले सन् १९८१ की बात है। मैं प्रधानाध्यापक-पद से निवृत्त हो चुका था। 'पुरोधा' का नियमित ग्राहक मैं बहुत पहले से ही था। सेवा-निवृत्त हो जाने पर पेंशन चालू होने में देर हो रही थी। ऐसी स्थिति में 'पुरोधा' का वार्षिक शुल्क भेजने में मैं कठिनाई का अनुभव कर रहा था। अपनी इस मनःस्थिति की जानकारी मैंने पत्र द्वारा सम्पादकजी को दी। एक सप्ताह के अंदर ही मुझे श्रद्धेय रवीन्द्रजी का हस्तलिखित कृपापत्र मिला। उन्होंने सहानुभूतिपूर्वक मुझे आश्वासन दिया कि आपके पास 'पुरोधा' पत्रिका तबतक आती रहेगी जबतक पेंशन का भुगतान न होने लगे। पेंशन मिल जाने पर भेज देंगे। श्रीअरविन्द तथा श्रीमाताजी की कृपा से तथा श्री रवीन्द्रजी की मंगलकामना से दो-तीन महीनों के अंदर ही पेंशन मिलनी शुरू हो गयी। पत्र पढ़कर मेरा हृदय गद्गद हो गया। "श्रीअरविन्द : जीवन और दर्शन" पढ़कर मेरी श्रद्धा तो उन पर पहले से ही बनी हुई थी, उपर्युक्त पत्र पढ़कर उनकी सहृदयता तथा विशाल आत्मा के प्रति मेरी श्रद्धा द्विगुणित हो गयी। श्रीअरविन्द तथा माताजी के सान्निध्य तथा परिपोषण से युक्त कर्मयोग के इस सिद्ध साधक के देहावसान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात सुनकर मैं मर्माहत हो गया। उनकी विश्वासपूर्ण कृपा मुझे हमेशा याद रहती है। भगवान् इस प्रखर आत्मा को सायुज्य तथा शांति प्रदान करें। कर्मयोग के इस महान् साधक श्री रवीन्द्रजी को मेरा हार्दिक शत शत नमन।

जय श्रीमाताजी

—चन्द्रदेव प्रसाद सिंह
बिहार

श्रद्धांजलि-भरा एक पत्र

परमादरणीय सम्पादक जी,
पुरोधा/अग्निशिखा।
जय श्रीमां।

स्थितप्रज्ञ कर्मयोगी रवीन्द्रजी के देहावसान से मर्माहत हुआ। साथ ही पुरोधा/अग्निशिखा ने भी एक कर्मठ सम्पादक को खो दिया। यह एक अपूरणीय क्षति है। परंतु विश्व-नियंता का भी शाश्वत सत्य सत्यापित होना था। रवीन्द्रजी ने अपना पञ्च भौतिक शरीर त्याग दिया मगर उनकी अमर कीर्ति ने उन्हें हमारे बीच जीवित रखा है। कहा भी गया है—

कीर्तिः यस्य स जीवति। उसमें भी काव्यसम्बन्धिनी कीर्तिः स्थायिनी-निरपायिनी।

उनकी श्रद्धांजलि में कुछ स्व विरचित पंक्तियों को भेज रहा हूं। पुरोधा/अग्निशिखा में प्रकाशित कर उपकृत करेंगे।

परमादर और श्रद्धा के साथ
विनयावनत
राधारमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते ही पक्षाघात हुआ
आध्यात्मिक साधक शांत हुआ
हे कर्मयोग के नर-पुंगव
अवतार लिया तूने सत्वर।
तेरी विजय पताका को
फहरा दिया पांडिचेरी ने
अग्निशिखा, पुरोधा को
तूने ही दिया सहारा भी।
श्री श्री मां के श्री चरणों में
आजीवन तूने बिता दिया
पलकों के नीचे पड़े रहे
औ' विश्व गगन में उड़ते थे।
मानव-मानव में भेद-रहित
विषयों के सर्जन में लगे रहे
हे प्रलयकाल के महाकाल
पांडिचेरी में किया कमाल।
जनमानस है बोल रहा
आध्यात्मिक जगती डोल रही
ऑरोविल, मातृमन्दिर
से भी निकलता हाय-हाय।
हे जगत् नियंता यह क्या है
क्यों बुझा दीं रवि की किरणें
साहित्यिक साधक को भी तूने
क्षण में ही कुम्हला दिया।
श्रद्धांजलि की शाश्वत ज्योति
ले पाठक भी उनमुना रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है बात-बात में बोल रहा
हे रवि-इन्द्र तू मरा नहीं
संपादक के शाद्वल मन्दिर
क्यों नहीं भरेगा जन मानस
मानव-चेतनता बिखर गया
पाठक भी है बिछुड़ गया
रो-रोकर 'राधा' भी कहता
अब बचा नहीं करतार—सही॥

एक मित्र का पत्र

प्रिय सम्पादक जी,

मैं गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में श्री रवीन्द्रजी के साथ नव वर्ष पढ़ा हूं। वे मेरे से एक साल आगे थे। रवीन्द्र पढ़ाई में हमेशा प्रथम रहते ही थे पर खेलों में भी हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, कबड्डी—anything, He was so sharp. वे विलक्षण थे। मेरे साथ खेलों में भी प्रतिस्पर्धा में शायद कभी-कभी उत्तेजना आ गयी हो। मैं उनको अपना आदर्श मानता था। I was in love with him which he did not know. I was his admirer. He certainly was a genius. आपने मुझे पुरोधा व अग्निशिखा के इतने सारे अंक भेजकर कृतकृत्य कर दिया...।

आपकी संस्था के प्रति एक श्रद्धा जागी है आपकी पत्रिकाओं की सरलता से। भगवान् ने चाहा तो एक दिन संस्था से साम्मुख्य होगा। आप सबको सादर नमस्कार।

—राजेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीता कल

बीता कल आज फिर से नहीं आ सकता। किसी का कोई भी पेशा क्यों न हो उसके लिये उचित सलाह यही है कि भूतकाल में निवास मत करो। भविष्य में आंखें जमाये रहो। भूतकाल में निवास करने पर हम लगातार पिछली गतिविधियों को जगाते रहते हैं, उन स्पंदनों को फिर से बनने में सहायता देते हैं जो वर्तमान में बाधा देते हैं। आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के बारे में यह विशेष रूप से होता है।

इनमें सबसे अधिक सामान्य है, हमारे साथ पहले कभी किये गये अन्याय की स्मृति। जब-जब यह स्मृति जागती है, हम फिर से उसी अनुभूति को जीते हैं, उसी भावमय उथल-पुथल का अनुभव उसी सजीव रूप में करते हैं जैसा पहली बार हुआ था। सारी खीझ, गुस्सा, दुःख अपनी पूर्ण तीव्रता में दौड़ पड़ते हैं, हमारा संतुलन बिगड़ जाता है। मन का एक भाग जानता है कि ये सब भूतकाल की बातें हैं और अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं, फिर भी हम प्रतिरोध नहीं कर पाते और उस बहाव में खिंचे चले जाते हैं। अगर इस चीज को रोका न जाये तो यह आदत बन जाती है। बहुधा यह चीज अपने-आपको दोहराती रहती है क्योंकि हमारे अंदर कहीं पर कोई चीज इसमें मजा लेती है। इससे हमें जो मनोवैज्ञानिक क्षति होती है उसके अतिरिक्त इसका एक और बुरा परिणाम होता है, पुराने स्पंदनों को बनाये रखकर हम नये, ज्यादा सुखकर स्पंदनों का रास्ता रोक देते हैं। माताजी हमें सलाह देती हैं कि कल जिसने हमें कष्ट पहुंचाया था आज उसके साथ मिलते हुए, कल के स्पंदन अपने साथ न रखें। आज उसके साथ उसी तरह के स्पंदन रखकर मिलते हुए हम उसके अंदर फिर से कल की अप्रिय चीज को ताजा कर देते हैं। हमसे कहा गया है कि हमें उसके साथ एकदम रिक्त मन के साथ ताजगी से मिलना चाहिये। अधिक संभावना यही है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे उस आदमी के अंदर भी अच्छे स्पंदन पैदा होंगे और वह अप्रिय चीज गायब हो जायेगी। मान लो इसमें सफलता न भी मिले फिर भी आध्यात्मिक दृष्टि से हम लाभ में रहते हैं क्योंकि अपमान और चोट से ऊपर उठना, अपने-आपमें यांत्रिक प्रकृति पर विजय है।

अगर हम अपनी साधना के बारे में गंभीर हों तो यह चीज बहुत कठिन नहीं है। ज्यादा मुश्किल होती हैं वे स्मृतियां जिनमें हमने किसी का बुरा किया हो। जब हम अपने-आपको शुद्ध करने की कोशिश में हों और हमारी संवेदनशीलता तीव्र हो जाये तब यह कठिनाई ज्यादा बढ़ जाती है। हर छोटी-से-छोटी घटना जिसमें हम आपे से बाहर हुए, हमने दूसरों को चोट पहुंचायी, उनके साथ बुरा व्यवहार किया, हमारे सामने आती है और हमें लील जाना चाहती है। यह चीज तब और भी ज्यादा कष्टप्रद होती है जब हमारी बदतमीजियों के शिकार ऐसे लोग बनते हैं जो हमसे प्यार करते थे, जिन्होंने हमारे लिये बहुत कुछ त्यागा फिर भी बड़े धीरज के साथ या असहाय होकर हमारी बातों को सहते रहे। जब ये सब चीजें लौटकर आती हैं तो बड़ी व्याकुल करनेवाली स्थिति होती है। इसके लिये क्या किया जाये ?

पश्चात्ताप। बीती बातों के लिये सच्चा पश्चात्ताप, ऐसी चीजों को न दोहराने का दृढ़ निश्चय और जिन लोगों को हमने चोट पहुंचायी है उनसे क्षमा पाने के लिये भीतर ही भीतर प्रार्थना। हम ऐसा करें, और साथ ही उन बातों को न दोहराने के लिये कमर कस लें तो भूतकाल पीछे रह जाता है, और भविष्य का रास्ता खुल जाता है। पश्चात्ताप अपने कुकृत्यों की स्वीकृति नहीं, उन्हें न दोहराने का निश्चय ज्यादा है। बहुत ज्यादा पश्चात्ताप, खेद आदि बहुत बार किये जाएं तो पुरानी स्मृतियों को बार-बार जगाते हैं और रास्ता साफ होने पर भी आगे नहीं बढ़ने देते। उनमें ऐसे स्पंदन होते हैं जो ऐसी चीजों को लंबी रस्सी देते हैं जिनका खतम हो जाना ही भला है अन्यथा वे भागवत कृपा की शुद्धि के कार्य में बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालते हैं। कृपा हमेशा सहायता करने के लिये तैयार रहती है, हमें अपनी दोनों भुजाएं आगे बढ़ाकर उसे ग्रहण करना है।

—रवीन्द्रजी

सच्चे बनो

क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि सत्य बोलना कितना सुन्दर है, चाहे ऐसा करने में विपत्ति ही क्यों न उठानी पड़े ?

और ऐसा प्रायः होता है कि जो लोग इस प्रकार की विपत्ति का सामना करते हैं, उनके लिये अंत में सब बातें भली हो जाती हैं, यद्यपि आरंभ में ऐसा प्रतीत नहीं होता। असत्य की सफलता सदा अस्थायी होती है, जब कि अधिकतर सत्य कहना ही चतुर बनने का सबसे बढ़िया तरीका है।

एक बार, सवेरे के समय, दिल्ली के बादशाह ने योग्य व्यक्तियों को उपाधियां बांटने के लिये दरबार किया। जब उत्सव समाप्त होने को आया तो उसने देखा कि जिन व्यक्तियों को उसने बुलाया था उनमें से सैयद अहमद नामक एक युवक अभी तक नहीं पहुंचा है।

बादशाह पालकी में सवार होने के लिये अपने सिंहासन पर से उठा; इसमें बैठकर वह अपने बड़े महल के एक भाग से दूसरे भाग में जाया करता था।

ठीक उसी समय उस युवक ने उतावली से प्रवेश किया।

"तुम्हारा पुत्र देर से पहुंचा है," बादशाह ने सैयद के पिता से, जो उसका मित्र था, कहा, और स्वयं युवक की ओर कड़ी दृष्टि से देखकर प्रश्न किया : "यह देर क्यों हुई ?"

"बादशाह सलामत," सैयद ने सच्चाई से कहा, "मैं आज बहुत देर तक सोता रहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबारी स्तंभित हो युवक की ओर ताकने लगे। किस ढिठाई के साथ यह बादशाह के सामने अपना अपराध स्वीकार कर रहा है ? क्या इससे अच्छा बहाना इसके पास नहीं था ? कैसी मूर्खतापूर्ण बात कह दी इसने !

पर हुआ इसके विपरीत। बादशाह एक क्षण तो सोचता रहा, फिर उसने युवक की उसकी सत्यवादिता के लिये प्रशंसा की और उसे मोतियों की एक माला और सम्मान के चिह्न-स्वरूप, मस्तक पर धारण करने के लिये एक रत्न प्रदान किया।

इस प्रकार सैयद अहमद को, जो सत्य से प्रेम करता था और, बादशाह हो चाहे किसान सबसे सच कहता था, यह प्रतिफल मिला।

यह निश्चित है कि बिना किसी कष्ट के सत्य बोल सकने के लिये सबसे अच्छा ढंग यह है कि हम अपना व्यवहार सदा इस प्रकार रखें कि हमें अपना कोई भी कार्य छुपाना न पड़े। इसके लिये प्रतिक्षण हमें यह याद रखना चाहिये कि हम भगवान् के सम्मुख हैं। कारण, वचन की सच्चाई कार्य की सच्चाई की मांग करती है। सच्चा मनुष्य वह है जो अपने वचन और कर्म से सब पाखंडों को निकाल देता है।

('श्रीमातृवाणी' खण्ड २, पृष्ठ २०१-२)

ऋषिवर बोले :

चोरी (२)

कल चोरी के बारे में बातचीत हुई थी और अंत में ऋषिवर ने कहा था, तुम लोग इस विषय पर गंभीरता से सोचने की कोशिश करना, कल हम लोग फिर इसी विषय पर बातचीत करेंगे।

कई बच्चे बड़ी गंभीरता से इस विषय पर लगे रहे और ऋषिवर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने से पहले ही इसकी बातचीत शुरू हो गयी। लेकिन आज वातावरण में उत्तेजना नहीं थी। सभी ठंडे दिल से समझने की कोशिश में थे।

ऋषिवर के आते ही कमल ने कहा, हमने चोरी के बारे में काफी विचार किया पर जितना ही सोचते गये उतना ही उलझते गये। चीज कुछ समझ में नहीं आती। हम सब मिलकर तरह-तरह की घटनाएं याद कर रहे थे और हमने यही देखा कि जहां छोटी-मोटी चीजों के लिये धोखा-धड़ी, मारकाट हो तो उसका नाम डाका होता है, छोटी-मोटी चीजें उठायी जायें तो उन्हें चोरी का नाम मिलता है, लेकिन यही चोरी-डाका जरा बड़े पैमाने पर हो तो आदर-सम्मान लाता है और डाकू राजा का, विजेता का नाम पाता है और इतिहास में अपने लिये जगह बना लेता है। मुगल और तातार चोर-डाकू नहीं थे तो क्या थे ? लेकिन उन्होंने दो-चार लोगों के घर पर नहीं बड़े-बड़े राज्यों पर डाका डाला और उन्हें अपने अधिकार में कर लिया, इसलिये बड़े-बड़े बादशाह कहलाये। बड़े-बड़े नवाब, जमींदार, जागीरदार आखिर औरों की चोरी ही तो करते थे। और आज क्या हाल है ! आज के राजा, नवाब जरा ज्यादा छिपे रूप में चोरी करते हैं। चपरासी अपना काम करने के लिये तनख्वाह पाता है, लेकिन फिर भी किसी का काम करना हो तो उसकी जेब में हाथ जरूर डालता है। सरकारी अफसर सैकड़ों-हजारों आदमियों को लूटते रहते हैं, लेकिन उन्हें हम डाकू नहीं कहते। वे समाज में आदर-सम्मान पाते हैं। जिनकी जेबें काटते हैं उन्हीं से पूजा पाते हैं। हमने देखा है ठेकेदार मिट्टी-पत्थर लाकर सड़क पर ढेर लगा देता है और नगरपालिका वालों को दिखा कर पैसे वसूल कर लेता है। दूसरे दिन उसी मिट्टी-पत्थर को वहां से हटाकर दूसरी जगह डाल देता है और फिर से नगरपालिका वालों को बुलाकर दिखाता और उनसे पैसे हथिया लेता है। यह चोरी नहीं है क्या ? इस तरह के उदाहरण देना शुरू करें तो कहीं अंत ही नहीं आयेगा। फिर हमारा छगन ही भूख और अभाव के कारण दूसरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी-सी चीजें उड़ा ले तो उसे चोर कैसे कहा जा सकता है ? लेकिन इसे छोड़ दें तो दूसरों में चोरी की आदत घुस आयेगी और धीरे-धीरे हम सब चोर बनते जायेंगे। अब आप ही बताइये, हमें क्या करना चाहिये ?

इससे पहले कि ऋषिवर कुछ जवाब दें चौबे बोल उठा, और हां, मेरे पिताजी कहते थे कि सबसे बड़ा चोर कह लो या डाकू, सरकार है। हम मेहनत-मशक्कत करके खेती करते हैं, बिना कुछ किये-कराये सरकार उसमें हिस्सा लेने आ जाती है। हम कोई भी काम करें सरकार उसके फल में हिस्सा लेने आ जाती है। हम आमदनी करें तो सरकार कर लगा देती है, हम खर्च करें तो उस पर कर लगता है और रुपया जमा रखें तो उस पर संपत्ति-कर लग जाता है। सरकार को मकान की जरूरत हो तो हमें चट बाहर कर सकती है और फिर दाम देना, न देना उसकी मरजी पर। हमने तो यही सुना था कि सरकार हमारी रक्षा के लिये होती है। चोरों से, डाकुओं से, बदमाशों से, हमारी हिफाजत करती है, लेकिन जब बाड़ ही खेत खाने लगे तो फिर रक्षा कौन करे ?

ऋषिवर बड़े ध्यान से इन सबकी बातें सुन-सुन कर खुश हो रहे थे। उन्होंने धीरे से कहा, तुम सबकी बातों में कुछ सत्य है। मैंने तुमसे पिछली बार कहा था कि हमें जो कुछ मिलता है भगवान् की ओर से मिलता है और किसी खास काम के लिये मिलता है। जो चीज जिस काम के लिये मिलती है उसका उसी के लिये उपयोग होना चाहिये। उसके सिवा उसका किसी और काम के लिये उपयोग करना उसका दुरुपयोग है, चोरी है। छोटी-मोटी चोरियां तो हमारी नजर में आ जाती हैं, दूसरे की आंख का तिल तो हमें दिखाई देता है पर अपनी आंख का ताड़ देखना भी हमारे लिये संभव नहीं होता।

अब देखो भगवान् ने हमें हवा दी है, हम उसमें तरह-तरह की विषैली गैसें भरकर उसे गंदा करते रहते हैं। भगवान् ने हमें नदियां दी हैं। जिन नदियों का पानी अमृत के समान था उनके पानी को हमने क्या कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला है ? दूर क्यों जायें, भगवान् ने हमें अपना मन्दिर यह सुन्दर-सा शरीर दिया है, परंतु हम उसका क्या उपयोग करते हैं ? भगवान् धरती पर प्रकट होना चाहते हैं, लेकिन हम उनके मंदिर को इतना गंदा कर देते हैं कि वे आ न पायें। हम अपनी बुद्धि का, अपनी भावनाओं का, सूझ का दुरुपयोग करते हैं। हृदय प्रेम को प्रकट करने के लिये, भगवान् की प्रेम-गंगा को नीचे लाने के लिये है, लेकिन हम उसमें ऐसा कूड़ा-कबाड़ भर देते हैं कि भगवान् को पांव रखने की भी जगह न मिले, बुद्धि भगवान् का काम करने के लिये थी, उसकी जगह उसका उपयोग छल-प्रपंच के लिये, मार-काट के लिये, दूसरों को गिराकर अपना उल्लू सीधा करने के लिये किया जाता है। क्या ये सब चोरियां नहीं हैं ? एक तरह से देखा जाये तो हम सब-के-सब चोरी के अपराधी हैं। हमें सारा जीवन भगवान् के काम में लगाना चाहिये, उसकी जगह हम स्वयं भगवान् को अपने काम में लगाना चाहते हैं। भगत लोग कहते हैं—

जो दिल उस प्रभु से लगाते रहेंगे,
जो मांगेंगे मुंह से वह पाते रहेंगे।

क्या खूब ! मानों भगवान् का काम है सबकी वाजिब और गैरवाजिब इच्छाएं पूरी करना।

जो मैं कह रहा हूं, वह करना बहुत आसान नहीं है। इसे पूरी तरह से प्राप्त करने के लिये तो आदमी को योगी होना चाहिये, ऐसा योगी जिसकी चेतना भगवान् के साथ एक हो, जिसका सारा जीवन भगवान् का हो। लेकिन जबतक यह न हो तबतक हमें इसके लिये कोशिश तो करनी होगी। हमें इस बात का ख्याल रखना होगा कि जबतक हम पूर्ण न हों तबतक दूसरों की अपूर्णता पर उंगली उठाने का हमें अधिकार नहीं है। जिसे हम चोरी कहते हैं उस आदत का शिकार एक तरह से मानसिक रोगी होते हैं, उन्हें डण्डे के जोर से नहीं, प्यार के बल पर ठीक करना चाहिये। डण्डे के जोर पर चोरी रोकने का नतीजा तो बस इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होगा कि व्यक्ति प्रकट रूप से चोरी नहीं करेगा, ज्यादा छिपकर ज्यादा चालाकी से उसी काम को ज्यादा बड़े रूप में करेगा। यदि तुम्हारा कोई मित्र चोरी करता है तो उससे घृणा न करो। किसी को बुखार आ जाये तो तुम उससे घृणा नहीं करते। जैसे बुखार के रोगी को दवाई की, सेवा की जरूरत होती है, उसी तरह बुरी आदतों के रोगी को भी इलाज की जरूरत होती है और वह सहानुभूति और प्रेम के साथ ही किया जा सकता है। लेकिन हां, सावधान, हो सकता है, कभी रोगी की सेवा करते-करते बुखार तुम्हें भी धर पकड़े। इस बीमारी में भी यही भय रहता है। इसलिये हर एक को चिकित्सक बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। इसके लिये एक विशेष योग्यता की जरूरत है।

क्या भगवान् केवल निर्वाण चाहते हैं ?

सभी आसक्तियों से मुक्त होने का मतलब यह नहीं है कि आसक्ति के सभी अवसरों से दूर रहा जाये। जो लोग अपनी तपश्चर्या का दावा करते हैं वे केवल जीवन से भाग ही नहीं जाते बल्कि औरों को भी यही सलाह देते हैं कि इस में मत पड़ो।

मुझे यह बात स्पष्ट मालूम होती है कि जब तुम्हें किसी चीज का अनुभव न करने के लिये उससे भागने की जरूरत होती है तो इसका अर्थ यह है कि तुम उससे ऊपर नहीं हो, अभीतक उसीके स्तर पर हो।

कोई चीज जो दबाव डालती है, घटाती है, कम करती है वह स्वाधीनता नहीं ला सकती। स्वाधीनता का अनुभव समस्त जीवन में, सभी स्पंदनों में करना होता है।

वास्तव में मैंने शुद्ध भौतिक स्तर पर इस विषय में बहुत-सा अध्ययन किया है . . .। सभी संभव भूलों से ऊपर होने के लिये हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल की संभावना के अवसरों से ही बचते हैं। उदाहरण के लिये, तुम फालतू बकवास नहीं करना चाहते और तुम बोलना ही बंद कर देते हो; जो लोग मौन-व्रत धारण करते हैं वे सोचते हैं कि यह वाणी का संयम है—लेकिन यह सच नहीं है! यह केवल बोलने के अवसर को दूर हटाना है, अतः निरर्थक बातें बोलने से बचना है। खाने के बारे में भी यही बात है: जितना आवश्यक हो केवल उतना ही खाना। यह वह बीच की अवस्था है जहांतक हम पहुंचे हैं और हम अब इस पाशविक जीवन को नहीं जीना चाहते जो भौतिक आदान-प्रदान और भोजन पर आधारित है; और यह मानना मूर्खता होगी कि हम ऐसी स्थिति तक पहुंच चुके जहां शरीर भोजन के बिना पूरी तरह से काम चला सके ... लेकिन स्वाभाविक वृत्ति होती है उपवास करना—और यह गलत है!

अपने कार्य में भूल होने के डर से हम कार्य करना ही बंद कर देते हैं; वाणी में भूल होने के डर से हम बोलना ही बंद कर देते हैं, मजे के लिये खाने के डर से खाना ही बंद कर देते हैं—यह स्वाधीनता नहीं है। यह तो अभिव्यक्ति को कम-से-कम कर देना है; जिसका स्वाभाविक परिणाम हो सकता है निर्वाण। लेकिन अगर प्रभु केवल निर्वाण ही चाहते तो निर्वाण के सिवाय कुछ न रहता! यह स्पष्ट है कि वे सभी विपरीतताओं के बारे में सोचते हैं और उनके लिये यह समग्रता का प्रारंभ होगा। इससे स्पष्ट है कि अगर तुम्हें लगता है कि तुम इसी के लिये बने हो तो तुम उनकी अभिव्यक्तियों में से केवल एक ही को चुन सकते हो, अर्थात् अनभिव्यक्ति, निर्वाण को चुन लेते हो। फिर भी, यह भी तो एक सीमा है। प्रभु को पाने का यही तो एकमात्र मार्ग नहीं है, इससे कहीं भिन्न है।

यह एक बहुत सामान्य प्रवृत्ति है जो शायद किसी पुराने सुझाव से या किसी अभाव या अक्षमता से आती है—कम करते जाओ, कम करते जाओ, अपनी आवश्यकताएं कम करते जाओ, अपना भोजन कम करो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी क्रियाएं कम करो, अपनी वाणी कम करो—और यह सब इतना संकीर्ण होता जाता है। भूलें न करने की अभीप्सा में भूल करने के अवसर ही कम करते जाओ—लेकिन यह कोई इलाज नहीं है।

नहीं, समाधान यह है कि केवल भागवत प्रेरणा से ही काम करो, केवल भागवत प्रेरणा से ही बोलो, केवल भागवत प्रेरणा से ही खाओ। यह कठिन काम है क्योंकि तुम झट भागवत प्रेरणा और अपनी व्यक्तिगत प्रेरणा में घाल-मेल कर डालते हो।

*

... बहुत-से साधु और तपस्वी शून्य या निर्वाण के समाधान की ओर आकर्षित हुए हैं क्योंकि स्पष्ट ही यह अज्ञान-भरी अभिव्यक्ति के परिणामों से बचने का एक उग्र उपाय है।

इस अभिव्यक्ति को सच्ची, यथार्थ दिव्य वास्तविकता में बदलना कहीं अधिक श्रेष्ठ उपाय है ... जो सत्य है वह शाश्वत सत्य है और जो तत्त्वतः सत्य है उसे एक-न-एक दिन अनिवार्य रूप में चरितार्थ होना होगा।

—श्रीमां

एक शिष्य को जन्मदिन के सन्देश

माताजी :

'क' को हमारे आशीर्वाद के साथ।

"वह संदेह से निश्चिति में, भूल-भ्रांति के अंधकार से पथ-प्रदर्शन के प्रकाश में निकलेगा; वह ज्ञान के चक्षुओं से देखेगा और प्रियतम के साथ गुप्त रूप में संलाप करना आरंभ करेगा।"

(९ सितंबर, १९३५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द :

'क' को आशीर्वाद सहित।

हृदय के पीछे एक पर्दा, मन पर पड़ा एक ढक्कन हमें भगवान् से अलग करता है। प्रेम और भक्ति पर्दे को फाड़ देते हैं, मन की अचंचलता में ढक्कन घिसकर गायब हो जाता है।

(९ सितंबर १९३६)

माताजी :

'क' को आशीर्वाद सहित।

अभीप्सा करो, उचित भाव में एकाग्र होओ, और चाहे कैसी भी कठिनाइयां हों, तुमने अपने सामने जो लक्ष्य रखा है उसे तुम निश्चित रूप से पाओगे।

(९ सितंबर १९३६)

श्रीअरविन्द :

आंतरिक सूर्य मन को शांत और प्रदीप्त करे और हृदय को पूरी तरह जगाकर उसका पथ-प्रदर्शन करे।

(९ सितंबर १९३७)

माताजी :

'क' को मेरे आशीर्वाद सहित।

मेरे प्यारे बालक, यह वर्ष तुम्हारे लिये परम अन्वेषण का वर्ष हो।

(९ सितंबर १९३७)

श्रीअरविन्द :

मन की अचंचलता में, अपने हृदय में और सब जगह परम प्रभु की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थिति के प्रति खुलो; स्थिर मन और हृदय में भगवान् अचल जल में सूर्य की तरह दीखते हैं।

(९ सितंबर १९३८)

माताजी :

दिन-रात निरंतर परम उपस्थिति मौजूद रहती है।

नीरवता के साथ अंदर की ओर मुड़ना काफी है और हम उसे पा लेते हैं।

इस वर्ष तुम्हारी यही अनुभूति हो।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

(९ सितंबर १९३८)

श्रीअरविन्द :

उच्चतर चेतना में ऊपर उठो, उसका प्रकाश प्रकृति का नियंत्रण और रूपांतर करे।

(९ सितंबर १९३९)

माताजी :

भागवत प्रेम तुम्हारा लक्ष्य हो।

पवित्र प्रेम तुम्हारा मार्ग हो।

अपने प्रेम के प्रति हमेशा सच्चे रहो तो सभी कठिनाइयों को जीत लोगे।

मेरे प्यारे बालक को प्रेम और आशीर्वाद।

(९ सितंबर, १९३९)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द :

हृदय के आत्मदान के द्वारा निश्चेतना में भी परम उपस्थिति और परम प्रभाव उपस्थित होंगे और वे सत्ता के सभी क्षेत्रों द्वारा प्रकृति को सच्चे प्रकाश और चेतना के लिये तैयार करेंगे।

(९ सितंबर १९४०)

माताजी :

आज तुम्हारे लिये जो वर्ष समाप्त हो रहा है वह प्रगति का वर्ष था; जो वर्ष शुरू हो रहा है उसमें, की हुई प्रगति को सुस्थापित, पूर्ण और समग्र बनना है।

मेरे प्यारे बालक को मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

(९ सितंबर १९४०)

श्रीअरविन्द :

हमेशा अपनी आंतरिक अभीप्सा पर जोर दो; वह तुम्हारे हृदय में गहराई और स्थिरता प्राप्त करे; हृदय के साथ-साथ उसकी अभीप्सा के विकास द्वारा मन और प्राण की बाहरी बाधाएं अपने-आप हटती जायेंगी।

(९ सितंबर १९४१)

माताजी :

मेरे प्यारे बालक,

जब कभी तुम्हें आध्यात्मिक सहायता की आवश्यकता हो, मैं हमेशा वह सहायता—चाहे वह कोई भी रूप क्यों न ले—देने के लिये उपस्थित हूं।

मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

(९ सितंबर १९४१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द :

मन और हृदय को खुला और अंदर और ऊपर की ओर मुड़ा रखो ताकि जब अंदर से स्पर्श आये या ऊपर से प्रवाह उतरे तो तुम उसे ग्रहण करने के लिये तैयार रहो।

(९ सितंबर १९४२)

माताजी :

मेरे प्यारे बालक,

ऐसा हो कि यह वर्ष तुम्हारे लिये सभी परिस्थितियों में मुस्कुराने की शक्ति लाये। क्योंकि मुस्कान कठिनाइयों पर उसी तरह कार्य करती है जिस तरह सूर्य बादलों पर—वह उन्हें तितर-बितर कर देती है।

मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

(९ सितंबर १९४२)

श्रीअरविन्द :

प्रकाश के प्रति मुड़ने में सतत दृढ़ता की सबसे अधिक मांग की जाती है। हम जितना सोचते हैं, प्रकाश उसकी अपेक्षा हमारे ज्यादा नजदीक है और किसी भी क्षण उसका मुहूर्त आ सकता है।

(९ सितंबर १९४३)

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा. . . . . में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.2002

LIBRARY Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

From the standpoint of Yoga it is not so much what you do but how you do it that matters most.

–The Mother

योग के दृष्टिकोण से तुम जो करते हो वह नहीं बल्कि तुम कैसे करते हो वह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है।

—श्रीमां

*

आध्यात्मिक जीवन के दृष्टिकोण से तुम जो करते हो उसका सबसे अधिक महत्त्व नहीं है। महत्त्व है तुम जिस तरह करते हो उसका और उस चेतना का जो तुम उसमें लगाते हो। भगवान् को हमेशा याद रखो और तुम जो कुछ करोगे वह 'भागवत उपस्थिति' की अभिव्यक्ति होगा।

जब तुम्हारे सभी कर्म भगवान् को समर्पित हों तब ऐसी कोई क्रियाएं न रहेंगी जो उच्च हों अथवा निम्न हों। सबका समान रूप से महत्त्व होगा—उन्हें समर्पण द्वारा दिया गया मूल्य।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

शुभ आगमन

कई राष्ट्रों पर अप्रत्याशित झपटती दुर्घटनाओं के विषय में, अन्य भारतीय नागरिकों की तरह, मैं भी सोचने लगी कि ऐसी भयानक शृंखला का अर्थ क्या हो सकता है ? अचानक मेरे दिमाग में यह विचार कौंधा, "कहीं यह युग के पलटने का चिह्न तो नहीं है ?" उस समय श्री धर्मवीर भारती के 'अन्धा युग' की अंतिम पंक्तियां स्पष्ट मेरे स्मृति पटल पर चमक उठीं। कृष्ण के देहावसान पर कथा-गायक वर्णन करता है,–

"बुझ गये सभी नक्षत्र, छा गया तिमिर गहन
वह और भयंकर लगने लगा भयंकर वन
जिस क्षण प्रभु ने प्रस्थान किया
द्वापर युग बीत गया उस क्षण
प्रभुहीन धरा पर आस्थाहत
कलियुग ने रखा प्रथम चरण
वह और भयंकर लगने लगा भयंकर वन"

मुझे कुछ-कुछ विश्वास होने लगा कि हां, युग-संक्रांति का वह मुहूर्त आ रहा है और इसीलिये कलियुग जाने से पहले जितना उत्पात मचा सकता है, मचा रहा है। फिर भी मैंने श्रीअरविन्द के शब्दों में ऐसा कोई चिह्न ढूंढ़ना चाहा; क्योंकि मैंने पाया है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, चाहे वह कई वर्ष पहले क्यों न लिखा गया हो, वह वर्तमान की भविष्यवाणी सिद्ध होता है। २६ फरवरी, १९१० में लिखे गये उनके लेख का अंश पढ़ा तो मुझे ऐसा ही लगा मानों उन्होंने उस समय के वर्तमान और साथ ही भविष्य के लिये भी यह लिखा था। वे कहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल परिवर्तन और अप्रतिरोध्य आंदोलन जब तीव्र वेग से चल पड़ते हैं, ऐसे समय कोई छोटी-सी आकस्मिक घटना भी आश्चर्यजनक रूप से ऐसी परिस्थितियों की शृंखला शुरू कर देती है जिसके कारण सारे राष्ट्र या पूरे संसार में पलटाव आ जाता है। ऐसे समय घटना इस ओर या उस ओर मुड़ जाये तो उसके परिणाम अकल्पनीय होते हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य दिव्य शक्ति की वास्तविक शक्ति और उसका घटनाओं पर नियंत्रण स्पष्ट देख सकते हैं। तब मनुष्यों के अनुमान गलत हो जाते हैं। ऐसे समय ऐसा भी होता है कि किसी एक व्यक्ति का आकस्मिक कार्य कई चीजों को हठात् समाप्त कर देता है। क्षणमात्र में एक संसार अदृश्य हो जाता है और एक स्पर्श मात्र से नयी सृष्टि खड़ी हो जाती है। ऐसे समय शास्त्रों में वर्णित प्रलय का मनुष्य को स्पष्ट परिचय मिल जाता है और एक युग का अंत और नये युग का आरंभ वे देख पाते हैं। ऐसा दारुण परिवर्तन इस समय सारे संसार के ऊपर मंडरा रहा है। प्रायः समस्त राष्ट्रों में ऐसी घटनाएं हो रही हैं जिनके परिणाम के बारे में कोई कुछ अनुमान नहीं लगा पाता। महान् राष्ट्रों की सतह पर कभी-कभी छोटे प्रसंग तैरकर पार हो जाते हैं, वे भुला दिये जाते हैं, लेकिन ऐसे प्रसंग भी होते हैं जो प्रपात की तरह राष्ट्र पर टूट पड़ते हैं।

अब हम विश्वास कर सकते हैं कि वर्तमान अत्यंत विरल काल है और युग-संधि के इस मुहूर्त में मनुष्यों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। जितनी सचाई से हम नये युग के अनुकूल होने की कोशिश करेंगे उतनी ही शीघ्र दुविधा का यह समय समाप्त होगा।

इस समय माताजी की २० दिसंबर १९१६ की प्रार्थना का एक अंश हृदयंगम कर हम अभीप्सा करें कि कलियुग जल्दी प्रस्थान करे और सतयुग के शुभ आगमन का हम स्वागत कर पायें।

माताजी की प्रार्थना का अंश यहां प्रस्तुत है—

"हे मेरे प्रिय प्रभु, मेरा हृदय तेरे सामने नत है, मेरे हाथ तेरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनती में फैले हुए हैं। विनती यह है कि इस सत्ता को अपने भव्य प्रेम से प्रज्ज्वलित कर दे ताकि वह सारी सृष्टि को आलोकित कर पाये। मेरा हृदय पूर्ण रूप से खुल गया है और वह तेरी ओर मुड़ा हुआ है। वह खुला हुआ और रिक्त है ताकि तू अपने दिव्य प्रेम से उसे परिपूर्ण कर दे . . .।

तेरा उत्तर आया, 'सब चीजों में मुझसे प्रेम कर, सर्वत्र और सब सत्ताओं में मुझसे प्रेम कर।' तेरे आगे मैं साष्टांग प्रणाम करती हूं और याचना करती हूं कि यह सब करने की शक्ति तू मुझे दे।"

क्या हम प्रयास नहीं करेंगे ? काम कठिन है किंतु प्रभु अपने बच्चों से आशा करते हैं कि वे इन कठिनाइयों को जीत कर आगे बढ़ेंगे। हम यही करें !

—अनुबेन

यह निर्णय करने से पहले कि औरों या परिस्थितियों में कोई भूल है, तुम्हें अपने निर्णय की यथार्थता के बारे में निश्चित होना चाहिये—और जबतक तुम साधारण चेतना में रहते हो, जो अज्ञान पर आधारित और मिथ्यात्व से भरी होती है, तबतक कौन-सा निर्णय सच्चा हो सकता है ?

केवल सत्य चेतना ही निर्णय कर सकती है। अतः सभी परिस्थितियों में सबसे अच्छी बात यह है कि निर्णय को भगवान् पर छोड़ दिया जाये।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

फरवरी

१. तुमने जो प्रगति की है उसकी पुष्टि करने के लिये कभी-कभी पीछे मुड़कर देखना अच्छा होता है, लेकिन उस हालत में जब वह तुम्हें अभी जो प्रगति करनी बाकी है उसके लिये प्रयास को प्रोत्साहन देने के लिये उत्तोलक का काम करे।

२. मैं अपने-आपको तेरे प्रति खोलता हूं और पूर्ण निष्ठा के साथ तेरी आज्ञा का पालन करूंगा।

३. अपनी इच्छा-शक्ति की एकाग्रता और अपनी अभीप्सा की तीव्रता द्वारा हम विजय के दिन को जल्दी ला सकते हैं।

४. अगर तुम भगवान् से कोई चीज छिपाना चाहो तो ठप्प से नाक के बल जा गिरोगे।

५. मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं, लेकिन तुम्हें मुझे बुलाना कभी न भूलना चाहिये, क्योंकि मुझे बुलाने से ही उपस्थिति प्रभावकारी होती है।

६. अपना अवलोकन करना अच्छा है ताकि तुम अपनी कमजोरियां देख सको और उन्हें सुधारने लायक बन सको।

७. मेरी सहायता हमेशा तुम्हारे साथ रहती है, इतनी पूर्ण जितनी कि हो सकती है। अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम अपने-आपको खोलो और उसे ग्रहण करो। और निश्चय ही तुम विद्रोही बनकर या असंतुष्ट होकर यह न कर पाओगे।

८. बहुत सावधान रहो। अवसाद, अनुत्साह और विद्रोह के लिये दरवाजा न खोलो, यह तुम्हें चेतना से दूर, बहुत दूर ले जाकर अंधकार की गहराइयों में डुबा देता है जहां सुख कभी घुस भी नहीं सकता। मुस्कान ही तुम्हारी सबसे बड़ी शक्ति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. जो हो चुका उसपर कुछ समय के बाद नजर डालने से एक लाभ होता है। दूर से, क्रिया से अलग होकर तुम ज्यादा स्पष्ट देख सकते और ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हो कि क्या करना और क्या न करना चाहिये था।

१०. जब तुम किसी के लिये इस तरह कष्ट उठाओ तो वह कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। हो सकता है कि परिणाम तुरंत न दिखायी दे, लेकिन निष्काम कर्म एक-न-एक दिन अपना फल लाता ही है।

११. सुंदर चीजें गंदी चीजों से कहीं अधिक मजबूत हैं और वे निश्चय ही विजय पायेंगी। मैं सदा तुम्हारे साथ हूं, संघर्ष में भी और विजय में भी।

१२. मुझे पकड़ने के लिये तुम्हें कहीं दूर न जाना होगा क्योंकि मैं पहले से ही तुम्हारे हृदय में मौजूद हूं और जैसे ही तुम्हारी आंखें खुलेंगी कि तुम मुझे वहां देख पाओगी।

१३. यह कहने की जरूरत नहीं है कि तुम्हारे अंदर शांति और नीरवता लाने के लिये हमारी सहायता हमेशा तुम्हारे साथ है और यह एकदम निश्चित है कि एक दिन तुम्हारे अंदर शांति और नीरवता इस तरह प्रतिष्ठित हो जायेंगी कि फिर वे तुम्हें कभी न छोड़ेंगी।

१४. तुम अपने-आपको जितना अधिक दोगी उतनी ही अधिक खुलती जाओगी और जितना अधिक खुलती जाओगी उतना ही अधिक पाओगी; और आत्मदान की इस घनिष्ठता में तुम आंतरिक उपस्थिति और उसके साथ आनेवाले आनंद के बारे में सचेतन हो जाओगी।

१५. केवल शांति और अध्यवसाय के साथ प्रकाश के फिर से आने की अभीप्सा करो। मेरा प्रेम हमेशा तुम्हारे साथ है जो इस बुरे समय को पार करने में तुम्हारी मदद करेगा।

१६. मुस्कुराती जाओ और विशेष रूप से जब कठिनाइयां आयें तो और भी अधिक मुस्कुराओ। मुस्कानें सूर्य की किरणों की तरह हैं, वे बादलों को छितरा देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७. झूठे गर्व से बचकर रहो, वह केवल विनाश की ओर ले जाता है। और भगवान् के प्रेम को छोटा न समझो क्योंकि उसके बिना ऐसी कोई चीज नहीं है जिसके लिये जिया जाये।

१८. मैं सदा तुम्हें अपनी शांति में लपेटे रहती हूं, तुम्हें उसे बनाये रखना सीखना चाहिये। मैं सदा तुम्हारे हृदय में रहती हूं, तुम्हें मेरी उपस्थिति के बारे में सचेतन होना चाहिये, उस शक्ति को ग्रहण करना और उसका उपयोग करना चाहिये जिसे मैं तुम्हारे अंदर उंडेल रही हूं ताकि तुम सभी कठिनाइयों पर विजय पाने के योग्य बन जाओ।

१९. जब तुम यह समझ जाओगे कि विद्रोह करना सबसे अधिक मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ चीज है और जब तुम विद्रोह करने की इस बुरी आदत को छोड़ दोगे तब तुम देखोगे कि तुम्हारे दुःख-दर्द भी चले जायेंगे और उनके स्थान पर आयेगा अपरिवर्तित सुख।

२०. यह न भूलो कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं और केवल वही करो जो तुम लज्जित हुए बिना मेरे सामने कर सकते हो। मेरा मतलब यह है कि ऐसी कोई चीज कभी न करो जिसे तुम मेरी भौतिक उपस्थिति में करने का साहस न करोगे, क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं।

२१. 'काम में रस बनाये रखो यह भी कठिन घड़ियों में से गुजरने में तुम्हारी सहायता करेगा।'

श्रीअरविन्द के इस वचन को कभी न भूलो और सभी कठिनाइयों के बावजूद साहस बनाये रखो। तुम निश्चय ही लक्ष्य तक जा पहुंचोगे, और तुम जितना ही अधिक विश्वास रखोगे उतनी ही जल्दी पहुंच जाओगे।

२२. तुम्हारे चले जाने से जरा भी लाभ न होगा। बाहरी साधन व्यर्थ होते हैं। यह तो भीतर को बदलना होगा। अपने निश्चय को बनाये रखो और मेरी सहायता काम करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. जब कठिनाइयां आयें तो यह न सोचो कि मैं नाराज हूं, बल्कि इसके विपरीत कि मैं सदा तुम्हारे साथ हूं, तुम्हें सहायता देती, तुम्हारी रक्षा करती, स्थायी प्रेम और माधुर्य के साथ तुम्हें प्रोत्साहित करती हूं।

२४. मैं तुम्हारी मदद करने और तुम्हारी रक्षा करने के लिये हमेशा तुम्हारे साथ हूं। अपने ऊपर व्यर्थ की कल्पनाओं का प्रभुत्व न होने दो। तुम्हारे हृदय की गहराइयों में शांति मौजूद है। वहां एकाग्र होओ और तुम उसे पा लोगे।

२५. अगर तुम भौतिक रूप से मुझसे दूर हो पर सारे समय मेरे बारे में सोचते रहते हो तो निश्चय ही तुम उस अवस्था की अपेक्षा मेरे ज्यादा नजदीक होगे जब तुम बैठे तो रहो मेरे पास परंतु सोचो और चीजों के बारे में।

२६. यह न सोचो कि मैं तुम्हारे नजदीक नहीं थी। जहां कहीं तुम काम करते हो, भौतिक रूप से पास या दूर, मैं हमेशा तुम्हारे साथ, तुम्हारे काम में और तुम्हारी चेतना में रहती हूं। तुम्हें यह जानना चाहिये।

२७. अगर तुम यह पसंद नहीं करते कि मैं तुम्हारे दोष दिखलाऊं, मैं इसे भली-भांति बंद कर सकती हूं, लेकिन तब तुम्हें मुझसे प्रगति में सहायता करने के लिये भी न कहना चाहिये, क्योंकि तुम यह नहीं कर सकते कि एक ओर मुझसे हस्तक्षेप करने के लिये कहो और दूसरी ओर मेरे हस्तक्षेप को अस्वीकार कर दो।

२८. चैत्य पुरुष दुःखी नहीं होता, मन, प्राण और अज्ञानी मनुष्य की सामान्य चेतना दुःख झेलती है।

अपनी मुस्कान को वापिस ले आओ, अपनी श्रद्धा को वापिस ले आओ, फिर से वही विश्वासपूर्ण बालिका बन जाओ जो तुम थीं, अपने दोषों और कठिनाइयों पर एकाग्र न होओ, तुम्हारी मुस्कान उन सबको भगा देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

दिव्य मां

(नवम्बर २००१ से आगे)

आश्रम के कितने ही मुख्य कार्यों का इसी समय आरंभ हुआ था और माताजी उन सबमें हमेशा सक्रिय रूप से भाग लिया करती थीं। इनमें से कुछ कार्य हमारे जीवन में प्रमुख स्थान ले बैठे और वे सारे संसार में सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। हालांकि मैंने माताजी को श्रीअरविन्द से उन कार्यों का जिक्र करते नहीं सुना है फिर भी मैंने उन्हें उनकी शक्ति और संरक्षण में धीरे-धीरे विकसित होते देखा है। मैं माताजी के बहुविध क्रिया-कलापों का छोटा-सा वर्णन देना चाहता हूं। उनकी सृजनात्मक प्रतिभा, साहस, गहन प्रगाढ़ता और ऊर्जस्विता के कुछ उदाहरण देना चाहूंगा। हम देखें कि कितने ही विभाग शुरू-शुरू में बिरवान की भांति थे और देखते न देखते बरगद की तरह विशाल बन गये और जिन्होंने अपनी शाखाएं दूर-दूर तक फैलाकर कई राष्ट्रों को कैसी नयी दृष्टि प्रदान कर दी।

दो महत्त्वपूर्ण कार्य जो माताजी ने उस समय हाथ में लिये, वे थे आश्रम के विद्यालय का और शारीरिक शिक्षा-विभाग का आरंभ। दोनों को मिलाकर नाम दिया गया, 'श्रीअरविन्द इंटरनैशनल सेंटर ऑफ एज्यूकेशन'। अन्य सभी विभागों की तरह ये भी छोटे-से बिरवों की तरह फूटे, फिर भारत के पास आते जापान के आक्रमण ने कई स्थानों से माताजी के भक्तों को उनकी शरण में ला दिया। स्वाभाविक रूप से संग-संग बच्चे भी आये। इसलिये इन दो विभागों को बढ़ाना एक आवश्यकता बन गयी। माताजी को अपना अधिकतर समय इन बच्चों को देना पड़ता था। और बच्चे तो बच्चे होते हैं, उनपर विशेष ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना होता है, क्योंकि वे नन्हे-मुन्ने तो योग करने नहीं आये थे।

यह एक चुनौतीभरी समस्या थी जिसे प्रकृति ने माताजी के सामने रखा था। इसके बाद आश्रम का जीवन भी बदल गया। हमारे पुराने घेरे टूट गये। अब आश्रम को केवल शांति, नीरवता, आंतरिक विस्तार और उपलब्धि का निवास न रह कर बाह्य जीवन की कसौटी पर भी सफल सिद्ध होना था। हम अब एक आध्यात्मिक परिवार बन गये थे। माताजी को नन्हे-मुन्नों की मानसिक, प्राणिक और शारीरिक स्वास्थ्य की देख-भाल करनी पड़ती थी। जिस प्रकार आवश्यकता आ पड़ी, उसी तरह साधन भी आवश्यकता की मांग पूरी करने आ गये। विश्वभारती से श्री शिशिर कुमार मित्र अपनी शिक्षा का लंबा अनुभव लेकर आ पहुंचे, तो कलकत्ता से शारीरिक शिक्षा के निष्णात श्री प्रणव कुमार भट्टाचार्य भी आये। इन दोनों को क्रमशः श्रीअरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र और शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र का भार सौंपा गया। माताजी को प्रणव के रूप में शारीरिक शिक्षा का उत्तम संचालक प्राप्त हुआ। उनकी सहायता से माताजी ने शारीरिक शिक्षा के केंद्र को बहुत विकसित किया। मैं स्वयं आश्रम में शारीरिक शिक्षा के औचित्य पर कुछ अधिक कहना नहीं चाहता क्योंकि श्रीअरविन्द ने "दिव्य शरीर"[१] पर लिखे अपने लेख में सविस्तार उसकी चर्चा की है। मेरी दृष्टि तो पार्थिव है; उसके अनुसार मैं यह समझ गया कि शाम के ४.३० बजे से ७ बजे तक जो कार्यक्रम अनिवार्य बनाया गया था, उससे उत्तेजना भरे युवकों, लड़कियों और बच्चों को सख्त अनुशासन में रखने का अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा रहा था। हम आसानी से समझ सकते हैं कि अगर यह केंद्रीय नियंत्रण न होता तो इन नैतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता, क्योंकि इन्हें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। इन सामूहिक कार्यक्रमों से जिन लोगों ने अपने-

[१] 'अतिमानसिक अभिव्यक्ति' पुस्तक—श्रीअरविन्द आश्रम पब्लिकेशन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको अलग-थलग रखा उन्हें बहुत-सी मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जो युवक आश्रम के बाहर, समाज में रहते हैं उनकी बहुत-सी मुसीबतें कॉलेज या विद्यालय के बाद किसी काम में व्यस्त न रहने से ही उठती हैं। श्रीअरविन्द के महाप्रयाण के बाद माताजी ने मुझे एक ठोस सलाह दी थी, "वातावरण के साथ-साथ चलो," जिसका अर्थ यह था कि मुझे सामूहिक क्रिया-कलापों से अलग-थलग नहीं रहना चाहिये। एक बार जब विद्यालय में अधिक छुट्टियां देने की मांग की गयी तब माताजी ने कहा था, "मैंने विद्यालय इसलिये नहीं खोला है कि बच्चे सड़कों पर मंडराते फिरें"। तब से शिशिर ने विद्यार्थियों का छुट्टी के लिये जो दबाव था उसका निरंतर प्रतिरोध किया।

माताजी ने नयी पीढ़ी के साथ अधिक-से-अधिक तादात्म्य स्थापित करना आरंभ किया। शाम को जब श्रीअरविन्द अपने एकांत में रहना पसंद करते थे, तब माताजी टेनिस खेलने के बाद क्रीड़ांगण जाकर बच्चों से मिलतीं, उनकी कसरतें और खेल-कूद देखतीं, उन्हें पढ़ाती-लिखातीं और इन माध्यमों से बच्चों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करतीं। उस समय कसरत करनेवाली लड़कियां पाजामे पहनती थीं। जिसके कारण उन्हें कई बार बड़ी दिक्कत होती थी। वे सब कसरतें नहीं कर पाती थीं। एक शाम मैं क्रीड़ांगण पहुंचा तो दरवाजे पर बैठे साधक ने कहा कि अभी माताजी केवल कसरत करनेवाले सदस्यों के सिवाय और किसी को अंदर जाने की अनुमति नहीं देना चाहतीं। जब दरवाजा खुला तो हमने आश्चर्य से देखा कि लड़कियां 'हाफ पैंट' पहन कर कसरत कर रही हैं! ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ कैसे ? अब जिस व्यक्ति ने इसमें सक्रिय भाग लिया था उसीके मुख से कहानी सुनें—एक दिन कसरत करते समय एक लड़की पाजामे में पांव अटक जाने के कारण गिर पड़ी और उसे बुरी तरह चोट आ गयी। माताजी को जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया गया तो उन्होंने शांति से सब कुछ सुन लिया। कुछ दिनों के बाद उन्होंने व्रतती को बुलाया जो उनके अंतरंग दल की साधिका थी। (माताजी के युवकों, लड़कियों और वयस्कों के ऐसे कई अंतरंग दल थे)। माताजी ने व्रतती से कहा, "मैंने वर्दी (यूनीफॉर्म) की समस्या का हल ढूंढ़ निकाला है, लड़कियां अब से सफेद हाफ पैंट, सफेद कमीज और बालों को ढकने के लिये 'किटी कैप' सिर पर बांधेंगी। ऐसी वर्दी तैयार करके पहन कर देखो। पाजामे बड़े असुविधाजनक हैं। जब तैयार हो जाये तो मुझे बताना।" जब सब तैयार हो गया तब उन्होंने माताजी को बताया, फिर गुप्त रूप से पूर्वाभ्यास के लिये एक दिन तय किया गया। व्रतती ने वह वेष-भूषा पहनी। माताजी खुश हो गयीं। दल की लड़कियों को बुलाकर माताजी ने इस नये परीक्षण के बारे में एक छोटा, प्रभावशाली भाषण दिया और उसकी आवश्यकता समझायी। वे लड़कियां इस प्रस्ताव के लिये एकदम तैयार हो गयीं और उन्होंने नयी वर्दी को अपना लिया। फिर भी इस उग्र कदम की प्रतिक्रिया क्या हुई ? कुछ लोग, विशेषकर वयस्क अपनी लड़कियों को अति अल्प कपड़ों में और लड़कों के साथ इस वेश में कसरत करते देख कर स्तब्ध रह गये। कुछ रूढ़िवादी मां-बाप अपने बच्चों को ऐसे आधुनिक आश्रम से ले जाना चाहते थे। व्यक्तिगत रूप से एक ओर तो मैं पूर्वीय राष्ट्रों के लिये समय से बहुत पहले लिये गये इस क्रांतिकारी कदम की सराहना कर रहा था कि वेश-भूषा में एक आधुनिक आंदोलन आ रहा है तो दूसरी ओर मेरा सशंकित मन या जैसा श्रीअरविन्द कहते थे, मेरा कायर मन इस अग्रवर्ती साहसी कार्य में निहित खतरे को भी देख रहा था। साथ ही मैं यह भी जानता था कि माताजी की प्रकृति ही है चुनौतियों का सामना करने की। जब भी हम उनके साथ यह चर्चा करने की कोशिश करते कि हम ऐसी चीजें कर रहे हैं जो बाहर के समाज में नहीं की जातीं, तो वे तीखे स्वर में कहतीं, "हमें दूसरों का अनुकरण क्यों करना चाहिये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पास कोई योजनाएं नहीं होतीं, हमारे पास हैं। मैं पुरानी परंपराओं और अंधविश्वासों को तोड़ने आयी हूं, इसके अतिरिक्त वे जिस कार्य को अपनातीं उसे केवल कुछ नवीन करने के लिये या किसी मानसिक कारण से नहीं करती थीं। श्रीअरविन्द हमें बार-बार याद दिलाया करते थे, "माताजी अपने अंतर्भास से प्रभावित होकर कार्य करती हैं।" मैं मानता हूं कि कोई खतरनाक कदम उठाना हो तो माताजी उसके पहले गुह्य विद्या के स्तर पर भूमिका तैयार करती थीं और अपनी सुविधा के अनुसार उन शक्तियों को नियंत्रित कर लेती थीं। इसीलिये हम उनको कई बार यह कहते सुनते थे, "प्रतीक्षा करो, प्रतीक्षा करो!" शायद उनका मतलब यह होता था कि अनुकूल समय की प्रतीक्षा करो। हम अब उस समय उनके उस क्रांतिकारी कदम उठाने की बुद्धिमत्ता के बारे में अनुमान लगा सकते हैं कि पुरुष और स्त्री के बीच लिंग-भेद की चेतना को हटाने का यह सबसे प्रभावशाली उपाय था। जब से हाफ पैंट हमारे लिये सामान्य वेश-भूषा बन गया है, मैं मानता हूं कि तब से हम इस विषय में कुछ अधिक समझदार हो गये हैं।

संक्षेप में माताजी की लंबी और सतत मेहनत से ये दो संस्थाएं विदेशों में भी मान्यता प्राप्त कर चुकी हैं, खासकर शारीरिक शिक्षा। १९४९ के अप्रैल दर्शन के अवसर पर इस संस्था—जिसे जे. एस. ए. एस. ए. कहते हैं[१]—के सदस्यों को माताजी और श्रीअरविन्द के सामने अपनी वर्दी में मार्च-पास्ट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्रीअरविन्द युवकों की चुस्ती से काफी प्रभावित हुए थे।

माताजी क्रीड़ांगण के विविध कार्यक्रमों में इतनी व्यस्त रहती थीं कि वे प्रणव द्वारा चढ़ाई हुई माला धारण किये रात को ८ या ९ बजे आश्रम लौटतीं। माताजी माला उतार कर श्रीअरविन्द के चरणों में चढ़ा देतीं।

[१] ला ज़नेस स्पोर्तिव द लाश्रम द श्रीअरविन्द (श्रीअरविन्द आश्रम का युवा क्रीड़ा-दल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ांगण में माताजी की यह तीव्र एकाग्रता देखकर लोग कहने लगे कि अतिमानस का अवतरण पहले वहीं होगा। जब श्रीअरविन्द से यह कहा गया तो उन्होंने टिप्पणी की "तो फिर क्या मुझे अतिमानस प्राप्त न होगा ?" फरवरी २९ को १९५६ में अतिमानसिक अवतरण सचमुच क्रीड़ांगण में ध्यान के समय हुआ था, यह एक विलक्षण बात है।

अब मैं एक गौण किंतु महत्त्वपूर्ण कार्य की बात करना चाहूंगा जिसके बारे में लोगों ने कम ही सुना होगा। मेरा मतलब माताजी का अभिनय सिखाने की कला से है। पहली दिसंबर, जो विद्यालय के वार्षिक उत्सव का दिन है, उसके लिये माताजी टेनिस खेलने और अन्य कार्यक्रमों के बाद बच्चों के नाटक के पूर्वाभ्यास पर निगरानी करने जातीं। वे स्वयं किसी नाटक या विषय को चुनतीं और विभिन्न भूमिकाएं भी स्वयं निश्चित करतीं। वे व्यक्तिगत रूप से उन बच्चों को हर रात प्रशिक्षण देतीं जबतक वे अपना अंश पूरी तरह सीख न जाते। मैंने सुना था कि वे प्रत्येक अभिनेता की मुद्रा, उच्चारण, आवाज का उतार-चढ़ाव सिखाते समय प्रत्येक ब्योरे का ध्यान रखा करती थीं। इसमें वे किसी को भी बख्शती न थीं। इस कार्यक्रम में भाग लेनेवाले एक युवक ने हंसते हुए मुझसे कहा था कि एक बार वह पूर्वाभ्यास के समय भाग गया क्योंकि उसे डर लगा कि कहीं माताजी सबके सामने उसे डांट न दें ! कभी-कभी माताजी पहली दिसम्बर के कार्यक्रम के बाद श्रीअरविन्द के आगे उसका वर्णन करतीं। जब श्रीअरविन्द के नाटक प्रकाशित नहीं हुए थे और माताजी पहली दिसंबर के लिये कोई विषय ढूंढ़ रही थीं तो मैंने श्रीअरविन्द की उपस्थिति में उनके महाकाव्य 'सावित्री' के मंचन का प्रस्ताव रखा। माताजी ने झट उसे स्वीकार कर लिया। उनका लगातार अध्यवसाय और सावधानी से दिया गया व्यक्तिगत प्रशिक्षण रंग लाया और एकदम नौसिखिये विद्यार्थियों ने सुंदर तरीके से सुरुचिपूर्ण अभिनय किया। हालांकि अब वे कार्यक्रम नहीं देखतीं फिर भी उन्होंने जो परंपरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित की थी उसको उनके विद्यार्थी बड़े आदर से निभा रहे हैं। एक विदेशी दर्शनार्थी ने जब माताजी को टेनिस की रंगीन वेश-भूषा में देखा तो उन्होंने कहा कि माताजी 'सारा बैरनार'—विख्यात फरासीसी अभिनेत्री —के जैसी लग रही हैं। मुझे भी माताजी को पहली बार उस वेश में देखकर उसी प्रख्यात अभिनेत्री की याद हो आयी थी हालांकि मुझे उस अभिनेत्री के विषय में कुछ अधिक जानकारी न थी। माताजी की अभिनय की क्षमता और भावपूर्ण संवाद बोलने की प्रतिभा ने मेरी राय की पुष्टि कर दी।

हमारे आगे अब माताजी का जो चित्र उभरता है उसमें विविध कोणों से उनके दैनिक जीवन की तीव्र सक्रियता उजागर होती है जिसके विभिन्न आयाम हैं। चाहे वह सृजनात्मक कार्य हो, व्यवस्थापन का हो, कलात्मक हो या शारीरिक—सभी में उनकी निपुणता झलकती थी। इन क्रियाओं के बीच असंख्य छोटे-मोटे व्यक्तिगत स्पर्शों का भी प्रवेश होता रहता था। भोजन, स्नान और रात को कुछ घण्टों के विश्राम को छोड़कर उनका यह चक्र अनवरत घूमता रहता था। तेजी से घूमते इस कार्य-चक्र के बावजूद वे समय निकाल कर एक लड़के को गणित सिखाती थीं, फरासीसी भाषा में 'प्रिऐर्स ए मेदितासिओं' (प्रार्थना और ध्यान) कई विद्यार्थियों को आधी रात को सुनाती थीं। एक लड़के को रात के दो बजे सड़कों पर घूमते हुए देखकर फरासीसी अफसर ने, जो गश्त लगा रहा था, रोक दिया। जब लड़का पास आया तो अफसर ने उसके हाथ में फूल देखा। उसने पूछा, "यह फूल माताजी ने दिया है ?" लड़के ने उत्तर दिया, "जी, मैं माताजी से मिलकर आ रहा हूं।" अफसर बहुत चकरा गया और बोल उठा, "इतनी रात गये।" लेकिन उसने लड़के को छोड़ दिया। अफसर का माताजी से परिचय था। मैंने माताजी को युवा व्यक्तियों पर विशेष कृपा बरसाते हुए देखा है . . .। मां के कार्य रहस्यमय होते हैं! मैं उनकी छोटे-छोटे ब्योरों पर पड़ती दृष्टि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक उदाहरण देता हूं। अपनी अतिव्यस्त दिनचर्या के बावजूद माताजी छोटी-से-छोटी बात को कैसे याद रखती थीं, उसका वर्णन एक साधिका ने किया—एक बार जब प्रणाम के समय माताजी साधिकाओं को साड़ी बांट रही थीं[१] (जिनकी संख्या ५00 थी) तब पंक्ति में खड़े लोगों को साड़ी देने के लिये एक साधक माताजी के हाथ में एक-एक कर साड़ी दे रहे थे, और जब उस साधिका की बारी आयी तो माताजी के हाथ में काली किनारी वाली साड़ी आयी। दूसरे दिन जब साधिका किसी काम के लिये माताजी से मिली तो उन्होंने कहा, "मुझे पता नहीं 'क्ष' ने तुम्हारे लिये काली किनारी की साड़ी क्यों दी, उस तरफ साड़ियों का ढेर पड़ा है, जाकर जो पसंद आये ले लो।" साधिका ने उत्तर दिया, "मां, कोई बात नहीं। जो आपको पसंद हो वह मुझे दे दीजिये।" माताजी ने उसे हरी किनारी की साड़ी दी। अपने खचाखच भरे कार्यक्रम में भी अति क्षुद्र ब्योरे पर माताजी के अद्भुत निरीक्षण और स्मृति से वह साधिका हतप्रभ रह गयी। वह इस अप्रत्याशित दिव्य कृपा से अभिभूत हो गयी। यह एकमात्र ऐसा प्रसंग नहीं है। उन दिनों जब हमारी संख्या सीमित थी और माताजी हम सब छोटे-बड़ों के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित कर पाती थीं तो हमारी स्मृति में उनकी परम कृपा के ऐसे कितने ही अमूल्य नग और रत्न जड़े हुए हैं। यह क्षमता और कुछ भी हो सकती है किंतु मानवीय नहीं है। यह एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य से ऊपर और परे है और जो सारे समय कार्यरत रहती है।

और एक ऐसा उदाहरण है जिसे किसी साधिका की दैनन्दिनी से लिया गया है। यह उदाहरण यह दर्शाता है कि अपने अतिव्यस्त क्रिया-कलापों के बावजूद माताजी व्यक्तियों को या दलों को उनकी आत्मा की अभीप्सा के पथ पर आगे बढ़ाने के लिये समय निकाल लेती

[१] माताजी अपने हाथ से स्त्रियों और लड़कियों को वर्ष में चार बार साड़ी या फ्रॉक दिया करती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। ध्यान के लिये शाम ८ बजे नीचे उतरने से पहले वे दस-बारह लड़कियों से मिलतीं। कई बार उन लड़कियों को घण्टों उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ती, कभी-कभी तो रात के दस बज जाते। वे भूखी, प्यासी, नींद के झकोरे लेती बैठी रहतीं क्योंकि तुरंत बाद ध्यान शुरू हो जाता। एक दिन एक लड़की का धैर्य छूट गया और एक थाली में अपने फूल रखकर वह चली गयी। ठीक उसी समय माताजी आ गयीं। इस संयोग से लड़कियां स्तंभित रह गयीं। उन्होंने सोचा, "कैसी परीक्षा है !" जैसे ही एक लड़की माताजी के पास आयी, उन्होंने पूछा, "यह फूलों की थाली किसने यहां रख छोड़ी ? ओह, क्या 'क्ष' ने ? तुम लोग मुझे आश्चर्य में डाल देते हो ! तुम मेरे लिये थोड़ी देर के लिये भी प्रतीक्षा नहीं कर पाते ! तुम इतने अधीर हो जाते हो ? जानते हो देवगण और देवियां मेरे दर्शन के लिये कितना तरसते हैं ! एक मिनट के लिये अगर संत और मनीषी मुझे ध्यान में देख लें, तो अपने को धन्य मानते हैं !"

लड़की ने उत्तर दिया, "लेकिन मां, हम तुमको अपनी सखी मानते हैं। जब हम वृक्ष के नीचे खड़े रहते हैं तो क्या हम सोचते हैं कि वह हमें शीतल छाया देता है ?" इस मधुर उत्तर ने माताजी को द्रवित कर दिया और उन्होंने उस लड़की को अपनी बांहों में भर लिया।

हमने माताजी को टेनिस खेलकर पसीने से तर बतर सीधा क्रीड़ांगण में आकर फ्रेंच अनुवाद की कक्षा लेते देखा है या फिर स्पोर्ट्स ग्राउंड में हमारी खेल-प्रतियोगिताओं के लिये आते देखा है। प्रत्येक खिलाड़ी का नाम लिखकर उसके हर खेल में प्राप्त अंक भी वे लिखतीं और इस तरह अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा सबकी एक साथ रक्षा करतीं, सबको सहारा देतीं और प्रोत्साहित करतीं। उनकी उपस्थिति से ही वातावरण दिव्य ऊर्जा और निश्चलता से मानों विद्युत्-सा आलोकित हो उठता था। दौड़ की प्रतियोगिता के समय वे दौड़ की समाप्ति के फीते को अपने हाथ में पकड़तीं। आश्रम से बाहर यदि किसी क्लब के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा दोस्ताना मैच होता तो वे वहां भी आतीं। इस तरह वे दो बार कलकत्ते के मोहन बागान के दल का फुटबॉल मैच देखने गयीं और उनका खेल देखकर इतनी प्रभावित हुईं कि फुटबॉल के बारे में उनकी राय बदल गयी। वे फुटबॉल को उत्तेजना से भरा और उग्र खेल मानती थीं जहां खिलाड़ियों को अक्सर चोट लगती है, और हमारे खिलाड़ी तो कई बार चोट खाते ही थे। कलकत्ते के दल का इतना शानदार और साफ खेल देखकर उन्होंने कहा, "मुझे पता न था कि फुटबॉल इतने शालीन तरीके से खेला जा सकता है!" खेल के बाद सभी खिलाड़ी माताजी का आशीर्वाद लेने उनके पास गये और उन्हें जो नया फुटबॉल जीत में मिला था उसे माताजी को उपहार-स्वरूप दे दिया। इस तरह के विशेष कार्यक्रमों के बाद वे क्रीड़ांगण में चली जातीं और अपने दैनिक कार्यों में जुट जातीं। जैसे लोगों से विशेष मुलाकात करना, आश्रम-वासियों को मार्चिंग करते देखना, कक्षाएं लेना या आश्रमवासियों को टॉफियां या मूंगफलियां बांटना। यह रात के ९ बजे तक चलता रहता! सचमुच उनका सवेरे से शाम तक का कार्यक्रम सारे वर्ष चलता रहता। एक के बाद एक कार्य का तांता उनके प्रत्येक क्षण को भरता रहता और यह याद रहे कि ऐसा कार्यक्रम उनकी ८0वीं वर्षगांठ तक चलता रहा!

इतनी शक्ति उन्हें कहां से मिलती थी ? उनकी अति प्रचुर प्राण-शक्ति के लिये वे जो भोजन लेती थीं और जितना सोती थीं वह सब शारीरिक शास्त्र के अनुसार अपर्याप्त थे, उनका शरीर भी सुकुमार था। उन्होंने एक बार कहा था "तुम सोचते हो कि मैं केवल अल्प मात्रा में लिये इन भोजनों पर जीवित रहती हूं ? वैश्व प्रकृति से मनुष्य जितनी चाहे ऊर्जा ले सकता है।" वे कहा करती थीं कि यहां हमारे सामने दिव्य ऊर्जा, दिव्य शक्ति प्रत्यक्ष खड़ी हैं! जैसे श्रीअरविन्द अपने बृहद पत्र-व्यवहार के बारे में मजाक में कहते हैं, वैसे ही माताजी भी कह सकती हैं, "और किसी कारण से नहीं तो मेरी अंतहीन क्रियाशीलता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये मुझे अवतार मानना चाहिये !"

माताजी की ऐसी छवि दिखाने में मेरा लक्ष्य केवल उनकी अद्भुत क्रियाशीलता दिखाना ही नहीं है। वैसे संसार में कई क्रियाशील लोग रहे हैं, जैसे नेपोलियन जो भव्य ऊर्जा के स्वामी थे, किंतु ऐसे लोग अन्य कोटि के होते हैं। जब कि माताजी के सब कार्य प्रतीकात्मक होते हैं। वे दिव्य शक्ति की चित् शक्ति की अभिव्यक्ति हैं और वे इन शक्तियों को साकार करती हैं। उस शक्ति को वे दिल खोलकर जैसे वयस्क पीढ़ी को देती आयी हैं वैसे युवा पीढ़ी को भी दे रही हैं। यह शक्ति जिस व्यक्ति, जिस वस्तु के संपर्क में आती है उसमें प्रवेश कर पूरी तरह फैल जाती है। वे जहां भी जाती हैं, वहां अपनी दिव्य उपस्थिति का एक अंश छोड़ जाती हैं। वे कहती हैं कि एक क्षण के लिये भी किसी का उनके साथ संपर्क हो जाये तो वे उसे कभी नहीं भूलतीं ! उनकी दिव्य चेतना में उस व्यक्ति का एक स्थान बन जाता है। श्रीअरविन्द ने मुझसे कहा था कि हम में से हर एक के साथ उनका एक रूप हमेशा रहता है। मेरा अनुमान है कि माताजी के साथ जिन-जिन का संपर्क हुआ है उन सबको कुछ ऐसी अनुभूति अवश्य हुई होगी और वही जीवन के कठोर और खतरनाक सफर में उनकी सहायता करती होगी।

मैं इस अध्याय को माताजी के साथ हुई मेरी एक बहस का उल्लेख करके समाप्त करूंगा। मैंने उनके साथ एक ऐसे विषय पर बहस की जिसके बारे में मैं बहुत ही कम जानता था। माताजी श्रीअरविन्द के भाइयों का नख-शिख वर्णन सुना रही थीं। बीच में मूर्खतावश मैंने उनकी बात को काट दिया। माताजी ने उत्तर दिया, "चुप रहो तो ज्यादा अच्छा होगा ! तुम कुछ नहीं जानते।" वहीं बात खतम हो गयी और इस प्रसंग को मैं भूल भी गया, किंतु आश्चर्य ! बाद में माताजी ने मुझे श्रीअरविन्द के कमरे में बुलाया और मेरे कंधे पर हाथ रखकर कुछ-कुछ खेद-भरे स्वर में मुझे समझाया कि मेरी बात कैसे गलत थी। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तक्षेप करने के लिये सच्चे दिल से क्षमा मांगी और कहा कि मैंने उनकी डांट का बुरा नहीं माना। उनकी इस दिव्य विचारशीलता पर मैं सचमुच द्रवित हो गया। कभी-कभी वे कठोर या सख्त व्यवहार करती थीं—उन्होंने एक बार कहा था कि श्रीअरविन्द सभ्य-शिष्ट हैं, वे नहीं हैं—हमने उनका बर्फीला मौन, व्यंग्यात्मक मुस्कान, और ठंडी दृष्टि का महाकाली रूप देखा है,—बहुधा उनके महालक्ष्मी रूप का आशीर्वाद भी हम पर बरसता था। उदाहरण के लिये मेरे जन्मदिन पर वे श्रीअरविन्द की बढ़िया धोतियों में से दो मुझे उपहार-स्वरूप देतीं। बाहर से वे कितनी भी कठोर दीखती हों, और दुर्भाग्यवश हमारे लिये वह कठोरता आवश्यक भी थी, वे हमारी सच्ची मां हैं। उनकी एकमात्र चिंता थी हमें दिव्य प्रकाश तक ले जाने की।

(क्रमशः)

—नीरदवरण

अभीप्सा करनेवाले के नाम पत्र*

२५ जुलाई को तुम्हारा पत्र श्रीअरविन्द के पास समय पर पहुंच गया था, लेकिन उस समय वे कोई निश्चित उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे। हाल में उन्होंने पत्र को दोबारा पढ़ा और मुझे निम्नलिखित उत्तर लिखने के लिये कहा।

तुम्हारा पहला प्रश्न है अपने विवाहित जीवन के बारे में। इन बातों में उचित नियम यह है कि जबतक तुम्हारे अंदर कर्तव्य का भान हो, जबतक कि तुम्हें उससे छुटकारा न मिल जाये, तुम्हें उसका अनुसरण

[१] यह अपूर्ण पत्र शायद श्रीअरविन्द ने १९२० के अंत में लिखा था। यहां उन्होंने अपने लिये अन्य पुरुष का उपयोग इसलिये किया है क्योंकि विचार यह था कि पत्र में उनके सेक्रेटरी के हस्ताक्षर होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिये। तुम्हें आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करते समय कोई पाप की शंका, पछतावा, किसी प्रकार का खिंचाव या आकर्षण अपने साथ न ले जाना चाहिये। इसी तरह, अगर तुम्हारे अंदर सामान्य व्यावहारिक मानव के लिये, कमाने, उज्ज्वल भविष्य, सामान्य उद्देश्यों के लिये अपनी क्षमताओं का उपयोग करने या सामान्य मानव चेतना के स्तर पर चमकने का आकर्षण हो तो तुम्हें सब कुछ छोड़कर योग की ओर अग्रसर न होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि तुम्हारे अंदर आध्यात्मिक आदर्शों या योग के लिये सिर्फ एक मानसिक आकर्षण मात्र हो। आध्यात्मिक चेतना और आध्यात्मिक जीवन को पाना बहुत अधिक कठिन है। उसके लिये बहुत गभीर और सशक्त पुकार की जरूरत होती है और किसी भी प्रकार की सिद्धि पाने के लिये यह आवश्यक है कि तुम्हारी समस्त ऊर्जा एक लक्ष्य की ओर मुड़ी हो, जिन लोगों ने अपने सभी संबंध काट दिये हों उनके लिये भी दोहरी चेतना से बचना मुश्किल होता है। उनकी एक चेतना अंदर की ओर मुड़ी होती है और आध्यात्मिक परिवर्तन की मांग करती है, दूसरी, जो सामान्य जीवन की गतिविधियों से बंधी रहती है उन्हें उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों से नीचे, निम्न प्रकृति के अपरिवर्तनशील मार्ग की ओर बड़े हठ के साथ खींचती रहती है। अगर तुम्हारे अंदर समग्र और अविभक्त पुकार नहीं उठी है तो ज्यादा अच्छा है कि तबतक डुबकी न लगाओ जबतक तुम अत्यंत कटु आंतरिक संघर्षों, बहुत अधिक कठिनाइयों, बार-बार आनेवाली फिसलनों और कटी-छंटी, संदेहास्पद प्रगति के लिये तैयार न हो। ऐसी अवस्था में ज्यादा अच्छा तो यह है कि सामान्य मानव जीवन में, पारिवारिक जीवन बिताते हुए अपने-आपको ध्यान और एकाग्रता के द्वारा तबतक तैयार करो जबतक कि आध्यात्मिक आकर्षण इतना प्रबल न हो जाये कि वह और सब पर छा जाये और उन्हें नष्ट कर दे।

फिर तुम औरों की सेवा करने योग्य बनने के लिये उच्चतर जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिताने की बात करते हो। लेकिन उच्चतर जीवन बिताना, यह एक बड़ा अस्पष्ट-सा मानसिक वाक्य है तथा औरों की सेवा करना योग का उद्देश्य नहीं है। योग का उद्देश्य है एक नितांत नयी चेतना में प्रवेश, जिसमें तुम अपने मन और अहं में नहीं रहते बल्कि दिव्य चेतना में चले जाते हो और अपनी सत्ता के अंतर्तम सत्य में विकसित होते हो। वह सत्य मन, प्राण और शरीर से ऊपर है। बहुत-सी योग-प्रणालियों का उद्देश्य है वर्तमान जीवन से एकदम अलग होकर इस महान् सत्ता के साथ एक हो जाना। लेकिन श्रीअरविन्द के योग में लक्ष्य है मन, प्राण और शरीर को दिव्य सत्य की अभिव्यक्ति में रूपांतरित करना और बाहरी और भीतरी जीवन को उसी सत्य का मूर्त रूप बनाना—और यह कहीं अधिक कठिन प्रयास है। अन्य सब धर्मों को छोड़कर इसी महत्तर चेतना द्वारा काम करना जीवन का एकमात्र नियम बन जाता है। इस जीवन का आधारभूत नियम यह है कि तुम न तो अपने अहं की और न औरों की सेवा करो, केवल दिव्य शक्ति के सेवक और उसके कार्य के यंत्र बनो।

आश्रम के बारे में तुम्हारा दूसरा प्रश्न केवल तभी उठता है जब तुमने अपनी पुकार, अपना सच्चा मार्ग पा लिया हो,—अगर वह तुम्हें यहां लाये। हर हालत में श्रीअरविन्द इस चीज को अधिक पसंद करते हैं कि किसी को अपने आश्रम में लेने से पहले पुकार और क्षमता के बारे में निश्चित हो जायें।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भगवान् के बारे में

मैं मस्त हाथी की तरह झूमता-झामता चला जा रहा था। मेरा रोम-रोम हंस रहा था। जी चाहता था कि जाने-अजाने हर राहगीर से भेंट पडूं और कहूं आज मेरे जीवन की बड़ी साध पूरी हो गयी, तुम भी मेरे साथ खुशियां मनाओ। अभी-अभी मैं परीक्षा का परिणाम देखकर आया था। मैं दर्शन-शास्त्र की सर्वोच्च परीक्षा में बड़ी अच्छी तरह उत्तीर्ण हुआ था, परीक्षकों और अध्यापकों ने मुक्त कंठ से मेरी प्रशंसा की थी।

बारी-बारी से नाचता-कूदता और हाथी की मस्तानी चाल चलता मैं घर जा पहुंचा। मां धड़कते हृदय से आरती की थाली संजोये मेरा स्वागत करने के लिये बैठी थी, बहन मेरी मनपसंद मिठाइयां लिये मेरी देर पर अनखा रही थी और पिताजी भी कोई आतुरता दिखाये बिना मेरी राह देख रहे थे। मेरा चेहरा देखते ही किसी को मुझसे कुछ पूछने की जरूरत न रही फिर भी मैंने बड़े उत्साह के साथ अपना परिणाम सुनाया और आशा प्रकट की कि वह दिन दूर नहीं जब मेरी गिनती राधाकृष्णन् और भगवानदास के साथ होने लगे। मेरा हर शब्द घरवालों के गले से उतरता जा रहा था, उनकी आंखों में मेरा महत्त्व बढ़ता जा रहा था।

खैर आरती हुई, मिठाई बांटी और खायी गयी और मैं खुश-खुश कमरे में जाकर लेट गया। मेरे पीछे-पीछे बहन भी आ धमकी। आज के दिन भला वह मुझे अकेला कैसे छोड़ सकती थी। मेरे सिरहाने बैठते हुए उसने कहा, "अच्छा भैया, अब तुम इतने पढ़-लिख गये, इतने विद्वान् हो गये, जरा मुझे भी तो बताओ कि आखिर यह भगवान् चीज क्या है ? मां से पूछती हूं तो हमेशा उस कमरे की मूर्तियों की ओर इशारा कर देती हैं, पिताजी से पूछती हूं तो कहते हैं "भगवान् है नहीं, था, अब नहीं रहा, अब तो बुद्धि का राज्य है। अब कौन पूछता है भगवान् को। दोनों की बातें मेरी समझ में नहीं आतीं और उत्तर पाये बिना मन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानता। अब तुमसे ही आशा है।"

अपनी भोली-भाली बहन के मुंह से ऐसी बातें सुनकर मैं हंस पड़ा, कम-से-कम उसकी दृष्टि में तो मैं मां और बाप दोनों से ज्यादा होशियार हूं ही। यूं मेरी राय तो यह है ही पर अब दूसरों को भी यह बात मालूम होने लगी है यह संतोष की बात है। लेकिन अब उसे उत्तर किस तरह दूं? कपिल और कणाद की बातें, रामानुज और शंकर की बातें या जेम्स और मार्क्स की बातें, किससे शुरू करूं? क्या यह समझ पायेगी? पहले इच्छा हुई पिताजी की बात का समर्थन करते हुए उसके सामने मार्क्स के शब्दों में घोषणा करूं कि धरती से धर्म को और आकाश से भगवान् को निकाल बाहर करो। फिर सोचा, नहीं, पहले प्रमाण प्रमेय, संशय प्रयोजन आदि पर भाषण दूं और फिर इनके द्वारा भगवान् का अस्तित्व प्रमाणित कर दूं या फिर शंकर के साथ मिलकर जगत् को मिथ्या बताते हुए ब्रह्म के सत्य होने को प्रमाणित करूं। मैं अभी यह सब सोच ही रहा था कि बहन बोल उठी, "बस भैया, इतना ही पढ़े हो, एक बात का उत्तर देने में इतनी देर।" यह भोली लड़की क्या जाने मैं कितने गहन विचारों में डूबा हुआ था। मैं कह नहीं सकता मुझे उसकी बेवकूफी पर हंसी आयी या गुस्सा चढ़ा।

खैर, मैंने बड़ी गंभीरता से उसे सृष्टि के बनानेवाले के बारे में बताना शुरू किया—दर्शन के सूत्र, गीता के श्लोक और अन्य उद्धरण दे-देकर मैंने यह प्रमाणित करना चाहा कि भगवान् है और उसीने यह संसार बनाया है, वही हमारे भले-बुरे का फल देता है, हमें उसीकी उपासना करनी चाहिये। बहन बड़ी गंभीरता से सुनती रही, जब मैं बोल चुका तो उसने कहा, "यह तो बड़ा अजीब भगवान् है जिसने बिना कारण के सृष्टि बना डाली। अच्छा तो भैया, यह बताओ कि उसने जब सृष्टि बनायी तो अपने अंदर से बनायी या अपने बाहर से।" मैंने कहा, "उसके बाहर कुछ है ही नहीं, सब कुछ उसीके अंदर है। इसलिये उसने जो कुछ रचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अंदर से ही रचा था।" बहन तालियां बजाने लगी और बोली, "तब जान लिया तुम्हारे भगवान् को। जब हम सब उसीके अंदर से निकले हैं तो हमारी बुराइयां भी तो उसी में से निकली होंगी। इससे तो यही लगता है कि हमारी बुराई के लिये भी वही जिम्मेदार है, उसे फिर क्या अधिकार है हमें दंड देने का। वह हम में से किसी को अच्छी आदतें और किसी को बुरी आदतें क्यों देता है ?" सच मानिये मैं सकपका गया। भगवान् पर ये ऐसे आरोप थे जिनका जवाब देना भगवान् के किसी भी वकील के लिये भारी पड़ जाता।

मैंने पैंतरा बदला। मैंने कहा, "भगवान् कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम पकड़ सकें, छू सकें या देख सकें इसलिये उसके बारे में जानना या कहना बहुत कठिन है, उसे तो अपने-आप अनुभव करना होता है।" बहन ने कहा, "यह भी खूब रही जिसे हम देख नहीं सकते, छू नहीं सकते उसे हम कैसे जानेंगे और कैसे उसका अनुभव करेंगे ?" मैंने कहा, "जब तुम्हें खुशी होती है या गुस्सा आता है, तुम्हें भूख लगती है या उत्साह आता है तो तुम इन चीजों को देख सकती हो क्या ?" उसने कहा, "नहीं, इन्हें तो मैं बिना देखे ही अनुभव करती हूं।" मैंने कहा, "लो तुमने यह तो देख लिया कि ऐसी चीजें भी होती हैं जिन्हें हम देख या छू नहीं सकते और उन चीजों में बल भी हो सकता है। जैसे तुम्हारा आनंद तुम्हें जिस तरह से नचा सकता है उस तरह कोई दिखाई देनेवाली शक्ति नहीं नचा सकती।" बहन बोली, "हां, और गुस्सा भी तो ऐसा ही होता है। कभी दिखायी नहीं देता परंतु गुस्से के आने पर ऐसा लगता है कि शरीर की शक्ति दुगुनी हो जाती है। एक बार कोई जोर की इच्छा पैदा हो जाये तो वह साधारण समय की अपेक्षा बहुत अधिक काम करा लेती है।" मैंने कहा, "इससे यह स्पष्ट हो गया कि तुम्हारे अंदर छिपी हुई शक्ति दिखायी तो नहीं देती पर उसमें अपार सामर्थ्य है। उस शक्ति के बिना शरीर कुछ नहीं कर पाता। तुम इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह के उदाहरण रोज देख सकती हो जब अंदर की शक्ति न चाहे तो यह बलवान् दीखनेवाला शरीर भी कुछ नहीं कर सकता। इससे यह पता चलता है कि हमारे अंदर एक छिपी हुई शक्ति है जो दिखाई तो नहीं देती पर इस दिखायी देनेवाले शरीर से बहुत अधिक बलवान् है।" बहन ने यह बात स्वीकार कर ली।

फिर मैंने कहा, "इस सृष्टि के पीछे एक शक्ति काम करती है। वह शक्ति भगवान् का अपना अंग है, उसमें चेतना भी है और आनंद भी। सचमुच भगवान् और उनकी शक्ति एक हैं। भगवान् एक हैं, जब उनकी इच्छा होती है तो अनेक बन जाते हैं, नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं, अपने-आप ही उजाला बनते हैं और अपने-आप अंधेरा। आपस में विरोधी दीखनेवाली चीजें सचमुच विरोधी न होकर एक ही चीज के अनेक रूप होती हैं। भगवान् आनंद स्वरूप हैं और यह सारी सृष्टि आनंद से भरी हुई है।" यह सुनकर मेरी बहन जरा चौंक पड़ी। उसने कहा, "तुम्हारी बातें तो मान लीं पर तुम यह कैसे कह सकते हो कि सृष्टि आनंद से भरी है जब कि हमें चारों ओर दुःख और क्लेश ही दिखायी देता है।"

मैंने कहा, "इसके लिये जरा गहराई में जाने की जरूरत है। हमारे जीवन में यदि आनंद न होता तो हम जिन्दा ही न रहते। बहुत अधिक कष्ट में पड़ा हुआ आदमी भी कहीं पर आनंद का अनुभव करता है। कष्ट मानों उसके लिये जीवन में तीखा स्वाद है लेकिन इसके पीछे की सामान्य अवस्था तो आनंद की ही रहती है। इसका एक मोटा प्रमाण यह है कि हर आदमी को अपना जीवन प्यारा है, कोई मरना नहीं चाहता। जीवन के सुख-दुःख अपने-आपमें अस्तित्व नहीं रखते। हमने मान लिया कि ऐसा हो तो सुख और इससे उलटा हो तो दुःख। इस मान्यता को बदला भी जा सकता है। साधारणतः बच्चे गिरते हैं तो रोते-चिल्लाते और धरती को गालियां देते हैं। लेकिन तुमने दया की छोटी बच्ची को तो देखा ही है, वह जब कभी गिरती है तो धरती को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुचकारती है और उससे पूछती है, तेरे चोट तो नहीं लग गयी। इसी तरह तुमने 'क्ष' को देखा है उसके जीवन में चाहे कितनी भी अच्छी घटना क्यों न घटे वह रोने का कारण निकाल ही लेता है और भाग्य को कोसता रहता है। एक ही हवा, पानी और मिट्टी गन्ने के अंदर मीठा, नीम के अंदर कड़ुवा और मिरच के अंदर चरपरा स्वाद देते हैं। इसी तरह एक आनंद अलग-अलग स्थितियों में अलग-अलग रूप लेता है। भगवान् सृष्टि से अलग नहीं है। वह सारी सृष्टि में है और सारी सृष्टि उसमें। इसे और अच्छी तरह समझना हो तो इसका अनुभव करना होगा। मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि मीठे का स्वाद कैसा होता है। उसे तो चखकर ही जानना होगा और अपने-आप चखना होगा।"

बहन बोली—भैया सचमुच यह बड़ा मजेदार विषय है। अब तो तुम जरा आराम कर लो कल फिर आगे बातें करेंगे।

—रवीन्द्र

इच्छाएं ठोस रूप लेती हैं

अगर सब कुछ भगवान् से ही आता है तो इतनी भूलें क्यों हैं ?

तुम्हें यह नहीं मानना चाहिये कि तुम्हारे जीवन में जो कुछ होता है वह स्वभावतः भगवान् से आता है—अर्थात्, 'सत्य चेतना' ही तुम्हारे जीवन का निर्देशन कर रही है। क्योंकि यदि सब कुछ भगवान् से ही आता तो तुम्हारे लिये भूल करना असंभव हो जाता।

तब फिर यह कैसे होता है कि हर जगह भूल-भ्रांति है ? चीजें भगवान् के विरुद्ध और जो होना चाहिये उसके विरुद्ध क्यों जाती हैं ? ... क्योंकि बहुत-से तत्त्व हैं जो एक-दूसरे को काटते हैं और हस्तक्षेप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। संकल्प एक-दूसरे को काटते हैं, सबसे मजबूत सबसे सफल हो जाता है। मानवों की इस जटिलता ने ही नियतिवाद की सृष्टि की है। भागवत इच्छा इन सब चीजों के ढेर से ढक जाती है। मैंने यहां कहा है (माताजी अपनी पुस्तकें उठाती हैं): "तुम्हें वे सब चीजें स्वीकारनी चाहियें—केवल वही चीजें—जो भगवान् से आती हैं। क्योंकि चीजें छिपी इच्छाओं से भी आ सकती हैं। इच्छाएं अवचेतना में काम करती हैं और ऐसी चीजों को आकर्षित करती हैं जिनके स्रोत को भी शायद तुम न पहचान सको, लेकिन वे भगवान् से नहीं, छिपी हुई इच्छा से आती हैं।"

अगर, तुम जिस चीज को नहीं पा सकते उसके लिये तुम्हारे अंदर प्रबल तृष्णा है तो तुम अपनी इच्छा को बाहर भेजते हो। वह तुमसे भिन्न एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में संसार में घूमती है। वह एक छोटा-सा, कम या अधिक बड़ा चक्कर लगाकर तुम्हारे पास वापिस आ जाती है, शायद तबतक तुम उसे भूल चुके हो। जिन लोगों में एक तरह का आवेश होता है, जो कुछ चीज चाहते हैं—उनमें से वह एक छोटी-सी सत्ता के रूप में बाहर जाता है मानों परिवेश में एक छोटी-सी लौ हो। इस छोटी सत्ता की अपनी नियति होती है। वह संसार में घूमती-फिरती है, शायद चीजें उसे इधर-से-उधर उछालती हैं। तुम उसे भूल चुकते हो। लेकिन वह नहीं भूलेगी कि उसे अमुक परिणाम लाना है ... कई-कई दिनों तक तुम अपने-आपसे कहते हो: "ओह! मैं उस स्थान तक—उदाहरण के लिये, जापान तक, जाने के लिये कितना इच्छुक हूं। मैं इतनी सारी चीजें देखना चाहूंगा।" और तुम्हारी इच्छा तुम्हारे अंदर से बाहर निकल पड़ती है। लेकिन इच्छाएं भगोड़ी होती हैं, तुम उसे पूरी तरह भूल गये हो, जिसे तुमने इतनी शक्ति के साथ बाहर फेंका था। किसी और चीज के बारे में सोचने के लिये तुम्हारे पास बहुत-से कारण हैं। दस वर्ष या उससे भी अधिक के बाद, कम भी संभव है, वह तुम्हारे पास तुरत परोसी हुई गरम रसोई की तरह वापिस आती है। हां, भली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांति सजे हुए गरम भोजन की तरह। तुम कहते हो : "मुझे अब इसमें रस नहीं है।" दस-बीस वर्ष बाद तुम्हें उसमें रुचि नहीं रहती। यह एक छोटी-सी रचना थी जो बाहर गयी और उसने भरसक अपना काम किया ...। यह असंभव है कि इच्छाएं तो हों पर वे पूरी न हों, चाहे कोई छोटी-सी इच्छा ही क्यों न हो, रचना जो कर सकती थी कर चुकी, उसने काफी कष्ट उठाया, उसने बड़ी मेहनत की और अब बरसों के बाद लौटी है। वह एक नौकर की तरह है जिसे तुमने कहीं भेजा था, जिसने अपना भरसक काम किया है। जब वह लौटता है तो तुम कहते हो : "यह तुमने क्या किया है ?"—"लेकिन, मालिक, आप ही तो चाहते थे।"

यह नहीं हो सकता कि तुम कोई सशक्त विचार बनाओ और वह एक छोटे-से गुब्बारे की तरह तुम्हारे अंदर से बाहर न जाये। हमारे यहां कुछ कहानियां हैं जो अविश्वास करने लायक नहीं हैं। जैसे एक कंजूस की कहानी है जो अपने धन के सिवाय किसी चीज के बारे में न सोचता था। उसने अपनी जमा-जता कहीं छिपा रखी थी और हमेशा उसे देखने के लिये जाया करता था। अपनी मौत के बाद भी वह भूत के रूप में आकर (अर्थात्, उसका प्राण पुरुष) अपने धन की रखवाली करता था। कोई भी आदमी विपत्ति में पड़े बिना उस जगह के पास न फटक सकता था। यह ऐसा ही होता है। अगर तुमने किसी चीज के लिये काम किया है तो वह जरूर प्राप्त होगी। वह तुम्हारी मौत के बाद भी प्राप्त हो सकती है। हां, जब तुम्हारे शरीर का अस्तित्व नहीं रहता तब भी, तुम्हारे स्पंदनों में से किसी का अंत नहीं आता। वे कहीं-न-कहीं सिद्ध होते हैं। बुद्ध ने यही कहा था : स्पंदन जीते रहते हैं स्थायी बनने के लिये। वे संक्रामक होते हैं। वे दूसरों के अंदर बने रहते हैं, औरों के अंदर चले जाते हैं और हर एक उनमें कुछ जोड़ देता है।

८ अप्रैल, १९५३

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५, पृ० १६-१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा योग

चारों ओर लोग एक बहुत बड़े परिवर्तन की आशा कर रहे हैं। लेकिन यह परिवर्तन कैसा होगा? किस प्रकार का होगा?

यह महान् परिवर्तन होगा पृथ्वी पर एक नयी जाति का प्रादुर्भाव, एक ऐसी जाति का जो मनुष्य के लिये वैसी ही होगी जैसा मनुष्य पशु के लिये है। शायद उस नयी जाति और वर्तमान मानव के बीच और भी ज्यादा फर्क हो। वस्तुतः यह जाति धरती पर प्रकट होने के लिये तैयार है। वह आधार तैयार कर रही है। वह सूक्ष्म भौतिक जगत् में तो आ ही चुकी है और वहां से अपने-आपको भौतिक रूप देने की तैयारी कर रही है, साथ ही वह मनुष्य पर भी क्रिया कर रही है। वे सभी जो इस योग्य हैं, जो उस प्रभाव को ग्रहण कर सकते हैं वे उससे प्रबोध और प्रकाश पा रहे हैं। इस जाति का आना अवश्यम्भावी है। यह परम प्रभु का आदेश है।

*

आध्यात्मिक मार्ग पर पहली जरूरी चीज है अभीप्सा। हम आध्यात्मिक जीवन का दरवाजा तभी खटखटाते हैं जब हमारे अंदर अभीप्सा हो। योग के कठिन मार्ग पर आगे चलनेवाली चीजें हैं भगवान् के लिये अभीप्सा, जिज्ञासु की इच्छा, अंतरात्मा की लालसा।

अभीप्सा करने का अर्थ है किसी उच्चतर चीज या उच्चतम भगवान् के लिये लालसा करना। इस अभीप्सा की प्रकृति इस बात पर निर्भर है कि वह कहां से, चेतना के किस स्तर से आती है।

वह मानसिक अभीप्सा हो सकती है, वह प्राणिक अभीप्सा, सत्ता के भावमय भाग की किसी सत्यतर और अधिक स्थिर वस्तु के लिये अभीप्सा हो सकती है। वह भौतिक अभीप्सा भी हो सकती है—सुन्दरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पूर्णता के लिये, स्थिरता और अमरता के लिये अभीप्सा।

और वह चैत्य अभीप्सा हो सकती है, अंतर्तम आत्मा की इच्छा हो सकती है जो अपने-आपको प्रकट करना चाहती है। सचमुच दूसरी अभीप्साएं इस अंतर्तम अभीप्सा के बिम्ब की तरह होती हैं। यही है जो हमें पार लगा सकती, औरों में सामंजस्य ला सकती है और उन सबका समन्वय कर सकती है। समन्वय में भी अलग-अलग कोटियां हो सकती हैं। लेकिन सब मिलाकर चैत्य पुरुष ही मार्गदर्शक, सच्ची शक्ति और नेता होता है।

*

हमारे योग में काम साधना का अनिवार्य अंग है। सचमुच तो जीवन का अर्थ ही है कर्म, उसके बिना रहा ही नहीं जा सकता। जब तुम सचेतन रूप से अपना कर्म भगवान् को अर्पण करो, जब तुम भगवान् की सेवा के रूप में कर्म करो तो कर्म का रूप ही बदल जाता है, वह भगवान् के प्रति निवेदन बन जाता है। तब स्वयं कर्म महत्त्वपूर्ण हो उठता है। इसका महत्त्व नहीं रहता कि तुम कौन-सा काम कर रहे हो। कर्म के प्रति तुम्हारी वृत्ति, तुम्हारा भाव, तुम्हारी चेतना की अवस्था, तुम्हारे कर्म करने का तरीका, अपने काम को पूर्ण बनाने के लिये तुम्हारा प्रयास—ये चीजें महत्त्वपूर्ण होती हैं।

और दो प्रकार के कर्म हो सकते हैं। आरंभ में तुम्हारे पास जो काम आ जाये, तुम उसे भगवान् के लिये करो, तुम इस काम और उस काम में कोई भेद न करो, बस गीता के बताये तरीके से अहंकार के बिना, अनासक्त, समर्पण-भाव से किये जाओ।

लेकिन एक और काम भी हो सकता है जो तुम्हारी सत्ता की अभिव्यक्ति हो, जो तुम्हारी नियति है, तुम्हारे जीवन का लक्ष्य है। जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य तुम्हारी अंतरात्मा की मांग द्वारा आता है वही तुम्हारी आंतरिक सत्ता की सच्ची अभिव्यक्ति है। हो सकता है कि वह, तुम जो कर रहे हो उससे बिलकुल भिन्न हो। गणितज्ञ कवि के रूप में खिल सकता है। स्वप्नसेवी कवि कठोर कर्मठ व्यक्ति बन सकता है। ये विरल उदाहरण नहीं हैं। आदमी पहले प्रकार से आरंभ करता है और दूसरे में आ पहुंचता है।

—नलिनीकांत गुप्त

अहंकार पर विजय पाना

मानव जीवन में सभी कठिनाइयों, सभी विसंगतियों, सभी नैतिक कष्टों का कारण है हर एक के अंदर अहंकार की अपनी कामनाओं, अपनी पसंदों और नापसंदों की उपस्थिति। किसी निष्काम कार्य में भी, जो दूसरों की सहायता के लिये होता है, उसमें भी जबतक तुम अहंकार और उसकी मांगों पर विजय पाना न सीख लो, जबतक तुम उसे एक कोने में चुपचाप और शांत रहने के लिये बाधित न कर सको, अहंकार हर उस चीज के विरुद्ध क्रिया करता है जो उसे पसंद न हो, एक आंतरिक तूफान खड़ा करता है जो सतह पर उठ जाता है और सारा काम बिगाड़ देता है।

अहंकार पर विजय पाने का यह काम लंबा, धीमा और कठिन है; यह सतत सतर्क रहने तथा अविच्छिन्न प्रयास की मांग करता है। यह प्रयास कुछ लोगों के लिये ज्यादा आसान और कुछ के लिये ज्यादा कठिन होता है।

हम यहां आश्रम में श्रीअरविन्द के ज्ञान और उनकी शक्ति की सहायता से एक साथ मिलकर एक ऐसे समाज को चरितार्थ करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयास में हैं जो अधिक सामंजस्यपूर्ण, अधिक ऐक्यपूर्ण, और परिणामतः जीवन में अधिक प्रभावकारी और समर्थ हो।

जबतक मैं भौतिक रूप से तुम सबके बीच उपस्थित रहती थी, मेरी उपस्थिति अहंकार पर प्रभुत्व पाने में तुम्हारी सहायता करती थी, अतः मेरे लिये व्यक्तिगत रूप से तुमसे बहुधा इस विषय में कुछ कहना जरूरी न था।

लेकिन अब इस प्रयास को हर व्यक्ति के जीवन का आधार बनना चाहिये। विशेषकर उनके जीवन का जो जिम्मेदार स्थिति में हैं और जिन्हें औरों की देखभाल करनी होती है। नेताओं को हमेशा उदाहरण सामने रखना चाहिये, नेताओं को हमेशा उन गुणों का अभ्यास करना चाहिये जिनकी वे उन लोगों से मांग करते हैं जो उनकी देख-रेख में हैं; उन्हें समझदार, धीर, सहनशील सहानुभूति, ऊष्मा और मैत्रीपूर्ण सद्भावना से भरा होना चाहिये। ये चीजें अहंकार के कारण या अपने लिये मित्र बटोरने के लिये नहीं, अपितु औरों को समझने और उनकी सहायता करने की उदारता के कारण होनी चाहियें।

सच्चा नेता होने के लिये अपने-आपको, अपनी चाह और पसंद को भूल जाना अनिवार्य है।

यही चीज है जिसकी मैं अब तुमसे मांग कर रही हूं, ताकि तुम अपनी जिम्मेदारियों का उस तरह सामना कर सको जैसे करना चाहिये। और तब तुम देखोगे कि जहां तुम अनबन और फूट देखा करते थे, वे गायब हो गयी हैं और उनकी जगह सामंजस्य, शांति और आनंद ने ले ली है।

तुम्हें मालूम है कि मैं तुमसे प्रेम करती हूं और तुम्हें सहारा देने, सहायता देने और रास्ता दिखाने के लिये सदा तुम्हारे साथ हूं।

आशीर्वाद।

२६ अगस्त, १९६९ —श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान और प्रगति

ध्यान में बिताये गये घंटे आध्यात्मिक प्रगति का प्रमाण नहीं हैं। आध्यात्मिक प्रगति का प्रमाण तो तब होगा जब यह अवस्था आ जाये कि ध्यान करने के लिये तुम्हें किसी प्रकार का प्रयास ही न करना पड़े, ध्यान को रोकने के लिये भले ही प्रयास की आवश्यकता हो। तब ऐसी अवस्था हो जाती है कि ध्यान को रोकना कठिन हो जाता है। भगवान् के बारे में चिंतन को रोकना, साधारण चेतना में नीचे उतरना कठिन हो जाता है। जब भगवान् में एकाग्रता तुम्हारे जीवन की परम आवश्यकता बन जाये, जब तुम उसके बिना रह ही न सको, तुम चाहे किसी काम में क्यों न लगे रहो, जब यह अवस्था स्वाभाविक रूप से रात-दिन बनी रहे—तब समझना चाहिये कि निश्चित रूप से तुम्हारी प्रगति हुई है, तुमने वास्तविक उन्नति की है। चाहे तुम ध्यान लगाकर बैठो या घूमो-फिरो और काम-काज करो, जिस बात की तुमसे अपेक्षा की जाती है वह है चेतना। यही एकमात्र आवश्यकता है—भगवान् के बारे में सदा सचेतन रहना।

परंतु क्या ध्यान में बैठना अनिवार्य संयम नहीं है और क्या इससे भगवान् के साथ अधिक प्रगाढ़ और केंद्रित एकता नहीं आती ?

हो सकता है। परंतु हम केवल संयम की ही खोज नहीं कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि प्रत्येक कर्म करते समय, प्रत्येक क्षण, हमारी समस्त क्रियाओं और प्रत्येक गति में हमारी चेतना भगवान् में केंद्रित रहे। यहां कुछ साधक ऐसे हैं जिनसे ध्यान करने को कहा गया है, किंतु ऐसे साधक भी हैं जिन्हें किसी प्रकार का ध्यान करने को नहीं कहा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि ध्यान न करनेवालों की प्रगति नहीं हो रही। वे भी एक साधना करते हैं, किंतु वह दूसरे प्रकार की साधना है। भक्ति और आंतरिक आत्मोत्सर्ग के भाव के साथ कर्म करना, कार्य करना भी आध्यात्मिक साधना है। अंतिम उद्देश्य यह है कि केवल ध्यान में ही नहीं बल्कि प्रत्येक अवस्था में, जीवन की प्रत्येक क्रिया में भगवान् के साथ सतत एकता का अनुभव किया जाये।

—श्रीमां

'सूर्यालोकित पथ' से

सोसायटी समाचार

नव वर्ष २००२ की अगवानी हमने सवेरे ६ से ६.३० तक आश्रम में ध्यान के साथ की। नये वर्ष के संदेश के फोल्डर में श्रीअरविन्द तथा श्रीमां का २४ अप्रैल १९५० का चित्र छपा जिसके साथ श्रीअरविन्द का यह संदेश भी था—

"जो कुछ तुम माताजी से पाते हो वह मेरी तरफ से भी आता है—उसमें कोई भेद नहीं है। उसी तरह, अगर मैं कुछ देता हूं तो वह माताजी की शक्ति के द्वारा साधक के पास पहुंचता है।"

२१ फरवरी २००२, माताजी की १२४वीं वर्षगांठ पर आश्रम में ध्यान के साथ-साथ श्रीअरविन्द तथा माताजी के कक्ष दर्शनार्थ खोले जायेंगे।

२३ फरवरी से ५ मार्च २००२ तक डॉ० मंगेश नाडकर्णी अंग्रेजी में 'सावित्री अध्ययन सत्र' करेंगे। यह सवेरे ९ से पौने बारह तक सोसायटी के बीच ऑफिस में लगेगा। सत्र निःशुल्क है।

९ तथा १० फरवरी २००२, आंध्र-प्रदेश का सातवां वार्षिक अधिवेशन कोव्वूर में होगा। सभी सदस्य आमंत्रित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी के नारी आयोग दल ने २१, २२ तथा २३ नवम्बर २००१ को 'बीच ऑफिस' में अपना अधिवेशन रखा। 'स्पष्टता की खोज' विषय पर कई महिलाओं ने अपने मत प्रकट किये। सदस्यों की संख्या ६२ थी।

केंद्रों तथा शाखाओं के समाचार

हिन्दीभाषी प्रदेशों की वार्षिक बैठक जयपुर (राजस्थान) में १३ तथा १४ अक्तूबर को हुई। १२ राज्यों से आये १२७ सदस्यों ने इसमें भाग लिया।

डोम्बीवली (मुम्बई) केंद्र ने अपनी पहली जयन्ती २८ अक्तूबर को मनायी। इस केंद्र के सदस्य हर सप्ताह मिलते हैं और इससे बहुत लाभान्वित हो रहे हैं।

धारी (गुजरात) केंद्र ने १४ विद्यालयों के लिये पांच दिनों का शिविर सितम्बर में लगाया। इसमें करीब ५००० शिक्षकों तथा छात्रों ने भाग लिया। इसमें भाषण, प्रश्नोत्तर इत्यादि हुए।

डोडिकप्पा (कर्णाटक) केंद्र ने अक्तूबर के महीने में कई विद्यालयों तथा कॉलेजों में श्रीअरविन्द के १५ अगस्त १९४७ के संदेश संबंधी कई भाषणों का आयोजन किया।

वडोदरा (गुजरात) शाखा ने अपने केंद्र श्रीअरविन्द निवास की ३०वीं जयन्ती मनायी। इस उपलक्ष्य में युवक परिषद् ने 'वैर लावनीर' (भविष्य की ओर) का पहला अंक निकाला। इस अवसर पर भारत के उप-राष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त पधारे थे, केंद्र में स्थायी रूप से चल रही श्रीअरविन्द और माताजी के चित्रों की प्रदर्शनी को उन्होंने खूब सराहा और वे केन्द्र के सुन्दर वातावरण से भी बहुत प्रभावित हुए।

महाराष्ट्र की प्रादेशिक शाखा ने मुम्बई में १ से ३ अक्तूबर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वांगीण शिक्षा पर 'वर्कशॉप' का आयोजन किया। आश्रम के श्रद्धालु रानाडे ने इसका संचालन किया। इसमें करीब ६५० शिक्षकों ने भाग लिया।

अडदा (आंध्र-प्रदेश) केंद्र में कुमारी दीपिका मुखर्जी ने २०, २१ अक्तूबर को एक सेमिनार का आयोजन किया, विषय था—नयी सृष्टि में नारी की भूमिका।

मथुरा (उत्तर-प्रदेश) केंद्र ने श्रीअरविन्द के वाक्यों के संकलन की एक सुंदर पुस्तिका हिन्दी में निकाली है। शीर्षक है, भारत—अतीत से नियति तक।

सोसायटी के ये चार नये केंद्र सितम्बर तथा अक्तूबर के महीने में खुले—चेंगलपेट्टु (तमिलनाडु), भवन्थ-जुगन्ध (गुजरात), गोरटीकीरा (उड़ीसा) तथा बिदार (कर्णाटक) में।

सोसायटी की सदस्यता-दर में कुछ परिवर्तन किया गया है जो पहली मार्च २००२ से लागू होगा।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा......... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REVISION OF THE SOCIETY'S MEMBERSHIP FEES

With effect from 1st March 2002

For Members in India

Membership Category		*Revised Rates*
Member (without Magazine)		
For one year	...	Rs. 24
Member with Magazine		
For one year	...	Rs. 100
For three years	...	Rs. 285
For five years	...	Rs. 475
For ten years	...	Rs. 950
Donor Member		
For 25 years	...	Rs. 2,250
Contributing Member		
For one year	...	Rs. 300
Contributing Donor Member		
For 25 years	...	Rs. 10,000

(For the existing members the revised rates will be applicable at the time of renewals.)

For Members Outside India

The membership fees remain unchanged for members outside India. (U.S. $ 20 for magazine by air-mail and U.S. $ 10 for magazine by sea-mail, for one year.)

For the Subscribers of the Magazine Only

For the subscribers of the magazine who are not members of the Society, the revised rates will be Rs. 100, 285, 475 and 950 for one, three, five and ten years respectively. If any subscriber desires to become a member of the Society at the time of renewal, he should ask us for a membership application form.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

विशिष्ट काल में ऐसी विशेष क्रिया-धाराएं होती हैं जिनमें दिव्य शक्ति समस्त मानव गणनाओं को चकनाचूर करती हुई, सावधान राजनेता की बुद्धिमानी और राजनीतिज्ञ की चालाकी का मजाक उड़ाती हुई अपने-आपको अभिव्यक्त करती है। वह वैज्ञानिक विश्लेषक की भविष्यवाणी को झूठा ठहराती है। वह इतनी तीव्रता और ऐसे भीषण वेग से आगे बढ़ती है कि स्पष्ट रूप से मानव शक्ति से अधिक उच्च मालूम होती है। उस गतिधारा के कारणों को ढूंढ़ने का बाद में बुद्धिमान् मनुष्य प्रयास करता है, और उन शक्तियों का भेद खोलना चाहता है जिनके कारण वह संभव हुआ किंतु वह इस बार विमूढ़ बन जाता है, उसकी बुद्धिमत्ता हर कदम पर झूठी ठहरती है और विज्ञान उसकी कोई सहायता नहीं कर पाता। ऐसे समय हम कहते हैं कि इस गति-धारा में भगवान् उपस्थित हैं। वे उसके नेता हैं और वह सफल होकर ही रहेगी चाहे मनुष्य के लिये उसकी सफलता के साधनों को देखना असंभव हो।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

कौन अधिक सुसंस्कृत है . . . ?

भारत को समझना कठिन है, वह सचमुच एक पहेली है। क्या उसे आधुनिक कह सकते हैं ? हां, क्यों नहीं ? हमारे यहां मुम्बई, कोलकाता और चिन्नैई जैसे महानगर हैं जहां संसार की प्रायः हर चीज मिल जाती है। आधुनिकतम फैशन, पोशाक, विदेशी भोजन जैसे, चीनी भोजन, मलेशिया या यूरोप, अमरीका का भोजन—सब प्रस्तुत हैं। इतना ही नहीं, हमने तकनीकी क्षेत्र में नाम कमाया है। वातानुकूलित मकान, दूरदर्शन, कार और सिनेमा; ये सब तो शहरों में खूब दिखलायी देते हैं।

छोटे-छोटे गांवों में भी सिनेमा की कृपा से कृषक कुछ-कुछ आधुनिक बन रहा है। कई गांवों में वह साइकिल की सवारी कर खेत पर पहुंचता है और हल चलाते समय 'कैसेट प्लेयर' लटकाये गाने सुनता है; ये सब बाह्य आभूषण हैं। उसका सामाजिक जीवन वही पुरातन-प्रेमी रहा है। गांववालों के लिये अभी तक पंचायत सिर आंखों पर है। उनका बौद्धिक स्तर बदला नहीं है। उन्हें हम आधुनिक कहेंगे ? वे गांव किस काल-सीमा में निवास करते हैं ?

उसके बाद भारत के जंगलवासी, जिन्हें हम आदिवासी कहते हैं, उनकी संख्या भी कम नहीं ! वे डॉक्टर के पास जाते नहीं, अपनी जड़ी-बूटियों से वे काफी स्वस्थ रहते हैं। वे किस काल-सीमा के निवासी माने जायेंगे ? उन्नीसवीं सदी के ? उनका भी अपना ही सामाजिक जीवन होता है जिसमें अविवाहित युवक, युवतियों के लिये विशेष झोंपड़ियां होती हैं जहां वे मिलते-जुलते हैं और फिर पसंद करते हैं अपने जीवन साथी को ! सदियों से चले आये सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज अब भी चलते रहते हैं। उनकी काल-सीमा कहां है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सबको मात करनेवाली एक घटना पढ़कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ओडिसा के जंगलों में कई आदिवासी रहते हैं। इन जंगलों के लोगों की सहायता करने के लिये अनेक सहृदय विदेश-निवासी भारतीय वहां जाते हैं। उनकी एक संस्था भी है जिसकी देखभाल एक सेवाव्रती सज्जन करते हैं। एक बार वे घने जंगल में जाकर, वहां के लोगों से बातचीत करके, उनकी आवश्यकता जानना चाहते थे। उन्होंने वहां की बोली से परिचित एक व्यक्ति को अपने साथ ले लिया। रेलगाड़ी से सफर करते हुए उन्होंने कई आदिवासी स्त्रियों को देखा। चटक रंगों की साड़ी में काले केशों को फूलों से सजाकर वे स्त्रियां बड़ी अच्छी लग रही थीं। किसी छोटे-से स्टेशन पर गाड़ी रुकती तो वे सुखद आश्चर्य से देखते कि वे शांति से पंक्ति में फल-फूल लिये गाड़ी में चढ़ जातीं, न शोर-शराबा न धक्का-मुक्की! रेलगाड़ी छोड़कर वे कार से घने जंगल की ओर चले। कुछ दूर चलने के बाद 'गाइड' ने कहा कि आगे रास्ता इतना बीहड़ है कि पैदल चलने के सिवा कोई चारा नहीं! दो मील चलने के बाद वे कालाहांडी पहुंचे। वह छोटा-सा गांव था। वहां के लोग कहते थे कि बहुत समय पहले उनके राजा थे। वे ही उनके सर्वेसर्वा थे। यहांतक कि अब भी वे अनाथ बच्चे को कलक्टर के दफ्तर में बिठाकर चले आते हैं। रास्ते में उन्होंने एक वृद्धा को देखा किंतु आश्चर्य! उसके बाल एकदम काले! एक भी सफेद बाल न था। पता नहीं ये लोग क्या खाते होंगे या क्या करते होंगे कि उनके बाल काले ही रहते थे। थोड़ा आगे चलकर देखा कि गांववाले दल बांधकर रहते हैं। उनके सामाजिक जीवन में नियम वगैरह नहीं के बराबर हैं। वे गांव के सरदार के पास गये। लोग उसे बूढ़ा कहते थे किंतु उसका शरीर स्वस्थ था, बुढ़ापे का कोई चिह्न उसके शरीर पर न था। बातें करते-करते शहर से आये हुए सज्जन ने पूछा—"बाबा, हमारे राष्ट्र पर कौन हुकूमत करता है?" उनके अज्ञान पर हंसते हुए सरदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला, "तुम्हें मालूम नहीं ? कम्पनी सरकार का राज चल रहा है।" अब हमारे मुलाकाती के चौंकने की बारी थी, कम्पनी सरकार मतलब 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ! वे यह भी समझ गये कि सरदार के लिये राष्ट्र का अर्थ था कालाहांडी ! इस गांव को पता ही न था कि काल-क्रम कितना आगे निकल चुका है ! अब मुलाकाती ने पांच रुपये का नोट, कुछ सिक्के सरदार को दिखाये, वे केवल हंसे, "यह केवल कागज का टुकड़ा है। इसे देखकर कोई कैसे कह सकता है कि किसकी हुकूमत चल रही है ? सच बात तो यह है कि अब "गोरीवाली रानी" का राज्य है।" मुलाकाती मुस्कुराया, सरदार सोचते थे कि अभी तक रानी विक्टोरिया का राज्य चल रहा है। बस, सरदार की जानकारी उतनी ही थी !

मुलाकाती ने सरदार को समझाया कि उस कागज के टुकड़े से बहुत-सी चीजें खरीद सकते हैं; जैसे कपड़े, साड़ियां, नमक, माचिस, मसाले इत्यादि। उसकी बात सुनकर सरदार सहानुभूति से हंसे, फिर उत्तेजित होकर बोले, "तो इस कागज के लिये लोग झगड़ते हैं, हमारे पूर्वजों की भूमि को छोड़कर चले जाते हैं ? इन कागज के टुकड़ों के बिना क्या हमने अपनी जिन्दगी अच्छी तरह नहीं बितायी ? अपने पूर्वजों की तरह हम भी मजे में रहे। हम भगवान् के बालक हैं और हम मजे से जी रहे हैं। यह भूमि भगवान् की है, और कोई उसका मालिक नहीं है। हमने न कोई नदी पैदा की, न कोई पर्वत-पहाड़ी बनायी। पवन हमारी बात थोड़े ही सुनता है और वर्षा हमसे पूछकर थोड़े ही बरसती है ! ये सब भगवान् के उपहार हैं ! मैं समझ नहीं पाता कि हम किसी चीज को कैसे खरीद या बेच सकते हैं। जब कुछ भी हमारी सम्पत्ति नहीं है तो लेन-देन कैसे हो सकता है ? तुम्हारा यह कागज का टुकड़ा हमारी जिन्दगी को उलट-पुलट देगा।" इस अप्रत्याशित वक्तव्य के आगे हम हतप्रभ रह जाते हैं। हम राजनीतिक दलों को जानते हैं, बिल गेट्स और बिल क्लिंटन में फर्क जानते हैं और हमें लगता है कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस जंगलवासी से अधिक बुद्धिमान् हैं किंतु उसके इस वक्तव्य का कि भूमि का स्वामी कोई नहीं है, कि नदी को हम पैदा नहीं कर सकते, कि पहाड़ और हवा पर हमारा कोई अनुशासन नहीं है—इनका हमारे पास कोई उत्तर है ?

कौन अधिक सुसंस्कृत है कालाहांडी के जंगल का निवासी या हम जो बिजली, सिनेमा, इंटरनेट वगैरह को जानते हैं ?

काश, हम उस ग्रामवासी की श्रद्धा और सरलता अपना कर अधिक पूर्ण बन पाते !

तो कई काल-सीमाओं में निवास करते भारत को एक करना भगीरथ कार्य है। कोई अवश्य इसे कर दिखायेगा।

—अनुबेन

ऐसा लगता है कि हर रोज चीजें ज्यादा खराब होती जाती हैं। वास्तव में हम पुराने सड़ते हुए जगत् से ज्यादा-से-ज्यादा निराश होते जाते हैं और हमें अधिकाधिक विश्वास होता जाता है कि इन्हीं घिसे-पिटे मार्गों के बाहर जीवन के एक नये केंद्र की स्थापना की जाये जिसमें एक नूतन और सत्यतर प्रकाश अभिव्यक्त हो सके, एक ऐसा नवीनतम जगत् जो अब स्वार्थपूर्ण प्रतियोगिताओं और अहंकारपूर्ण संघर्ष पर नहीं बल्कि व्यापक और उत्सुकता-भरे प्रयासों पर आधारित हो, जो व्यापक कल्पना, ज्ञान और सबकी प्रगति पर आधारित हो—एक ऐसा समाज हो जो धन या भौतिक शक्ति की लिप्सा पर नहीं, आध्यात्मिक अभीप्सा पर आधारित हो।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषा से पहले का अंधकार

तुम्हारी कठिनाई तीव्रता की पराकाष्ठा पर इसलिये पहुंच गयी है क्योंकि योग निश्चेतना की उस तली से जा टकराया है जो व्यक्ति में और साथ ही जगत् में भी उस 'परम' और 'भागवत कार्य' का प्रतिरोध करने का मूलभूत आधार है जो भागवत कार्य हमें विजय की ओर ले जाने के लिये उद्यत है। ये सभी कठिनाइयां आश्रम के साथ-साथ बाहरी जगत् में भी सामान्य हैं। शंका, निरुत्साह, श्रद्धा में कमी या ह्रास, आदर्श के लिये प्राणिक उत्साह की कमी, असमंजस तथा भविष्य के बारे में निराशा आदि इस कठिनाई के सामान्य लक्षण हैं। बाहरी जगत् में इससे भी बुरे लक्षण दिखायी देते हैं जैसे—कटुता की वृद्धि, किसी भी चीज के बारे में विश्वास करने की अस्वीकृति, सचाई की कमी, बहुत अधिक भ्रष्टाचार, उच्चतर चीजों को लात मारकर, भोजन, रुपये-पैसों, सुख-सुविधाओं और भोग-विलास में रमे रहना और संसार में बुरी-से-बुरी चीजों की प्रत्याशा रखना। यह सब चाहे जितना तीव्र क्यों न हो फिर भी उन लोगों के लिये अस्थायी है जो वैश्व-ऊर्जा और आत्मा की क्रिया के बारे में कुछ जानते हैं। इस बुरी-से-बुरी चीज के घटने के आसार तो मैंने स्वयं ही देख लिये थे। मुझे मालूम है कि अंधकार के पीछे किस चीज की तैयारी हो रही है और मैं उषा के पहले चिह्नों को देख और अनुभव कर सकता हूं। जो भगवान् को पाना चाहते हैं उन्हें अपनी खोज में स्थिर और दृढ़ाग्रही होना होगा, कुछ समय के बाद अंधियारा धूमिल हो कर विलीन हो जायेगा और 'प्रकाश' का आविर्भाव होगा।

९ अप्रैल १९४७

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप्तियों की माता का स्तवन

(१)

अंधेरी गुफाओं में आते हुए प्रकाश की न्याई एक आंतरिक पूर्णता आयी है। वह जीवन की बहुविध तंत्रियों को भरती, प्रकाशित करती और स्पंदित करती है। उसने भूतकाल की भूली-बिसरी उपलब्धियों के साथ संपर्क पा लिया है ताकि मैं वर्तमान की बदलती हुई रचनाओं के आधार पर भविष्य की नयी प्राप्तियों के साथ नये नाते जोड़ सकूं। जीवन-लहरियां, उच्चतर स्वर्ग से कुत्सित और अंधकारमय को ज्योतिर्मय और सत्य में बदलने के लिये, कुरूप और अनुचित को सुन्दर और उचित में बदलने के लिये नीचे उतरती हुई प्रकाश की किरणों से मिलने के लिये ऊपर उठ रही हैं।

हे दीप्तियों की मां, तुम मेरे मन के संकीर्ण क्षितिजों में उदित हुई हो। तुमने उसकी अथाह कठोरताओं में से, उसके घिरे हुए अंतरालों के बीच हृदय के जैसी चीज बनायी है जो शाश्वत जीवन जियेगी। तुमने मन के पदार्थहीन ध्रुव क्षेत्रों के अंदर एक जीवन्त और ऊष्माभरा कक्ष प्रकट किया है जिसमें मैं चैन से आराम कर सकता हूं और तुम्हारे अंदर शरण पा सकता हूं।

गतिशील शक्तियों का निचला जाल बाकी है। लेकिन मैं उसके बीच भी तुम्हारी उपस्थिति का अनुभव करता हूं। गतिशील शक्तियों का उच्चतर जाल बना हुआ है और यहां भी तुमने जीवन की ऐसी ऊष्मा बिखेरते हुए पदार्पण किया है जो वहां पहले न थी। तुमने मंद धूसर दीप्ति को जीवित-जाग्रत् जलों की प्रभा में बदल दिया है। तुम्हारी सक्रिय और जीवित-जाग्रत् उपस्थिति हर जगह है। तुमने मेरी अभीप्सा के शब्दों पर, अपनी सर्वव्यापकता के लिये मेरी मांग की आग पर ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है। मैंने अपने अज्ञान में जो कुछ मांगा था तुमने उससे ज्यादा प्रकट किया है। जब मैं सत्य और विधान के साथ रहूं तो तुम मेरे साथ एक और घनिष्ठ रहती हो, और जब मैं भ्रांति और मिथ्यात्व में होऊं तो तुम मुझसे दूर और परे रहती हो।

जब मेरे चारों ओर अंधेरी छायाएं न हों, जब तुम देखो कि मैं अपनी सत्ता के हर भाग में पाखंड और दिखावे से खाली हो गया हूं, जब तुम मेरे शरीर के प्रत्येक कोषाणु को अपने लिये शाश्वत गृह या शाश्वत मंदिर के रूप में देखो, जब तुम मुझे अपने साथ तादात्म्य होकर भी तुम्हारी पूजा करते देखो, जब तुम ज्ञान के ठोस सोने को भक्ति के बहते सजीव जलों में पिघला दो, जब तुम मेरी धरती को तोड़ करके ऊर्जाओं को मुक्त करो, जब तुम मेरे घमण्ड को अपने हाथ में शक्ति और मेरे अज्ञान को प्रकाश में, मेरी संकीर्णता को विशालता में, मेरी स्वार्थपरता की शक्तियों को एक केंद्र पर संचित करने में, मेरे लोभ को सत्य के पदार्थ को पाने के लिये अथक खोज की क्षमता में, मेरे अहंकार को सच्चे और सचेतन सहायक केंद्र में, मेरे मन को तुम्हारे उतरने के लिये एक मार्ग में, मेरे हृदय को शुद्ध अग्नि और ज्वाला की तुम्हारी वेदी में, मेरे जीवन को तुम्हारे काम में आनेवाले शुद्ध और पारभासी पदार्थ में, मेरे शरीर को तुम्हारा जो कुछ मेरे लिये हो उसे धारण करनेवाले सचेतन पात्र में बदल दो तभी हे दीप्तियों की जननी, इह जीवन और भावी जीवन में मेरे जीवन की सच्चे, उचित और विस्तृत अर्थों में लक्ष्यपूर्ति होगी। मेरे अंदर अभीप्सा जाग रही है! मैं जिन-जिन चीजों के लिये धधक रहा हूं उन्हें मेरे अंदर संपादित कर।

(२)

मेरे अंदर चेतना की ऐसी अवस्था पैदा करो कि मैं तुमसे जो कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनूं वह तुरंत अंतरतम ज्ञान में, अपने अंतःप्रकाश, तादात्म्य की अभिव्यक्ति, आंतरिक और बाह्य की युगपत् अभिज्ञता में बदल जाये। हे मां, वर दे कि मैं तुझसे जो कुछ इकट्ठा करूं वह अंतर की उन बृहत् गहराइयों का हो जो सर्वव्यापी हैं। मैं हर तरह से तुम्हारे साथ एक होऊं ताकि परम आनंद पा सकूं, फिर भी तुमसे अलग रहूं ताकि तुम्हारी ओर भक्ति प्रवाहित कर सकूं। एक और फिर भी भिन्न जैसे जीवन और उसकी गतिविधियां, जैसे गरमी और प्रकाश, जैसे शक्ति और उसकी अभिव्यक्ति, जैसे सच्चा ज्ञान और उसकी संपन्न करनेवाली शक्ति। तुम मुझे जो कुछ प्रदान करो वह मेरे लिये एक निधि न होकर मानों मेरे अपने आत्म-शोध की चीज हो।

मेरी चेतना में से विभाजन को पोंछ डालो ताकि मैं तुम्हें अपने ही अंग के रूप में देख और सुन सकूं। मेरे अंदर की जीवन-शक्तियां तुम्हारे साथ तादात्म्य से आनेवाले ज्ञान, तुम्हारे साथ तादात्म्य से उत्पन्न अंतर्दर्शन और ऐसे श्रवण के लिये अभीप्सा करती हैं जो तादात्म्य से दिशा पाता है—ऐसा तादात्म्य जो स्वयं तुम हो।

वर दे कि मैं तेरे असीम और द्युतिमान देश में तेरे एक भाग की अभिव्यक्ति बनूं।

(३)

मेरी अभीप्सा की अग्नि को धधकाओ, मेरे अंदर समर्पण को तुरंत और हर प्रकार से संभव बनाओ, मेरे उद्घाटन और मेरी ग्रहणशीलता को विस्तृत बनाओ, उन आवरणों को हटा दो जो मेरे अंतस्तल की गहराइयों में चैत्य की क्रियाओं में विलंब करते हैं। हे मां, मेरे पास जो कुछ है और मेरे पास जो नहीं है उसे मुझसे ले ले . . .

मेरे शरीर के कोषाणु, मेरे स्नायविक आवरण के तंतु, मेरे प्राण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचों धाराएं, मेरे हृदय की अग्नियां, मेरे मन की शक्तियां—तुम्हारे प्रति बिना शर्त समर्पण करती हैं, हे दीप्तियों की मां, ताकि जीवन में मिथ्यात्व का, चेतना में विभाजन, जीवित जलों में मृत्यु, स्नायविक कुण्डली में सामंजस्य का अभाव और दुःख-दैन्य तथा शरीर में रोग न रहें...

तेरी वाणी मुझे उत्तर देती है :

भौतिक में समर्पण की पांचगुनी शक्तियों द्वारा, तुम्हारे केंद्र के पीछे जो चैत्य प्रेरणा है उसकी निश्चल तीव्रता द्वारा, हमेशा, हमेशा अपने अंदर निहित आनंद और अपनी चेतना में छिपी समृद्धियों को बढ़ाओ। सबसे पहले उसके बारे में सचेतन होओ जो मैंने तुम्हारे अंदर चाहा है और फिर वह बनो जिसके बारे में तुम सचेतन हुए हो। तुरंत, सदा के लिये यह जान लो कि तुम्हारा सर्वस्व मेरे अंदर है।

—श्रीअरविन्द
'मानव से अतिमानव की ओर' से
पृ०२०४-२०६

साधुओं का सच्चा स्वरूप है सद्भावना। लोहा जबतक आग में रहता है तबतक लाल रहता है। आग से हटाते ही काला पड़ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य जबतक भगवान् के संपर्क में रहता है तबतक दिव्य बना रहता है।

*

अगर व्यक्ति यह विश्वास प्राप्त कर ले कि सब कुछ भगवान् की इच्छा से ही होता है, कि वह भगवान् के हाथों में एक औजार से बढ़कर कुछ नहीं है, तो इसी जीवन में वह मुक्त हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

मार्च

१. तुम मुझसे सहायता की आशा कैसे करते हो जब तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा ही नहीं है!

२. मेरी सहायता पूरी तरह से है; तुम्हें बस उसकी ओर पूरे भरोसे के साथ खुलना होगा और तुम उसे ग्रहण कर लोगे।

३. बंद दरवाजों को खोलने के लिये दोष स्वीकार करने से अच्छा कुछ नहीं है। जो चीज मुझसे कहने में तुम्हें सबसे अधिक डर लगता है वह मुझे बतलाओ तो तुम तुरंत अपने-आपको मेरे अधिक निकट पाओगे।

४. किसी चीज से न डरो, भगवान् हमेशा हर सच्ची अभीप्सा का उत्तर देते हैं और उन्हें पूरे हृदय के साथ जो कुछ दिया जाये उसे लेने से कभी इंकार नहीं करते। इस तरह तुम इस निश्चिति की शांति में रह सकते हो कि तुम्हें भगवान् ने स्वीकार कर लिया है।

५. हर एक से बस उतनी ही मांग की जाती है जितना उसके पास है, जितना वह है, उससे अधिक नहीं पर उससे कम भी नहीं।

६. अपने अंदर रिक्तता पैदा करने की तुम्हारी चाह उचित है; क्योंकि तुम शीघ्र ही देख लोगे कि इस रिक्तता की गहराई में भगवान् हैं।

७. मेरे और तुम्हारे बीच जो छायाएं आती और मुझे तुम्हारी दृष्टि से छिपाती हैं उन्हें निकाल बाहर करो। निश्चिति के शुद्ध प्रकाश में ही तुम मेरी उपस्थिति के बारे में सचेतन हो सकते हो।

८. तुम जितने अधिक दुःखी होओगे और रोना-धोना करोगे उतने ही अधिक मुझसे दूर होते जाओगे। भगवान् दुःखी नहीं हैं और भगवान् को पाने के लिये तुम्हें समस्त दुःख और समस्त भावुक दुर्बलता को अपने से बहुत दूर फेंक देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९. हम पथ पर जितना आगे बढ़ते हैं और यह पाते हैं कि जो करना बाकी है उसकी तुलना में हमने कुछ भी नहीं किया है, उतने ही अधिक विनम्र हो जाते हैं।

१०. अगर तुम अपना काम पूरी सचाई के साथ, भगवान् के चरणों में अर्पित भेंट के रूप में करो तो काम उतना ही लाभ पहुंचायेगा जितना ध्यान।

११. तुम्हें आशा है, यह ठीक है, आशा ही सुखद भविष्यों का निर्माण करती है।

१२. तुम्हारे अंदर भय बिलकुल न होना चाहिये, विजय उसी की होती है जो भयहीन है; तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करने और तुम्हारी रक्षा करने के लिये मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं।

१३. दुःख मत करो। एक ही लड़ाई को बार-बार जीतना होता है, विशेष रूप से तब जब लड़ाई विरोधी शक्तियों से लड़ी जा रही हो। इसलिये तुम्हें धैर्य से लैस होना चाहिये और परम विजय पर विश्वास रखना चाहिये।

१४. दूसरे क्या करते और क्या नहीं करते, इसकी आलोचना करने की जगह तुम्हें स्वयं अपने हृदय को शुद्ध करने के लिये काम करना चाहिये।

१५. तुम्हें कभी आशा या श्रद्धा न खोनी चाहिये। कोई चीज असाध्य नहीं है और भगवान् की शक्ति पर कोई हदबंदी नहीं की जा सकती।

१६. तुम्हें केवल शांत विश्वास के साथ डटे रहना चाहिये और प्राण हड़ताल करना भूल जायेगा।

१७. केवल दुर्बल ही शिकायत करते हैं, सबल लोग कभी शिकायत नहीं करते क्योंकि उन्हें ठेस नहीं लगती। इसलिये मैं शिकायतों को बहुत महत्त्व नहीं दिया करती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८. तुम मुझे अपनी भुजाओं में ले लेने दो तब चढ़ना आसान हो जायेगा।
१९. अगर तुम अपनी आंतरिक खुशी को हमेशा बनाये रख सको तो इससे मुझे बहुत खुशी होगी और यह तुम्हें मार्ग पर बहुत सहायता देगी।
२०. तुम शीघ्र ही अपनी सब कठिनाइयों से बाहर निकल आओगे। उच्चतर चेतना की ओर बस एक ही अच्छी छलांग लगाओ, जहां सब समस्याओं का समाधान हो जाता है, और तुम अपनी कठिनाइयों से बाहर हो जाओगे।
२१. यह वर्ष तुम्हारे लिये सब परिस्थितियों में मुस्कुराने की शक्ति लेकर आये। मुस्कान कठिनाइयों पर उसी तरह क्रिया करती है जैसे सूर्य बादलों पर, वह उन्हें तितर-बितर कर देती है।
२२. जब कभी तुम्हें आध्यात्मिक सहायता की जरूरत हो मैं हमेशा तुम्हें वह सहायता देने को तैयार रहती हूं चाहे वह कोई रूप क्यों न धारण करे।
२३. तुम्हें हिम्मत और सच्चाई के साथ डटे रहना चाहिये। तुम्हें एक दिन निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।
२४. काम बहुत तेजी से होगा जब हर एक औरों के दोषों की आलोचना करने की जगह अपने दोषों और त्रुटियों को सुधारने में संलग्न रहेगा।
२५. सच्चा सुख जीवन की बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं रहता। तुम अपनी चैत्य सत्ता को खोजकर और उसके साथ एक होकर ही सच्चा सुख पा सकते हो और उसे सतत बनाये रख सकते हो।
२६. मनुष्य अपने दुःख से, अपनी तुच्छता से, अपनी दुर्बलता से, अपने अज्ञान और अपनी सीमाओं से चिपका रहता है, इसी कारण वह बदल नहीं पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७. ऐसी कोई आदत नहीं है जिसे बदला न जा सके।

२८. पहली शर्त है यह निश्चय करना कि आगे से तुम अपने लिये नहीं, ऐकांतिक रूप से भगवान् के लिये जिओगे।

२९. हर एक के लिये मार्ग के ब्योरे अलग-अलग होते हैं लेकिन सच्चाई और अध्यवसाय सभी के लिये समान रूप से अनिवार्य हैं।

३०. अगर तुम सच्चे और पूरी तरह ईमानदार हो तो मेरी सहायता निश्चित रूप से तुम्हारे साथ होती है और एक दिन तुम उसे जान पाओगे।

३१. जबतक भगवान् के साथ ऐक्य ही वह एकमात्र चीज नहीं होती जिसके लिये तुम जीवित हो तबतक तुम मार्ग पर नहीं हो।

मैं तुम्हारी इस भावना की सराहना करती हूं कि साधक को क्या होना चाहिये और उस दृष्टिकोण से तुम जो कहते हो वह बिलकुल ठीक है। लेकिन यह जानी-मानी बात है कि आश्रम केवल साधकों से ही नहीं बना है। आश्रम एक तरह से जीवन का छोटा प्रतिरूप है जहां साधना करनेवाले अल्पसंख्यक हैं। और अगर मैं केवल उन्हीं लोगों को रखूं जो अपनी साधना में एकदम सच्चे और निष्कपट हैं तो यहां बहुत ही कम रह जायेंगे।

श्रीअरविन्द हमें हमेशा यही याद दिलाते हैं कि भगवान् हर जगह और हर चीज में उपस्थित हैं और वे हमसे कहते हैं कि हम सच्ची करुणा का अभ्यास करें और यह बात बड़े सुन्दर ढंग से उस सूक्ति में कही गयी है जिसका मैं अनुवाद कर रही हूं। "दया-माया के बिना अपना निरीक्षण करो, तब तुम दूसरों के प्रति अधिक दयालु और उदार बन जाओगे।"

—श्रीमां

२६ जनवरी १९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

युद्ध और राजनीति

भारत की स्वाधीनता

१९३८ में श्रीअरविन्द का पैर दुर्घटना के कारण टूट गया था। ठीक उसके एक वर्ष बाद, १९३९ में दूसरा विश्व-युद्ध छिड़ गया और उस युद्ध के साथ भारत भी जुड़ा था। लंबे युद्ध के बाद मित्र-राष्ट्रों की विजय १९४५ में हुई। भारत, जो स्वाधीनता के लिये कई वर्षों से संघर्ष कर रहा था, १९४७ में स्वतंत्र हुआ। श्रीअरविन्द के साथ बिताये हुए बारह वर्षों में यही समय हमारे लिये सबसे उत्तेजक था। उनके कमरे में बैठे-बैठे दो ऐतिहासिक घटनाओं—दूसरा विश्व-युद्ध और भारत की स्वतंत्रता—का श्रीअरविन्द को कदम-कदम पर निरीक्षण करते हुए देखने का विरल अवसर हमें प्राप्त हुआ। इन ऐतिहासिक घटनाओं की धीमी गति या तेज प्रगति को वे निष्पक्ष गंभीरता से देखते रहते। एक ओर यूरोप में सारे संसार के लिये एक भयंकर खतरा था, तो दूसरी ओर भारत के लिये मित्र राष्ट्रों से सहयोग पाकर अपनी स्वाधीनता पाने का सुअवसर भी था। हम मानों श्रीअरविन्द की आशाओं और आशंकाओं के सहभागी बने रहते, उनके पूर्वाभास, भविष्यवाणियों और भावी सूचनाओं के रहस्यों को जान लेते। अपने कार्य की झांकी वे कभी-कभी हमें देते और दिव्य पक्ष की विजय का हमें शांत भाव से आश्वासन दिलाते। इसका मुख्य कारण यह था कि माताजी ने इस युद्ध को अपना युद्ध कहा था।

युद्ध की शुरुआत में हिटलर का सितारा बुलंद था। उसकी सेना कैंची-सा व्यूह बनाकर फ्रांस की ओर बढ़ रही थी। पैरिस का भाग्य मानों एक बाट में कभी ऊपर तो कभी नीचे झूल रहा था। इतना ही नहीं, हिटलर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज—'लुफ्तवाफ'—लंदन के ऊपर आकाश में मंडरा रहे थे, तो उधर रोमेल सेना लेकर उत्तर अफ्रीका को कुचलता हुआ उसपर तूफानी वेग से विजय-कूच कर रहा था। दूसरी ओर हिटलर के विरुद्ध मित्र-राष्ट्रों का यूरोप के ऊपर आक्रमण शुरू हो गया। स्टेलिनग्राड का लोमहर्षक युद्ध अभी शुरू ही हुआ था। हम इन सब विविध युद्ध-नीतियों की गतिविधि के बारे में सांस रोके उस कमरे में बैठे-बैठे सुनते रहते।

हालांकि श्रीअरविन्द जानते थे कि संसार का भावी दांव पर था फिर भी उनकी शांत-स्थिर समता वैसी की वैसी बनी रही। उन्होंने कहा था कि इस समय संसार के आगे सबसे भयानक व्यक्ति है हिटलर। अपने अशुभ और अमंगल लक्ष्य को सिद्ध करने के लिये वह कुछ भी कर सकता है; यहां तक कि सारी मानव संस्कृति का विध्वंस करने से भी वह न हिचकिचायेगा। यह ऐसा ही है जैसा श्रीअरविन्द ने 'सावित्री' में लिखा था, "सदियों ने जिसे खड़ा किया था, उसे मूर्ख घण्टे की कोई सूई नष्ट-भ्रष्ट कर देती है।"

उस समय श्रीअरविन्द के कमरे में जो कहा गया और किया गया था उसका विवरण देना कई दृष्टिकोणों से रहस्योद्घाटक होगा। यह प्रचलित धारणा कि श्रीअरविन्द संसार से विरक्त योगी हैं, वे केवल अपनी साधना में निमग्न रहते हैं; गलत साबित होगी। इस वर्णन को पढ़कर लोग समझ पायेंगे कि संसार के कल्याण के लिये वे कितने व्यस्त रहते थे। युद्ध के बृहत् संघर्ष में वे केवल निष्क्रिय दर्शक न थे। इस नये कुरुक्षेत्र में, जहां सारे संसार के भाग्य का निर्माण होने जा रहा था, वे अपनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ सक्रिय थे। वे पूरी शक्ति से युद्ध का निर्देशन कर, उसे विजय-पथ पर लिये जा रहे थे। यह विवरण श्रीअरविन्द की तीक्ष्ण राजनैतिक अंतर्दृष्टि और सांग्रामिक व्यूह-रचनाओं के विस्तृत ज्ञान पर प्रकाश डालेगा। हालांकि उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक जीवन को १९१० में छोड़ दिया था और वे अर्ध शताब्दी तक एकान्तवास में रहे, फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के आंदोलनों और गतिविधियों के साथ उन्होंने हमेशा बाह्य और आंतरिक माध्यमों के द्वारा संपर्क रखा था। इस तरह की आध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास करना संभवतः बहुत से लोगों के लिये मुश्किल हो या वे इस शक्ति के अस्तित्व से इनकार करें। अगर वे शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार कर भी लें फिर भी उनके गले से यह बात न उतरेगी कि आध्यात्मिक शक्ति पर प्रभुत्व प्राप्त करने के बाद उसका प्रयोग किसी व्यक्तिगत या विश्व कल्याण के लिये किया जा सकता है। किंतु इस सत्य के समर्थन में हमारे पास श्रीअरविन्द के युद्ध के समय उच्चारित वाक्य हैं और हमारी अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियां भी हैं। सच्ची बात तो यह है कि सर्वांगीण योग का लक्ष्य है अतिमानसिक चेतना को नीचे उतार कर उसकी ओजस्वी शक्ति और प्रकाश के द्वारा वर्तमान पार्थिव चेतना को बदलना। आंदोलनों के प्रति श्रीअरविन्द की रुचि का एक उदाहरण है उनकी भारत के स्वाधीनता-संघर्ष के प्रति जीवंत रुचि। यह बात सच है कि उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वाधीनता-आंदोलन का आरंभ किया था जिसके द्वारा भारत अपने स्वाधीनता के जन्मसिद्ध अधिकार के प्रति जाग उठा था। राजनीति से निवृत्त होने के बाद भी वे अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा भारत को स्वाधीनता की सफलता तक ले गये।

ऐसा माना जाता है कि हम आश्रमवासी राजनीति में रस नहीं लेते, फिर भी हम संसार की गतिविधि के प्रति उदासीन न थे। श्रीअरविन्द कहा करते थे कि इन गतिविधियों में हम अत्यधिक रुचि रखते हैं। भारत की स्वाधीनता के दो वर्ष बाद राजनैतिक रंग लिये जो पत्रिका, "मदर इंडिया" मुम्बई से प्रकाशित होती थी उसके संपादक मुम्बई-निवासी एक साधक थे और वे अपने संपादकीय प्रकाशित करने से पहले श्रीअरविन्द के पास उनकी अनुमति के लिये भेजते थे। बंगाल के एक नेता श्रीअरविन्द से मिलने बहुत नियमित रूप से आया करते थे और श्रीअरविन्द उनसे काफी लम्बी बातचीत किया करते थे। वे उन्हें उस समय की परिस्थितियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुकूल सलाह और मार्गदर्शन देते। माताजी का भी मत था कि अपनी चरम कार्यसिद्धि में अतिमानस राजनैतिक प्रशासन का परिवर्तन करके रहेगा, क्योंकि सभी मानवों का हित राष्ट्र के हाथ में रहता है। विश्व-युद्ध के समय बड़े राष्ट्रों के लिये वह युद्ध एक सरल राजनैतिक समस्या न थी। नाज़ी आक्रमण का अर्थ था, "मनहूस गुलामी और बर्बरता का पुनः जागरण जो भारत और सारे संसार के लिये भयावह, प्राणघातक परिस्थिति खड़ी कर रहा था।" माताजी और श्रीअरविन्द जिस नयी जाति के आविर्भाव, नव मानव के आध्यात्मिक क्रम-विकास का प्रारंभ करने और उसे स्थापित करने के लिये आये थे; इस युद्ध ने उस सारी प्रक्रिया के जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा कर दिया था। इसलिये हिटलर के प्रभाव से जर्मनी की विजय का अर्थ होता, न केवल संस्कृति का अंत बल्कि उस महान् संभावना की मृत्यु। इसी अर्थ में इस विश्व युद्ध को मैंने आधुनिक कुरुक्षेत्र कहा है।

हम लौट चलें उस भीषण संकटकालीन १९३८ वर्ष की ओर जब युद्ध के काले बादल उमड़-घुमड़ रहे थे और यूरोप के सिर पर चारों ओर से गर्जनाएं और गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थीं। उस समय वातावरण ऐसा उत्तेजक था कि युद्ध के दिसंबर में ही टूट पड़ने की संभावना दीख रही थी, तब युद्ध नवंबर २३ को हुई श्रीअरविन्द की दुर्घटना के एक या दो सप्ताहों के बाद शुरू हो जाता। एक समय बातचीत में श्रीअरविन्द ने कहा भी था कि उन्होंने उस समय युद्ध को काफी पीछे धकेल दिया था क्योंकि अगर युद्ध उस समय शुरू हो जाता तो वे जिस कार्य को कर रहे थे उसमें बाधाएं आतीं। दुर्घटना का एक कारण संभवतः यह भी था कि जिन दुर्दान्त शक्तियों को कोई मानव शक्ति रोक न पायी थी उन्हें रोकनेवाले दुःसाहसी व्यक्ति के ऊपर उनका प्रकोप उतरा। हिटलर के ऊपर उठने से पहले श्रीअरविन्द ने जर्मनी से उठती हुई काली आसुरिक शक्ति को देखा था जो सारे यूरोप पर छा गयी थी। उन्होंने यह सब हिटकर के पोलैंड के ऊपर आक्रमण से पहले देखा था। हिटलर, जो अपने-आपको नेपोलियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषित कर रहा था, उसे आसुरिक शक्ति ने अपना प्रेतग्रस्त यंत्र बनाकर, उसे कपटी बृहद् आकार देकर वश में कर लिया था। इसीलिये हिटलर के विरुद्ध खड़े मित्र राष्ट्रों की श्रीअरविन्द ने सहायता की और भारत को भी आनेवाले खतरे के बारे में चेतावनी दी थी, किंतु हमारे अंधे बने देशवासियों ने क्रोध से उसे ठुकरा दिया और कई वर्ष बाद उन्हें उसके लिये पश्चात्ताप करना पड़ा। उन्होंने बहुत देर बाद देखा कि श्रीअरविन्द की भविष्यवाणी अक्षरशः सच साबित हुई।

उस समय अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक घटनाओं के विषय में भी हम चर्चा करते थे; जैसे कि सत्ता के लिये हिटलर की विक्षिप्त लालसा, इंग्लैंड का राजनैतिक दिवालियापन, युद्ध में हस्तक्षेप न करने की अमरीकी आत्मघातक नीति, रूस की मैकियावैली-सी चालबाजी—ये सारे विषय श्रीअरविन्द के कमरे में शाब्दिक उछल-कूद मचाते रहते। चेम्बरलेन का हास्यास्पद कुख्यात शांति मिशन, कर्नल बेक का हिटलर के साथ लड़ाकू साक्षात्कार, चेकोस्लोवाकिया के साथ फ्रांस का विश्वासघात—ये घटनाएं हमारे अंदर जोरदार विरोध या सराहना जगातीं। श्रीअरविन्द ध्यान से निरीक्षण करते रहते कि कैसे एक के बाद एक राष्ट्र हिटलर की आसुरिक माया से मंत्र-मुग्ध से उसके पैशाचिक सम्मोहन के सामने झुकते चले जा रहे थे। और तो और, प्रबुद्ध लोग भी हिटलर की घुड़की के विरोध में चूं भी न कर पाते थे। म्यूनिक में चेम्बरलेन और हिटलर की मुलाकात का फोटो देखकर श्रीअरविन्द ने कहा था कि चेम्बरलेन मकड़ी के सामने मक्खी-सा दीख रहा था। उसे हड़पने को मकड़ी तैयार थी—और सचमुच उसको हिटलर ने हड़प लिया। खैर, जर्मन तानाशाह ने मुसोलिनी को तो अपनी जेब में कब का डाल रखा था। केवल कर्नल बेक थे जिन्होंने उसके सामने कुछ पुरुषोचित वीरतापूर्ण व्यक्तित्व बनाये रखा। श्रीअरविन्द ने इस तरह के कई विषयों पर हमारे साथ चर्चा की थी जो "टॉक्स विद श्रीअरविन्द" पुस्तक में प्रकाशित हो चुकी है। वे जब हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ युद्ध की चर्चा करते तो इस तरह करते मानों हम तीव्र बुद्धिवाले राजनीतिज्ञ और जनरल हों, बीच-बीच में वातावरण श्रीअरविन्द के प्रसन्नचित्त परिहास की हंसी से मुखरित हो उठता। इन चर्चाओं में गंभीर जानलेवा से प्रश्न आते तो वे हमारे सामने उनका स्पष्ट चित्र खींच देते, अगर फिर भी हम उन्हें अस्वीकार करते तो वे कभी हमारे ऊपर अपनी राय न लादते। अगर हम उनका तर्क समझ न पाते तो वे धैर्य से अपनी बात फिर से समझाते हुए हमें बताते कि हमने समझने में कहां भूल की है।

उनके सामीप्य के कारण हम असाधारण रूप से पारदर्शक और सुबुद्ध हो गये और समझ पाये कि युद्ध की स्थिति कितनी भयावह है, कि अमानवीय शक्ति संसार को अथाह अंधकार से ढंकने की कोशिश कर रही है और उसे इस अप्रत्याशित अवस्था से केवल दिव्य शक्ति ही उबार सकेगी।

युद्ध के समाचार पाने के लिये हमें केवल समाचार पत्रों का सहारा था क्योंकि आश्रम में उस समय रेडियो न था। इसलिये शहर का एक व्यक्ति रोज युद्ध का बुलेटिन दे जाता था। जब युद्ध पूरे उग्र रूप में चलने लगा तो श्रीअरविन्द के कमरे में रेडियो रखा गया। तब हर घण्टे युद्ध की गतिविधि की खबरें उनके पास आने लगीं। आश्रम का नियम था कि रेडियो न रखा जाये किंतु जब परिस्थिति बदल जाये तो हम उनके नियमों में आध्यात्मिक नमनीयता भी देखते थे। इसी नीति के अनुसार श्रीअरविन्द, जो भारत में अंग्रेजों की सरकार के कट्टर शत्रु थे, वे हिटलर के संसार पर शासन के खतरे के समय मित्र राष्ट्रों के पक्ष में थे हालांकि उसमें अंग्रेज भी थे। किसी व्यक्ति के अनुसार "जो व्यक्ति अंग्रेज साम्राज्य का न केवल असहयोगी था, बल्कि शत्रु था," अब वे ही निमोनियाग्रस्त चर्चिल के स्वास्थ्य-बुलेटिन को रेडियो पर बड़े ध्यान से सुनते थे। ऐसा महसूस हो रहा था कि उन्होंने दिव्य शक्ति द्वारा चर्चिल की स्वास्थ्य-लाभ करने में सहायता की थी।

—नीरदवरण

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयें प्राप्त करते चलो

क्या सद्भावना के स्पंदनों से हम संसार की सहायता कर सकते हैं ?

शुभ कामनाओं से हम बहुत-सी चीजें बदल सकते हैं, पर वह बहुत ही शुद्ध और अमिश्रित सद्भावना होनी चाहिये। यह तो बिलकुल स्पष्ट है कि यदि संसार में एक विचार, एक पूर्ण रूप से शुद्ध प्रार्थना भेजी जाये तो वह अपना काम करती है। लेकिन जब यह पूर्णतः शुद्ध और सच्चा विचार आदमी के दिमाग में से गुजरता है तो शुद्ध कहां रहता है ? वह नीचे की ओर उतरता जाता है। यदि अंतःचेतना और ज्ञान के प्रयत्न से तुम सचमुच अपने अंदर किसी कामना पर विजय पा सको, अर्थात्, उसे विघटित कर सको, उसे जड़ से निकाल सको और यदि आंतरिक सद्भावना के द्वारा, चेतना, प्रकाश, ज्ञान के द्वारा कामना को विघटित कर सको तो सबसे पहले अपने अंदर व्यक्तिगत रूप से, कामना की पूर्ति पर तुम जितने प्रसन्न होते उससे सैकड़ों गुना अधिक प्रसन्न होगे और फिर इसका अद्भुत परिणाम होगा। इसकी प्रतिक्रिया सारे संसार में होगी जिसका तुम्हें कोई अंदाज नहीं। वह फैलेगी। तुमने जो स्पंदन पैदा किये हैं वे फैलते जायेंगे। ये चीजें बरफ के गोले की तरह बढ़ती जाती हैं। तुम अपने चरित्र में जो विजय प्राप्त करते हो, वह चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो, वह ऐसी है जो सारे संसार में प्राप्त की जा सकती है। अभी मेरा आशय इसी से था। वे सब चीजें जो आंतरिक परिवर्तन के बिना केवल बाहर से की जाती हैं—जैसे विद्यालय, हस्पताल वगैरह बनवाना—वे मिथ्याभिमान के द्वारा, बड़े होने की भावना के द्वारा की जाती हैं जब कि ये छोटी अलक्षित चीजें जिन्हें अपने अंदर जीता जाता है, अनंतगुनी बड़ी विजय होती है, भले उनके परिणाम छिपे रहें। तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की प्रत्येक गतिविधि जो मिथ्या और सत्य-विरोधी है, वह भागवत जीवन का निषेध है। तुम्हारे छोटे प्रयासों के यथेष्ट परिणाम होते हैं, तुम्हें उन्हें जानने का संतोष भी नहीं मिलता, परंतु वे सच्चे होते हैं और उनका प्रभाव ठीक निर्वैयक्तिक और सामान्य होता है।

अगर तुम सचमुच कुछ भला करना चाहते हो तो सबसे अच्छी चीज जो तुम कर सकते हो वह यह है कि एक के बाद एक पूरी सचाई के साथ अपने अंदर छोटी-छोटी विजय प्राप्त करो। इस तरह तुम संसार के लिये अपनी क्षमता के अनुसार अधिक-से-अधिक कर लोगे।

क्या हमारी जीत सारे संसार के लिये काम करेगी ?

वह सारे संसार को बदल नहीं देगी। क्योंकि तुम्हारी विजय संसार के लिये बहुत छोटी है। इस प्रकार की लखोखा विजयों की जरूरत है। संसार की तुलना में तुम्हारी विजय बहुत ही छोटी है। लेकिन वह और चीजों के साथ मिल जाती है ...। यह कहा जा सकता है कि यह संसार में एक चीज करने की क्षमता लाने के समान है। लेकिन इसके प्रभावपूर्ण ढंग से काम करने के लिये कभी-कभी सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। यह अनुपात का सवाल है। तुम इसका परीक्षण कर देखो, (और यह कहीं अधिक कठिन है), उन लोगों के साथ कर देखो जो तुम्हारे चारों ओर हैं। इस बारे में तुम्हें पूरी तरह निष्कपट होना चाहिये कि तुम जो कर रहे हो वह परिणाम के विचार से नहीं, बल्कि विजय प्राप्त करने की दृष्टि से कर रहे हो। यदि तुम जीत जाओ तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव तुम्हारे चारों ओर के लोगों पर होगा। किंतु यदि इसमें सौदेबाजी की भावना मिल जाये, अगर तुम यह चीज इसलिये करो कि तुम वह दूसरा परिणाम चाहते हो : "मैं अपनी त्रुटियों पर विजय पाना चाहता हूं, लेकिन उस व्यक्ति को भी ऐसी ही विजय प्राप्त करनी चाहिये," तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चीज काम न करेगी। यह तो व्यापारी की वृत्ति है : "मैं यह देता हूं, पर वह लूंगा ?" इससे सब कुछ बिगड़ जाता है। यह न तो सचाई या निष्कपटता है, न शुद्धि। यह सौदेबाजी है।

तुम्हारी सचाई में, तुम्हारे उद्देश्य-हेतु में, तुम्हारी अभीप्सा में और कोई चीज नहीं मिलनी चाहिये। तुम भगवान् के प्रेम के लिये, सत्य के लिये, पूर्णता के लिये बिना किसी हेतु, बिना किसी विचार के चीजें करते हो। और इसी से परिणाम आते हैं।

८ अप्रैल १९५३ 'श्रीमातृवाणी' खण्ड ५

पृ० १८-१९

न्याय और कृपा

न्याय वैश्व प्रकृति की गतिविधियों का कठोर, युक्तियुक्त, नियतिवाद है। रोग इसी नियतिवाद का भौतिक शरीर में विनियोग है। चिकित्सक का मन इस अपरिहार्य न्याय की नींव पर खड़ा होकर ऐसी परिस्थितियां लाने की कोशिश करता है जिन्हें युक्तियुक्त रूप से अच्छे स्वास्थ्य की ओर ले जाना चाहिये। नैतिक चेतना यही चीज सामाजिक शरीर में और तपस्या इसे ही आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यान्वित करती है।

केवल भागवत कृपा में ही वह शक्ति है जो वैश्व न्याय के मार्ग में हस्तक्षेप कर सकती है और उसे बदल सकती है। अवतार का महान् कार्य है भागवत कृपा को धरती पर प्रकट करना। अवतार के शिष्य होने का अर्थ है भागवत कृपा का यंत्र बनना। माता तादात्म्य द्वारा वैश्व न्याय-तंत्र के पूर्ण ज्ञान के साथ, तादात्म्य द्वारा भागवत कृपा की महान् वितरक हैं।

और उनकी मध्यस्थता द्वारा भगवान् के प्रति सच्ची और विश्वासपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीप्सा की हर गति, उत्तर स्वरूप भागवत कृपा के हस्तक्षेप को नीचे उतार लाती है।

हे प्रभु ! कौन है जो तेरे सामने खड़ा होकर पूरी सचाई के साथ कह सके कि उसने कभी कोई भूल नहीं की। दिन में कितनी बार हम तेरे कार्य के विरुद्ध अपराध करते हैं और हमेशा तेरी कृपा उन्हें मिटा देने के लिये आ जाती है।

तेरी कृपा के हस्तक्षेप के बिना कौन है जो बहुधा तेरे वैश्व न्याय के विधान के अपरिहार्य खड्ग के नीचे न आता।

यहां हर एक समाधान के लिये किसी-न-किसी असंभवता का प्रतिनिधि है, लेकिन चूंकि तेरी भागवत कृपा के लिये सब कुछ संभव है, तो क्या यह तेरा कार्य न होगा कि समग्र में और ब्योरे में, इन असंभवताओं को भागवत उपलब्धियों में रूपांतरित कर दे ?

१५ जनवरी १९३३ —श्रीमां

अवचेतना, अहंकार इत्यादि के बारे में

[मनुष्य-जीवन कठिनाइयों से भरा पड़ा है और वह भी विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों से। इस लेख में हम अवचेतना, अहंकार, बालकों में दुष्टता इत्यादि विषयों पर माताजी और श्रीअरविन्द के लेखों के कुछ उद्धरण दे रहे हैं, इन्हें ठीक अनुवाद नहीं, लेखों का भाव समझिये। —सं०]

माताजी कहती हैं, "हमारा वह भाग जिसे हम अवचेतन कहते हैं, मन और सचेतन प्राण के नीचे, निकृष्ट और अंधेरा भाग है और वह मन के प्रभाव से वंचित भौतिक और प्राणिक तत्त्वों को लिये रहता है। मन न तो उसे देख पाता है और न उस पर शासन कर सकता है। यह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना जा सकता है कि उसमें उस मूक किंतु क्रियाशील चेतना की भी गिनती है जो हमारे कोषाणुओं और हमारी स्नायुओं को चलाती है, उनकी जीवन-प्रक्रिया और स्वतः-चालित प्रत्युत्तरों की व्यवस्था करती है। उसमें इंद्रिय-मन की निम्नतम क्रियाएं भी आ जाती हैं जो अधिकांश पशु और वनस्पति जगत् में काम करती हैं। हमारी भौतिक चेतना में उन्हीं चीजों का बार-बार दोहराया जाना, उनका इतना बल कि उन्हें हटाना मुश्किल हो, अधिकतर अवचेतना के सहारे होता है। वह अवचेतना बेतुकी चीजों से भरी होती है।

अवचेतना सभी अभ्यासगत क्रियाओं का, विशेषकर भौतिक और निम्न प्राण की क्रियाओं का, मुख्य संबल है। जब किसी चीज को प्राण या भौतिक से निकाला जाता है तो बहुधा वह अवचेतना में चली जाती है और वहां बीज की तरह रहती है और जब हो सके तब ऊपर उठ आती है। इसीलिये, आदतों, प्राणिक क्रियाओं से पिंड छुड़ाना या चरित्र में परिवर्तन लाना इतना अधिक कठिन होता है। तुम्हारी प्राणिक गतिविधियां दबाये जाने पर भी अवचेतना का सहारा पाकर, उससे ताजगी लेकर फिर-फिर आ जाती हैं।

इतना ही नहीं, श्रीअरविन्द कहते हैं : हमारी बीमारियों के लिये, चाहे वे पुरानी बीमारियां हों या बार-बार आनेवाली, अवचेतना और उसकी आग्रही स्मृति और दोहराने की आदत, शारीरिक चेतना पर जो भी संस्कार पड़ जाये उसे दोहराने की आदत ही मुख्य रूप से जिम्मेदार होती है।

हमें अपने-आपको अत्यधिक महत्त्व देने की आदत है, लेकिन हमारी बहुत सारी कठिनाइयां इसी से आती हैं। माताजी कहती हैं : जो चीज हमें निकृष्टता, सीमितता, क्षुद्रता, पौरुषहीनता का भाव देती है वह है सदा अपनी ओर ही मुड़े रहना, अपने-आपको ही निहारना और इस तरह अपने-आपको अतिसूक्ष्म अहंकार की सीमाओं में बंद कर लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहंकार के कारण आदमी अपने-आपको केवल श्रेष्ठ ही नहीं मानता बल्कि निकृष्ट भी मान सकता है। श्रीअरविन्द एक पत्र में कहते हैं: तामसिक अहंकार का मतलब है दुर्बलता का अहंकार, अपने-आपको नीचा समझनेवाला, निराशा, अविश्वास करनेवाला अहंकार। राजसिक अहंकार घमंड से फूला रहता है, आत्म-सम्मान से भरा रहता है और हठ के साथ हर कदम पर, या जहां उसका बस चले अपनी ही चलाना चाहता है। इसके विपरीत तामसिक अहंकार हमेशा कहता है, "मैं कमजोर हूं, दुःखी, लाचार हूं, मेरे अंदर कोई क्षमता नहीं।"

तामसिक अहंकार वह है जो निराशा, दुर्बलता, जड़ता, आत्म-निंदा, काम के लिये अनिच्छा, जानने या खुलने के लिये अनिच्छा, बेकार रहने की वृत्ति को स्वीकार करता या सहारा देता है। राजसिक अहं से उल्टा वह कहता है, "मैं बहुत कमजोर, बेढंगा, दुःखी, पीड़ित हूं। मेरे साथ हमेशा दुर्व्यवहार होता है, मेरे लिये कोई आशा नहीं, कोई सफलता नहीं, मैं हर चीज से वंचित हूं, कोई सहारा नहीं दीखता, मैं यह कैसे करूं, वह कैसे करूं, मेरे अंदर उसके लिये क्षमता कहां है ? मैं असहाय हूं। मैं मर जाऊं या बस पड़ा-पड़ा कराहता और झींकता रहूं। आदि।"

कभी-कभी छोटे बालकों में भी बड़ी दुष्टता दिखायी देती है। इस प्रसंग में माताजी कहती हैं: इसका कारण शायद माता-पिता में अवचेतन दुष्टता है। कहा जाता है कि लोग अपनी दुष्टता को बच्चों को देकर अपने-आप उससे पिंड छुड़ा लेते हैं लेकिन उसकी छाया बनी रहती है। कुछ लोग इस चीज को बाहर प्रक्षिप्त कर देते हैं लेकिन इससे स्वयं वे हमेशा मुक्त नहीं हो जाते, लेकिन फिर भी इससे उन्हें सांत्वना मिलती है, लेकिन बच्चे को इसका "परिणाम" मिलता है, समझे ? यह बात बहुत स्पष्ट है कि गर्भाधान के समय माता-पिता की चेतना की जो स्थिति होती है उसका बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अगर उस समय उनमें बहुत निम्न स्तर के गंदे विचार हों तो निश्चय ही वे बच्चों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिबिंबित होंगे। वे सभी बच्चे जो विकृत, कुसंस्कारवाले, अपूर्ण होते हैं—विशेष रूप से बुद्धि की दृष्टि से, जिनमें छिद्र होते हैं, जो अर्द्धनिर्मित और अर्द्धचेतन होते हैं—उनकी ये सब त्रुटियां गर्भाधान के समय माता-पिता की चेतना के दोष के कारण होती हैं। जैसे जीवन के अंतिम क्षणों की चेतना की स्थिति जानेवाले के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है उसी तरह गर्भाधान के समय की माता-पिता की चेतना की अवस्था बालक के ऊपर एक प्रकार की छाप लगा देती है जिसे वह सारे जीवन लिये रहेगा। कुछ छोटी-छोटी चीजें हैं जैसे उस क्षण की मानसिक अवस्था, उस क्षण की अभीप्सा या पतन, उस समय की कोई भी चीज, उस समय होनेवाली कोई भी चीज, वह चाहे जितनी छोटी मालूम होती हो, उसका बहुत बड़ा परिणाम होता है। वह जगत् में एक ऐसे बालक को ले आती है जो अपूर्ण या दुष्ट या परिणामतः असफल और व्यर्थ होता है तथा लोगों को इसका पता नहीं होता।

बाद में जब बच्चा बुरी तरह व्यवहार करता है तो वे उसे डांटते हैं। लेकिन उन्हें अपने-आपको डांटने से आरंभ करना चाहिये, "जब मैं इस बालक को जगत् में लाया था तब मेरी चेतना की अवस्था कितनी भयंकर रही होगी।"

एक स्थान पर माताजी कहती हैं : तुम सोचते हो कि सोचने का तुम्हारा अपना तरीका है। बिलकुल नहीं। यह पूरी तरह इस पर निर्भर है कि तुम किन लोगों से मिलते हो, कैसी पुस्तकें पढ़ते हो और तुम कैसी मनोदशा में हो। यह इस पर निर्भर है कि तुम्हारा पाचन कैसा है। यह इस पर निर्भर है कि तुम किसी ऐसे कमरे में बंद हो जहां हवा मुश्किल से आती है या खुली हवा में हो, धूप खिली हुई है या बादल छाये हैं। तुम यह नहीं जानते परंतु तुम सब प्रकार की बातें सोचते हो जो ऐसी चीजों पर निर्भर होती हैं जिनका तुम्हारे साथ कोई संबंध नहीं है।

माताजी कहती हैं : सच्ची बात तो यह है कि भौतिक मन पूरी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूढ़ होता है। इसे आसानी से प्रमाणित किया जा सकता है। शायद इसका निर्माण एक तरह के नियंत्रण के रूप में किया गया है ताकि वह इस बात के बारे में ठीक तरह से देखे कि चीजें उचित रूप में हो रही हैं। मेरा ख्याल है कि यह उसका सामान्य कार्य है लेकिन उसने हर बात पर संदेह करना ही अपना पेशा बना लिया है।

शायद मैं तुम्हें पहले भी बता चुकी हूं कि मैंने एक छोटा-सा परीक्षण किया था। मैंने और सब नियंत्रण छोड़कर बागडोर भौतिक मन के हाथ में छोड़ दी, भौतिक मन ही शंकाएं किया करता है। मैं एक कमरे में गयी और वहां से लौटकर मैंने दरवाजा बंद कर दिया। मैंने दरवाजा बंद करने का निश्चय किया था। जब मैं एक और कमरे में आयी तो इस भौतिक मन ने कहा, 'क्या तुम्हें विश्वास है कि तुमने दरवाजा बंद कर दिया है ?' ध्यान रखो, मैंने नियंत्रण नहीं रखा था। मैंने कहा, 'बहुत अच्छा, मैं इसका कहा मानती हूं' और मैं देखने के लिये वापिस गयी। मैंने देखा दरवाजा बंद था। मैं वापिस आ गयी। जैसे ही मैं ऐसी जगह पहुंची जहां से दरवाजा दिखायी न देता था, उसने मुझसे कहा, 'क्या तुमने ठीक तरह देख लिया है ?' और मैं फिर से वापिस गयी और यह सिलसिला तबतक चलता रहा जबतक मैंने यह निश्चय नहीं कर लिया, 'चलो, अब बहुत हो लिया, दरवाजा बंद हो या न हो अब मैं वापिस नहीं जा रही।' यह सारे दिन चल सकता था। यह बंद तभी होता है जब कोई उच्चतर मन, तर्कसंगत मन उससे कहता है, 'चुप रहो', अन्यथा यह सदा चलता ही रहता है, इसका अंत ही नहीं आता। अगर दुर्भाग्यवश तुम वहां केंद्रित हो तो जिन चीजों को तुम अपने ऊपर के स्तर पर बिलकुल ठीक और सच जानते हो, ऐसी चीजें भी जिनके साथ तुम्हारे पास भौतिक प्रमाण मौजूद हैं, जैसे बंद द्वार इत्यादि, उनके बारे में भी वह संदेह करता रहता है क्योंकि वह संदेह से बना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु-देवता

कहा जाता है कि मृत्यु का देवता होता है। क्या यह सच है ?

हां, मैं उसे "मृत्यु की आत्मा" कहती हूं। मैं उसे भली-भांति जानती हूं, और वह एक असाधारण संगठन है। तुम्हें मालूम नहीं कि यह किस हदतक संगठित है।

मुझे लगता है कि ये मृत्यु की आत्माएं बहुत सारी हैं, मुझे लगता है कि सैकड़ों हैं। मैं कम-से-कम दो से तो मिली हूं। एक से मैं फ्रांस में मिली थी, दूसरी से जापान में और दोनों बहुत भिन्न थीं; इससे लगता है कि संभवतः मानसिक शिक्षण, शिक्षा, देश और विश्वासों के अनुरूप ये आत्माएं अलग-अलग हैं। लेकिन प्रकृति की सभी अभिव्यक्तियों की आत्माएं हैं, आग की आत्माएं, हवा की आत्माएं, पानी की आत्माएं, वर्षा की आत्माएं, आंधी की आत्माएं और मृत्यु की आत्माएं।

हर एक मृत्यु की आत्मा का, चाहे वह कुछ क्यों न हो, हर रोज अमुक संख्या की मौतों पर अधिकार होता है। वास्तव में यह बड़ा विचित्र संगठन है। यह एक प्रकार से प्राणिक शक्तियों और प्रकृति की शक्तियों में एक प्रकार का सहयोग है। उदाहरण के लिये, यदि मृत्यु की आत्मा ने निश्चय किया है : "मुझे इतनी संख्या पर अधिकार है," मान लो, चार, पांच, छः या फिर एक-दो व्यक्तियों पर, यह दिन पर निर्भर है; उसने निश्चय कर लिया है कि अमुक व्यक्तियों को मरना चाहिये, वह सीधी जाकर उस आदमी के पास जम जाती है जो बस मरनेवाला है। लेकिन अगर तुम सचेतन हो (वह व्यक्ति नहीं), अगर तुम इस आत्मा को जाते हुए देखो, और तुम नहीं चाहते कि वह मरे, तो यदि तुम्हारे अंदर अमुक गुह्य शक्ति है, तो तुम उससे कह सकते हो : "नहीं, मैं मना करता हूं।" यह ऐसी बात है जो हो चुकी है, एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, अनेक बार, जापान में भी और यहां भी। लेकिन आत्मा एक ही नहीं थी। इसीलिये मैं कहती हूं कि वे बहुत-सी होंगी।

—मैं नहीं चाहती कि यह मरे।

—लेकिन मेरा एक मृत्यु पर अधिकार है!

—जाओ और किसी ऐसे व्यक्ति को खोज लो जो मरने के लिये तैयार है।

ऐसा मैंने कई उदाहरणों में देखा है: कभी-कभी एक के स्थान पर दूसरा पड़ोसी अचानक मर जाता है, कभी कोई परिचित व्यक्ति और कभी कोई शत्रु। स्वभावत: एक संबंध होता है, अच्छा या बुरा, पड़ोस का या कोई और संबंध जो बाहर से देखने में संयोग मालूम होता है। लेकिन वह आत्मा अपने मुरदे को लेती है। उस आत्मा का एक मृत्यु पर अधिकार है और वह एक मृत्यु लेगी। तुम उससे कह सकते हो: "मैं इसे लेने से मना करता हूं," और तुम्हारे अंदर उसे लौटा देने की शक्ति है तो वह आत्मा कुछ नहीं कर सकती, चली जाती है। लेकिन वह अपना देह नहीं छोड़ती और कहीं और चली जाती है। कहीं और एक मौत हो जाती है।

आग के साथ भी यही बात है। मैंने आग की आत्मा देखी है, विशेषकर जापान में, क्योंकि उस देश में आग एक असाधारण चीज है। जब आग शुरू होती है तो लगभग अस्सी मकान, एक पूरा मोहल्ला जल जाता है। यह एक विलक्षण चीज होती है। वहां के मकान लकड़ी के बने होते हैं और दियासलाई की डिबियों की तरह जलते हैं। तुम आग सुलगते देखते हो और अचानक पफ़ . . . ! तुमने कभी दियासलाई की डिबियों को जलते नहीं देखा ? एक कौंध! उसी तरह, एक कौंध! एक, दो, तीन, दस, बीस मकान मेरी आंखों के सामने जल गये! . . . तो, आग की आत्मा होती है। एक दिन मैं बिस्तर में थी, एकाग्र होकर लोगों को देख रही थी। अचानक मैंने लपटों के बादल को मकान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजदीक आते देखा। मैंने ध्यान से देखा, वह एक सचेतन सत्ता थी।

—ओ, तुम यहां किसलिये हो ?

—मुझे मकान जला देने का अधिकार है, आग शुरू करने . . .

—यह संभव है, मैंने कहा, पर यहां नहीं।

और वह विरोध न कर सकी।

प्रश्न इसका है कि कौन ज्यादा बलवान् सिद्ध होता है। मैंने कहा : "नहीं, यहां नहीं जला सकती तुम, बस !'' पांच मिनट बाद मैंने आवाजें सुनीं। दो-तीन मकानों के बाद एक मकान में आग लग गयी थी। चूंकि मैंने उसे अपना मकान जलाने से रोक दिया था इसलिये वह उधर चली गयी थी। उसे एक मकान पर अधिकार था। यह ऐसे होता है।

१ जुलाई १९५३

'श्रीमातृवाणी', खण्ड ५, पृ० १२८—१३०

'ऋषिवर बोले' :

समय

आज बातचीत समय के बारे में हो रही थी। कमल कुछ खीझा-सा लग रहा था। उसने कहा, ऋषिवर, हमेशा यही सुनते आये हैं कि भाग्य बड़ा बलवान है और सफलता-असफलता सब भाग्य पर निर्भर है। हर चीज का अपना समय है और कोई लाख सिर पटक कर रह जाये, किसी चीज को उसके समय से पहले करना संभव नहीं है। तब फिर हमारे प्रयास का अर्थ ही क्या रह जाता है ? क्यों न हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहें क्योंकि जो होना है वह तो अपने समय पर ही होगा, फिर व्यर्थ की हाथा-पाई का फायदा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले, तुम लोग कई भाषाएं जानते हो। तुमने कभी सोचा एक भाषा का एक निर्दोष शब्द दूसरी भाषा में जाकर कितना उत्पात कर सकता है ? हमारे एक मित्र फ्रेंच जानते थे और उन्हें तमिल नौकरों से काम पड़ गया। एक दिन किसी कारण वे अपने नौकर से बहुत नाराज़ हो गये और बड़े जोर से चिल्लाकर नौकर से बोले, वा। नौकर डरता हुआ दो कदम आगे आया। ये और गरजे, वा। नौकर कांपते हुए और दो कदम आगे बढ़ा। इनका पित्ता उछलने लगा और करीब था कि उसपर हाथ उठा देते कि उनका एक मित्र वहां आ गया। वह स्थिति को भांप गया और उसने नौकर को कमरे से बाहर भेजकर साहब का पारा उतारा। बात क्या थी जानते हो ? फ्रेंच में वा का अर्थ है जा तमिल में उसका मतलब है आ। इस तरह के बीसियों उदाहरण तुम स्वयं इकट्ठे कर सकते हो। यहां भी कुछ इसी तरह की बात है।

हमारा मन चीजों के पूर्ण रूप को पकड़ने में समर्थ नहीं होता। उसका काम है चीजों के छोटे-छोटे टुकड़े करना, जहां भेद नहीं है वहां भेद पैदा करना। इसी कारण हम नियति और स्वतंत्र इच्छा, कर्म में मनुष्य की स्वाधीनता-पराधीनता आदि की बहस में पड़ते हैं, परंतु ये समस्याएं वास्तविक कम हैं और काल्पनिक ज्यादा। सब कुछ इस पर निर्भर है कि हम चेतना के किस स्तर पर हैं और चीज को कहां से देख रहे हैं। बचपन में हमें चम्पा का पेड़ बहुत ऊंचा लगता था। उसके बाद बरसों तक वह पेड़ नहीं देखा। काफी वयस्क हो जाने के बाद जब पेड़ देखा तो आश्चर्य हुआ कि मामला क्या है, यह इतना छोटा क्यों है ? आखिर पता लगा कि पेड़ छोटा नहीं हो गया था स्वयं हम लम्बे हो गये थे। यही हाल हर चीज का है। अगर हम चेतना के एक स्तर से देखें तो ऐसा लगता है कि मनुष्य को पूरी-पूरी स्वाधीनता प्राप्त है और वह अपने काले को सफेद और सफेद को काला करने के लिये स्वतंत्र है। अगर उच्चतर चेतना से देखा जाये तो देश और काल दोनों ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना महत्त्व खो बैठते हैं। हमारी दृष्टि में इन दोनों का बहुत अधिक महत्त्व है पर वहां अगर इनका अस्तित्व है भी तो बहुत गौण है। आज की सृष्टि विकृत अवस्था में है। कोई चीज अपने ठीक स्थान पर नहीं है और इसी अव्यवस्था का नाम अविद्या या जड़ता है। इस विकृत अवस्था में सृष्टि उत्पन्न करना ही दिव्य संकल्प का काम है। तुमने गोरखधंधा देखा होगा। जंजीर में सभी टुकड़े इधर-उधर फंसे होते हैं, किसी का किसी के साथ मेल नहीं बैठता, उसे सुलझाने में घंटों बीत जाते हैं। इसी तरह संसार में सब कुछ ठीक है परंतु सभी का संतुलन और सामंजस्य खो गया है और संतुलन और सामंजस्य का यह अभाव ही सब प्रकार की अव्यवस्था पैदा करता है। फिर से गोरखधंधे की जंजीर पर जाओ। वहां यह पहले से निश्चित है कि कौन-सी कड़ी कहां आयेगी। जब तुम उसे सुलझाने बैठते हो तो तुम्हारे सामने पचासों संभावनाएं आती हैं और इन्हें देखने में, इन्हें ठीक-ठीक करने में तुम्हारा बहुत समय लग जाता है। गोरखधंधे को सुलझा कर कड़ियों को जो रूप देना है वह निश्चित है और इसे हम नियतिवाद कह सकते हैं, लेकिन वहां तक पहुंचने से पहले अनेक संभावनाओं में से गुजरने के लिये तुम स्वतंत्र हो। जब हर तत्त्व अपने ठीक स्थान पर हो तभी भागवत पूर्णता और भागवत सौंदर्य के प्रकट होने का समय होता है, लेकिन हम उस समय की गिनती घंटों, दिनों या सालों में नहीं कर सकते, जब वह सामंजस्य आ जायेगा तभी समय होगा। काम में जो समय लगता है, जो अधीर बना देता है वह केवल इस बात का सूचक है कि पूर्णता की ओर कदम बढ़ तो रहे हैं, पर निचली चेतना में होने के कारण उन्हें ठीक रास्ता आसानी से नहीं मिल रहा। इसके लिये ऊपर से उच्चतर चेतना का आना जरूरी है। निचली चेतना अंधेरे में टटोल कर चीजों को ठीक स्थान पर बिठाने की कोशिश करती है, परीक्षण करती है, ठोकरें खाती है, बदलती है और फिर भूल करती है। उच्चतर चेतना सब कुछ जानती है। उसे मालूम है कि कौन-सा तत्त्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां जायेगा और वह तुरंत सबको यथास्थान रख सकती है।

इन्हीं चीजों को हम अपनी भाषा में कहें तो कहना होगा कि निम्न चेतना में हर चीज समय लेती है और उच्चतर चेतना में सब कुछ तुरत-फुरत हो जाता है। जिसे हम भविष्य कहते हैं उसपर भी यही बात लागू होती है। सब कुछ इसपर निर्भर है कि कौन-सी चेतना काम कर रही है और किस स्तर पर कर रही है। एकदम निश्चेतना में काम चल रहा हो तो एक ही चीज हजारों बार करनी पड़ती है। इसीलिये कहा जाता है कि हमारे छः महीनों का देवों का दिन और छः महीनों की देवों की रात होती है। इसी तरह ब्रह्मा के दिन आदि की गिनती की जाती है, जिसकी चेतना ऊंची हो गयी उसके लिये समय का मूल्य उतना ही कम हो जाता है। लेकिन हां, हम समय को जिस रूप में देखते हैं उस रूप में समय मनुष्य से नीचे के स्तर पर भी अस्तित्व नहीं रखता। जानवरों को, पेड़-पौधों को घड़ी की जरूरत नहीं होती। उनके जीवन में समय का वह मूल्य नहीं है जो हमारे जीवन में है।

चेतना के उच्च शिखरों पर भी समय का मूल्य नहीं रह जाता। वहां का संकल्प पूरा होते देर नहीं लगती।

सोसायटी समाचार

पिछले अंक में हमने सोसायटी की सदस्यता की दरों का पूरा ब्योरा छापा है। ये दरें मार्च २००२ से लागू होंगी।

श्री प्रदीप नारंग ने मदुरै (तमिलनाडु) में २२ तथा २३ दिसंबर को दो सार्वजनिक भाषण दिये। विषय थे, श्रीअरविन्द का योग तथा ध्यान का अर्थ। उन्होंने विरुधुनगर तथा कोविलपट्टी के सोसायटी के केंद्रों का भी दौरा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत दिसम्बर श्री गोपाल भट्टाचार्य ने पश्चिम बंगाल तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों का दौरा किया। उसमें यह निश्चय हुआ कि सोसायटी के केन्द्रों और शाखाओं की वार्षिक बैठक ९ तथा १० मार्च २००२ को बांकुड़ा (पश्चिम बंगाल) में होगी। डिग्बॉय में श्रीरामकृष्ण मिशन में श्री भट्टाचार्य श्रीअरविन्द योग पर बोले।

केन्द्रों तथा शाखाओं की सूचनाएं

पटियाला (पंजाब) की शाखा ने ८ दिसम्बर २००१ को 'भारत की नियति' विषय पर एक सभा का आयोजन किया। इसमें मुख्य प्रवक्ता थे—डॉ० आर० एन० पाल, श्री श्रद्धालु रानाडे और डॉ० आलोक पाण्डे। ओरोमीरा विद्यालय का वार्षिक दिवस भी उस रोज बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

देहरादून (उत्तरांचल) शाखा ने ८ तथा ९ दिसम्बर को भारतीय संस्कृति पर सभा की। आश्रम के प्रो० मनोज दास मुख्य अतिथि थे।

दिल्ली शाखा ने 'भावी का प्राक्कथन' विषय पर भाषण का आयोजन किया। वक्ता थे प्रो० मनोज दास।

हनमकोण्डा (आंध्र प्रदेश) शाखा में ९ तथा १० दिसम्बर को 'सावित्री' विषयक दो भाषण प्रो० भरत सिंह झाला के हुए।

भोपाल (मध्य प्रदेश) शाखा ने श्रीअरविन्द के पवित्रावशेष की स्थापना की पहली जयन्ती १५-१६ दिसम्बर को मनायी। इस अवसर पर सोसायटी की प्रादेशिक कमेटी के सदस्य भी मिले। श्रीअरविन्द स्कूल के अहाते में एक सभा-कक्ष का भी उद्घाटन उसी रोज हुआ।

गुजरात के सभी केंद्रों और शाखाओं का सम्मेलन १६-१७ दिसम्बर को वडोदरा में हुआ। श्रीअरविन्द आश्रम के श्री श्रद्धालु रानाडे ने सभा का उद्घाटन किया। श्री अनिरुद्ध स्मार्ट विशेष अतिथि थे। डॉ० दिलावरसिंह जाडेजा ने सभा का संचालन किया। सभा का मुख्य विषय था 'सर्वांगीण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा'। इसमें यह निश्चय किया गया कि माताजी की १२५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हमें सर्वांगीण शिक्षण पर जोर देकर स्थान-स्थान पर इसे कार्यान्वित करना चाहिये। और इसमें संस्कृत का प्रचार-प्रसार, युवा वर्ग तथा नारियों के उत्थान के लिये कार्यक्रम भी सम्मिलित हैं।

भिण्ड (मध्य प्रदेश) तथा पुणे (महाराष्ट्र) में सोसायटी के दो नये केन्द्र दिसम्बर २००१ में खुले।

२१ फरवरी २००२ से एक वर्ष तक श्रीमां की १२५वीं वर्षगांठ मनायी जायेगी। हम इस वर्ष हर महीने साधकों के दिग्दर्शन के लिये श्रीअरविन्द का एक संदेश देंगे। इस महीने का संदेश यह रहा—

आत्म-समर्पण संपूर्ण होना चाहिये और उसे सत्ता के सभी भागों पर अधिकार कर लेना चाहिये। केवल इतना पर्याप्त नहीं है कि चैत्य प्रत्युत्तर दे और उच्चतर मन उसे स्वीकार करे या आंतरिक प्राण समर्पण कर दे और आंतरिक भौतिक चेतना उसके प्रभाव का अनुभव करे। सत्ता का कोई भी भाग—यहांतक कि सबसे बाहरी भाग भी—ऐसा न हो जो प्रतिबंध लगाये, कोई भी हिस्सा ऐसा न हो जो शंकाओं, भ्रमों और बहानों के तले छिपा हो और न ही कोई भाग ऐसा हो जो प्रतिरोध या अस्वीकार करे।

—श्रीअरविन्द

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा...... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर, झुंझुनूं

श्रीअरविन्द दिव्य जीवन शिक्षा-केन्द्र, झुंझुनूं (राजस्थान)

श्रीअरविन्द सोसायटी द्वारा स्थापित इस संस्था का मूल उद्देश्य श्रीअरविन्द व श्रीमां के मनुष्य जाति के लिये दिव्य जीवन के स्वप्न को साकार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह केंद्र ऐसे श्रद्धालुओं के समूह के निर्माण की अभीप्सा रखता है जिनके जीवन का केवल यही उद्देश्य हो।

यह केंद्र पूर्ण रूप से आवासीय है जिसमें छात्र-छात्राओं की शिक्षा, आवास व भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शैक्षणिक सत्र हर वर्ष १५ अगस्त से प्रारंभ होता है तथा केवल ६ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता है।

यह केंद्र पूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये समस्त साधन प्रदान करने की अभीप्सा रखता है। जो अभिभावक अपने बच्चों के लिये सरकारी प्रमाण पत्र, डिग्री व डिप्लोमा की आकांक्षा नहीं रखते अपितु उनकी सत्ता के केंद्रीय सत्य के अनुरूप उनके पूर्ण व सर्वांगीण विकास की अभीप्सा रखते हैं और अपने बच्चों को इस शिक्षण-संस्था में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे पूरी सूचना के लिये निम्नलिखित पते पर संपर्क करें।

जो आध्यात्मिक पिपासु इस केंद्र के कार्य में सहयोगी होना चाहते हैं तथा अपना जीवन इस कार्य में लगाकर साधनामय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे लोग अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर
मीरा अम्बिका भवन, खेतान मोहल्ला
पो० झुंझुनूं—३३३००१ (राजस्थान)
टेलीफोन—(०१५९२) ७२३५६१५
E-mail : srimaa@vsnl.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Statement about ownership and other particulars about Newspaper (Agnishikha) *to be published in the first issue every year after the last day of February.*

Form IV (see Rule 8)

1. Place of Publication	Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - 605002
2. Periodicity of its publication	Monthly
3. Printer's Name	Amiyo Ranjan Ganguli
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Ashram Press Pondicherry - 605002
4. Publisher's Name	Pradeep Narang
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Society Pondicherry - 605002
5. Editor's Name	Ravindra, Anuben
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Ashram Pondicherry - 605002
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital	Sri Aurobindo Society Pondicherry - 605002

I, Pradeep Narang *hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

March 2002

(sd) Pradeep Narang
Signature of Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

दानवीय उथल-पुथल का अशान्त युग

... जैसे विभिन्न तत्त्वों के मिलने से एक अप्रत्याशित रूप निकल आता है उसी तरह कोई ज्यादा बड़ी अज्ञात चीज हो सकती है जो छिपी हुई और तैयारी में है, जिसने अभीतक काल के परीक्षणों की प्रयोगशाला में रूप धारण नहीं किया और जिसे प्रकृति की रूप-रेखा में अभी तक प्रकट नहीं किया गया है। और हो सकता है कि मानवजाति की आत्मा और शरीर की इस सृजनात्मक प्रसव-पीड़ा के तनाव और दुर्दम्य कष्ट के बीच, सृजन और विनाश और विघटन में, इस दानवीय उथल-पुथल, विचारों की अस्त-व्यस्तता और अन्वेषणों, महान् शक्तियों के संघर्ष के पीछे विकास के दबाव से कोई अप्रत्याशित जन्म हो जो इस उथल-पुथल के परिणाम को औचित्य प्रदान करे।

—श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

चिंगारियां

कुछ वर्षों से सारे संसार में असामान्य खलबली मच रही है और ऐसा लग रहा है कि इस भयंकर उथल-पुथल और सर्वत्र छाये अंधकार से भारत भी अछूता नहीं रहा है, किंतु अभी-अभी छोटी-छोटी चिंगारियां शायद हमें आश्वस्त कर रही हैं कि वह समय दूर नहीं है जब भारत से ही एक नगाधिराज-सा प्रचण्ड अग्निकुण्ड धधक उठेगा और खलबली और अंधकार ऐसे अदृश्य हो जायेंगे जैसे कभी उनका अस्तित्व था ही नहीं !

भारत की अस्मिता नया रूप धारण कर हमें चौंका देती है, हम उसे अपनाने से भी हिचकिचाते हैं किंतु युवा शक्ति सही दिशा में जा रही है, उसका हम आज नहीं तो कल स्वागत अवश्य करेंगे।

पहली चिंगारी है एक युवा दल की जो भारत की धर्मनिरपेक्षता का मानों प्रतीक है। उसमें हिंदू हैं, ईसाई हैं और शायद अन्य धर्म के युवा भी होंगे। उनका नेता पलाश कहता है कि उनका दल यूं ही बन गया, बनाया नहीं गया। वे अपनी अनुभूतियों, सामान्य मनुष्यों की जिंदगी के सुख-दुःख, दुविधा वगैरह के बारे में गाते हैं, उनकी खासियत यह है कि उनके गीत भारतीय जीवन के रंग में रंगे होते हैं। उनके पहले 'एलबम' का चित्रांकन कुछ वर्ष पहले काशी के घाट पर किया गया था। जहां भी वह सुनाया गया लोग झूमने लगे क्योंकि उसमें रॉक था, लोकगीत था, और रेट्रो रॉक भी था किंतु उनका सामंजस्य विरल था। यह दल कॉलेज से ही संगीत का दीवाना था और तबसे दीवानगी बनी रही। उस दल में पलाश एक ही अपवाद है जो नियमित रूप से संगीत का अभ्यास नहीं कर पाता। कारण यह है कि वह डॉक्टर है और साथ-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बला का गायक तो है ही और अब सिनेमा में अभिनय भी कर रहा है! यह जो शक्ति-स्रोत हमारे युवकों में प्रकट हुआ है उसने उन्हें जाग्रत् भी किया है। पलाश कहता है कि लोग अभी तक पश्चिम का अंधा अनुकरण करते रहे किंतु अब वे समझने लगे हैं कि वह हमारी संस्कृति से भिन्न है। अब वे भारतीय चरित्र की ओर मुड़ रहे हैं। वह कह रहा था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में जब उनके संगीत का स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट से हुआ तब उसे लगा कि संगीत की कोई सीमा-रेखा नहीं है, अच्छा संगीत सर्वत्र समझा जाता है। फिर उसने कहा, "आप हमारी सफलता का रहस्य जानना चाहते हैं? दल के सारे सदस्य अलौकिक यानी भगवान् को मानते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि यह ख्याति, यह संगीत, सब ईश्वर की कृपा है। वे जब चाहें उसे वापिस भी ले सकते हैं।" तो आवारा-से दीखते युवक धीरे-धीरे अपने सच्चे चरित्र की ओर बढ़ रहे हैं!

दूसरी चिंगारी देखें। अभीतक हमारे विद्यार्थियों को विदेश जाकर वहां की डिग्री या सर्टिफिकेट लेने के लिये कैसे-कैसे पापड़ बेलने पड़ते थे, सिफारिशों की शरण में जाना पड़ता था, परंतु अब स्थिति उलट गयी है। विदेशों में गये हुए हमारे युवकों ने अपना सिक्का ऐसा जमा लिया है कि यूरोप और अमरीका उनका लोहा मानने लगे हैं। इस समय हालत यह है कि कई विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि भारत में डेरा डाले बैठे हैं। वे भारत के कई विश्वविद्यालयों में जाकर प्रतिभावान् विद्यार्थियों की जांच कर अपने विश्वविद्यालय में आने का निमंत्रण देते हैं। आयरलैंड में विद्यार्थियों की आबादी परिवार-नियोजन के कारण कम हो गयी है। इसलिये वहां के प्रतिनिधि अपने कैम्पस में अधिक विदेशी विद्यार्थियों को निमंत्रण देना चाहते हैं। भारत के विद्यार्थियों को वे कई सुविधाएं देने के लिये भी तैयार हैं, जैसे कि अमरीका या इंग्लैंड की अपेक्षा उनकी शिक्षा अधिक सस्ती होगी, वे एक नया कानून पारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे जिससे विद्यार्थी को धन पाने के लिये काम करने का अधिकार भी मिलेगा। विद्यार्थियों को वीज़ा प्राप्त करने में उस विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि उनकी मदद करेंगे। चूंकि आयरलैण्ड में प्रशिक्षित तकनीकी जानकारों, इंजीनियरों, नगर-योजनाकारों, स्थपतियों का अभाव है इसलिये वे उन्हें इन क्षेत्रों में तत्काल नौकरी दिलवा पायेंगे। तो यह है भारतीय अस्मिता का चमत्कार!

तीसरी चिंगारी भी कम दिलचस्प नहीं है। जब एल० आनन्द ग्यारह वर्ष का था तो उसने एक सप्ताह में ११0 गीतों की रचना कर ली। वह गायक, रचनाकार और रिकॉर्डिंग करनेवाला, सब कुछ है। इस समय वह सबसे लम्बे गीत, यूं कहें महागीत, की रचना में लगा हुआ है; महागीत का शीर्षक होगा, "बाजी राव, मस्तानी"। उसकी अवधि होगी चार घण्टों की। यह महागीत महान् मराठा योद्धा बाजीराव और उनकी दूसरी पत्नी मस्तानी की अद्भुत प्रेमगाथा गायेगा। आनन्द ने बताया कि उसने अपनी मां को किसी के संगीत-क्षेत्र में कीर्तिमान बनाने की बात बतायी तो उन्होंने उसे संगीत में कीर्तिमान बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। उसने सी० के० चौहान से फिल्मी संगीत, इतालवी और स्पैनिश संगीत सीखा, भारतीय शास्त्रीय संगीत वर्षा भावे, और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत सैमी रूबन से सीखा। आकाशवाणी, दूरदर्शन में उसका नाम परिचित हो चुका है। आनन्द का संगीत सुनने के बाद प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रशंसा में उसे एक पत्र भेजा था जिससे आनन्द का उत्साह और भी उछलने लगा। गले में तुलसी माला पहने और कलाइयों पर भी तुलसीमाला लपेटे यह संगीत का बावरा अपनी सफलता से बिलकुल अछूता रहा है। जब लोग संगीत की सफलता का रहस्य पूछते हैं तो वह हंसकर कहता है, "मेरा संगीत भगवान् की मुझे देन है। मैं और किसी तरह उसे समझा न पाऊंगा।"

तो हम देखते हैं कि इस समय सारे संसार में संगीत की धूम है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत मतलब सामंजस्य और सामंजस्य एकता लायेगा।

हम नयी ऊर्जा प्राप्त और सर्जनशील युवकों से आशा करें कि वे भारत के उत्थान में नेतृत्व करेंगे।

किंतु इन इक्की-दुक्की चिंगारियों से हमें संतुष्ट न बैठना चाहिये। हममें से हर एक को भारत की जितनी और जैसी बन पड़े सेवा करनी चाहिये, तभी तो स्वर्णिम प्रभात आयेगा।

—अनुबेन

प्रात प्रदीप

प्राची की पलकों में जागा
सुन्दर सुखद विहान।
सहसा गूंज उठे नीड़ों में
मीठे मादक गान।
तम भागा, आभा इठलाई,
वन की कली-कली मुसकाई,
प्रकृति-परी ने ली अँगड़ाई,
तुहिनकणों ने फूलों के मुख
कर डाले अम्लान;
प्राची की पलकों में जागा
सुन्दर सुखद विहान!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयल कूक उठी आमों पर,
नाच रहे हैं मोर;
वन की मधुशालाओं में अलि
चले मचाते शोर।
पात-पात का सिहर उठा तन,
डाल-डाल पर आया यौवन,
उत्फुल्लित हैं वन-वन, उपवन,
मूक मुखर, स्थिर अस्थिर, आये
निष्प्राणों में प्राण;
प्राची की पलकों में जागा
सुन्दर सुखद विहान।
किन्तु विजन में भग्न कब्र पर
धुंधला प्रात-प्रदीप;
तिल-तिल जला-जला निज उर को
है अब मरण-समीप।
स्नेहहीन यह जिसका जीवन,
जिसके शुष्क हृदय की धड़कन
हो जायेगी मूक किसी क्षण,
इस विहान में देख रहा है
अब अपना अवसान!
प्राची की पलकों में जागा
सुन्दर सुखद विहान।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अप्रैल

१. कठिनाइयां आती जरूर हैं, लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं कि वे अवसाद लेकर आयें।

२. बीमारियों से पिंड छुड़ाने का अचूक तरीका यह है कि तुम उनसे अपना ध्यान खींच लो और उन्हें किसी भी तरह का महत्त्व देने से इंकार कर दो।

३. सभी परिस्थितियों में और हमेशा 'उन्हें' याद रखो।

४. अगर तुम थोड़ी-सी आंतरिक अचंचलता बनाये रख सको तो तुम अपनी समस्याओं से ज्यादा जल्दी निकल जाओगे।

५. अगर तुम अपने अंदर कुछ अधिक शांत रह सको तो तुम्हारी मुश्किलें ज्यादा जल्दी खत्म हो जायेंगी।

६. भागवत उपस्थिति को कभी न भूलो।

७. निश्चय ही झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं, इसके विपरीत, इससे चेतना धुंधली हो ज़ाती है।

८. अंधकार के बजाय हमेशा प्रकाश को चुनो।

९. मेरी शक्ति और सहायता हमेशा तुम्हारे साथ हैं और जैसे-जैसे तुम पढ़ते हो मेरी चेतना तुम्हें प्रबुद्ध बनाती जाती है।

१०. अगर तुम यह निश्चय कर लो कि तुम जो कुछ दोगे उसके बदले में कुछ न मांगोगे तो तुम जल्दी ही प्रेम के अतुलनीय आनंद को पा लोगे।

११. विश्वास रखो, विश्वास की कमी ही तुम्हारी चेतना पर पर्दा डालती है।

१२. मेरे प्रेम पर कभी शंका मत करो, तब एकदम स्वाभाविक रूप से तुम मेरी तरफ मुड़ जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. तुम्हें इसी जीवन में भगवान् की उपलब्धि के लिये प्रयास करना चाहिये और तुम यह कर पाओगे।

१४. हर एक को शांति और दृढ़ता के साथ हमेशा आगे बढ़ना चाहिये।

१५. मेरे प्यारे बच्चे, शांति, निश्चल-नीरवता तथा एकांत को तुम्हें अपने अंदर पाना होगा, और उस एकांत में तुम मेरी उपस्थिति के बारे में सचेतन हो जाओगे।

१६. जबतक तुम लौ के जलते रहने की अभीप्सा करोगे, मैं इस बात का ध्यान रखूंगी कि वह बुझने न पाये।
इस अभीप्सा को बनाये रखो और तुम रास्ते में हमेशा मेरी सहायता पाओगे।

१७. जिसे भगवान् के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भगवान् का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परिस्थिति में हमारे साथ रहता है।

१८. जब लोग झूठ बोलते हैं तो मैं अच्छी तरह जानती हूं, भले वे बहुत कुशलता से झूठ बोलें और यह मानें कि वे मुझे छल सकते हैं।

१९. अगर हम दुःख का कारण समझ लें तो फिर दुःख नहीं रहता।

२०. जबतक तुम्हारे अंदर भगवान् पर पूरा विश्वास न हो, तबतक भागवत कृपा पूरी तरह से फलप्रद नहीं हो सकती।

२१. जब तुम मुझे पा लोगे तो तुम देखोगे कि मैं सर्वत्र हूं।

२२. एकाग्रता के बिना तुम कुछ नहीं प्राप्त कर सकते।

२३. अगर तुम भगवान् के लिये जीने का चुनाव कर लो तो फिर दुनिया की और किसी वस्तु का महत्त्व नहीं होना चाहिये।

२४. अगर हर एक अपनी पसंदों और नापसंदों को जीतने की कोशिश करे तो काम कहीं अधिक अच्छी तरह चलेगा।

२५. जब व्यक्ति चीजों के बारे में अपने ही निर्णय पर निर्भर करता है तब वह भागवत इच्छा को पहचान और जान नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६. मेरी समस्त सहायता निष्फल होगी जबतक तुम अपनी दुर्बलताओं को जीतने का निश्चय न कर लो।

२७. मेरी भुजाएं हमेशा तुम्हें सहारा देने और मार्ग दिखाने के लिये तुम्हारे चारों ओर रहेंगी।

२८. किसी में शक्ति नहीं है जो तुम्हें मुझसे दूर ले जा सके क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं, तुम्हारे अंदर हूं।

२९. अगर भगवान् के साथ तुम्हारा सतत संपर्क हो तो तुम पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगी।

अगर तुम ध्यान से सुनो तो तुम अपने प्रश्नों के लिये मेरे उत्तर सुनोगी।

३०. दृढ़ता के साथ अपनी प्रकृति के किसी भाग में परिवर्तन की आवश्यकता का सामना करो और मेरी सहायता के साथ बदलो।

दुःख-दर्द

संसार में दुःखी कौन नहीं है ? ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर, धनी, गरीब, सभी को कुछ-न-कुछ दुःख लगा रहता है। दुःख अनेक प्रकार का होता है और उसे दूर करने का उपाय भी एक नहीं हो सकता। हमारे शास्त्रों ने बताया है कि "सारा संसार आनंद से भरा हुआ है, आनंद आकाश की तरह सब जगह मौजूद है। अगर आनंद न होता तो हमारे लिये सांस लेना तक असंभव होता। जो कुछ है, सब आनंद से ही उत्पन्न हुआ है, आनंद में ही स्थित है और आनंद में ही मिल जायेगा।" पाठक अन्यत्र देखेंगे कि आजकल आधुनिक विज्ञान भी यह मानने लगा है कि सारी सृष्टि एक ही तत्त्व से उत्पन्न हुई है जिसके बारे में अभी उन्हें यह पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है कि वह पदार्थ है अथवा ऊर्जा। परंतु हमने तो यही सीखा है कि सारी सृष्टि उस एक ने ही बनायी है जो सत् है, चित् है और आनंद है। उसने सारी सृष्टि में अपने ही अनेकों रूपों को व्यक्त किया है और सब कुछ उसी की प्रच्छन्न संभावनाओं का खेल है।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि अगर सृष्टि के मूल में ही आनंद है तो फिर पाप और दुःख कहां से आये। श्रीअरविन्द कहते हैं कि हमारे अस्तित्व के अंदर ही आनंद छिपा हुआ है और आनंद ही हमारी प्रकृति की स्वाभाविक अवस्था है। दुःख-दर्द अस्वाभाविक और सामयिक अवस्थाएं होती हैं जो हमारी स्वाभाविक अवस्था को छिपा देती हैं और यही कारण है कि हम कभी स्वाभाविक आनंद को अनुभव नहीं करते और उसके क्षणिक अभाव को इतना अधिक महत्त्व देते हैं। हवा हमारे लिये स्वाभाविक है, हम दिन में कितनी बार उसके बारे में सोचते हैं? सिर्फ तभी जब वह रुक जाये या बहुत अधिक ठंडी या गरम हो जाये। सूर्य हमारे यहां नियमित रूप से दर्शन देता है, हमारा ध्यान उसकी ओर तभी खिंचता है जब उसे ग्रहण लगे या बादल उसे छिपा लें। इसी भांति जब हमारे स्वभावगत आनंद को ठेस लगती है तो हम चौंक पड़ते हैं और दुःख-दर्द का अनुभव करते हैं।

यह तो मान लिया। लेकिन हमारा प्रश्न फिर भी, बना रहता है कि आनंद के होते हुए दुःख-दर्द आता कहां से है और इसे हटाने का उपाय क्या है ? वह कौन-सा राहु है जो हमारे जीवन के आलोक को बार-बार अंधकार में बदल देता है ? हमारा स्वभाव बन गया है कि अमुक क्रिया हो तो हमें दुःख होता है, अमुक क्रिया हो तो हमें अच्छा लगता है। यह चीज बड़ी हदतक सामूहिक मानस और सामान्य रीति-रिवाज और आदतों पर निर्भर है। हमारे एक मित्र की छोटी-सी लड़की थी, उसे यह शिक्षा दी गयी कि जब कभी वह गिर पड़ती है तो उसके गिरने से धरती को चोट लगती है। परिणामस्वरूप गिरने पर रोने की जगह वह छोटी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी बालिका धरती को सहलाने और पुचकारने लगती थी और अपने दर्द का उसे भान तक न होता था। हमारे यहां की सर्दियों में भी यूरोप से आये हुए लोगों को गर्मी लगती है। अफीम-संखिया आदि बड़े घातक विष हैं पर ऐसे भी लोग हैं जो इनके बिना जीवित नहीं रह सकते। मृत्यु सबसे अधिक कष्ट देनेवाली चीज है पर हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि जब क्रांतिकारी युवकों को मृत्युदण्ड सुनाया जाता था तो वे बड़े प्रसन्न होते थे और उनका भार बढ़ जाता था। नयी-नवेली दुलहिनें अपने हाथ से अपने पति की कमर में तलवार बांधकर उन्हें मरने के लिये भेज देती थीं। इन उदाहरणों से यही प्रतीत होता है कि हमारा स्नायुमण्डल एक विशेष प्रकार की प्रतिक्रियाओं के लिये अभ्यस्त होता है। अगर हम किसी तरह क्षणिक अथवा स्थायी रूप में इस अभ्यास को बदल सकें तो प्रतिक्रिया भी एकदम बदल जाती है। दक्षिण भारत में किन्हीं उत्सवों के समय आग पर चलने की प्रथा है, कई डॉक्टर हिप्नोटिज़्म के द्वारा सम्मोहन करके शल्य-कर्म करते हैं। इन उदाहरणों से यह प्रमाणित होता है कि दुःख-सुख स्नायुओं की प्रतिक्रियाएं हैं, अथवा प्राण के रुद्ध होने या मन के रूठ जाने के परिणाम होते हैं। हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य—नहीं एकमात्र लक्ष्य है भगवान् की चेतना को यहां प्रकट करना। इस मार्ग में जो चीजें बाधक होती हैं उन्हें हटाना आवश्यक है। दुःख-दर्द आदि हमारी कमजोरियों की ओर, हमारी चेतना अथवा हमारे शरीर की त्रुटियों की ओर संकेत करते हैं। अगर हम इन अवसरों का लाभ उठाकर अपने अंदर की त्रुटियों को निकाल सकें तो एक सुनिश्चित प्रगति हो जाती है और हम कुछ ऊपर उठ पाते हैं। हमें जब कभी कोई कष्ट होता है—चाहे वह शरीर, मन, प्राण कहीं भी क्यों न हो—तो वह इस बात का सूचक है कि हमारे अंदर होनेवाली प्रगति के पथ में कोई रोड़ा अटका रहा है। अगर हम इस अवसर का लाभ उठाकर धीरज और अध्यवसाय के साथ भागवत चेतना का आवाहन करें तो हम देखेंगे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते की बाधाएं अपने-आप हटती जाती हैं और जो कष्ट हमारे जीवन को दूभर बनाये दे रहा था वह प्रगति की सीढ़ी बन गया है।

हमें कष्ट, रोग, दुःख आदि का स्वागत नहीं करना चाहिये। ये हमारी आंखें खोलने में सहायक होते हुए भी वांछनीय नहीं हैं। इनके अतिरिक्त और भी मार्ग हैं जिनसे हम भगवान् की ओर खुल सकते हैं। परंतु जब सिर पर आ ही जायें तो इनका सदुपयोग करना चाहिये। चाहे जितनी बड़ी विपदा हो वह प्रगति के लिये सदा सहायक हो सकती है। उसके आने पर रोने-बिलखने की जगह, विधाता को कोसने की जगह अगर हम अपने-आपको सन्मार्ग पर ला सकें तो दुःख-दर्द एक स्वप्न रह जायेंगे।

('पुरोधा' अक्तू० ६५ से)

—रवीन्द्र

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

युद्ध और राजनीति

(गतांक से आगे)

परिस्थिति चाहे बदलती रहे किंतु सख्त स्वभाव के लोग अपना ही राग अलापते रहेंगे, वे अनम्य ही रहेंगे। कठोर व्यक्ति ही सब परिस्थितियों में अनम्य, यानी जैसा पूर्व-निश्चित है, वैसा ही वर्ताव करने का आग्रह करते हैं। मुझे अभीतक श्रीअरविन्द की वह मुद्रा याद है जब उन्होंने मुझे समाचार दिया कि हिटलर आगे ही आगे कूच कर रहा है और इंग्लैंड ने युद्ध में उतरने की घोषणा कर दी है। कुछ समय के लिये संसार दुविधा में सोचता रहा था कि क्या हिटलर हॉलैंड की निष्पक्षता की अवहेलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर, बेलजियम में प्रवेश कर ही लेगा! हमें उसके इस इरादे के बारे में जरा भी संदेह न था। अब श्रीअरविन्द का मितभाषी वक्तव्य देखें; शाम का समय था, श्रीअरविन्द अपने कमरे में अकेले बैठे थे। जैसे ही मैंने कमरे में पांव रखा, उन्होंने कहा, "हिटलर ने हॉलैंड पर आक्रमण कर दिया है। खैर, देखा जायेगा।" बस, उन्होंने इतना ही कहा। युद्ध के विषय में उनके ऐसे संक्षिप्त किंतु सार-गर्भित वाक्य मेरे कानों में अभी तक गूंजते रहते हैं।

दूसरा अति संकटकालीन समय तब आया जब स्टैलिन इंग्लैंड के माथे पर बंदूक ताने रूस के साथ हाथ मिलाने को तैयार हो रहा था। हम लोग भयभीत होकर सोचने लगे कि अगर ऐसी विकट संधि हो गयी तो ... ? हम श्रीअरविन्द से कहने लगे, "तब तो भगवान् सफल कैसे होंगे?" उनका प्रत्युत्तर था, "क्या भगवान् स्टैलिन से संत्रस्त हो उठेंगे?"

जब हिटलर सारे यूरोप के ऊपर उल्का की भांति तेजी से छाता जा रहा था, तो हमारा एक साथी निराशा में गुरु को पुकार उठा, "भगवान् कहां हैं? आपके आशाजनक वाक्य का क्या हुआ?" शांत भाव से श्रीअरविन्द ने उत्तर दिया, "हिटलर अमर नहीं है।"

उसके बाद आया डंकर्क का प्रख्यात युद्ध जहां चारों ओर से शत्रु ने स्थल सेना द्वारा, हवाई हमलों द्वारा मित्र राष्ट्र की सेना पर ग्रीष्म के स्वच्छ आकाश के चमकते सूर्य के प्रकाश में आक्रमण शुरू कर दिया जिसके कारण मित्र राष्ट्र की सेना बुरी तरह शत्रु के आक्रमण के चक्रव्यूह में घिर गयी और ऐसे मौसम में मित्र राष्ट्रों का पीछे हटना खतरनाक किंतु अनिवार्य हो उठा। हठात् पता नहीं कहां से बहुत धुंधला कुहरा छा गया और पीछे हटती सेना को इस अप्रत्याशित मौसम से सुरक्षा प्राप्त हो गयी। हमने सुना तो श्रीअरविन्द से कहा, "कुहरे ने सेना को पीछे हटने में सहायता दी।" उसके उत्तर में श्रीअरविन्द बोले, "हां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय कुहरे का छा जाना असाधारण बात है।" हम उस वाक्य का अर्थ समझ गये। डंकर्क के पतन और फ्रांस के आत्म-समर्पण के बाद ही श्रीअरविन्द ने अधिक गंभीरता से मित्र-राष्ट्रों के पक्ष में सक्रिय सहायता देनी शुरू कर दी। और उन्होंने संतोषपूर्वक देखा कि जर्मन-विजय कूच का तेजी से आगे बढ़ना प्रायः रुक-सा गया और युद्ध का ज्वार विपरीत दिशा में बहने लगा।

इस तरह हम देखते हैं कि श्रीअरविन्द केवल तटस्थ साक्षी न थे, मित्र-राष्ट्रों की युद्ध-नीति के केवल मौखिक आलोचक न थे। अंग्रेज सरकार ने जब भारत से युद्ध में सहायता करने की मांग की, तब हमारे नेताओं ने इनकार किया था। उसी समय माताजी और श्रीअरविन्द ने युद्ध-निधि में अपनी ओर से दान दिया तब हमारे देशवासियों के आश्चर्य और क्रोध की सीमा न रही। यह देखकर श्रीअरविन्द ने पहली बार राष्ट्र के आगे स्पष्ट किया कि इस युद्ध से कैसी-कैसी समस्याएं जुड़ी हुई हैं। इस दान की घोषणा के कुछ दिन पहले मुझे याद है कि एक दिन सवेरे-सवेरे अप्रत्याशित रूप से माताजी तेजी से श्रीअरविन्द के कमरे में एक लंबा कागज लेकर आयी थीं। मैंने अनुमान लगाया कि कुछ विशेष गोपनीय चर्चा होने जा रही है इसलिये सावधानी से वहां से बाहर निकल गया। फिर और एक आश्चर्य! अप्रत्याशित रूप से पुराणी आये तो मेरा माथा ठनका, सोचा, "आह, कुछ होने जा रहा है।" कुछ दिनों के बाद रहस्य खुल गया; अखबारों में श्रीअरविन्द और माताजी के युद्ध-निधि में दान देने की बात छप गयी थी। उन्होंने तब हमें समझाया कि युद्ध-निधि में दान क्यों दिया गया था। वे बोले, "संस्कृति और उसकी उच्चतम सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गरिमा को बनाये रखने तथा सारी मानवजाति के भविष्य की रक्षा के लिये यह युद्ध हो रहा है। अन्य लोग युद्ध-निधि में दान देने के लिये प्रोत्साहित हों, यह सोचकर उन्होंने पहले दान दिया था। किंतु इस सद्भावना के लिये उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे देश की ओर से केवल विरोध, मिथ्या आरोप और कटाक्ष ही मिले! मानों इतना पर्याप्त न हो, उनके कुछ शिष्य भी इस शंका-जाल में फंस गये थे। उनके विशेष स्पष्टीकरण के बाद भी वे उलझन में फंसे रहे। एक अनुयायी जो साधक न था उसने माताजी से पूछा, "कांग्रेस ने हमसे कहा है कि युद्ध-निधि में हमें कुछ भी देना नहीं चाहिये। हम क्या करें?" उसे उत्तर मिला, "श्रीअरविन्द ने एक दिव्य उद्देश्य से दान दिया है। अगर तुम भी दान दोगे तो अपनी ही मदद करोगे।" ऐसे लोग काफी थे जो नाज़ी विजय चाहते थे, वह भी केवल इसलिये कि उनको ब्रिटिश सरकार से घृणा थी। ऐसे लोगों को माताजी को कठोर चेतावनी देनी पड़ी, "अब स्पष्ट शब्दों में और अत्यंत महत्त्व देते हुए यह कहना जरूरी हो गया है कि जो लोग अपने विचारों द्वारा, इच्छा द्वारा नाज़ी विजय को समर्थन दे रहे हैं, उस विजय का आह्वान कर रहे हैं, वे भगवान् के विरुद्ध असुर को सहयोग दे रहे हैं और असुर की विजय में सहायता कर रहे हैं।"

यहां मैं माताजी का मित्र राष्ट्रों के प्रति जो समर्थन था, उसके विषय में कुछ साधकों के विवरणों का उल्लेख करना चाहूंगा।

"यह मुझे मालूम न था कि 'प' ने युद्ध-निधि में श्रीअरविन्द के दान देने पर हुई मेरी प्रतिक्रियाएं माताजी को सुनायी थीं, हठात् मैंने देखा कि माताजी मेरी ओर ध्यान नहीं दे रहीं। मैंने सोचा कि शायद वे इन दिनों बहुत व्यस्त रहती हैं इसलिये मेरी ओर ध्यान नहीं दे पातीं। फिर भी कुछ दिनों तक मैंने उनका बहुत अच्छी तरह निरीक्षण किया और मुझे विश्वास हो गया कि कुछ गड़बड़ अवश्य है। मैं उनके पास गया, पूछा, "आप मेरी अवज्ञा क्यों कर रही हैं?" उन्होंने कहा, "तुम कारण अच्छी तरह जानते हो।" मैं असमंजस में पड़ गया। मैंने कई कारणों का अनुमान लगाया, एक ही को छोड़कर जो उनकी दृष्टि में गंभीर था क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा था कि 'प' के साथ हुई मेरी बातचीत को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह माताजी के आगे दुहराएगा। तब मैंने माताजी से अपनी गलती दिखाने की प्रार्थना की ताकि मैं उस भूल को सुधार पाऊं। इसके उत्तर में उन्होंने सख्ती से कहा, "कुछ ऐसी बातें हैं जो तुम्हारे जन्म से पहले निर्धारित हो गयी थीं और हम उनपर बहुत समय से काम करते आ रहे हैं। अब तुम अपनी अत्यल्प बुद्धि से फैसला करके मानते हो कि वह सब कुछ भी नहीं है, कि श्रीअरविन्द और मैं गलती कर रहे हैं, कि तुम्हारा मत ही उचित है।" मैं यह सुनकर हक्का-बक्का रह गया और तुरंत मेरे दिमाग में बिजली कौंधी। अचकचा कर मैं सोचने लगा, "क्या कारण है ?" तब मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्या 'प' से मैंने युद्ध के बारे में जो कहा था, वह है ?" माताजी ने स्वीकृति में सिर हिलाया। मैं आश्वस्त हुआ, बोला, "ओह, वह कुछ खास न था। मैंने उससे बात-बात में कह दिया था। बात गंभीर न थी।" किंतु माताजी का चेहरा सख्त ही रहा, उन्होंने कहा, "गंभीर न थी ? मुझे प्रायः अविश्वसनीय लगा कि तुम, सब लोगों में से तुम श्रीअरविन्द के बारे में ऐसी बात कह सकते हो! प्रेस में उनके जो वक्तव्य प्रकाशित हुए हैं, तुमने पढ़े नहीं ?" मैं बोला, "हां, मां पढ़े हैं। लेकिन क्या अंग्रेजों ने भारत के साथ अन्याय नहीं किया है ?" माताजी का उत्तर था, "हमने यह तो नहीं कहा कि उन्होंने अन्याय नहीं किया है, यह भी नहीं कहते कि वे भविष्य में नहीं करेंगे। किंतु क्या तुम इतना नहीं समझते कि आज का प्रश्न वह नहीं है ? जब तुम्हारे पड़ोसी के घर में आग लग जाये तो तुम इसलिये सहायता करने नहीं दौड़ोगे कि उसने तुम्हारे साथ किसी दिन अन्याय किया था ? फिर खतरा यह होगा कि तुम्हारे घर में भी आग लग जायेगी और तुम अपनी जान खो बैठोगे। जो शक्तियां भगवान् के लिये लड़ रही हैं और जो असुर की ओर से लड़ रही हैं; क्या तुम उन शक्तियों के बीच भेद नहीं देख पाते ?" मैंने कहा, "हां, मां, मैं देख पाता हूं, केवल जो बात मुझे चकरा देती है वह यह है कि जिस चर्चिल को आपने और श्रीअरविन्द ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने यंत्र के रूप में चुना है वह भारत की मदद इसलिये चाहता है कि वह अपने राष्ट्र के अस्तित्व को बचा पाये, फिर भी वह कहता है कि उसकी सरकार का इरादा अपने सम्राट् के साम्राज्य को मिटाना नहीं है!" माताजी ने उत्तर दिया, "इन बातों को भगवान् के ऊपर छोड़ दो। चर्चिल आखिर मनुष्य है, कोई योगी नहीं जो अपनी प्रकृति का रूपांतर करना चाहता हो। इस समय वह उस राष्ट्र की आत्मा का प्रतिनिधि है जो असुर के विरुद्ध लड़ रहा है। स्वयं भगवान् उसका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं और उसकी आत्मा भव्यता से उस पथ-प्रदर्शन को प्रत्युत्तर दे रही है। इस समय हमारा सारा ध्यान मित्र राष्ट्रों को विजय प्राप्त करने में सहायता देने में लगाना चाहिये ताकि उनकी निश्चित विजय शीघ्रता से आये। हमारी ओर से जरा भी शिथिलता न रहनी चाहिये, और असुर के प्रभाव की ओर किंचित् मात्र झुकाव न रहना चाहिये। विजय की प्राप्ति के बाद भी अगर चर्चिल की आत्मा उसको मार्ग दिखाती रहे और वह उस समय भी भगवान् के संपर्क में रह कर उनके निर्देशन में काम करता रहे तो क्रम-विकास की पंक्ति में वह बहुत तेजी से आगे बढ़ जायेगा। लेकिन धरती पर ऐसा होता नहीं। यह आपत्काल समाप्त होते ही उसका मानव मन और प्राण आगे आकर उसका मार्ग-दर्शन करना शुरू कर देंगे। तब वह सामान्य मनुष्य के स्तर पर उतर आयेगा, फिर भी वह कुछ उच्चतर श्रेणी का मनुष्य तो होगा ही।"

जब डॉ० राव श्रीअरविन्द की सेवा में दवाई वगैरह की सलाह देने आये, तो उन्होंने कहा कि मद्रास में कई लोग हैरान हो रहे थे कि जो श्रीअरविन्द अंग्रेज-विरोधी थे, वे ही युद्ध-निधि में चंदा कैसे दे सकते हैं! गुरु ने बड़े विस्तार से डॉक्टर को अपने इस कदम लेने के कारण समझाये। विस्तार से इसलिये बोले कि जब अवसर मिले तब डॉक्टर मद्रास के लोगों को उनका दृष्टिकोण समझा पायें। जिन कारणों से हम लोग परिचित हो चुके थे इनके अलावा श्रीअरविन्द ने युद्ध में अपने गुह्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान के प्रयोग की भी बात कही थी। उन्होंने डॉक्टर से पूछा, "क्या तुम जानते हो कि हिटलर दक्षिण अमरीका में पांव पसारने की कोशिश क्यों कर रहा है और वहां जोर-शोर से अपना प्रचार-प्रसार क्यों कर रहा है? तब वहां से वह आसानी से अमरीका पर आक्रमण कर पायेगा। इस समय वह वस्तुतः सारे यूरोप का मालिक है। फ्रांस के पतन के बाद अगर उसने इंग्लैंड पर चढ़ाई की होती तो इस समय वह एशिया में प्रवेश कर चुका होता . . . अब एक और शक्ति उसकी शक्ति के विरुद्ध खड़ी की गयी है; फिर भी खतरा अभीतक टला नहीं है। हिटलर के लिये अभीतक ५० % सफलता की संभावना बनी हुई है। जबतक फ्रांस का पतन हुआ तबतक वह बहुत सफल रहा क्योंकि उसके पीछे एक आसुरिक शक्ति उसे मार्ग-दर्शन दे रही थी और उस शक्ति से उसे असाधारण रूप से उचित संदेश मिलते रहे।"

राव—भारत की मुसीबत यह है कि अभीतक ब्रिटिश सरकार ने भारत को दिये वायदों में से एक भी निभाया नहीं है, इसलिये कोई भी उनपर विश्वास नहीं करता।

श्रीअरविन्द—ब्रिटेन विश्वास नहीं करता कि स्वतंत्र उपनिवेश का पद देने पर भी भारत उसकी सहायता करेगा, अन्यथा वे स्वतंत्र उपनिवेश का पद भारत को देते।

राव—मैं नहीं मानता कि भारत सहायता करने से इनकार करेगा।

श्रीअरविन्द—तुम नहीं मानते? साम्यवादी दल की बाईं शाखा, शरतचन्द्र बोस की क्या राय होगी? यह बात भी सच नहीं है कि उन्होंने कुछ नहीं दिया। अंग्रेज सरकार का चरित्र है क्रमशः देने का। जब-जब उनका स्वार्थ खतरे में पड़ जाता है, वे समझौते पर उतर आते हैं। उन्होंने भारत को प्रादेशिक स्वायत्त शासन दिया था और उसके बाद वीटो (निषेधाधिकार) का प्रयोग नहीं किया। कांग्रेस ने ही त्यागपत्र देकर सब बिगाड़ दिया था। त्यागपत्र दिये बिना अगर उन्होंने केंद्र पर दबाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला होता तो अभीतक उन्हें वह प्राप्त हो जाता जो वे चाहते थे। दो कारणों से मैं अंग्रेजों का समर्थन करता हूं। एक है भारत का कल्याण और दूसरा है मानवजाति का कल्याण। मैंने जो कारण बताये हैं, वे केवल बाह्य हैं, इनके अलावा आध्यात्मिक कारण भी है।

(क्रमशः) —नीरदवरण

मानवजाति का उपकार

जो व्यक्ति पूर्णयोग की साधना करना चाहता है उसके लिये मानवजाति की भलाई अपने-आपमें लक्ष्य नहीं हो सकती, यह तो केवल एक परिणाम और फल है। मानव-अवस्थाओं को सुधारने के समस्त प्रयत्न, उन्हीं अवस्थाओं के द्वारा प्रेरित तीव्र उत्साह और लगन के होते हुए भी, अंत में बुरी तरह असफल ही हुए हैं। इसका कारण यह है कि मानव जीवन की अवस्थाओं का रूपांतर केवल तभी हो सकता है जब उससे पहले एक प्रारंभिक रूपांतर, अर्थात्, मनुष्यों की चेतना का रूपांतर साधित हो जाये, या कम-से-कम उन थोड़े-से विशिष्ट व्यक्तियों की चेतना का रूपांतर तो हो ही जाये जो एक अधिक रूपांतर का आधार तैयार कर सकते हों . . .

इस विषय पर कुछ कहने से पहले मैं दो प्रभावशाली दृष्टातों के विषय में कुछ कहूंगी जो सच्चे परोपकारी व्यक्तियों के हैं। एक उदाहरण है पूर्व का, बुद्ध का, और दूसरा है पश्चिम का, संत वैसां द पॉल का। संत वैसां द पॉल का विश्वास अत्यंत उत्कट था और उन्होंने अपने साथियों को भी यही उपदेश दिया कि मनुष्य को अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिये। किंतु जब वे मानवीय दुःखों के संपर्क में आये तो उन्हें शीघ्र ही ज्ञात हो गया कि आत्मा की प्राप्ति के लिये मनुष्य के पास उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजने के लिये समय होना चाहिये। जिन लोगों को प्रातः से सायं तक और कभी-कभी सायं से प्रातः तक भी, जरा-सी कमाई के लिये, जो उन्हें जीवित रखने के लिये भी शायद ही पर्याप्त होती हो, कठोर परिश्रम करना पड़ता है, उन्हें अपनी आत्मा के विषय में सोचने का अवकाश ही कहां मिलता है ? तब वे अपने दयालु हृदय की सरलता के साथ इस निर्णय पर पहुंचे कि जिन लोगों के पास आवश्यकता से अधिक धन है, वे यदि, कम-से-कम गरीब लोगों की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर दें तो दुःखी लोगों को अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिये समय मिल सकता है। वे सामाजिक कार्यों के गुण तथा प्रभाव में, एक सक्रिय एवं भौतिक उपकार में विश्वास रखते थे। उनकी यह धारणा थी कि दुःख का अंत तभी हो सकता है जब अधिकतर व्यक्ति कष्ट से मुक्त हो जायें, अधिक-से-अधिक व्यक्तियों का, अधिकतम व्यक्तियों का दुःख-मोचन हो जाये। किंतु यह केवल शामक औषधि है, दुःख का इलाज नहीं . . .

बुद्ध के अनुसार कष्ट जीवन का ही परिणाम है और वह जीवन को नष्ट करने से ही नष्ट हो सकता है। क्योंकि जगत् और जीवन मनुष्य की जीवित रहने की इच्छा का परिणाम एवं अज्ञान का फल है; इच्छा का नाश करो, अज्ञान को दूर करो और तब जगत् और उसके साथ-ही-साथ दुःख और कष्ट भी विलुप्त हो जायेंगे। एकाग्रता के महान् प्रयत्न के द्वारा उन्होंने एक साधना का, एक ऐसी उच्चतम और अत्यंत प्रभावशाली साधना का विकास किया जो मुक्ति के पिपासुओं को इससे पहले कभी उपलब्ध नहीं हुई थी . . .

शारीरिक कष्टों का निवारण—यह समाधान संत वैसां द पॉल का था—किसी भी प्रकार मनुष्यों को उनके दुःखों और कष्टों से मुक्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि समस्त मानव कष्ट भौतिक अभावों से ही नहीं उत्पन्न होते और न ही केवल बाह्य साधनों द्वारा दूर किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात इससे बिलकुल दूसरी है। शारीरिक कुशलक्षेम से ही आवश्यक रूप में सुख और शांति नहीं मिलती, दरिद्रता भी आवश्यक रूप में कोई दुःख का कारण नहीं है, जैसा कि उन तपस्वियों के उदाहरण से स्पष्ट है जो दरिद्रता को अपनाते थे, जो अपनी अकिंचनता को ही पूर्ण शांति और आनंद का स्रोत एवं कारण समझते थे। ऐसे उदाहरण सभी देशों में मिलते हैं। इसके विपरीत, संसार के सुखों का उपभोग भी—उन सब सुखों का जिन्हें स्थूल धन सुख, आराम और बाह्य संतोषों के रूप में अपने साथ लाता है—उस मनुष्य को दुःख और कष्ट के आक्रमण से नहीं बचा सकता जिसके पास ये सब वस्तुएं हों . . .

दूसरा समाधान, जो बुद्ध का है, अर्थात्, जीवन से पलायन भी समस्या का हल नहीं कर सकता। यह मान भी लिया जाये कि बहुत-से व्यक्ति इस साधना का अभ्यास करके अंतिम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, तब भी इसके द्वारा पृथ्वी से दुःख का लोप नहीं हो सकता, न ही दूसरों के, अर्थात्, सबके कष्ट ही दूर किये जा सकते हैं जो अभी इस निर्वाण-पथ का अनुगमन करने में समर्थ नहीं।

वस्तुतः सच्ची प्रसन्नता वह है जिसे मनुष्य प्रत्येक स्थिति में, चाहे वह कैसी भी हो, अनुभव कर सके, क्योंकि वह जिस लोक से आती है उसपर बाह्य अवस्थाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। किंतु वह प्रसन्नता बहुत कम लोगों के हिस्से में आती है, अधिकतर लोग तो अभीतक पार्थिव अवस्थाओं के वश में हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि एक ओर तो मानव चेतना में परिवर्तन होना अत्यंत आवश्यक है, और दूसरी ओर, पार्थिव वायुमंडल के पूर्ण रूपांतर के बिना मनुष्य-जीवन की अवस्थाओं में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हो सकता। हर हालत में उपाय एक ही है : पृथ्वी पर तथा मनुष्यों में, एक साथ ही, एक नयी चेतना की अभिव्यक्ति होनी चाहिये। इस संसार में अतिमानसिक चेतना का अवतरण और उसके साथ-ही-साथ एक नयी शक्ति, नये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश और बल का प्रादुर्भाव ही मनुष्य को उस दुःख, पीड़ा और कष्ट से मुक्त कर सकता है जिसमें वह आपादमस्तक डूबा पड़ा है। कारण, केवल अतिमानसिक चेतना ही पृथ्वी पर एक उच्चतर संतुलन, एक अधिक पवित्र और सच्चा प्रकाश उतार कर रूपांतर के महान् चमत्कार को साधित कर सकती है . . .

किंतु इस रूपांतर के लिये, एक नयी जाति के सृजन के लिये अंधे परीक्षण और अन्वेषण करने में सदियां लग सकती हैं, जब कि मनुष्य की विवेकपूर्ण इच्छा-शक्ति से यह कार्य न केवल थोड़े समय में ही, बल्कि बिना अपव्यय और हानि के भी साधित हो सकता है।

ठीक इसी प्रसंग में पूर्णयोग के उपयुक्त स्थान और उसकी उपयोगिता का पता चलता है। कारण, योग का उद्देश्य एकाग्रता और प्रयत्न की तीव्रता के द्वारा उस विलंब पर विजय प्राप्त करना है जिसे काल किसी भी आमूल रूपांतर और नये सृजन के कार्य पर थोप देता है।

पूर्णयोग का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति इस भौतिक जगत् को स्थिर रूप से इसके भाग्य पर छोड़ इससे भाग खड़ा हो। न ही यह योग भौतिक जीवन को, जिस रूप में यह है, बिना किसी निश्चयात्मक परिवर्तन की आशा के स्वीकार ही करता है। यह जगत् को भागवत इच्छा की अंतिम अभिव्यक्ति के रूप में अंगीकार नहीं करता।

पूर्णयोग का ध्येय है चेतना की सब सीढ़ियों पर, साधारण मानसिक चेतना से लेकर अतिमानसिक और भागवत चेतना तक, आरोहण करना और जब यह आरोहण पूरा हो जाये तो वापिस इस जड़ जगत् की ओर लौटना और इस प्रकार से प्राप्त अतिमानसिक शक्ति और चेतना को इसमें संचारित करना, ताकि यह पृथ्वी क्रमशः अतिमानसिक दिव्य जगत् में रूपांतरित हो जाये।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नन्हें-मुन्नों के लिये' :

जेल या . . . ?

कलकत्ते के पास एक जगह है उत्तरपाड़ा।

जेल से छूटने पर श्रीअरविन्द ने अपना पहला भाषण उत्तरपाड़ा में दिया। यह तो तुम जानते ही होगे कि श्रीअरविन्द एक साल जेल में रहे थे।

उनका क्या कसूर था ? कुछ भी नहीं। बस यही कि अंग्रेज सरकार उनसे बहुत डरती थी। उसे डर था कि वे उसका अन्त नजदीक ला रहे हैं। उन्हें साल भर जेल में रहना पड़ा, उसमें से कुछ समय एकांतवास में।

तुम शायद पूछो कि एकांतवास क्या होता है ?

एकांतवास का मतलब है एकदम अकेले में रहना। एकांतवास में उन्हें अकेला रहना पड़ता था। आसपास कोई नहीं। उन्हें कभी बाहर आंगन में टहलने भी न दिया जाता था। हां, बाद में उन्हें शाम के समय जरा-सा टहलने की इजाजत मिल गयी थी। हमारे तुम्हारे तो यह सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी हालत में एक दिन रहना भी मुश्किल है।

लेकिन श्रीअरविन्द महान् हैं। वे हमें यह दिखा रहे हैं कि आदमी सब कुछ कर सकता है। कठिनाइयों से उसे भागना नहीं चाहिये, वे आयें तो धीरज के साथ उनका सामना करना चाहिये।

हजारों लोग जेल जाते हैं। क्या वे जेल जाकर कुछ प्राप्त करते हैं ? नहीं, ऐसे बहुत कम होते हैं। श्रीअरविन्द जेल जाकर एक बहुत बड़ी चीज लाये। वे अपने जीवन के सत्य को खोज लाये।

जेल में एक साल बिता आने पर उन्होंने उत्तरपाड़ा में अपने जेल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव सुनाये। वहां की बातें बतायीं और बताया कि जब उन्हें अपने चारों ओर अंधेरा दीखता था, भगवान् ने यकायक उजाला कर दिया।

अच्छा बच्चो, बताओ यदि तुम्हें कभी स्कूल में या और कहीं भाषण देने के लिये कहा जाये तो तुम क्या करोगे ? पहले जो कुछ कहना है उसे लिख लोगे और फिर अपने लेख को दो-चार बार ठीक तरह पढ़ जाओगे। तुम्हें डर लगा रहेगा कि कहीं तुम बीच में ही भूल न जाओ और सबके सामने तुम्हारी हंसी न उड़े। और यदि भाषण देने से पहले कोई तुमसे कहे कि अच्छा आज इस विषय पर न बोलकर किसी दूसरे विषय पर बोलो तो क्या तुम स्वीकार करोगे ? शायद कभी नहीं। तुम्हारे मन में तरह-तरह के विचार उठेंगे—यदि अटक गया तो! एक बार रुक जाने पर क्या होगा ? आदि . . .

श्रीअरविन्द के साथ ऐसा ही हुआ। वे कहनेवाले थे हिन्दूधर्म के बारे में किंतु सुनाने लगे अपने जेल के अनुभव, क्योंकि भगवान् का यही आदेश मिला था।

श्रीअरविन्द के जेल जाने के समय देश के लोगों में बहुत उत्साह था। भारत को आजाद करने के लिये वे बहुत कुछ कर रहे थे। उस समय भारत मानों एक समुद्र था जिसमें भारतवासी लहरों के समान काफी ऊंचे उठ रहे थे। उनके मन में जोश भरा था। लेकिन जेल से निकलने पर श्रीअरविन्द ने सब कुछ उल्टा देखा। समुद्र शांत हो चुका था। ऐसा लगा मानों भारत फिर से सो गया हो।

लेकिन क्या वे यह सब देखकर हताश हुए ?

जरा भी नहीं। उन्होंने सोचा, जो शक्ति कोलाहल लायी थी वही इस शांति को भी लायी है। शायद यह समय भारत के सोचने का है। कोई बड़ा काम करने से पहले हम सोचते हैं, सोचते समय बाहर से देखने में ऐसा लगता है मानों हम समय नष्ट कर रहे हैं। शायद भारत के लिये वही समय था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल से बाहर आने पर उन्हें कोई भी बड़ा नेता मैदान में न दिखलायी दिया लेकिन वे निराश न हुए। क्योंकि उन्हें सब जगह ईश्वर की कृपा दिखायी देती थी। लेकिन मैं तो पीछे की बात पहले सुनाने लग गयी। अब जरा मेरे साथ वापिस चलो।

उस दिन मई की दूसरी तारीख थी। श्रीअरविन्द अभी सोकर भी न उठे थे कि पुलिस उन्हें पकड़ने आ गयी और किसी बम के मामले में उन्हें लालबाजार थाने ले जाया गया। उस समय श्रीअरविन्द इस रहस्य को न समझ पाये। बच्चो, जरा कल्पना करो तुम्हें कोई कच्ची नींद में जगा कर सीधा थाने में ले जाये तो तुम क्या करोगे ?

शांत स्वभाव के श्रीअरविन्द ऊपर से कुछ न बोले, लेकिन उन्होंने मन-ही-मन भगवान् से पूछा, 'भगवन्! यह क्या ? मुझे अपनी मातृभूमि के लिये बहुत कुछ करना है। जेल चले जाने पर मैं अपने कर्मों को कैसे कर पाऊंगा ? क्या अब मैं अपने देश के भाइयों और मातृभूमि के लिये काम में न आ सकूंगा ?' स्वाभाविक ही था कि उस हालत में ऐसे विचार मन में आयें।

हम जानते हैं कि भगवान् अपने बालकों का दुःख नहीं देख सकते। अगर तुम उनके सच्चे बालक हो और किसी मुसीबत में पड़े हो तो भगवान् दौड़े-दौड़े तुम्हें बचाने आयेंगे। तुमने ऐसी कितनी ही कहानियां सुनी होंगी। सुनी हैं न ? हां, तो श्रीअरविन्द ने ज्यों ही उन्हें बुलाया, वे तत्क्षण उपस्थित हो गये और बोले, ठहरो, और देखो क्या होता है।

स्वयं प्रभु की आवाज सुनकर उनका मन एकदम शांत हो गया।

पहले उन्हें एक महीने तक एक अलग कमरे में रखा गया। कमरा क्या, काल कोठरी समझो। वहां न कोई बात करनेवाला था और न कुछ पढ़ने की सामग्री थी। ऐसे समय श्रीअरविन्द ने फिर से भगवान् की वाणी सुनने की कोशिश की। मन एकदम शांत कर वे अंदर के भगवान् को खोजने में लग गये। और जानते हो उन्होंने क्या खोजा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् ने उनसे कहा, मैं तुम्हें किसी और काम के लिये इस धरती पर लाया हूं। राजनीति के काम को बढ़ाने के लिये अब और लोग आयेंगे।

जेल में एक साल में भगवान् ने उन्हें बहुत कुछ समझाया और उनके हाथों में गीता पकड़ा दी।

भगवद्गीता एक कठिन पुस्तक है, उसका हर श्लोक एक मंत्र की तरह है। हम ऊपर से मतलब भले समझ लें पर अनुभव के बिना उस अर्थ का चौथाई मूल्य भी नहीं होता। श्रीअरविन्द ने सब कुछ अनुभव किया। एक-एक बात की गहराई को पकड़ा।

संक्षेप में तुम्हें बताती चलूं कि गीता में क्या कहा गया है। उसमें कहा है, हमेशा भगवान् के बनकर रहो। अपना तन-मन-धन सब ईश्वर पर न्योछावर कर दो, तब तुम अहं से छूट सकोगे। तुम भगवान् के सच्चे बच्चे बन सकोगे। तुम्हारी अपनी कोई इच्छा न होगी, प्रभु तुम्हें जो कुछ देंगे उसीसे संतुष्ट रहोगे। किसी भी काम को परिणाम मिलने की आशा से मत करो।

भगवान् ने श्रीअरविन्द को पूरी तरह से अपनी ओर मोड़ने के लिये जेल भेजा था। यहीं भगवान् ने श्रीअरविन्द को अपना रूप दिखाया। जानते हो कैसे ? श्रीअरविन्द को सब जगह कृष्ण ही कृष्ण दिखायी देने लगे। वे अपनी कोठरी के सामने टहल रहे थे, उस समय उनके सामनेवाले पेड़ की डाली, डाली नहीं श्रीकृष्ण बन गयी। उनकी कोठरी के सींखचे कृष्ण हो गये।

जैसे ही उन्होंने पहरेदार की ओर देखा उन्हें वासुदेव दिखायी दिये। जब श्रीअरविन्द मोटे कम्बलों पर लेटे तो उन्हें लगा कि वे कृष्ण की भुजाओं में हैं। जिधर भी उनकी नजर जाती केवल कृष्ण ही कृष्ण दीखते, यहांतक कि चोर, अपराधी, डाकू वगैरह भी कृष्ण रूप में दिखायी देने लगे। अदालत में जब उनका मुकद्दमा चल रहा था तो उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजिस्ट्रेट की कुर्सी पर भी कृष्ण बैठे दिखायी दिये। वकील भी वासुदेव ही थे।

प्रभु उनके कान में फुसफुसाये, 'देखो, जब तुम्हें जेल में लाया गया था तुम एकदम हताश हो गये थे। अब देखो, यह सब मैं ही करवा रहा हूं। तुमने स्वयं देख लिया कि सिर्फ अच्छी ही नहीं खराब चीजों में भी मैं ही हूं। मैं हमेशा तुम्हारी सहायता करूंगा। तुम हमेशा यह याद रखना कि मैं सब काम करवा रहा हूं, चाहे जितनी कठिनाइयां क्यों न आयें तुम अपने रास्ते से कभी न डिगना।'

—अनुबेन

बनी-बनायी कहानी

मैं अपने कमरे में चक्कर लगा रहा था। चेहरे पर चिंता के भाव जरूर दिखायी दे रहे होंगे क्योंकि दो-तीन पत्रिकाओं से कहानी की मांग आयी थी, परंतु मेरा दिमाग हड़ताल किये हुए था। मेरी पड़ोसिन कांता जो हमेशा मुझे कहानियों की सामग्री दिया करती है इन दिनों रूठी हुई है। अब कहानी आये तो कहां से ? मैं तो एक राज की तरह से हूं, कोई ईंट-चूना वगैरह इकट्ठा कर दे तो दीवार खड़ी कर दूंगा, पर न ईंट हो न गारा, लोहा हो न लकड़ी तो मकान अगर बन भी जायेगा तो वह किसी को भौतिक आंखों से दिखायी न देगा।

लेकिन कहते हैं जब भगवान् देते हैं तो छप्पर फाड़कर देते हैं। मेरे लिये भी यही हुआ। मैं आशा छोड़ बैठा था कि बड़े जोरों से मेरा दरवाजा खुला। मेरे मुंह से निकल गया, "कौन जंगली है यह ?" परंतु दूसरे ही क्षण मेरी अनख खुशी में बदल गयी और मैंने बड़े ही प्रेम से कहा, 'आओ, बहुत दिनों के बाद दिखायी दिये।' यह कांता का बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई मंगलू था। बातें करने में बड़ा तेज-तर्रार है, इसलिये मैंने उसका नाम रख छोड़ा है 'हरी मिर्च'। मैंने पूछा, "क्यों भई, कैसे दिन बीत रहे हैं ?" वह मानों कुछ खास बात कहने के लिये ही आया था। मेरे प्रश्न की उपेक्षा करते हुए बोला, "अच्छा, आप कहानियां कैसे लिखते हैं, मुझे भी सिखा दीजिये न ?" यह एक ही रही, जिस समय स्वयं मेरे पास कहानी का अभाव है उसी समय यह सहायता मांगने आया है। मैं मुश्किल में पड़ गया। नंगा क्या नहाये और क्या निचोड़े ? मैंने बात टालते हुए कहा, "इन दिनों कांता को क्या हो गया, इधर कई दिनों से नहीं दिखायी दी।" मंगलू बोला, "आपको हमेशा उसी की चिंता लगी रहती है, ऐसी क्या विशेषता दिखायी देती है उसमें ?"

मैंने कहा, "भारतवर्ष में स्त्रियों को काफी नीची दृष्टि से देखा जाता है। लड़कियों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि वे कमजोर हैं, अबला हैं और उन्हें हमेशा दूसरों के पैरों पर खड़ा रहना चाहिये, 'कछु तो हीं पूना गोरीं, कछु आंख दइयरा फोरीं।' कुछ तो हमारे समाज ने ही उन्हें पंगु बनाने की कोशिश की और कुछ विलायती फैशनों ने इन्हें और भी छुई-मुई बना दिया है। जिधर देखो, बर्रे की सी कमर और भिण्डी जैसे हाथ-पांव। पूछो तो भई जब भगवान् ने दिया है तो भर पेट खाती क्यों नहीं, तो उत्तर मिलेगा खाने से मोटे होते हैं, कसरत क्यों नहीं करतीं तो कहेंगी कि मांस-पेशियां न निकल आयें। इसका परिणाम क्या है ? अखबारों में आये दिन लड़कियों को छेड़ने की वारदातें छपती रहती हैं, शाम से ही अकेले निकलते हुए डर लगने लगता है और कहीं पर जरा जोर का धमाका हो जाये तो दिल धड़कने लगता है। ऊपर से चाहे जितनी टीम-टाम हो पर अंदर से आज की भारतीय नारी का जीवन खोखला होता जा रहा है। मंगू, तुम नहीं जानते, तुम्हारी बहन कांता इस प्रकार के जीवन के विरुद्ध एक विद्रोह कर रही है। उसे देखकर मुझे भारत की पुरानी नारियों की याद हो आती है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजदरबार में, शास्त्रार्थ-मण्डप में और युद्धक्षेत्र में पुरुषों के कन्धे से कन्धा भिड़ा सकती थीं।"

"हो, हो, हो, हो" मंगलू जोर से हंस पड़ा। "अजी साहब, मेरे सामने न कहिये ऐसी बातें। दूर के ढोल सुहावने। आप उसे कभी-कदास देखते हैं। वह बातें बनाना जानती है और आप उसपर विश्वास कर लेते हैं। आप उसकी वीरता की परख करना चाहते हैं तो दो-चार सप्ताह हमारे घर में रहिये, फिर भी आपकी यही राय बनी रहे तो बन्दा आधी मूंछ मुंडाने के लिये तैयार है।"

मैंने जरा गंभीर होते हुए कहा, "मंगलू, 'घर का जोगी जोगना आन गांव को सिद्ध,' कांता तुम्हारी अपनी बहन है इसलिये तुम उसकी अच्छाइयां नहीं देख पाते। कौन जाने इसके पीछे छिपी हुई ईर्ष्या भी काम न कर रही हो।"

मेरी बात सुनकर मंगलू भी गंभीर हो गया। उसने कहा—मैं इतने छोटे दिल का नहीं हूं। सचमुच अपनी बहन की प्रशंसा सुनकर मुझे खुशी होती है और मैं सोचा करता हूं, काश, वह सचमुच ऐसी होती! पर मैं क्या करूं। मैं उसे दोष नहीं देता, आप लोगों ने उसकी प्रशंसा कर-कर के उसे आकाश पर बिठा दिया है और अब उसे अपनी प्रतिष्ठा रखने के लिये आडंबर करना पड़ता है। एक बार की जमी प्रतिष्ठा को कौन खोना चाहेगा ? उसमें अच्छाइयां हैं पर तस्वीर का दूसरा रुख भी है। लीजिये, सुनिये। एक बार रात के दस बजे थे। जाड़े की रातें, पिताजी अपनी रजाई में छिप चुके थे, मां अंदर की ओर घर के छोटे-मोटे काम निबटाने में लगी थीं और हम तीन-चार भाई-बहन अध्यापकों को कोसते हुए अपना गृहकार्य समाप्त करने में लगे थे। 'खोलो, खोलो' किसी की घबरायी हुई आवाज सुनायी दी। दो-तीन आदमी मिलकर हमारे दरवाजे पर मुष्टि-प्रहार कर रहे थे। जाड़े के दिनों में भी हम सबके शरीर पर पसीना आ गया, हम सब एक-दूसरे का मुंह ताक रहे थे। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करना चाहिये ? कौन जाने कैसे लोग हों ? इस समय क्यों खटखटा रहे हैं ? हममें से किसी की हिम्मत न होती थी कि उठकर दरवाजा खोले। पिताजी तो ऐसे सोये थे कि कोई स्वयं उन्हें उठा ले जाता तो भी न जान पाते, पर मां अंदर से झल्लायी हुई दौड़ी आयीं और हम पर बरस पड़ीं, "इतने सारे बैठे हैं यहां और कोई देखता तक नहीं कि बाहर कौन है, क्या चाहता है; कोई दरवाजा तोड़े दे रहा है और ये चार मुस्टंड यहां बैठे एक-दूसरे का मुंह ताक रहे हैं," यह कहते हुए उन्होंने दरवाजा खोल दिया। अब पता लगा कि ये लोग और कोई नहीं हमारे अपने पड़ोसी थे। उनकी दो बिल्लियां लड़ती-लड़ती हमारे घर में घुस आयी थीं और बन्दरों से बचने के लिये हमारे यहां जो जाल लगा है उसमें फंस गयी थीं। हमारे पड़ोसियों को भय था कि कहीं जाल में उनकी बिल्लियों का गला न फंस जाये। इसीके लिये यह सारी हाय-तोबा हुई थी। उनके ऊपर जाने तक बिल्लियां वहां से भाग चुकी थीं। अब हम सबके हंसने की बारी थी। हम सब एक-दूसरे का मजाक उड़ा रहे थे, विशेष रूप से मैंने और शांता ने मिलकर कांता की बहादुरी पर खूब ताने दिये और उसे खूब चिढ़ाया। इस सब चिल्लपों में हम यह भूल गये थे कि पिताजी पास ही सो रहे हैं। यूं थोड़े-बहुत शोर-शराबे से उनका जागना मुश्किल है, लेकिन एक बार उनकी नींद टूट जाये तो वे प्रलयंकर रूप धारण कर लेते हैं।

हम सब शोर मचाने में इतने मस्त थे कि किसी ने न देखा कि कब पिताजी उठे और रजाई लपेटे, दबे पैरों बेंत लिये हुए हमारी ओर लपक पड़े। आप जानते ही हैं, हमारे पिताजी ने चाहे और कुछ सीखा हो या नहीं, कम-से-कम 'दशवर्षाणि ताडयेत्' का पाठ खूब अच्छी तरह सीख रखा है और उनका विश्वास है कि अधिकस्य अधिकं फलम्। बस, उन्होंने आव देखा न ताव, लगे बेंत बरसाने। हम सबकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। किसी के मुंह से आवाज न निकलती थी। सिर्फ पिताजी दहाड़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहे थे, "देखो न, इतने बड़े-बड़े हो गये हैं, जरा लिहाज नहीं। इन्हें क्या पड़ी है, कोई मरे या जिये, मचाओ, मचाओ और शोर मचाओ। अब चुप क्यों हो गये ?" उनकी रजाई खिसक कर गिर चुकी थी और उछल-उछल कर बेंत मारने की कसरत ने उनके शरीर में नयी जान ला दी थी। इसी बीच उनकी प्यारी शांता बेटी बड़ी चालाकी से उनकी रजाई तह करने के लिये हम सबसे अलग हो गयी। अधिक मार मुझ गरीब पर पड़ी। खैर, मैं भी इन सब चीजों के लिये पक चुका हूं। मैंने भी चूं तक न की, सब कुछ सहता गया। मार-मार कर पिताजी थक गये। अब उनके लेक्चर की बौछार शुरू हुई। शिष्टता, भद्रता, आज्ञा-पालन, नियंत्रण, पड़ोसी का धर्म और न जाने किन-किन विषयों पर मनुस्मृति और पुराण, कुरान और बाइबल और सुकरात से लेकर राधाकृष्ण तक के उद्धरणों की न जाने कौन-सी जयन्ती मनायी गयी। यह सब होते-होते तीन बज गये और तब कहीं हम लोगों को सोने का अवसर मिला।

सोने के लिये मैं सारे घर में और सिर्फ घर में ही नहीं सभी परिचितों और आसपास के लोगों में बदनाम हूं। लोगों का कहना है कि डाकू मुझे उठा ले जायें तो उनकी मांद में पहुंचने के बाद ही मेरी नींद खुलेगी। खैर, जो हो, मैं खूब अच्छी तरह सोया। थोड़ी देर बाद मेरी आंख खुल गयी। मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। ऐसा लग रहा था मानों घर में धाड़ पड़ी हो। छोटे भाई-बहन मां से लिपटे हुए बिलख-बिलख कर रो रहे थे। मां चिल्ला रही थीं। कांता, शांता और सहजो पिताजी को पकड़े हुए थीं। उनके चेहरे मानों हल्दी से पुते थे। कांता की हालत सबसे खराब थी। उसके मुंह से आवाज निकलना चाहते हुए भी निकल न पाती थी। पथरायी हुई आंखें दरवाजे की ओर लगी हुई थीं। ऐसा लगता था मानों गाय कसाई की रस्सी को तुड़ाने की कोशिश कर रही हो। इस बार तो पिताजी भी परेशान थे। उनका सारा गुस्सा, उनके सारे लेक्चर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका सारा दबदबा गायब। उनके चेहरे पर भी हवाइयां उड़ रही थीं। बड़ी ही कातर दृष्टि से इधर-उधर देख रहे थे मानों परिस्थिति को समझने का असफल प्रयत्न कर रहे हों।

ये सब बातें कहने में तो बड़ा समय लगा परंतु घटनाएं बिजली की गति से घट रही थीं। मैं उठा और कूदकर परिवार के झुण्ड में जा पहुंचा। पिताजी ने अनुभव किया मानों साक्षात् हनुमान राक्षसों के हाथ से बचाने के लिये आ गये हों। मैंने देखा, मेरे आते ही सबके चेहरों पर जान आ गयी, सबके भाव बदल गये, जैसे गरमी के दिनों में बहुत थके हुए आदमी का चेहरा ठंडा शरबत पीते ही बदल जाता है। अपनी तासीर देखकर मैं स्वयं चकित रह गया। मैंने पिताजी से पूछा, "बात क्या है ?" वे अपने-आप चकराये हुए थे, बताते क्या ? मुझे शांत और स्थिर देखकर कांता और सहजो भी संभल गयीं और पिताजी को छोड़कर अलग खड़ी हो गयीं। मैं हर एक से पूछता गया कि आखिर मामला क्या है ? यह सारा नाटक किसलिये खेला गया और मेरी कच्ची नींद की हत्या किसलिये की गयी। जवाब देने के लिये कोई भी तैयार न था। मां ने वातावरण बदला हुआ देखा तो वे भी समस्त बाल गोपाल को लेकर सुलाने के लिये चली गयीं।

आप जानते ही हैं कि जब जरूरत पड़े तो मैं अपने घर में सबका लाड़ला बन जाता हूं। पर जरूरत पूरी हो जाने पर सब मुझसे कतराते हैं, क्योंकि मैं जरा फक्कड़ स्वभाव का हूं। मुझे मुंह देखे की मुरव्वत नहीं आती और फब्ती कसने में, खिल्ली उड़ाने में किसी को नहीं छोड़ता। इसलिये कोई ऐसी वैसी बात हो तो हमेशा मुझसे छिपायी जाती है। इसी दृष्टि से इस बार की इतनी बड़ी घटना का रहस्य मुझे नहीं बताया गया, लेकिन मैं भी तो शर्लोक होम्स से कम नहीं हूं, शायद मेरे घरवालों ने ही मुझसे बातें छिपा-छिपा कर मुझे यह कला सिखायी है। खैर, मैं पूरी गंभीरता से इस मामले की टोह में लग गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने साम, दाम, दण्ड, भेद के कई रूपों का उपयोग किया, प्यार से, पुचकार कर, धमका कर और आइसक्रीम का लोभ दिखाकर सब भाई-बहनों से और कूटनीति के द्वारा माताजी और पिताजी से थोड़ी-थोड़ी बात निकलवा ली और टुकड़ों को जोड़कर चित्र पूरा कर लिया। बात यूं थी। इतने कोलाहल के बाद हम लोग सोये तो सभी के दिमाग तेजी से काम कर रहे थे। कांता ने स्वप्न देखा कि वह कहीं दूर देश में है, चारों ओर से बिना जान-पहचान के लोगों ने उसे घेर रखा है और न जाने कौन-सी भाषा में उसपर चिल्ला रहे हैं और उसे मुक्का दिखा रहे हैं। उसने अपनी बहादुरी दिखानी चाही तो सब-के-सब उसपर टूट पड़े, उसकी नींद खुल गयी। डरी हुई तो थी ही, उसने देखा, उसी क्षण सहजो चिल्लाती हुई बिस्तर से कूदी और प्राण बचाकर पापा, पापा करती हुई भागी। छत पर से उसके ऊपर एक चूहा कूदा था। पिताजी सोते हुए हमेशा बड़बड़ाया करते हैं, उनकी आवाज सुनकर दोनों की दोनों और भी घबरा गयीं और जाकर उनको पकड़ लिया। इस अचानक आक्रमण से वे भी बिदक गये और लगे चिल्लाने। इस चिल्लपों में छोटे बच्चे भी जाग गये और मां के धीरज की भी परीक्षा हो गयी। इसके बाद की घटना तो आपको सुना ही चुका हूं।

अरे, साढ़े नौ बज गये। मैं आया किसलिये था और कह क्या गया। खैर, अब मुझे जाना चाहिये, लेकिन देखिये मेरे घरवालों को पता न लगने पाये कि मैं यह सारी गाथा सुना गया हूं।

अच्छा, खुदा हाफिज।

—रवीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निम्न गतियों को अस्वीकार करो

मधुर मां, हम चेतना को मिश्रित चीजों से कैसे खाली कर सकते हैं ?

अभीप्सा के द्वारा, निचली गतियों के त्याग द्वारा और उच्चतर शक्ति को पुकार कर। अगर तुम अमुक गतियों को स्वीकार न करो तो स्वभावतः जब उन्हें पता लगेगा कि वे अभिव्यक्त नहीं हो सकतीं तो धीरे-धीरे उनका बल घटता जायेगा और वे आना बंद कर देंगी। अगर तुम हर निम्न प्रकार की चीज को अभिव्यक्त करने से इंकार कर दो तो जरा-जरा करके वह चीज गायब हो जाती है और तुम्हांरी चेतना निम्नतर चीजों से खाली हो जाती है। यह अभिव्यक्त करना अस्वीकार करने से हो सकता है—मेरा मतलब है केवल क्रिया में ही नहीं, विचारों और भावनाओं में भी। जब आवेश, विचार, भाव आयें तो अगर तुम उन्हें अभिव्यक्त करने से इंकार कर दो, अगर तुम उन्हें एक ओर धकेल दो और आंतरिक अभीप्सा और अचंचलता की स्थिति में रहो तो आहिस्ता-आहिस्ता उनका बल घटता जाता है और वे आना बंद कर देते हैं। तो इस तरह चेतना निचली गतियों से खाली हो जाती है।

लेकिन, उदाहरण के लिये, जब अवांछनीय विचार आयें तो यदि तुम उन्हें देखो, उनका अवलोकन करो और अगर तुम उनकी गतिविधि का अनुसरण करने में सुख का अनुभव करो तो वे कभी आना बंद न करेंगे। जब अवांछनीय भावनाएं या संवेदन आयें तो भी यही बात होती है: अगर तुम उनकी ओर ध्यान दो, उनपर एकाग्रचित्त होओ या उन्हें कुछ शौक से देखो, तो वे कभी बंद न होंगे। लेकिन अगर तुम उन्हें ग्रहण करने से या व्यक्त करने से एकदम इंकार कर दो तो कुछ समय बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका आना बंद हो जायेगा। तुम्हें धैर्यशील और बहुत आग्रही होना चाहिये।

किसी बड़ी अभीप्सा में, यदि तुम अपने-आपको किसी उच्चतर चीज के संपर्क में रख सको, अपने चैत्य पुरुष के प्रभाव में या किसी उच्चतर प्रकाश के साथ, और अगर तुम उसे इन नीची गतिविधियों के स्पर्श में ला सको, तो स्वभावतः, वे ज्यादा जल्दी बंद हो जायेंगी। लेकिन अभीप्सा के द्वारा इन चीजों को खींच सकने से पहले ही, तुम सतत आग्रही और धैर्यशील अस्वीकृति के द्वारा अपने अंदर इन चीजों के प्रकट होने को रोक सकते हो। जब ऐसे विचार आयें जो तुम्हें पसंद नहीं हैं, तो तुम उन्हें बस, एक ओर झटक दो, और उनकी ओर जरा भी ध्यान न दो, तो कुछ समय बाद वे आना बंद कर देंगे, लेकिन तुम्हें यह चीज नियमित रूप से और आग्रह के साथ करनी चाहिये।

—श्रीमां

एक लघु कथा

फ्रांस के राजा हेनरी चतुर्थ एक रोज पैरिस नगर में अपने अंगरक्षकों तथा उच्चाधिकारियों के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक भिक्षुक ने अपनी टोपी सिर से उतार, मस्तक झुका कर उन्हें अभिवादन किया। हेनरी ने भी टोपी उतार, सिर झुका कर अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया।

यह देख कर एक उच्चाधिकारी ने कहा—"श्रीमन्, एक भिक्षुक को आप इस प्रकार अभिवादन करें, यह क्या उचित है ?"

हेनरी ने सरलता से उत्तर दिया, "फ्रांस का नरेश एक भिक्षुक जितना भी सभ्य नहीं, यह मैं सिद्ध नहीं करना चाहता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

२१ फरवरी माताजी की १२४वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर दर्शनार्थियों ने श्रीमां तथा श्रीअरविन्द के कमरों के दर्शन किये। सवेरे चार से शाम के पांच बजे तक कमरे दर्शनार्थ खोले गये। सवेरे ६ से साढ़े ६ तक आश्रम में ध्यान हुआ और शाम को 'मार्च पास्ट' और वाद्य-वृन्द के संगीत के बाद क्रीड़ांगण में भी सामूहिक ध्यान हुआ। इस अवसर पर निम्नलिखित संदेश भी बांटे गये—

हमेशा इस तरह व्यवहार करो मानों माताजी तुम्हें देख रही हैं; क्योंकि वे वास्तव में हमेशा, उपस्थित रहती हैं।

—श्रीअरविन्द

यह मात्र वाक्य या शब्द नहीं हैं बल्कि तथ्य है—मैं तुम्हारे साथ बहुत ठोस रूप में विद्यमान हूं और जिनके अंदर सूक्ष्म दृष्टि है वे मुझे देख सकते हैं।

—श्रीमां

अतिथि गृह : समुद्र तट पर नया बना 'सी साइड गेस्ट हाउस' अब तैयार है। इसमें १९ 'डबल रूम्स' और ६ 'सेट' हैं। आरक्षण के लिये कृपया सी साइड गेस्ट हाउस, १४ गूबैर एवेन्यू, पांडिचेरी - ६०५००१ से पत्र-व्यवहार करें। ई-मेल का पता है—

seaside@sriaurobindo society.org.in

इस साल सोसायटी के वार्षिक शैक्षिक शिविर और अध्यापक-प्रशिक्षण वर्कशॉप का आयोजन २० से २६ मई तक पांडिचेरी में सोसायटी के बीच ऑफिस में होगा। अधिक जानकारी के लिये को-ऑर्डिनेटर, एज्यूकेशन कैम्प के नाम पर सोसायटी के बीच ऑफिस से आप सीधा पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

केंद्रों और शाखाओं में बांटने के लिये हमने १६ पन्नों की एक छोटी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी पुस्तिका "स्पिरिचुअल एक्सपीरिऐंसेज़ ऑफ श्रीअरविन्द इन अलीपुर जेल, १९०८-०९" (अलीपुर जेल में श्रीअरविन्द की आध्यात्मिक अनुभूतियां, १९०८-०९) निकाली है। इसमें उत्तरपाड़ा भाषण भी है। किताब 'बीच ऑफिस' में उपलभ्य है।

केन्द्रों से समाचार

चेन्नई शाखा ने १८ दिसम्बर को डॉ० आनन्द रेड्डी का भाषण रखा। विषय था "आध्यात्मिकता क्यों ?" १३ जनवरी को श्री श्रद्धालु रानाडे श्रीअरविन्द तथा श्रीमां के योग पर बोले।

आन्ध्र-प्रदेश ने 'शिक्षक वर्कशॉप' का आयोजन १२ तथा १३ दिसम्बर को श्री श्रद्धालु रानाडे की सहायता से किया। यह बहुत सफल रहा।

१८ दिसम्बर को गुलबर्गा केन्द्र ने 'न्यूरॉलौजिस्ट' डॉ० एच० एस० श्रीनिवास का भाषण रखा। विषय था, मिरगी के दौरे।

जलालपुर कुट्टी (उ० प्र०), तिमरनी (म० प्र०) और उदूमलपेट (तमिलनाडु)—सोसायटी के तीन नये केन्द्र जनवरी २००२ में खुले।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा...... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४0 रु० और पुरोधा के ५0 रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८00 रु० देकर अग्निशिखा के और १,000 रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २0 वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६0५ 00२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर, झुंझुनूं
श्रीअरविन्द दिव्य जीवन शिक्षा-केन्द्र, झुंझुनूं (राजस्थान)

श्रीअरविन्द सोसायटी द्वारा स्थापित इस संस्था का मूल उद्देश्य श्रीअरविन्द व श्रीमां के मनुष्य जाति के लिये दिव्य जीवन के स्वप्न को साकार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह केंद्र ऐसे श्रद्धालुओं के समूह के निर्माण की अभीप्सा रखता है जिनके जीवन का केवल यही उद्देश्य हो।

यह केंद्र पूर्ण रूप से आवासीय है जिसमें छात्र-छात्राओं की शिक्षा, आवास व भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शैक्षणिक सत्र हर वर्ष १५ अगस्त से प्रारंभ होता है तथा केवल ६ से १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता है।

यह केंद्र पूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये समस्त साधन प्रदान करने की अभीप्सा रखता है। जो अभिभावक अपने बच्चों के लिये सरकारी प्रमाण पत्र, डिग्री व डिप्लोमा की आकांक्षा नहीं रखते अपितु उनकी सत्ता के केंद्रीय सत्य के अनुरूप उनके पूर्ण व सर्वांगीण विकास की अभीप्सा रखते हैं और अपने बच्चों को इस शिक्षण-संस्था में प्रवेश दिलाने के इच्छुक हैं, वे पूरी सूचना के लिये निम्नलिखित पते पर संपर्क करें।

जो आध्यात्मिक पिपासु इस केंद्र के कार्य में सहयोगी होना चाहते हैं तथा अपना जीवन इस कार्य में लगाकर साधनामय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे लोग अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :

श्रीअरविन्द डिवाइन लाइफ एजुकेशन सेन्टर
मीरा अम्बिका भवन, खेतान मोहल्ला
पो० झुंझुनूं—३३३००१ (राजस्थान)
टेलीफोन—(०१५९२) ७२३५६१५
e-mail: srimaa@vsnl.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

संदेश

दूसरे क्या करते, सोचते या कहते हैं उससे अपमान का अनुभव करना हमेशा दुर्बलता का चिह्न होता है और इस बात का प्रमाण होता है कि सारी सत्ता ऐकान्तिक रूप से भगवान् की ओर मुड़ी हुई नहीं है, केवल भगवान् के प्रभाव में नहीं है। और फिर अपने साथ प्रेम, सहनशीलता, साहस, धैर्य का वातावरण लाने के लिये किसी और के अहंकार के उत्तर में आदमी का अहंकार अपने-आपको कड़ाई के साथ और चोट लगने की भावना के साथ प्रक्षिप्त करता है और असामंजस्य बढ़ जाता है। अहंकार यह बात कभी नहीं समझ सकता कि अलग-अलग लोगों के साथ भगवान् की क्रिया अलग-अलग ढंग की होती है। और चीजों का मूल्यांकन अपनी अहंकारमयी दृष्टि से करना एक बड़ी भूल है जो अस्त-व्यस्तता को और भी बढ़ा देती है। हम जो चीज आवेश या असहिष्णुता से करते हैं वह दिव्य नहीं हो सकती, क्योंकि भगवान् हमेशा शांति और सामंजस्य में काम करते हैं।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

टेरी फॉक्स

मनुष्य अपनी मानसिक व्यथा, दुःख-दुविधा को फिर भी झेल जाता है किन्तु जब शरीर में कोई पीड़ा या कोई अंग काम करने से इंकार कर दे तब वह बेबस हो जाता है। वह ऐसी निराशा में जा गिरता है कि उसमें से निकलना असम्भव-सा लगता है। ऐसे समय मनुष्य की कठिन परीक्षा होती है। ऐसे एक युवक की अदम्य साहस की कहानी पढ़ कर रोमाञ्च होता है। कैनेडा का युवक टेरी एक बेफिक्र युवक था जो आगे क्या करेगा, किस तरह मौज-मस्ती के दिन बितायेगा यही सोचता रहता था, फिर एक दिन . . . ! मनुष्य के जीवन में कब क्या होगा कोई नहीं कह पाता ! तो वह अभिशप्त दिन आया या शायद बड़ा शुभ दिन आया जब उसको चिकित्सक के पास जाना पड़ा। कई तरह की चिकित्सा के बावजूद एक दिन चिकित्सक ने निराश होकर बताया कि उसे कैंसर है और काफी फैल गया है। बचने का एक ही उपाय है और वह यह कि उसका दायां पांव घुटने तक काट दिया जाये। उठती उम्र में ऐसा संताप उस लड़के ने कैसे सहा होगा ?

खैर, दायां पैर काटा गया, कई महीने बहुत कुछ सहना पड़ा। शरीर थोड़ा स्वस्थ हुआ तो उसके नकली पांव लगाया गया। टेरी सारे समय यही सोचा करता, "अब मुझे क्या करना चाहिये, मैं कैंसर से हार नहीं मानूंगा।" कुछ दिन बाद उसने स्वप्न देखा कि वह दौड़ रहा है, मीलों दौड़ता जा रहा है। बस, यही उसका लक्ष्य बन गया। महीनों की कसरत के बाद वह दौड़ने लायक हो गया और यह लंगड़ा माना जानेवाला युवक दौड़ने लगा। कुछ लोग उसकी सराहना करते और कुछ उसे पागल समझते, किंतु वर्षा, धूप और कीचड़ में दौड़ने में वह सफल हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार गिरा, फिसला किंतु लगा रहा और अंत में एक दिन में २५ मील दौड़ने लगा। अब तो टेरी प्रख्यात हो गया, उसके नाम से कैंसर में परीक्षण, शोध करने के लिये 'टेरी फॉक्स फाउण्डेशन' शुरू हो गया। इस तरह एक सामान्य मनुष्य अपने दृढ़ संकल्प-बल से असामान्य मनुष्य बन गया और वह भी शरीर के अपंग होने के बावजूद! यह है मानव-चरित्र की विजय! श्रीरामकृष्ण ने कहा था, 'सबसे ऊंचा है मानव।' उनका मतलब यह होगा कि सब प्राणियों में केवल मनुष्य एक सचेतन, बुद्धि-संपन्न प्राणी है जो अपने-आपको, प्रकृति को टटोल पाता है। वह प्रकृति के कई रहस्यों को खोल पाया है जिनमें से एक है अपनी आंतरिक शक्ति को खोजना। हमारे सामने टेरी फॉक्स सरीखे सचमुच कितने ही उदाहरण होंगे जिन्होंने अपनी आंतरिक शक्ति के साथ संपर्क पा लिया। अब प्रश्न है कि इसके प्रति सामान्य जनता, शिक्षित जनता को किस तरह जगाया जाये ?

—अनुबेन

— — — —

मैं तुमसे जो कुछ कह रहा हूं, क्या तुम उस सबको जीवन में उतारने में समर्थ होगे ? मैं जो सिखा रहा हूं उसका रुपये में एक आना भी जी सको तो तुम निश्चित रूप से लक्ष्य तक पहुंच जाओगे।

*

अनगिनत हैं भगवान् के नाम और अनंत हैं वे रूप जो हमें उनकी ओर ले जाते हैं। तुम जिस किसी नाम या रूप द्वारा उनके संपर्क में आना चाहो उसी नाम या रूप में तुम्हें उनके दर्शन होंगे।

—श्रीरामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

मई

१. सहन करते चलो और विजय तुम्हारी होगी। . . . सहते चलो— सहते चलो, तुम पराजित कर सकोगे।
सबसे अधिक सहनशील की ही विजय होती है।

२. प्रगति की प्यास, ज्ञान की प्यास, अपने-आपको रूपांतरित करने की प्यास और इन सबसे बढ़कर प्रेम और सत्य की प्यास—अगर तुम इस प्यास को रख सको तो गति तेज होगी। सचमुच प्यास एक आवश्यकता हो, एक आवश्यकता।

३. किसी ऐसी चीज के साथ चिपके रहना जिसे तुम समझते हो कि तुम जानते हो, किसी ऐसी चीज के साथ चिपके रहना जिसे तुम अनुभव करते हो, किसी ऐसी चीज के साथ चिपके रहना जिसे तुम प्यार करते हो। अपनी आदतों के साथ चिपके रहना, अपनी तथाकथित आवश्यकताओं के साथ चिपके रहना, इस संसार के साथ, जैसा कि वह है, चिपके रहना—यही चीजें हैं जो तुम्हें बांधती हैं।

४. मानव जाति जिस भयंकर कीचड़ में धंसी हुई है उसमें से उसे चेतना के आमूल परिवर्तन के सिवा और कोई नहीं बचा सकता।

५. तुम्हें "किसी चीज" की जरूरत है, तुम्हें 'प्रकाश' की जरूरत है, तुम्हें 'प्रेम' की जरूरत है, तुम्हें 'सत्य' की जरूरत है, तुम्हें चरम 'पूर्णता' की जरूरत है—और बस इतना ही। और सूत्र—सूत्र जितने कम हों उतना अच्छा।

६. प्राणिक आवेग, प्राणिक आकर्षण ने प्रायः सब जगह सच्ची भावना की जगह ले ली है। सच्ची भावना शांत होती है जब कि यह दूसरी चीज बुदबुदन भरी होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. सच्ची अभीप्सा देना है, आत्म-निवेदन है जब कि खींचना अपने लिये चाहना है।
८. मानव चेतना में परिवर्तन पृथ्वी पर उच्चतर शक्ति, पवित्रतर ज्योति और अधिकतम पूर्ण सत्य की अभिव्यक्ति को संभव बनाता है। हमारा सारा जीवन ही भगवान् को निवेदित एक प्रार्थना होना चाहिये।
९. हर चीज एक चुनाव है ! हर चीज, हर एक चीज चुनाव है ! भगवान् का चुनाव, लेकिन हमारे अंदर के भगवान् का : वहां के (ऊपर की ओर संकेत) भगवान् का नहीं : यहीं के। और हम नहीं जानते, यह हमारे अपने हृदयों में है। और जब हम जानते हैं तो चुनाव कर सकते हैं—हम अपनी पसंद चुन सकते हैं, यह अद्भुत है।
१०. हजारों सालों के समस्त यांत्रिक अभ्यास को सीधे परम 'चेतना' के पथ-प्रदर्शन में सचेतन क्रिया में बदलना होगा।
११. यह बहुत स्पष्ट है—बहुत ही स्पष्ट है—कि जब व्यक्ति सचाई से चाहता है तो वह अपने-आपको अच्छी-से-अच्छी अवस्थाओं में और कार्य के लिये अधिक-से-अधिक संभावनाओं में पाता है।
१२. यह एक सूचक है : जो लोग प्रसन्न, सौम्य, सुंदर बिंब देखते हैं उसका मतलब यह होता है कि उनके अंदर प्राण की दृष्टि से सब कुछ ठीक चल रहा है, लेकिन जो भयानक या अशुभ चीजें या इसी प्रकार की और चीजें देखते हैं उनके लिये इसका मतलब होता है कि उनका प्राण सुन्दर नहीं है।
१३. हम कह सकते हैं कि मनुष्य अपनी प्रकृति का और सत्ता की सभी अवस्थाओं का सर्वशक्तिमान स्वामी है, लेकिन वह यह होना भूल गया है।
१४. दूसरों पर शासन करने की आशा रखने से पहले व्यक्ति को अपने ऊपर शासन कर सकना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. परम भगवान् के प्रति पूर्ण और समग्र समर्पण द्वारा अहंकार को लुप्त कर दो तो सब कठिनाइयां गायब हो जायेंगी।

१६. ... शक्ति की क्रिया ही बाह्य रूप में तथाकथित "दुःख-कष्ट" के रूप में अनूदित होती है, क्योंकि यही एकमात्र स्पंदन है जो जड़-द्रव्य को उसके तमस् में से बाहर खींच सकता है।

१७. प्रेम के मूल रूप में कुछ ऐसी चीज है जो अनवरत रूप से भागवत कृपा के हस्तक्षेप, शक्ति, मधुरता, प्रशमन के स्पंदन के जैसी चीज बनकर फैली है।

१८. अगर तुम कड़े हो जाओ और चीजें प्रतिरोध करें तो तुम्हें चोट लगती है।

व्यक्ति को हमेशा हंसना चाहिये, हमेशा। प्रभु हंसते हैं और हंसते रहते हैं। उनका हास्य इतना अच्छा है, इतना अच्छा है, प्रेम से इतना परिपूर्ण है। यह एक ऐसा हास्य है जो तुम्हें असाधारण मधुरता के साथ अपनी भुजाओं में भर लेता है!

१९. व्यक्ति को श्रद्धा और विश्वास के साथ स्थिति का सामना करना चाहिये और अंत में सब कुछ ठीक हो जायेगा।

२०. "भगवान् को जिया जाता है
इनकी व्याख्या नहीं की जा सकती।"

२१. "भगवान् पूर्णता की चरम अवस्था हैं,
जो कुछ है उसका नित्य स्रोत हैं,
नित्यता में सारे समय वही होते हुए
जिनके बारे में हम क्रमशः सचेतन होते हैं।"

२२. वह सब जो हम अपनी उच्चतम और अधिक-से-अधिक प्रदीप्त अभीप्सा में बनना चाहते हैं, हम जो कुछ बनना चाहते हैं वह भगवान् है।

२३. यह साधना का एक महान् रहस्य है—सब कुछ अपने मन के प्रयास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से करने की जगह ऊपर या पीछे स्थित शक्ति के द्वारा करने की तरकीब जानना।

२४. जो सत्य है, वह हमेशा ही विजयी होगा। यही कहा गया है। जिन लोगों ने आध्यात्मिक जीवन-यापन किया है उन्होंने यही कहा है—यह एक निरपेक्ष तथ्य है।

२५. अगर तुम काफी सच्चे हो और अपनी सत्ता के तरीकों में संपूर्ण और समग्र हो तो परिस्थितियां चाहे जैसी हों, तुम्हें आंतरिक आनन्द और पूर्ण संतोष मिल सकता है और उसे छूने की न किसी व्यक्ति में और न किसी चीज में शक्ति है।

२६. आज जगत् में हर चीज अपनी सामान्य दुलकी चाल से चलती रहती है—परिवर्तन तो होता है, पर अदृश्य परिवर्तन।

२७. "हे विश्व के परम प्रभो,
हम तुझसे याचना करते हैं, हमें वह
बल और सुंदरता, सामंजस्यमय पूर्णता दे,
जो धरती पर तेरा दिव्य यंत्र बनने के लिये जरूरी है।"

२८. लोग अपने मन और प्राण में दिव्य बनना चाहते हैं। यह तो आध्यात्मिकता की पुरानी कहानी है जिसकी सदियों से जुगाली होती आयी है। नहीं, अब शरीर की बात है। शरीर इसमें भाग लेना चाहता है। यह पूर्ण रूप से प्रगति है।

२९. तुम्हारा जीवन पूरी तरह भागवत कार्य के लिये अर्पित होना चाहिये और छोटे-मोटे मानव विचार उस पर शासन नहीं कर सकते।

३०. यहां जो कुछ किया जाता है उसे भगवान् की सेवा के एकमात्र लक्ष्य को सामने रखकर, उसके साथ पूर्ण सहयोग के भाव से करना चाहिये।

३१. समस्त संकीर्णता, स्वार्थ और सीमाओं को झाड़ फेंको और मानव एकता की चेतना को जगाओ। शांति और सामंजस्य पाने का यही एकमात्र तरीका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले अपना इलाज करो

यह बात नहीं है कि मानवजाति अपने अंदर आमूल परिवर्तन की आवश्यकता को नहीं जानती या महसूस नहीं करती। सब जगह मनुष्य इस बात के प्रति सचेतन है कि अगर उसके सामने खड़ी समस्याओं और कठिनाइयों को संतोषजनक रूप में हल करना है तो उसे अपने दृष्टिकोण और प्रकृति की बारीकी के साथ जांच और पूरी मरम्मत करनी चाहिये। केवल किसी अवयव के रोग को बाहरी लक्षण देखकर शामक दवाइयों के द्वारा ठीक करना काफी नहीं है, एक बड़ी चीरफाड़ करनी चाहिये। निश्चय ही अगर वह स्वस्थ होना चाहे तो उसे अपनी वर्तमान प्रकृति से भिन्न कुछ और होना होगा।

फिर भी वह बदलता नहीं। उसमें बदलने का सच्चा संकल्प नहीं है। कम-से-कम वह गलत तरीका अपनाता है। इसका कारण यही है कि वह उस तरीके को पूरे मन से नहीं अपनाता जिसके बारे में वह जानता है कि यही सच्चा तरीका है। वह अपनी सत्ता में बंटा हुआ है: एक अंश को निश्चय ही मालूम है लेकिन दूसरा, बड़ा, गतिशील भाग इस ज्ञान का लाभ नहीं उठाता, वह उसकी अवहेलना करके उल्टे पथ का अनुसरण करता है और अज्ञान और 'जो होता है होने दो' की पुरानी लीक पर चलता रहता है।

वह अपने-आपको सांत्वना देता है और कुछ कम कठोर आदर्श लेकर अपनी आत्मा की मरहम-पट्टी करता है, मानों बिना कष्ट का विकल्प निकाल लेता है। इसीलिये वह बाहर की तरफ देखता है, समाज को सुधारने की, उसके कानूनों और संगठनों को बदलने की कोशिश करता है और यह विश्वास करना चाहता है कि इस तरह समाज को सुधारा जा सकता है और मानवजाति का रूपांतर हो सकता है।

अबतक यह बात संदेह से परे हो जानी चाहिये कि बात ऐसी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बाहरी जगत् को रोगमुक्त करने का एकमात्र तरीका है सबसे पहले अपने-आपको अंदर से रोगमुक्त करो। वह पुराना मुहावरा अब भी सत्य है : ब्रह्माण्ड, पिण्ड का एक बड़ा रूप है और पिण्ड ब्रह्माण्ड का एक छोटा रूप। विश्व एक प्रतिलिपि है, अंदर के व्यक्तिगत स्वभाव का बड़े पैमाने पर प्रक्षेपण। जो वहां है यहां भी है। जो यहां नहीं है, वहां भी नहीं है। जब तुम जगत् में कोई भूल देखते हो, कोई ऐसी चीज जिसे ठीक करना चाहिये, तो दौड़कर उसे बाहरी क्षेत्र में सुधारने की जगह अगर तुम अपने-आपको रोक कर अपने अंदर ताको तो तुम निश्चित रूप से यह देखोगे और शायद तुम्हें यह देखकर आश्चर्य होगा और यह पता लगेगा कि समाज और प्रकृति में जो अनजानी गतिविधियां दिखायी देती हैं उन्हीं के जैसी या अक्सर ठीक उन्हीं की प्रतिकृति तुम्हारी अपनी चेतना में भी उपस्थित है। अब यह मानना पड़ेगा कि अपने स्वभाव पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं होता या न के बराबर होता है। बाहरी जगत् हमारी पहुंच के बाहर है इसलिये हम उसे अपनी इच्छा के अनुसार नहीं गढ़ सकते। लेकिन वह एक छोटा-सा जगत्, जो हम स्वयं हैं, हमारे लिये बहुत दूर या बहुत बड़ा नहीं है। हमारा व्यक्तिगत स्वभाव और चरित्र हमारा अपना है। और उसे सुधारने, नया बनाने और पुनः गढ़ने के लिये हमें पर्याप्त शक्ति और स्वतंत्रता दी गयी है। यही रहस्य है, यद्यपि यह एक बड़ा सरल-सा स्वयंसिद्ध सत्य लगता है।

और यदि हम अपने अंदर बैठे इस छोटे-से जगत् को अपनी इच्छा के अनुसार सुधार या गढ़ नहीं सकते तो हम बाहर के विशाल जगत् को सुधारने या बदलने की आशा कैसे कर सकते हैं ? अपने-आपको ज्यों-का-त्यों छोड़कर दूसरों को बदलने का प्रयास करना ही एक बेतुका और असंगत सुझाव है। इसके विपरीत, अगर व्यक्ति सबसे पहले अपने-आपको सुधारे तो उसे यह देखकर आश्चर्य और संतोष होगा कि जगत् में सुधारने के लिये बहुत ही कम बच गया है। सब कुछ पहले से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आप सुधार दिया गया है।

हर एक मनुष्य को उसके अपने अंदर एक छोटा-सा क्षेत्र दिया जाता है। और वह उस क्षेत्र का स्वामी होता है। किसी को उससे कम या अधिक नहीं दिया जाता, केवल उतना ही जितना वह सफलतापूर्वक संभाल सके। ठीक क्षमता के अनुसार जिम्मेदारी सौंपी जाती है। अगर व्यक्ति चाहे तो आलसी बन सकता है; लेकिन यह मनुष्य की अनिवार्य नियति नहीं है। वह सचमुच राज करनेवाला राजा बन सकता है और पूरी तरह अपना अधिकार जमा सकता है। यह तो एक साधारण-सा सत्य है कि मनुष्य में एक संकल्पशक्ति होती है और वह उसे काम में ला सकता है। वह इस संकल्पशक्ति को सचेतन रूप से विकसित और बड़ा कर सकता है, काम करने के लिये एक अजेय नहीं तो बहुत ही शक्तिशाली यंत्र तो बना ही सकता है।

संकल्प दोहरी शक्ति है : वह ऊर्जा है और प्रकाश भी है, जब कोई व्यक्ति बिलकुल सच्चा हो और अपनी सचाई के अनुसार चलने के लिये वह दृढ़ निश्चय कर ले तो उसका सच्चा संकल्प उसे ठीक दिशा में बढ़ाता है और अचूक रूप से प्रेरित करता है। उसमें ठीक चीज करने की चेतना होती है और उसे अनिवार्य रूप से कर सकने के लिये ऊर्जा भी समायी रहती है।

निम्नतर मन का संकल्प इच्छा का ही दूसरा रूप होता है। उसके संबंध में कहा जाता है कि आत्मा भले तैयार हो, शरीर में बल नहीं। यह संकल्प एक प्रकाश है लेकिन जीवन देनेवाली अग्नि से रहित। और यह इसलिये है क्योंकि चेतना में एक विभाजन है . . .

लेकिन जैसा कि हम पहले कह चुके हैं : यह जरूरी नहीं है कि आदमी का मन बंटा रहे, वह स्वभाव से दो-मना नहीं है। अपने आंतरिक वास्तविक रूप और सच्ची चेतना में वह संपूर्ण और अखंड है और वह अपनी संपूर्णता को बनाए रख सकता है। उसे बनाए रखने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये वह स्वतंत्र है और उसके पास शक्ति भी है। चूंकि यह केवल संभावना ही नहीं, बल्कि एक ऐसी अनिवार्यता है जिसका क्रमविकास में आना निश्चित है, इसलिये उसे यह करना होगा और वह करेगा भी।

और जब वह यह कर चुकेगा तो वह अपने-आपको मुक्त कर लेगा और साथ-ही-साथ अपने चारों ओर के जगत् को भी मुक्त कर लेगा। बाहरी सफलता आंतरिक सफलता के अनुपात में होगी।

—रवीन्द्र

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

युद्ध और राजनीति

(गतांक से आगे)

श्रीअरविन्द को केवल हिटलर के विरुद्ध ही नहीं लड़ना पड़ रहा था, उनके सिर पर अपने शिष्यों के अंग्रेज-विद्वेष को जीतने का कष्टसाध्य भार भी था। हम जिन ब्रिटिश-विरोधी और हिटलर-समर्थक भावनाओं को पोसे हुए थे, इसके कारण आश्रम के टूटने का खतरा भी खड़ा हो रहा था। श्रीअरविन्द को अपने शिष्यों की इस गंभीर भूल को और साथ ही नाज़ी विजय के खतरे को समझाने में पता नहीं कितनी चिट्ठियां लिखनी पड़ी होंगी! १९४२ में एक शिष्य को लिखी हुई चिट्ठी उद्धृत करता हूं: "... इस युद्ध को तुम्हें कई राष्ट्रों का केवल अन्य राष्ट्रों के साथ युद्ध न समझना चाहिये, न ही इसे भारत की स्वाधीनता के लिये युद्ध मानना चाहिये, बल्कि तुम्हें समझना चाहिये कि यह मानवजाति के लिये पृथ्वी पर एक आदर्श प्रतिष्ठित करने के लिये संघर्ष है। यह आदर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ऐसा सत्य है जिसे पूर्णरूप से पृथ्वी पर कार्यान्वित करना होगा। निकट भविष्य में जो अंधकार और मिथ्यात्व पृथ्वी और मानव जाति को कुचलना चाहते हैं उनके विरुद्ध इस सत्य को संघर्ष करना होगा। तुम्हें इस या उस सतही परिस्थिति को देखने की जगह इस युद्ध के पीछे जो शक्तियां कार्य कर रही हैं उन्हें देखना और समझना चाहिये . . . इस तथ्य में जरा भी शंका नहीं है कि उस स्वाधीनता और प्रकाश, उस सत्य के आने की आशा और उसके लिये जो काम करना है उस काम की आशा भी हिटलर के जीतने पर ऐसी पराधीन परिस्थितियों के नीचे दब जायेगी कि उनमें से निकलना मनुष्यों के बूते के बाहर होगा। उस समय ऐसे मिथ्यात्व और अंधकार का राज्य होगा जिसके बारे में इस देश के लोग सोच भी नहीं सकते, समझ भी नहीं पाते। उस समय ऐसा क्रूर अत्याचार, उत्पीड़न और अधःपतन समस्त मानवजाति के ऊपर ढाया जायेगा जो कभी उसके भाग्य में न था। मित्र-राष्ट्र, जो मानवजाति के स्वतंत्र भावी के पक्ष में हैं, और उसके लिये जूझ रहे हैं, अगर वे विजयी हुए तो इस भयंकर खाई में गिरने से मानवजाति बच जायेगी। विजय के बाद ऐसी परिस्थितियां खड़ी होंगी जिनके कारण आदर्श को बढ़ने का अवसर मिलेगा, भगवान् का दिव्य कार्य करने का अवसर मिलेगा और उस आध्यात्मिक सत्य को पृथ्वी पर स्थापित करने का अवसर मिलेगा जिसके लिये हम यह युद्ध कर रहे हैं। जो लोग इस महान् उद्देश्य से लड़ रहे हैं वे भगवान् के पक्ष में हैं और वे असुर के आधिपत्य की संभावना को दूर करने के लिये लड़ रहे हैं।"

१९४० में एक बातचीत में श्रीअरविन्द ने कहा, "ब्रिटिश और उनके साम्राज्य को तोड़ने में कई शक्तियां व्यस्त हैं—ऊपर की, पारलोक की शक्तियां और संसार की शक्तियां—मैं आंतरिक शक्तियों की बात कर रहा हूं। एक ऐसा समय भी था जब मैं भी उसके ध्वंस की इच्छा करता था, किंतु तब मुझे मालूम न था कि अब जैसी शक्तियां उठी हैं वैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियां उठ खड़ी होंगी। ये शक्तियां क्रम-विकास में नयी विश्व-व्यवस्था लाने का कार्य कर रही हैं। यह व्यवस्था साम्राज्य के पतन के बाद आयेगी। लेकिन इस नयी व्यवस्था को लाने के लिये साम्राज्य को नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। अधिक विध्वंस के बिना भी शक्तियों के संतुलन में परिवर्तन ला कर नयी व्यवस्था को लाया जा सकता है। अगर हिटलर न आता तो मैं परवाह न करता कि कौन-सी शक्ति बच रही है और कौन-सी जा रही है। अब इस समय प्रश्न यह है कि नयी विश्व-व्यवस्था बहुत अधिक दुःख झेलने के बाद और सत्यानाश के बाद आएगी या कम दुःख और कम सत्यानाश के बाद आएगी। इंग्लैंड का इस युद्ध में नाश हुआ तो समझ लो हिटलर की विजय होगी! अगर ऐसा हुआ तो बहुत कष्ट, दुःख और अत्याचार होंगे और उनकी ओर मनुष्य की प्रतिक्रिया के बाद हो सकता है कि विश्व-व्यवस्था आ जाये या न भी आये। या फिर विश्व-व्यवस्था प्रलय के बाद आये! इस जटिल समस्या के हल का निर्णय दिव्य अंतर्दर्शन ने कर लिया होगा। इस स्थिति में कोई परिवर्तन न होगा। किंतु कोई भी नहीं जानता कि क्या निर्णय लिया गया है।"

ये दो लम्बे उद्धरण स्पष्ट रूप से शक्तियों के खिलवाड़ दिखाते हैं और यह भी दिखलाते हैं कि वे अपने उद्देश्य की पूर्ति को साधने के लिये मानव यंत्रों का उपयोग कैसे करती हैं। इस रहस्यमय नाटक में श्रीअरविन्द की भूमिका क्या और कैसी थी यह भी ऊपर दिये उद्धरण से स्पष्ट है। अब मैं हमारे साथ बातचीत के दौरान युद्ध के झुकाव पर श्रीअरविन्द के सूक्ष्म निरीक्षण के कुछ उदाहरण देता हूं। उस बातचीत के समय वे कभी युद्धरत सेनाओं के सैन्य व्यूह पर टिप्पणी करते, कभी उनके फौजी दांव-पेच देख कर उनपर अपना मत प्रकट करते और उससे जो परिणाम आयेंगे वे भी बताते। कभी वे सेना को किस व्यूह की रचना करनी चाहिए उसका वर्णन करते। इन चर्चाओं को ऐसे शांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद से सजाया जाता कि युद्ध की विभीषिका हमें कम कठोर लगती। वह हमें शक्तियों का मजेदार खेल लगता!

२९-१२-४० को सावरकर ने भाषण दिया था जिसमें उन्होंने कहा कि ब्रिटिश पराजित नहीं हो सकते। श्रीअरविन्द ने कहा, "बकवास है! ब्रिटेन को भागवत हस्तक्षेप ने बचाया। ब्रिटेन चकनाचूर हो जाता अगर हिटलर ने फ्रांस के पतन के एकदम बाद इंग्लैंड पर चढ़ाई कर दी होती।"

हम में से किसी ने पूछा, "भगवान् ने फ्रांस की लड़ाई के समय हस्तक्षेप क्यों नहीं किया?"

श्रीअरविन्द ने कहा, "क्योंकि फ्रेंच लोग घूसखोर थे और वे प्रतिकार करने में असमर्थ थे। अंग्रेजों में अभीतक पुराने गुण बचे हुए हैं जिनके कारण उनको सहायता दी जायेगी।" माताजी कहती हैं, "फ्रेंच लोगों ने चेकोस्लोवाकिया को धोखा दिया है, इसीलिये वे अपराधी हैं।"

इसी तरह डंकर्क के पतन के बाद जब चर्चिल ने ब्रिटेन और फ्रांस के लिये उभयनिष्ट नागरिकता का प्रस्ताव रखा था ताकि दोनों एक राष्ट्र बनकर युद्ध कर पाएं तो फ्रांस ने उसे ठुकरा दिया था। माताजी को ऐसा लगा कि फ्रांस ने दिव्य कृपा को अस्वीकृत कर दिया था जो फ्रांस की सहायता करने के लिये उचित अवसर पर आयी थी। हमें बताया गया था कि माताजी ने गुह्य विद्या द्वारा चर्चिल को उसके बाद दिये गये उसके भाषण के लिये शब्द तथा प्रेरणा दी थी।

अब हम श्रीअरविन्द के साथ अपने वार्तालाप की ओर लौटें।

प्रश्न: लोग कहते हैं कि अगर इटली इस युद्ध में हार गया तो हिटलर उसपर अधिकार जमा लेगा।

श्रीअरविन्द: यह संभावना तो है ही किंतु इतने सारे लोगों को एक साथ इकट्ठा रखना जर्मनी के लिये मुश्किल होगा।

प्रश्न: ऐसी खबर आयी है कि हिटलर बुल्गेरिया के ऊपर प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालने की कोशिश कर रहा है ताकि वह उसे बुल्गेरिया के बीच से जाने का मार्ग दे दे या फिर वह बुल्गेरिया को धुरी राष्ट्र के वातावरण में आने के लिये बाधित करेगा।

श्रीअरविन्द: हां, यह संकट तो है ही। मेरा ख्याल है कि अब ब्रिटेन पर आक्रमण करना संभव न होगा किंतु अगर ब्रिटेन बाल्कन प्रदेशों को एंटी-टैंक, हवाई-जहाज वगैरह युद्ध की सामग्री न दे पायेगा तो फिर बाल्कन प्रदेशों के लिये जर्मनी का सामना करना कठिन हो जायेगा।

प्रश्न: अगर बुल्गेरिया पर आक्रमण हो तब तुर्किस्तान सहायता करने शायद आ जाये।

श्रीअरविन्द: पता नहीं। अगर तुर्किस्तान बुल्गेरिया पर आक्रमण हो तबतक प्रतीक्षा करेगा तो बहुत देर हो चुकी होगी। उस परिस्थिति में हिटलर पैलेस्टाइन की ओर मुड़ जाएगा और इटली की वहां सहायता करके वह अफ्रीका की ओर चल पड़ेगा। उसके बाद वह स्पेन को अपना साथी बनाने की कोशिश करेगा ताकि अफ्रीका में युद्धरत अंग्रेज सेना दो सेनाओं के बीच फंस जाये।

प्रश्न: हिटलर का रूमानिया में प्रवेश बाल्कन प्रदेशों में घुसपैठ का पहला कदम लगता है।

श्रीअरविन्द: उसकी सब चालें ऐसी ही होती हैं। वह धीरे से रूमानिया में घुसेगा, इसके बाद तुर्किस्तान, मिस्त्र और एशिया में जबरदस्ती घुस पड़ेगा। जो रहस्यमय लगता है वह है स्टैलिन का रवैया। सचमुच स्टैलिन का रवैया रहस्यमय है। वह एकदम चुप्पी साधे बैठा है।

प्रश्न: क्या उसने कोई गुप्त संधि की होगी ?

श्रीअरविन्द: ऐसी कोई संधि हो भी तो हिटलर इन सब राष्ट्रों को जीतने के बाद उस संधि को रखेगा ? ऐसा हुआ तो उसको या तो उसका सामना करना पड़ेगा या मर-मिट जाना होगा। स्टैलिन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमान था कि एक ओर धुरी-राष्ट्र (जर्मन-इटली) लड़ते-लड़ते थककर चूर हो जायेंगे और साथ ही इंग्लैंड और फ्रांस भी थक जायेंगे। अब हिटलर तुर्किस्तान, मिस्र और अफ्रीका को हड़प ले तो समझ लो इंग्लैंड की पराजय निश्चित है। उसके बाद रूस क्या कर पायेगा ? इस समय स्थिति ऐसी है कि हिटलर की सेना इतनी बड़ी है कि वह दोनों मोर्चों को संभाल सकता है जब कि इंग्लैंड अपनी सेना को कहीं भेज न पाएगा।

नौर्वे और स्वीडन को जर्मनी ने जब धमकी दी तब श्रीअरविन्द ने टिप्पणी की, "इन राष्ट्रों को भयभीत स्वार्थ ने जकड़ लिया है। प्रत्येक राष्ट्र सोचता है कि वह सुरक्षित रहेगा किंतु धीरे-धीरे प्रत्येक बारी-बारी से निगला जायेगा। अभी ऐसा लगता है कि अगर रूस और जर्मनी के विरुद्ध विश्व-युद्ध छिड़ जाये तो मित्र राष्ट्रों को अकेले ही लड़ना पड़ेगा, तब तो यह दुर्जेय संधि होगी। . . . संसार के बचने की कोई आशा नहीं दीखती। हां, जबतक कि हिटलर और स्टैलिन झगड़ न पड़ें यां जर्मनी में कुछ उथल-पुथल न हो जाये, किंतु इस समय ऐसी कोई संभावना दीखती नहीं।

अप्रैल १४, १९४०

जब जर्मनी नौर्वे के ऊपर आक्रमण की तैयारी कर रहा था तब श्रीअरविन्द ने चेम्बरलिन की निष्क्रियता पर टिप्पणी की, "जब तक वह संचालक है तब तक कुछ भी न होगा। वह व्यापारी बुद्धि को राजनीति में लगाने की कोशिश कर रहा है . . . मुझे अंग्रजों की चाल समझ में नहीं आती। जैसे ही उन्होंने जर्मनी का उस स्थान को घेरने का समाचार सुना उन्हें बर्गन पर कब्जा कर लेना था। बर्गन ओस्लो से काफी दूर है और फिर भी वहां से हमला करने की संभावना थी। अगर जर्मन छह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विध्वंसक पोत लाते तो अंग्रेज बीस ले आते . . .। वे नौसेना द्वारा नाकाबंदी के विचार में मग्न हैं ताकि जर्मन सेना भूख से मर जाये। पूर्व दिशा में सिगफ्रिड लाइन (दीवार) से भी अंग्रेज भयभीत हो रहे हैं। वे किसी भी खतरे को झेलने के लिये तैयार नहीं हैं। वे अपनी ही व्यवस्था से बंध गये हैं जब कि हिटलर अपने-आप को किसी बात से बांधता नहीं।

अप्रैल १५, १९४०

हिटलर के बाल्टिक प्रदेश में घुसने पर हमारे दल में से किसी ने टिप्पणी की कि युद्ध के मोर्चे को फैला कर हिटलर ने बड़ी भारी भूल की है। श्रीअरविन्द ने कहा, "यह दुःसाहसी कार्य था। अंततः जल सेना पर ही सब कुछ निर्भर करता है। जल सेना के बिना रसद लाना, यांत्रिक सैन्य दल वगैरह लाना संभव न होगा . . .। हवाई जहाज केवल शक्तिशाली मदद हैं, उनकी सहायता से किसी राष्ट्र को जीतना संभव नहीं।"

मई २०, १९४०

प्रश्न: हिटलर की यह घोषणा कि १५ अगस्त तक युद्ध समाप्त हो जायेगा और संधि का प्रस्ताव मान लिया जाएगा, बड़ा अर्थगर्भित लगता है।

श्रीअरविन्द: यह एक संकेत है कि वह हमारे कार्य का शत्रु है। इस संघर्ष में जो मूल्य फंस कर उलझ गये हैं इससे ही यह स्पष्ट है कि हिटलर के पीछे जो शक्ति है, वह आसुरिक, दानव शक्ति है . . .।

प्रश्न: वह जिस तरह निर्णय लेता है, वह विचित्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द: वह थोड़े ही निर्णय लेता है! उसके पीछे जो सत्ता है वही निर्णय लेती है . . . वही सत्ता यहां भी बीच-बीच में आ जाती है और देखती है कि यहां किस तरह का काम हो रहा है।

प्रश्न: वह जानती है कि यहां जो हो रहा है वह उसके हित के विपरीत है ?

श्रीअरविन्द: (हंसते हुए) अवश्य! . . . वह बहुत शक्तिशाली सत्ता है। पॉल रिशार इस सत्ता के साथ संपर्क रखते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "राष्ट्रों के प्रभु" में जिन योजनाओं और पद्धतियों का वर्णन किया है, उन्हीं का इस समय अनुसरण किया जा रहा है। उस पुस्तक में वे कहते हैं कि वर्तमान संस्कृति को नष्ट करना होगा, किंतु सचमुच इस समय संस्कृति मानव समाज के लिये जिस महत्त्व और गरिमा का प्रतिनिधित्व करती है यह उसे नष्ट करने का प्रयास है। जर्मनी में हिटलर ने यह कर दिखाया है . . .। वह जहां भी गया संस्कृति के महत्त्व और गरिमा को उसने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। असुर के आगे मनुष्य मुकाबला नहीं कर पाता . . . हिटलर के विषय में ऐसा लगता है कि केवल आसुरिक प्रभाव नहीं है बल्कि वह असुर से ग्रस्त है, शायद वह असुर का अवतार हो। स्टैलिन भी ऐसा ही लगता है। इस समय प्राणिक जगत् भौतिक जगत् पर उतर आया है इसीलिये बुद्धिवादी वर्ग अपनी संस्कृति और जिन मूल्यों को उन्होंने संजोये रखा था और जिनका वे समर्थन करते रहे हैं, उनको धूल में मिलता देखकर हैरान-परेशान हो रहे हैं। चूंकि वे भौतिक जगत् से परे जो जगत् है उसके अस्तित्व को नकारते हैं इसीलिये उनका हैरान-परेशान होना स्वाभाविक है।

किसी अन्य प्रसंग में श्रीअरविन्द ने टीका की, "यह स्पष्ट दीखता है कि हिटलर सारे संसार पर शासन करना चाहता है और उसकी दूसरी चाल भारत की ओर चलने की है।"

२९-५-४० के संदेश में माताजी ने कहा कि भगवान् के विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाश्वत कालतक असुर विजयी न हो पाएगा। हिटलर का अंत होना ही चाहिये। श्रीअरविन्द ने कहा, "उसका यह अर्थ नहीं है कि मित्र-राष्ट्रों द्वारा उसका अंत होगा . . .। अगर इंग्लैंड हार जाये तो रूस, जर्मनी, जापान और इटली को छोड़कर कोई भी राष्ट्र स्वाधीन न रहेगा। मैं पुराने संसार की बात कर रहा हूं। मेरे विचार से इसके बाद संघर्ष रूस और जर्मनी में होगा। अगर रूस देखे कि इंग्लैंड की स्थिति नाजुक हो रही है तो स्टैलिन तुर्किस्तान और रूमानिया पर दबाव डालेगा ताकि वह मृत समुद्र (Black sea) पर प्रभुत्व पा ले। उसने वैसा ही दबाव बाल्टिक प्रदेशों पर भी डाला था। बाल्कन प्रदेशों में जो गड़बड़ हो रही है उसके बारे में हिटलर चुप रहनेवाला जीव नहीं है। इटली की सहायता से वह एशिया मायनोर और बाल्कन प्रदेश की समस्या का हल निकाल लेगा या फिर इस समय वह स्टैलिन को खुली छूट देगा क्योंकि वह जानता है कि बाद में उससे निपटा जा सकेगा।"

हम देख सकते हैं कि जब रूस और जर्मनी में युद्ध की कोई संभावना तक न दीखती थी तब भी श्रीअरविन्द ने दूरदृष्टि से वह संभावना देख ली थी।

(क्रमशः) —नीरदवरण

जिस प्रकार घर की छत तक पहुंचने के लिये नसैनी, बांस की सीढ़ी या रस्सी का उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार भगवान् तक पहुंचने के लिये भी तरह-तरह के मार्ग हैं। संसार का हर एक धर्म उनमें से एक मार्ग दिखाता है।

—श्रीरामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ जनवरी १९५१ की वार्ता

[यह वार्ता माताजी के लेख "जीवन-विज्ञान" पर आधारित है। लिखते समय मुख्य वार्ता से पहले निम्न वाक्य जोड़ दिये गये।]

आंतरात्मिक सत्ता आंतरिक "सत्य" द्वारा निर्मित हुई है और उसी के चारों ओर व्यवस्थित है।

*

प्राण कर्म की गति है। यह इच्छाशक्ति, आवेगों, कामनाओं, विद्रोहों आदि का अधिष्ठान है।

*

भौतिक सत्ता वह ठोस क्षेत्र है जो प्राण के विचारों को, उसकी क्रियाओं आदि को एक निश्चित और सुस्पष्ट आकार प्रदान करता है। यह कार्य का एक ठोस आधार है।

*

व्यक्ति ने अपनी आंतरात्मिक सत्ता को पा लिया है, इसका अर्थ यह है कि उसे इसके अस्तित्व में विश्वास है, पूरा भरोसा है। उसे इसके प्रति सचेतन होना चाहिये तथा इसे अपने जीवन और कार्य का संचालन करने की अनुमति देनी चाहिये। व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा की सलाह लेते रहना चाहिये तथा इसे अपना पथप्रदर्शक मानना चाहिये। ऐसा करते रहने से ही वह अपनी सत्ता की क्रियाओं के प्रति सचेतन हो सकता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य का होना ही काफी नहीं है। उसे प्राप्त करने के लिये व्यक्ति में इच्छाशक्ति भी होनी चाहिये, इसके लिये उसे सदा अपनी समस्त क्रियाओं को फिर से उनके स्रोत तक ले जाने की कोशिश करनी चाहिये।

*

अपने ऊपर पूर्ण स्वामित्व का अर्थ है अपने प्रति और अपने कार्यों के प्रति सचेतन होना, केवल वही करना जिसे करने का उसने निश्चय किया है, वह नहीं जो दूसरे उससे करने की अपेक्षा करते हैं कि वह करे।

⁂

बहुत-से युगों और स्थानों में आंतरात्मिक उपस्थिति के प्रति सचेतन होने और अंत में उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने की कई विधियां दी गयी हैं। कुछ विधियां मनोवैज्ञानिक हैं तो कुछ धार्मिक और कुछ यांत्रिक भी हैं। किंतु वस्तुस्थिति यह है कि प्रत्येक को अपने लिये उत्तम विधि की तलाश करनी है। और यदि व्यक्ति में तीव्र एवं स्थिर अभीप्सा है, एक धीर और सक्रिय संकल्प है तो उसे निश्चित रूप से इस उद्देश्य तक पहुंचने के लिये आवश्यक सहायता प्राप्त होगी—बाह्य रूप से यह सहायता पढ़ने, अध्ययन करने से और आंतरिक रूप से एकाग्र चिंतन, ध्यान, दैविक संदेश, और अनुभूति से प्राप्त हो सकती है।"

यांत्रिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक विधियों में क्या अंतर है ? धार्मिक विधियां वे हैं जो विभिन्न धर्मों द्वारा अपनायी जाती हैं। बहुत कम धर्म आंतरिक सत्य की चर्चा करते हैं; वे अधिकतर अपने-अपने देवता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क में आने को ही महत्त्व देते हैं। स्वर्ग और नरक—यही उनके बात करने का ढंग होता है।[१] . . .

मनोवैज्ञानिक विधियां वे हैं जो चेतना की अवस्थाओं के साथ संबंध रखती हैं, जो समस्त क्रिया-कलाप का त्याग करके आंतरिक सत्ता को प्राप्त करने का प्रयत्न करती हैं; वे अपने अंदर चेतन रूप में निरासक्ति, आत्म-त्याग, एकाग्रता एवं उच्चतर सत्य को लाने तथा सब प्रकार की बाह्य क्रियाओं को त्याग देने के लिये आंतरिक अवस्थाएं उत्पन्न करना चाहती हैं। मनोवैज्ञानिक विधि विचारों, भावनाओं और कर्मों पर कार्य करती है।

यांत्रिक विधियां शुद्ध यांत्रिक साधनों पर आधारित हैं—इन्हें किसी विशेष ढंग से प्रयुक्त करके ही व्यक्ति इनसे लाभ उठा सकता है। श्वास रोकने की क्रिया को ही लो : यह कार्य यंत्रवत् होता है किंतु ऐसा कहा जाता है कि इसके साथ व्यक्ति अपने विचार को एकाग्र करने या किसी शब्द का जाप करने की कोशिश कर सकता है—यह विवेकानंद की शिक्षा थी। कुछ हदतक इससे लाभ भी होता है, पर बाद में यह फीका पड़ जाता है। कुछ स्थानों में समय-समय पर कुछ व्यक्तियों को इससे थोड़ी-बहुत सफलता अवश्य प्राप्त हुई है, पर सामूहिक रूप से इसका कोई परिणाम सामने नहीं आया है।

मनोवैज्ञानिक विधि बहुत अधिक कठिन है पर साथ ही अत्यधिक फलप्रद भी; अपने कार्यों के द्वारा तुम एक आंतरिक संकल्पशक्ति की ऐसी अवस्था में अपने-आपको पाते हो कि सिवाय अपनी सत्ता के सत्य के तुम अपने अंदर और किसी वस्तु की अभिव्यक्ति नहीं करते, बल्कि उसी सत्य को तुम प्रत्येक वस्तु का आधार बना देते हो। हां, यदि तुम कुछ भी न करो, तो यह सब सरल हो जाता है, पर तब अपने-आपको धोखा देना भी सरल होता है। जब तुम एकांत में, नीरव होकर सबसे

[१] यहां शब्द धूमिल पड़ गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग बैठ जाते हो और थोड़ी-बहुत आत्म-तुष्टि के भाव में अपने-आपको निहारते हो तो तुम यह कल्पना कर सकते हो कि तुम्हें किसी आश्चर्यजनक चीज की प्राप्ति हो रही है। किंतु जब अपने जीवन में तुम्हारे सामने पग-पग पर परीक्षा की घड़ी आती है, जब तुम्हारी अपूर्णताएं, तुम्हारी दुर्बलताएं, छोटी-छोटी दुर्भावनायुक्त क्रियाएं दिन में सौ बार तुम्हारी दृष्टि के आगे से गुजरती हैं तो तुम शीघ्र ही भ्रममुक्त हो जाते हो[१] ... और तब तुम अधिक सच्चाई से अपने प्रयत्नों में लग जाते हो।

इसीलिये किसी एकांत जंगल में आश्रम बनाने के स्थान पर, जहां सब कुछ बहुत सुन्दर है, आरामदायक है तथा सबसे अलग-थलग रहने एवं अपनी ही छोटी-सी सत्ता पर ध्यान देने के स्थान पर हम जीवन के सभी व्यापारों को अपने हाथ में लेकर उनमें अधिक-से-अधिक चेतना का संचार करने की कोशिश कर रहे हैं, लोगों के संपर्क में आकर हम आंतरिक क्रियाओं के प्रति अधिक सचेतन होना चाहते हैं।

कठिनाइयों से दूर भागने से उनपर कभी विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। यदि तुम अपने शत्रु के आगे से भाग खड़े होगे तो कभी भी तुम उसे पराजित नहीं कर सकोगे, बल्कि संभावना यही है कि वही तुम्हें पराजित कर देगा। इसीलिये हम यहां पांडिचेरी में हैं, हिमालय की किसी चोटी पर नहीं। यद्यपि मैं यह मानती हूं कि हिमालय की चोटी बहुत आनंददायक होती पर शायद इतनी प्रभावकारी नहीं।

अगली बार मैं मानसिक अनुशासन के विषय में कहूंगी, क्योंकि इस विषय पर मेरे पास बहुत कुछ कहने को है। यह रास्ते का एक भयानक रोड़ा है : लोग सोचते हैं कि उनकी बुद्धि दूसरों से अधिक तीव्र है, वे उसके आधार पर उन वस्तुओं के विषय में मत बनाते हैं जिनके बारे में वे कुछ भी नहीं जानते। यह मानवजाति के लिये यदि सबसे बड़ी नहीं, तो एक बड़ी बाधा अवश्य है। कारण, सब पशुओं में से मनुष्य जाति

[१] यहां शब्द मिट गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही—क्षमा करना हम अभी पशु ही हैं—भाषा का प्रयोग कर सकती है और पृष्ठ पर पृष्ठ लिख सकती है . . . मनुष्य सोचता है कि वह एक उच्च प्राणी है, क्योंकि वह अपने विचारों, भावनाओं आदि को लिपिबद्ध कर सकता है और दूसरे उन्हें पढ़ सकते हैं। वह अपनी मानसिक महानता और मानसिक श्रेष्ठता की ऊंचाई से उन सब चीजों को बचकाना समझता है जो असीम रूप में उच्च हैं।

क्या आंतरात्मिक सत्ता आंतरिक सत्य के साथ एकाकार हो सकती है ?

वह उसके संपर्क में आकर अपने-आपको उसके चारों ओर व्यवस्थित करती है। अंतरात्मा की प्रेरक शक्ति सत्य ही है। सत्य एक ऐसी वस्तु है जो बाह्य रूप में अपना अस्तित्व रखती है, वह देश या काल में किसी वस्तु पर निर्भर नहीं है, जब कि आंतरात्मिक सत्ता एक ऐसी सत्ता है जो प्रगति करती है, अपने-आपको गढ़ती है, विकास को प्राप्त करके अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक सुगठित करती है। इस प्रकार वह इस सत्य को, इस एकमेव चिरस्थायी सनातन सत्य को अभिव्यक्त करने में अधिकाधिक सक्षम होती है। आंतरात्मिक सत्ता उत्तरोत्तर विकसित होती रहती है जिसका अर्थ है कि आंतरात्मिक सत्ता और सत्य का संबंध भी उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है। यह संभव नहीं है कि व्यक्ति अपनी आंतरात्मिक सत्ता के प्रति तो सचेतन हो जाये पर आंतरिक सत्य के प्रति सचेतन न हो। जिन लोगों को यह अनुभूति प्राप्त हो चुकी है—मानसिक अनुभूति नहीं किंतु अंतरात्मा के साथ संपर्क की सर्वांगीण अनुभूति, उसके विषय में गढ़े विचार के साथ संपर्क की नहीं, किंतु एक सच्चे ठोस संपर्क की अनुभूति—वे सब यही कहते हैं; जिस क्षण यह संपर्क स्थापित हो जाता है, उसी क्षण व्यक्ति अपने अंदर इस सनातन सत्य के प्रति पूरी तरह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचेतन हो जाता है और यह देख लेता है कि यही जीवन का उद्देश्य है और संसार का पथप्रदर्शक भी। एक के बिना दूसरा प्राप्त नहीं हो सकता; वस्तुतः यही बात तुम्हें इस बात की जानकारी देती है कि तुम अपनी आंतरात्मिक सत्ता के संपर्क में हो। यह संपर्क चाहे सचेतन न भी हो किंतु यह तुम्हारे जीवन का संचालन अवश्य करता है।

कुछ लोग कहते हैं कि उनकी अपनी इच्छा से बाहर की कोई वस्तु उनके संपूर्ण जीवन की व्यवस्था करती है, वही उनके लिये आवश्यक अवस्था उत्पन्न करती है तथा अनुकूल परिस्थितियों अथवा व्यक्तियों को उनके जीवन में लाती है, ऐसा कहा जा सकता है कि वही उनसे बाहर की सब वस्तुओं को व्यवस्थित कराती है। अपनी बाह्य चेतना में शायद वे कोई एक वस्तु चाहते थे और उसकी प्राप्ति के लिये उन्होंने कोशिश भी की पर आ कुछ और ही गया। किंतु कुछ वर्षों के बाद उन्हें यह समझ में आ गया कि वस्तुतः यही होना था। तुम अपने अंदर की आंतरात्मिक सत्ता के विषय में चाहे कुछ भी न जानो, फिर भी वह तुम्हारा पथप्रदर्शन करती है। कारण, किसी वस्तु के प्रति सचेतन होने के लिये तुम्हें सबसे पहले यह मानना होगा कि उस वस्तु का अस्तित्व है। कुछ लोग ऐसा नहीं करते। मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनका अपनी आंतरात्मिक सत्ता के साथ सच्चा संपर्क था पर उन्हें यह पता नहीं था कि यह सब क्या है, क्योंकि उनके अंदर कोई भी वस्तु इस संपर्क को नहीं पहचानती थी।

क्या अपनी आंतरात्मिक सत्ता के साथ संपर्क स्थापित किये बिना व्यक्ति सनातन सत्य के साथ संपर्क स्थापित कर सकता है?

विश्व में कुछ प्राणियों के साथ ऐसा हो सकता है। वे अपनी अंतरात्मा के साथ संपर्क स्थापित किये बिना 'सत्य' के सीधे संपर्क में आ सकते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि उनके पास अंतरात्मा होती ही नहीं। किंतु मनुष्य में आंतरात्मिक सत्ता सदा होती है, और वह सदा इसी के द्वारा सनातन सत्य के संपर्क में आता है। यह संपर्क सामान्यतया इसी ढंग से उसके सामने प्रकट होता है, क्योंकि इसके साथ इसकी अपनी सुंदरता, अपना वैभव एवं आनंद ज़ुड़ा रहता है। आंतरात्मिक सत्ता मनुष्य की ही विशेषता है, यदि व्यक्ति इस बात की तह तक जाये तो यही शायद उसे और प्राणियों से उच्चतर श्रेणी में रखती है।

बहुत-से प्राचीन दर्शनशास्त्रों को सत्ता के इस वर्गीकरण का—आंतरात्मिक सत्ता, आंतरिक सत्य का पूरा ज्ञान नहीं था, उनके इन प्रणालियों के संबंध में विचार बड़े सीधे-साधे थे, उदाहरणार्थ, बाह्य और आंतरिक चेतना, जाग्रत और निद्रावस्था की चेतना। उन्हें मनुष्य के मनोविज्ञान का विस्तृत ज्ञान न था, अथवा यदि था भी तो उन्होंने दूसरों को यह बताना ठीक नहीं समझा। उन दिनों ज्ञान सबको नहीं दिया जाता था। पहले व्यक्ति को अपनी सद्भावना को स्पष्ट रूप में प्रमाणित करना होता था, उसे अपनी क्षमताओं के प्रति एक हदतक के विकास के प्रति गुरु को विश्वास दिलाना पड़ता था, तभी उसे किसी विशेष प्रकार का ज्ञान दिया जाता था किंतु अब, आधुनिक जीवन में यह ज्ञान पुस्तकों में छपा है, कोई भी इन्हें खरीद कर पढ़ सकता है। तुम ऐसे सैकड़ों लोगों से मिले होगे जिन्होंने शब्दों का अनंत भंडार पढ़ा है, पर उन्हें यह पता नहीं कि उनका अर्थ क्या है। एक समय था जब यहां कुछ लोगों ने इस बात का दावा किया था कि उन्होंने "अतिमानस" पा लिया है, जब कि वे यह भी नहीं जानते थे कि वह है क्या।

इस जनतंत्रीय व्यवस्था के कारण ज्ञान के प्रचार की यह लोक-प्रणाली अनिवार्य हो गयी है। पर चुनाव की शायद अन्य विधियां भी हैं जो पर्दे के पीछे छिपी हुई हैं, प्रत्यक्ष कम हैं पर फलप्रद अधिक।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी की जान गयी आपका फसाना हुआ

जी हां, अगर आपने कभी कुत्ते-बिल्ली नहीं पाले तो मेरी कहानी न सुनिये। इसमें आप कुछ न समझ पायेंगे, क्योंकि सचमुच यह कहानी नहीं दुखे हुए दिलों की आह है।

यह तो आप जानते ही हैं कि मुझे बिल्लियां बहुत प्रिय हैं और भगवान् की कृपा से मेरे यहां कभी बिल्लियों की कमी भी नहीं रही। आपने कभी मेरा घर देखा होता तो तबियत फड़क उठती। मेरे यहां कुरसी पर, मेज पर, गद्दी पर और यहांतक कि मेरी किताबों पर बिल्लियां ही बिल्लियां दिखायी देतीं। यह सब तो हर एक देख सकता है लेकिन जो बात आप नहीं जानते और न जान ही सकते हैं वह यह है कि मनुष्य का बिल्ली के साथ इतना घनिष्ठ संबंध हो सकता है। जी हां, बिल्ली हमारे सुख-दुःख की साथी होती है और वह आशा करती है कि हम भी उसके सुख में खुश होंगे और दुःख का इलाज करेंगे।

कल रात भर मेरी झपकी तक न लगी। कभी इधर देखता कभी उधर देखता, जरा कहीं खटका होता तो वात से पीड़ित लड़खड़ाती टांगों पर जाड़े की रात में उठ-उठ कर छत के चक्कर लगाता, इधर झांक, उधर कान खड़े करता, और फिर एक सर्द आह लेकर अपने शरीर को पलंग पर दे पटकता। इधर शरीर में गरमी पहुंची नहीं कि उधर ख्याल आता, हाय मेरी बिल्ली ऐसी रात में न जाने कहां होगी, बिल्लियों को तो सर्दी पसंद नहीं है कहीं ठिठुर कर टें न बोल जाये, चलो फिर से एक बार देख आऊं। फिर किसी तरह अपने दर्द से टूटते हुए थके-मांदे शरीर को ढोकर बाहर सड़क पर ले जाता। लेकिन बाहर निकलते ही ठंड की एक चपेट मेरे होश-हवास वापिस ले आती और मुझे ख्याल हो आता कि इतनी ठंड में बाहर निकलना निमोनिया को निमंत्रण देना होगा और मैं अनमने पैरों से लौट पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन आराम करूं भी तो कैसे ? अड़ोसी-पड़ोसी स्वप्न-लोक में विचर रहे हैं, एक मैं हूं जो अपनी प्यारी बिल्ली से बिछुड़कर आंसू बहा रहा हूं। लेकिन आशा-तंतु अभी टूटा नहीं है। मेरी बिल्ली का शव अभीतक नहीं मिला है इसलिये सोचता हूं शायद कहीं से आ ही जाये।

मुझे याद है वे रातें जब मेरी यह बिल्ली लगभग जंगली हो गयी थी, दिनभर उसकी शकल न दिखायी देती थी। लेकिन फिर भी रात को अंधेरी चादर ओढ़कर जब मरजी आ जाया करती थी और आशा करती थी कि मैं उसके लिये दस्तरखान बिछाये बैठा रहूं। उसे खाने में एक चीज से संतोष न होता था। नाना प्रकार के व्यंजनों के बिना उसका खाना पचता न था। इसके लिये मैं तीन अलग-अलग कटोरों में एक सामिष और दो निरामिष चीजें तैयार रखा करता था। रात को कटोरे खुले छूट जाते तो हमारी बिल्ली रानी रूठ जाती थीं। जब मैं गहरी नींद में होता था तब आकर बिल्ली मुझे जगा दिया करती थी और मुझे तुरंत कटोरे खोलकर भोजन उसके सामने रखना पड़ता था, जरा देर हो जाती तो बिल्ली बौखला उठती और सारा पड़ोस सिरपर उठा लिया करती थी। एक-आध बार मेरी जगह किसी और ने खाना देने की कोशिश की तो बिल्ली ने उसका हाथ नोच लिया। यहांतक हुआ है कि मेरी तबियत बहुत खराब है, तीन-तीन दिन तक खाना नहीं खाया फिर भी आधी रात को उठकर बिल्ली को खाना दिया, लाड़-प्यार किया और आदर के साथ विदा दी। लोग कहते हैं लड़कियों के बाप को अपनी बेटी को विदा देते हुए बहुत कष्ट होता है पर मुझे विश्वास है अंधेरी रात में बिल्ली को विदा देते हुए मुझे जो मानसिक क्लेश होता था वह उससे इक्कीस हो सकता है उन्नीस नहीं।

दो-चार बार ऐसा भी हुआ है कि मेरी बिल्ली अपने खाने के लिये नहीं आयी और मुझे मानों अंगारों पर लोटना पड़ा। एक बार तो बाहर कर्फ्यू लगा था, शाम से सवेरे तक घर से बाहर निकलना मना था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर बिल्ली रानी गायब। मैं खाना लिये उसकी राह देखता रहा। और बीच-बीच में सोचता जाता था कि बिल्ली शायद कर्फ्यू का मतलब समझ गयी है और इसीलिये जहां कहीं फंसी है वहां से बाहर नहीं आ रही। बाहर जाकर ढूंढ़ना असंभव था और अंदर चैन से बैठना दूभर। सच मानिये सारी रात मानों गरम तवे पर बीती। सवेरे जब बिल्ली ने दर्शन दिये तब कहीं जान में जान आयी और मैंने अपने गले को गीला किया।

लेकिन इस बार स्थिति और भी दर्दनाक है। मेरा दिल कह रहा है कि मेरी बिल्ली किन्हीं हत्यारों के पेट में समा चुकी है। जी हां, हमारे शहर में कुछ लोग रात को रस्सी और फंदा लेकर घूमा करते हैं और कोई बिल्ली दीख जाये तो गले में फंदा डालकर उसे चुपचाप खतम कर देते हैं, फंदे की वजह से उसकी आवाज तक नहीं निकल पाती। दूसरे दिन उन लोगों के यहां भोज होता है। मुझे रह-रह कर यही ख्याल आ रहा है कि किसी हत्यारे ने मेरी बिल्ली पर फंदा डाला होगा, उसकी आंखें निकल आयी होंगी और उसने इस बेबसी और लाचारी की हालत में मुझे याद किया होगा। मुझे विश्वास है कि उसकी आंखें पा सकूं तो उनके अंदर अपनी तस्वीर देख सकूंगा। काश उस समय मैं वहां पहुंच पाता। सच कहता हूं मैं भीम की तरह उस हत्यारे का खून पिये बिना न छोड़ता। लेकिन भाग्य में तो यह रोना बदा था।

पिछले तीन दिनों से मेरा माथा ठनक रहा था। मेरा बायां अंग बार-बार फड़क उठता था। मैंने कई बार अपने-आपको समझाया कि इस तरह बुढ़िया पुराण की बातों में मत पड़ो, यह सब पोंगा पंथी है, फिर भी दिल कांप-कांप उठता था। अब समझ में आ रहा है इसका कारण। हाय, इतनी सूचनाएं मिलने पर भी मैं अपनी बिल्ली की रक्षा न कर सका। पड़ोसियों को शिकायत थी कि मेरी बिल्ली उनके कमरे को, दालान को या आंगन को गंदा कर आती है। मैंने हमेशा चुपचाप उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें सह लीं और बाल्टी, पानी, फिनाइल लेकर उनके स्थान साफ कर आया। एक और ने शिकायत की कि मेरी बिल्ली उसके यहां से दूध साफ कर जाती है। मैंने कभी यह न कहा कि तुम दूध ढककर क्यों नहीं रखते। मैंने चुपके से लोटाभर दूध उनके घर भिजवा दिया। लेकिन कुछ दिन पहले—शायद एक सप्ताह हुआ होगा, मैंने देखा कि मेरे पिछवाड़े रहनेवाले सज्जन के यहां एक लोहे की तीलियोंवाला पिंजरा रखा है। मैंने इधर-उधर से पता लगाया। मुझे बताया गया कि घर में घूंस आती है और बड़ा उत्पात करती है, उसे पकड़ने के लिये है। मेरे दिल ने गवाही न दी। सिर से पैर तक मानों किसी ने बरफ में रखा चक्कू घुमा दिया। मैं कांप उठा, रोंगटे खड़े हो गये और जी मिचलाने लगा। पर नहीं, मैंने हिम्मत से काम लिया और अपने कमरे में सही-सलामत लौट आया।

मैं बिस्तर पर लेटा ही था कि आंखों के सामने एक चलचित्र घूम गया। मेरी बिल्ली ने पिछवाड़े वालों का एक कबूतर खा लिया। उनको तैश आया और उसी अवस्था में उन्होंने शहर के एक बिल्ली-मार को बुलाकर इशारा कर दिया। मेरे शरीर में फुरहरी आ गयी। मैं उसी समय खाट पर से उछल पड़ा और नंगे पैर, उघारे बदन, सिर के बाल बिखराये पड़ोसी के द्वार पर आ पहुंचा। दरवाजा खटखटाया, घर की कोमलांगी नववधू ने दरवाजा खोला और चीख मारकर जमीन पर धम। वह इस घर में नयी थी। मुझे पहचानती न थी। उसने न जाने क्या सोचा होगा। मैं उलटे पैरों अपना-सा मुंह लिये भागा। पीछे मुड़कर देखने का साहस न था। कानों को चीरती हुई एक आवाज आयी, क्या बदतमीज जंगली से पाला पड़ा। मैं मन-ही-मन यही शब्द दोहराता घर लौट आया। यहां कहता भी तो किससे, मेरे दिल के दर्द को समझनेवाला है ही कौन ? मैं दहाड़ मारकर रोने लगा। पड़ोसियों को इतनी भी परवाह न थी कि आकर पूछ तो जाते कि मामला क्या है ? पिछवाड़ेवालों ने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना न पूछा कि साहब आप आये किसलिये थे।

खैर, उस रात से मैंने अपनी प्यारी बिल्ली की शकल नहीं देखी। झक मारकर हा हा खाता हुआ फिर से पिछवाड़ेवालों के यहां गया। उन्होंने संक्षिप्त-सा उत्तर मेरे सिरपर दे मारा, 'हम नहीं जानते' और दरवाजा बंद। इसलिये पूरा विश्वास होते हुए भी जी नहीं मानना चाहता था कि मेरी बिल्ली मर गयी। कहीं चूहे की आहट हो, कहीं पत्ता खड़के तो झट दौड़कर जाता हूं, शायद वह आ गयी हो, जितने अच्छे पकवान आजकल बनाता हूं इतने तो उसके जीते हुए भी न बनाये थे। उन्हें लिये बैठा रहता हूं, सवेरे से शाम हो जाती है और फिर सवेरा आ जाता है। हाय उन्हें चखनेवाली तो किसी के पेट में सो रही होगी और मैं उसके लिये बैठा रो रहा हूं। अब यही चाह है कि फिर से कोई बिल्ली न आये मेरे पास।

—रवीन्द्र

मां के उत्तर गण के मुखिया को

"जो होता है तुम्हारे हित के लिये होता है और भागवत कृपा से होता है।" क्या ऐसा सोचने की वृत्ति ठीक और स्वस्थ है ?

यह विचार केवल सत्य, अच्छा और स्वस्थ ही नहीं है बल्कि यदि व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग पर बढ़ना चाहे तो उसके लिये वह वृत्ति पूर्णतया अनिवार्य भी है। वस्तुतः यही वह पहला पग है जिसे रखे बिना वह आगे बढ़ ही नहीं सकता। इसीलिये मैं सदा यही कहती हूं : "जो भी तुम करो, उसे अपनी ओर से अधिक-से-अधिक अच्छा करो, और फिर उसका फल प्रभु पर छोड़ दो; इस प्रकार तुम्हारा हृदय भी शांत रहेगा।"

(१३-५-१९६३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर मां,

क्या हमारी हस्तरेखाएं भूत, भविष्य और वर्तमान जीवन के विषय में बता सकती हैं ?

हां, निश्चय ही, पर वही व्यक्ति बता सकता है जो इन्हें देखना जानता है, और 'क' में इस विषय की प्रतिभा है।

(१५-५-१९६३)

मैंने प्रायः देखा है कि हमारे द्वारा किया हुआ काम मजदूरों के काम की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह और अधिक शीघ्रता से होता है। न जाने क्यों ?

क्योंकि तुम अधिक सचेतन हो, या यूं कहें, कम अचेतन हो।

(२३-५-१९६३)

लड़कियां सदा ही नुकसान में रहती हैं : वे लड़कों की तरह जो चाहे नहीं कर सकतीं।

क्यों नहीं ?

तुम्हारे कथन के विरोध में सैकड़ों प्रमाण हैं।

(३१-५-१९६३)

मधुर मां,

दो मानवों के बीच कौन-सा संबंध सबसे अच्छा होता है ? मां-बेटे का, भाई, मित्र या प्रेमी आदि का ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सिद्धांत रूप में," सभी संबंध अच्छे हैं और प्रत्येक संबंध सनातन सत्ता का एक-न-एक रूप दर्शाता है। किंतु प्रत्येक विकृत हो सकता है और मानव प्रकृति में स्वार्थपूर्ण मिथ्यात्व के कारण बिगड़ भी सकता है,. क्योंकि यह मिथ्यात्व ही प्रेम के स्पन्दनों को अपने विशुद्ध रूप में अभिव्यक्त होने से रोकता है।

(४-६-१९६३)

'आसमान तक' (रीच फॉर द स्काई) फिल्म और उसके नायक के संबंध में मैंने कहा था कि उसे कोई भी वस्तु निरुत्साहित नहीं कर सकती थी। उसकी दोनों टांगें दुर्घटना में नष्ट हो चुकी थीं, फिर भी उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह अपना विमान-चालक का काम कभी न छोड़ेगा। उस व्यक्ति में आश्चर्यजनक प्राण-शक्ति थी, अदम्य बल और साहस था . . .।

सर्वांगीण पूर्णता के योग का अभ्यास करने के लिये तुम्हारे अन्दर ठीक इसी प्रकार का दृढ़ संकल्प होना चाहिये।

(७-६-१९६३)

कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब मुझे ऐसा आभास होता है कि पढ़ने या कुछ और कार्य करने के स्थान पर नीरव होकर बैठा रहूं, लेकिन मैं समय नष्ट करने से डरता हूं। मुझे क्या करना चाहिये?

यह नीरवता के प्रकार पर निर्भर है—यदि यह नीरवता प्रकाशपूर्ण है, शक्ति से ओतप्रोत है और उसमें चेतन एकाग्रता है, तो यह अच्छी है। किंतु यदि वह तामसिक और अचेतन नीरवता है तो हानिकारक है।

(१०-६-१९६३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दिन के बाद मुझे एक सुन्दर स्वप्न आया है जिसमें मैंने माताजी को देखा और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

यह स्वप्न नहीं, बल्कि इससे पहले के ध्यान और तुम्हारी अभीप्सा का परिणाम है।

(१२-६-१९६३)

मेरे मस्तिष्क में काफी "कूड़ा-करकट" भरा है जो मुझे स्पष्टतया सोचने और नये विचारों को शीघ्रतापूर्वक ग्रहण करने से रोकता है। मैं इससे कैसे मुक्त हो सकता हूं ?

अधिक अध्ययन करने से, अधिक सोचने-विचारने से तथा बौद्धिक व्यायाम से। उदाहरणार्थ, किसी भी सामान्य विचार का निरूपण करो और फिर उसके विरोधी विचार का, और तब इन दोनों विचारों में समन्वय खोजो, दूसरे शब्दों में, एक ऐसा तीसरा विचार ढूंढ़ो जो इन दोनों में समन्वय स्थापित कर दे।

(२५-६-१९६३)

तुम उपन्यास क्यों पढ़ते हो ? यह एक मूर्खतापूर्ण कार्य है और इसमें समय भी नष्ट होता है। यह भी एक कारण है जिससे तुम्हारे मस्तिष्क में स्पष्टता नहीं है, और वह अब भी अस्तव्यस्त है।

(२७-६-१९६३)

मनुष्य इतना दुर्बल है कि वह अपने आसपास की हवा से, किसी किताब के पढ़ने अथवा किसी तस्वीर को देखने से ही प्रभावित हो जाता है। वह बहुत आसानी से चोट खा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इसलिये है क्योंकि उसने अपनी चेतन सत्ता को आंतरात्मिक केंद्र के, जो कि उसकी सत्ता का सत्य है, चारों ओर संगठित करने की सावधानी नहीं बरती है।

(२८-६-१९६३)

यहां बहुत-से लोग अपनी सुविधा के लिये माताजी को उद्धृत करते हैं (सचमुच ऐसे कई उदाहरण हैं)।

दूसरों की आलोचना करने से पहले व्यक्ति को यह निश्चित रूप से जान लेना चाहिये कि वह स्वयं पूर्णतया सच्चा है या नहीं।

(३०-६-१९६३)

स्नेहमयी मां,

कुछ दिन पहले मैंने ए-२ दल के बच्चों में एक बड़ी अनोखी बात देखी : लड़के लड़कियों के साथ काम करना नहीं चाहते, यहांतक कि उनके पास उनके साथ खड़ा होना भी पसंद नहीं करते। यह भेदभाव इन छोटे बच्चों में, जो अभी मुश्किल से ११ वर्ष के ही हुए हैं, कैसे आ गया! बड़ी विचित्र बात है यह।

यह पूर्वजों से आयी हुई चीज है जो अवचेतन से उठी है।

— — — —

ब्रह्म निर्गुण, निर्विकार, अविचल हैं और मेरु पर्वत की भांति स्थिर हैं।

—श्रीरामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण के वचन

जहां दूसरे लोग घुटने टेकते हैं वहां तुम भी प्रणाम करो और आराधना करो। क्योंकि जहां इतनी बड़ी जनसंख्या श्रद्धांजलि अर्पित करती है वहां करुणामय ईश्वर अवश्य अवतरित होंगे। क्योंकि वे करुणा के भंडार हैं।

*

दो व्यक्तियों के बीच, गिरगिट के रंग पर खूब गरमा-गरम बहस चल रही थी। एक कह रहा था : "इस ताल-वृक्ष के गिरगिट का रंग बहुत सुन्दर लाल है।" दूसरा इसका विरोध करते हुए कह रहा था : "आप गलती कर रहे हैं। यह गिरगिट लाल नहीं है, नीला है।" लेकिन बहस के द्वारा किसी निष्कर्ष पर न पहुंच पाने के कारण वे दोनों उस आदमी के पास गये जो हमेशा उसी वृक्ष के नीचे रहता था। वह गिरगिट का असली रंग-रूप अवश्य जानता होगा। पहले व्यक्ति ने कहा, "महोदय, क्या यह सच नहीं है कि इस पेड़ का गिरगिट लाल है ?" उस आदमी ने उत्तर दिया : "जी हां।" लेकिन दूसरा व्यक्ति बोल उठा : "आप क्या कह रहे हैं ? यह हो ही कैसे सकता है ? वह गिरगिट लाल नहीं नीला है।" बड़े विनम्र भाव से उस आदमी ने फिर वही उत्तर दिया : "जी हां।" वह जानता था गिरगिट एक ऐसा प्राणी है जो हर वक्त रंग बदलता रहता है; इसीलिये उन दोनों परस्पर-विरोधी वक्तव्यों के उत्तर में उसने "हां" कह दिया था।

उसी प्रकार सत्-चित्-आनंद के भी अनेक रूप होते हैं। जिस भक्त ने भगवान् का एक रूप देखा है वह उनको केवल उसी रूप में जानता है। लेकिन जिसने उनके बहुविध रूपों को देखा हो, केवल वही कह सकता है: "यह सब रूप भगवान् के ही हैं और भगवान् बहुविध हैं।" वे साकार हैं तो निराकार भी हैं, और अनगिनत हैं उनके वे रूप जिन्हें हम जानते ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१३ से १७ फरवरी तक सोसायटी ने बीच ऑफिस में पांच दिनों के युवा शिविर का आयोजन किया जिसमें ११ राज्यों से आये करीब ४० युवकों ने हिस्सा लिया। श्रीअरविन्द तथा श्रीमां के सर्वांगीण योग के साथ-साथ युवकों की जिम्मेदारी से भी इन्हें अवगत कराया गया।

२३ फरवरी से ५ मार्च तक सोसायटी के बीच ऑफिस में डॉ० नाडकर्णी का अंग्रेजी में 'सावित्री-अध्ययन सत्र' चला। 'सावित्री' के अगले कार्यक्रम की सूचना हम अगले अंक में देंगे।

रांची (झारखण्ड) केन्द्र ने 'शब्द' की सहायता से रांची पुस्तक मेले का आयोजन २१ से ३० दिसम्बर २००१ तक किया। बहुत बड़ी संख्या में लोग इसे देखने, खरीदने आये और उन्हें श्रीअरविन्द, श्रीमां, आश्रम तथा सोसायटी के बारे में भी जानकारियां मिलीं।

नैवेली (तमिलनाडु) केन्द्र ने ३ जनवरी को एक छोटा-सा 'क्विज़' कार्यक्रम रखा जिसमें श्रीअरविन्द और श्रीमां के बारे में प्रश्न पूछे गये।

पुणे (महाराष्ट्र) केन्द्र ने २०, २६ और २७ जनवरी को श्री ए० जवडेकर के 'सावित्री' विषयक भाषण रखे।

आन्ध्र-प्रदेश की श्रीअरविन्द सोसायटी का सातवां वार्षिक अधिवेशन ९ तथा १० फरवरी को कोव्वूर में हुआ। डॉ० एम० वी० नाडकर्णी, प्रो० किट्टू रेड्डी, श्री प्रदीप नारंग, श्री बी० वेंकटरमैय्या इत्यादि ने इसमें भाग लिया।

चेन्नइ (तमिलनाडु) शाखा ने श्री मनोज दास का भाषण १७ फरवरी को अपने यहां रखा। विषय था—'ए प्रीफेस टु द फ्यूचर' (भावी का प्राक्कथन)।

भोपाल (मध्य-प्रदेश) में हिन्दी कवि श्री गोपालदास नीरज २५ दिसम्बर २००१ को श्रीअरविन्द के योग पर विस्तार से बोले। २९ दिसम्बर को डॉ० करण सिंह ने भारत-पाक संबंध पर बोलते हुए श्रीअरविन्द के १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त १९४७ के संदेश पर विशेष ध्यान खींचा।

नैरोबी (केनिया) केन्द्र ने श्रीमां के १२४वें जन्मोत्सव पर स्थानीय रेडियो पर एक सुन्दर कार्यक्रम का प्रसारण किया जिसमें भक्ति-गीत, भाषण, 'सावित्री' पाठ इत्यादि हुआ।

गुण्टूर (आन्ध्र-प्रदेश) और बुक्सारा (हावड़ा, पश्चिम बंगाल) में सोसायटी के दो नये केन्द्र खुले।

---

२१ फरवरी २००२-२००३

श्रीमां का १२५वां जन्मोत्सव-वर्ष

श्रीअरविन्द का पथ-प्रदर्शन

अपनी भक्ति और उत्सर्ग की पृष्ठभूमि में अगर तुम कामनाओं, अहंकारी मांगों और प्राणिक दुराग्रहों को पोसते रहो, अगर तुम सच्ची अभीप्सा के स्थान पर इन्हें बिठा दो या उसके साथ इनका मिश्रण कर दो और इन्हें दिव्य शक्ति पर थोपने का प्रयास करो तो अपना रूपांतर करने के लिये भागवत कृपा को पुकारना व्यर्थ है।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा...... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा

श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५ ००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

मधुर मां,

हम जानते हैं कि हमें अमुक चीजें न करनी चाहियें और सचमुच हम उन्हें करना भी नहीं चाहते, फिर भी उन्हें करते हैं। ऐसा क्यों होता है और हम इससे कैसे बच सकते हैं ?

ऐसा तब होता है जब तुम्हारे अंदर इच्छा-शक्ति और चेतना की शक्ति की कमी हो।

अगर तुम अपनी अभीप्सा में सच्चे हो तो ये दोनों चीजें प्राप्त हो सकती हैं।

२० अक्तूबर १९६२ —श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

दिलासा

पांच वर्ष पहले सुधा नारायणमूर्ति जून के एक खुशनुमा दिन अखबार पढ़ रही थीं। अचानक पढ़ते-पढ़ते वे चौंक उठी। जून में बच्चों के मैट्रिक परीक्षा-फल अखबार में दिये जाते हैं। चूंकि वे निवृत्त अध्यापिका थीं और पढ़ाना उनका शौक था इसलिये अब भी शिक्षा-संबंधी समाचार बड़े चाव से पढ़ती थीं। जिन बच्चों ने बहुत अच्छे अंक प्राप्त किये थे उनके फोटो भी अखबार में छपे थे। सुधाजी उन बच्चों के चेहरे ध्यान से देखने लगीं। अचानक एक लड़के पर उनकी नजरें टिक गयीं। देखने में वह दुबला-पतला, कमजोर दीखता था किंतु उसकी आंखों में एक अनोखी चमक थी। उन्होंने फोटो के नीचे उसका नाम पढ़ा—हनुमन्तप्पा।

सुधा के अनुसार जो विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करते हैं, वे न केवल बुद्धिमान् होते हैं बल्कि डटकर मेहनत भी करते हैं और लक्ष्य तक पहुंचने के लिये निरंतर प्रयास करते रहते हैं। ऐसे बच्चों के लिये उनके हृदय में विशेष स्थान है।

दूसरे दिन अखबार में हनुमन्तप्पा का किसी ने साक्षात्कार लिया था, उसका विवरण छपा था। सुधाजी ने बड़े चाव से पढ़ना शुरू किया। जब उन्होंने पढ़ा कि उसके पिता मजदूर हैं तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हनुमन्तप्पा ने बताया कि वह एक छोटे-से गांव में रहता है और उसके पिता को एक दिन के चालीस रुपये मिलते हैं, तो इस हालत में उसके लिये आगे पढ़ाई जारी रखना नामुमकिन है। उसने यह भी बताया कि पांच बच्चों में वह सबसे बड़ा है। शायद बड़ा होने के नाते उसे अपनी जिम्मेदारी ज्यादा महसूस होती होगी। फिर वे लोग आदिवासी थे! सुधा ने सोचा, "हम लोग अपने बच्चों के लिये क्या क्या नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते, ट्यूशन, कितनी किताबें और कितनी अन्य सुविधाएं देते हैं, और इधर हनुमन्तप्पा प्रायः साधनहीन होते हुए भी इतने अच्छे अंक प्राप्त कर पाया!''

हनुमन्तप्पा का पता भी अखबार में दिया गया था। सुधाजी ने आनन-फानन पोस्टकार्ड निकाला, बैठ गयीं हनुमन्तप्पा को चिट्ठी लिखने। चिट्ठी लिखना उनका प्रिय काम है, वे टाटा जैसे उद्योगपति को चिट्ठी लिखने से भी नहीं कतरातीं जब कि उनका कोई परिचय ही न था। उन्होंने हनुमन्तप्पा को दो वाक्य ही लिखे कि वे उससे मिलना चाहती हैं और क्या वह बैंगलोर आ पायेगा? सुधाजी के पिता उसी समय आ पहुंचे, उन्होंने पोस्टकार्ड पढ़ा और पूछा, "वह यहां तक आयेगा कैसे? अगर चाहती हो कि वह आये तो पैसे भेजो ताकि बस का किराया दे पाये और साफ कपड़ों के लिये भी कुछ पैसे भेजो।'' सुधाजी ने झटपट एक वाक्य और जोड़ दिया "तुम्हारा बस का किराया और कपड़ों के लिये पैसे भी भेज रही हूं।'' चार दिन के बाद हनुमन्तप्पा का भी पोस्टकार्ड आया, उसने सुधाजी को चिट्ठी लिखने के लिये धन्यवाद दिया और बैंगलोर आकर उनसे मिलने की उत्सुकता प्रकट की। सुधाजी ने धनादेश द्वारा पैसे भेजे और अपने दफ्तर का पता भी लिख भेजा।

जब कुछ दिनों बाद हनुमन्तप्पा सुधाजी के दफ्तर में सहमा-सिकुड़ा आया तो उनको ऐसा ही लगा मानों गांव का बछड़ा नये स्थान पर आकर भौंचक्का-सा, घबराया-सा, खोया-खोया इधर-उधर देख रहा है। उसके कपड़े साफ-सुथरे थे, बाल संवरे हुए थे, और आंखों में वही दृढ़ निश्चय था। सुधाजी सीधे अपने विषय पर बोलने लगीं, "हमलोग तुम्हारे परीक्षा-फल से प्रसन्न हैं। क्या आगे पढ़ोगे? उसके लिये जिस स्थान को चुनो और जिस विषय को चुनो, उस सबके लिये खर्च देने की जिम्मेवारी हम लेते हैं।'' वह चुप! दफ्तर में सुधा के संगी-साथी मुस्कुराये, बोले, "इस तरह तूफानी वेग से दनादन बोलती मत जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे तुम्हारी बात समझने के लिये समय दो और शाम तक उत्तर देने के लिये कह दो।''

सुधाजी ने आगे कहानी सुनायी—घर जाने से पहले वह मुझसे विदा लेने आया तो बड़े मद्धिम स्वर में और धैर्य से बोला, "अम्मा, मैं बेलरी में 'टीचर्स ट्रेनिंग कोर्स' करना चाहता हूं। वह स्थान मेरे गांव के नजदीक भी है।'' मैंने उसे बार-बार समझाया कि अगर वह कोई और काम करना चाहे या सीखना चाहे तो उसके लिये भी व्यवस्था हो सकती है, किंतु हनुमन्तप्पा ने मन पक्का कर रखा था, उसे बस 'टीचर्स ट्रेनिंग' ही करनी थी। मैंने हर महीने पैसे भेजने की व्यवस्था कर दी। हनुमन्तप्पा ने घर जाकर मुझे चिट्ठी लिखी कि वह एक कमरा किराये पर लेगा और उसके साथ एक मित्र भी रहेगा, किराये की आधी राशि वह देगा। भोजन भी वे दोनों मिलकर पकायेंगे। इस तरह उसका महीने का खर्च, फीस वगैरह मिलाकर तीन सौ रुपये होगा। मैंने हनुमन्तप्पा को एक साथ छः महीने के खर्च के हिसाब से एक हजार आठ सौ रुपये भेज दिये। लौटती डाक से सुंदर अक्षरों में लिखा धन्यवाद और कृतज्ञता का पत्र उसने मुझे भेजा ! समय बीतता गया, हठात् मुझे याद आया कि छः महीने बीतने जा रहे हैं। मैंने झट और छः महीने के पैसे हनुमन्तप्पा को भेज दिये। लौटती डाक से उसकी चिट्ठी आयी, "अम्मा, आपने पैसे भेजे, कृतज्ञ हूं लेकिन बेलरी में एक महीने की छुट्टी थी, मैं घर चला गया था और एक महीने के लिये वहां हड़ताल थी इस कारण मेरा खर्च कम हुआ, आपके पहली बार के भेजे हुए पैसों में से तीन सौ रुपये बचे हुए हैं। मैं आपको वह राशि लौटा रहा हूं, कृपया उसे स्वीकार करें।''

मैं हतप्रभ रह गयी। बेहद गरीब परिवार का लड़का, जो घर में सबसे बड़ा है, अपनी जिम्मेदारी समझता है, फिर भी उसने ईमानदारी से बचे रुपये लौटा दिये !! वह जानता था कि उस राशि को कहीं और खर्च कर देता फिर भी मुझे कोई आपत्ति न होती, कैसा चमत्कार था !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधाजी ने इस घटना को भगवान् का चमत्कार ही माना। उनके हृदय से इस चरित्रवान् बालक के लिये यही प्रार्थना उठी कि वह उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे।

आज जब चारों ओर भ्रष्टाचार फैला हुआ है और छोटे-बड़े सभी अपनी-अपनी जेबें भरने में लगे हैं तब पांच वर्ष पहले की यह सच्ची घटना हमें दिलासा दे रही है कि भारत के उत्थान के लिये आशा है। ऐसे कई हनुमन्तप्पा अवश्य उठ खड़े होंगे ताकि उन्हें देखकर भ्रष्ट लोग अपने-आपको सुधारने का प्रयास करें।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

जून

१. मेरे साथ संबंध में बच्चे की तरह सरल और सहज होने की कोशिश करो—यह तुम्हें बहुत-सी कठिनाइयों से बचा देगा।
२. केवल स्थिर और शांत बने रहो और मानव स्वभाव तुम पर जो सीमाएं आरोपित करता है उनमें रहते हुए अपना अच्छे-से-अच्छा करो।
३. आजकल समय बुरा है, हर एक के लिये और हर चीज के लिये—लेकिन निश्चय ही यह हमें अपनी सीमाओं पर विजय पाना सिखाने के लिये है।
४. तुम्हें यह जानना चाहिये कि चुपचाप रहना भगवान् के कार्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी है।
५. प्रयास किये चलो, एक दिन तुम सफल हो जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. जो आये उसे स्वीकार कर लो, लेकिन अगर वह जाये तो सदा छोड़ने के लिये तैयार रहो।
७. अपना अच्छे-से-अच्छा करो और परिणाम प्रभु के हाथों में छोड़ दो।
८. जो ठीक और उचित है वह किये जाओ और भविष्य की बहुत ज्यादा चिंता न करो।
९. जबतक सब-के-सब अपने लक्ष्य के प्रति सच्चे नहीं बन जाते तबतक कोई सच्चा काम नहीं किया जा सकता।
१०. सत्य की विजय अवश्य होगी, साहस बनाये रखो।
११. इन विनाशों को बार-बार दोहराये जाने से रोकने के लिये सबसे अच्छा तरीका है उनसे पाठ सीखना और आवश्यक प्रगति करना।
१२. हमें विश्वास होना चाहिये कि जो कुछ होता है वह ठीक वही होता है जो होना चाहिये ताकि वह हमें और जगत् को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी लक्ष्य तक पहुंचा सके।
१३. शांत रहो और देखो, परिणाम निश्चित है, उपाय और समय निश्चित नहीं हैं।
१४. बड़ी-से-बड़ी कठिनाई हमेशा बड़ी-से-बड़ी विजय लाती है।
१५. हर एक को अपने अनुभवों से सीखना होगा।
१६. जबतक हम अपने अहंकार से छुटकारा नहीं पा लेते तबतक कोई शांति नहीं हो सकती, न हमारे लिये न औरों के लिये।
१७. समय आ गया है कि केवल भगवान् की इच्छा पर निर्भर रहा जाये और उसे मुक्त रूप से अपने द्वारा काम करने दिया जाये।
१८. हम एक कठिन समय में से गुजर रहे हैं, लेकिन जो स्थिर रहेंगे वे इसमें से पहले की अपेक्षा ज्यादा मजबूत हो कर निकलेंगे।
१९. मुझे बुलाते समय जरा-सी एकाग्रता रखो और सब कुछ ठीक हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. प्रगति किये बिना बीतता हुआ हर क्षण तुम्हें अपनी कब्र की ओर ले जानेवाला कदम होता है।
२१. उठो, खुश हो जाओ, सब कुछ ठीक हो जायेगा, अगर हम टिके रहना और सहन करना जानें।
२२. भगवान् तुम्हें हमेशा मार्ग दिखाने के लिये उपस्थित रहते हैं।
२३. प्रभु तुम्हारे अंदर हैं ताकि तुम्हें हर अग्निपरीक्षा में से सफलतापूर्वक निकाल सकें।
२४. अपने-आपको पूरी तरह भगवान् के अर्पण कर दो, भागवत सहायता हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।
२५. जिन भगवान् को हम खोजते हैं वे कहीं दूर और पहुंच के बाहर नहीं हैं, वे हमारे हृदय में हैं।
२६. हम कभी अकेले नहीं होते, भगवान् हमेशा हमारे साथ होते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनकी उपस्थिति के बारे में सचेतन हों।
२७. मैं अपने-आपको तुम्हारे हृदय में रख रही हूं ताकि तुम मुझे हमेशा वहां पा सको।
२८. बादल आते हैं और बादल छंट जाते हैं, लेकिन सत्य का सूर्य कभी चमकना बंद नहीं करता।
२९. अपना विश्वास केवल भगवान् पर रखो, भगवान् कभी तुम्हें निराश न करेंगे।
३०. जब साधक यह समझ लेंगे कि उनके लिये क्या अच्छा है यह मैं उनसे ज्यादा अच्छी तरह जानती हूं तब उनकी अधिकतर कठिनाइयां विलीन हो जायेंगी।
३१. दुःखी मत होओ, चीजें घटती हैं क्योंकि उन्हें घटना होता है और अंत में हर चीज परम प्रभु की चरम विजय की ओर ले जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की एकता

[बारह साल पहले लिखा रवीन्द्रजी का यह लेख आज भी आदर्शवादियों को प्रेरणा दे पायेगा इस आशा से हम इसे दुबारा छाप रहे हैं। —सं०]

हमारे कई विचारकों ने इस बात का समर्थन किया है कि गांव ही भारत है, कि भारत लाखों गांवों का देश है, शहरों का नहीं। दूसरी ओर से हम देखते हैं और सुनते हैं कि गांव टूटते जा रहे हैं। उसके कई कारण हैं। एक कारण तो है अज्ञान यानी निरक्षरता जिसका फायदा महाजन सूदखोरी करके उठाता है।

दूसरा कारण, गांव का सामाजिक जीवन इतना ज्यादा संकुचित और नीरस होता है कि पढ़े-लिखे ग्रामीण ऊबकर शहर की ओर भागते हैं। सामान्य किसान की प्रगति की ओर उदासीनता और गांवों में आधुनिक सुविधा की कमी भी उन्हीं कारणों में से हैं। जबतक गांव सुखी और समृद्ध नहीं होते, तबतक हम देश के सुखी और समृद्ध होने की आशा नहीं कर सकते क्योंकि वे ही देश-शरीर के मुख्य अंग हैं। अगर वे अंग ही थके-मांदे या बीमार रहें तो देश स्वस्थ और सुन्दर नहीं हो सकता।

आजकल हमारी यह आदत हो गयी है कि हर सामूहिक कार्य के लिये हम सरकार की ओर ताकते हैं। उदाहरण के लिये स्कूल ही लीजिये। क्या यह जरूरी है कि सरकार शुरू करे तभी गांव में स्कूल हो। यह भी तो संभव है कि गांव का ही पढ़ा-लिखा युवक अपनी मर्जी से स्कूल शुरू करे और अपने गांव के बच्चों को अक्षर-ज्ञान दे। सामान्य किसान को थोड़ा-सा भी अक्षर-ज्ञान हो तो वह दलाल के ऊपर निर्भर न रहकर अपना माल स्वयं उचित दाम पर बेच सकेगा।

गांव की बात करते ही हमें गांव के ऊबड़-खाबड़ रास्ते याद आते हैं। शहर और गांव के बीच संबंध रखने के लिये यह आवश्यक है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातायात बना रहे और इसके लिये साफ-सुथरे और पक्के रास्ते अत्यंत आवश्यक हैं। क्या गांववाले अपनी मेहनत से ऐसा रास्ता नहीं बना सकते ? उसके लिये भी सरकार का मुंह ताकना जरूरी है ?

सोचकर देखें तो गांव में नवयुवकों की बहुत जरूरत है, लेकिन इन नवयुवकों को गांव में रखने के लिये गांव की शक्ल बदलना आवश्यक है। आजकल पंचायतें फिर शुरू हो रही हैं। क्या पंचायत अपने गांव में अच्छे रास्ते, बिजली, पानी, एकाध थियेटर वगैरह की व्यवस्था नहीं कर सकती ? पंचायत गांव की जान होनी चाहिये और उसी की प्रेरणा से गांव स्वच्छ और सुन्दर बन सकते हैं। हमें विश्वास है कि अगर गांव में सफाई होगी, बिजली और पानी की व्यवस्था होगी और मनोरंजन के कुछ शहरी साधन होंगे तो धीरे-धीरे गांव के युवक शहर जाना भूल जायेंगे।

हम जानते हैं कि कई किसानों को पेट भरने के लिये भी शहर जाकर नौकरी ढूंढ़नी पड़ती है। लेकिन अगर गांव जाग उठा तो हमें विश्वास है कि वहां कई छोटे-मोटे काम शुरू हो जायेंगे और गांव के लोगों को अपने ही गांव में काफी काम मिल जायेगा। गांव को समृद्ध करने के लिये सहकारिता एक बहुत बड़ी देन है। पढ़े-लिखे किसान अपने गांव की इस संस्था द्वारा बड़ी सेवा कर सकते हैं।

हम कई बार सुनते हैं कि गांववाले आश्चर्य करते हैं, महात्मा गांधी कहते थे स्वराज आयेगा तो रामराज्य आयेगा। लोग भूखे न रहेंगे, तन पर कपड़ा होगा। स्वराज आये कितने वर्ष हो गये, हमें तो उसका कोई फायदा नहीं हुआ। हमारे गांव में वही बेकारी, भुखमरी, बीमारी लगी हुई है। अरे इससे तो अंग्रेजी राज्य अच्छा था, इतनी रिश्वत तो न देनी पड़ती थी। अब तो हर छोटे-मोटे अफसर को चाय-पानी दो तभी सुनवायी होती है।

हमें आजादी का सुख गांव को देना ही चाहिये, तभी वे स्वतंत्रता का मूल्य समझने के लिये तैयार होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांवों में अब पंचायतें हैं और सब जानते हैं कि अभी कितना काम बाकी है, फिर भी पंचायतें आपसी झगड़ों में क्यों फंसी रहती हैं? क्योंकि हममें एका नहीं है। हम एक क्यों नहीं हो सकते? क्योंकि हमारे अंदर प्रेम का स्रोत सूख गया है। हमें दूसरे के कष्ट में अपना कष्ट नहीं लगता। अगर भारत को सशक्त होना है तो भारत के सभी प्रदेशों में एकता लानी आवश्यक है।

और इस एकता की शुरूआत भारत के छोटे-से-छोटे अंश—गांव में होनी चाहिये। पंचायतवालों को झगड़े मिटाने के साथ-साथ आपसी प्रेम बढ़ाने का भी प्रयास करना चाहिये। प्रदेशों में यह प्रेम लाना और भी मुश्किल है क्योंकि अन्य समस्याओं के साथ हिन्दू-मुसलमान का प्रश्न भी खड़ा हो उठता है। भारत की पुरानी प्रथा है कि किसी भी धार्मिक मान्यता का अपमान नहीं होना चाहिये। भारत ने अंदर की इस स्वाधीनता को स्वीकार किया है। हिन्दू-मुसलमान के ये बनावटी झगड़े, जो काफी हदतक अंग्रेज सरकार की देन हैं, मिटाने ही होंगे। इस भूमि में पैदा हुए सब मनुष्य पहले भारतीय हैं और इस नाते वे सब हमारे भाई हैं।

हम चाहते हैं कि गांव आत्मनिर्भर हो किंतु यह न भूलें कि वह देश—भारत देश—का एक अंग है, उसका अलग अस्तित्व नहीं, कोई व्यक्तित्व नहीं है। गांववालों को याद रखना चाहिये कि अगर शहर के साथ उनका संबंध नहीं होता तो उनकी गरीबी नहीं हट सकती। और अगर शहर अन्य शहरों के साथ जुड़ा न हो तो वह भी समृद्ध नहीं हो सकता। इसी तरह प्रदेशों में भी परस्पर निर्भरता होनी चाहिये।

इतने बड़े भारतवर्ष में अगर हमें एकता रखनी है तो हमारे अंदर प्रेम का प्रचण्ड सागर लहराना चाहिये। हमारे बड़ों ने बड़ी-बड़ी आहुतियां दी हैं और इसी कारण आज हम स्वाधीन हैं। अब हमें भी इस स्वाधीनता को सफल करने के लिये कुछ तपस्या करनी चाहिये।

—रवीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

युद्ध और राजनीति

१५ अगस्त, १९४०

आज श्रीअरविन्द के जन्मदिवस पर, दोपहर को रेडियो पर यह समाचार था कि इंग्लैंड ने आधे ही दिन में १४४ जर्मन हवाई जहाज गिरा दिये। हम लोगों ने टिप्पणी की कि यह दर्शन-दिवस का प्रभाव है। श्रीअरविन्द का अट्टहास्य गूंज उठा, बोले, "यह तो हिटलर के इंग्लैंड में विजयी-प्रवेश का दिन होना था न!"

एक महीने बाद उसी तारीख को, १५-९-४० को श्रीअरविन्द ने मुस्कुराते हुए कहा, "इंग्लैंड ने बहुत बड़ी संख्या में जर्मनी के हवाई जहाज नष्ट कर दिये हैं—१७५! फ्रांस के पतन के बाद हिटलर को जो अवसर मिला था, उससे वह चूक गया। सचमुच हिटलर ने सुअवसर गंवा दिया। इंग्लैंड पर धावा बोलना उसके लिये असंभव है। अगर फ्रांस के पतन के बाद उसने इंग्लैंड पर आक्रमण किया होता तो अब तक वह बढ़ता हुआ एशिया में आ चुका होता। इस समय उसके विरुद्ध एक और शक्ति आ खड़ी हुई है, फिर भी खतरा अब तक बना हुआ है, टल नहीं गया।"

इस युद्ध और इस विशेष तारीख के विषय में 'मदर इण्डया' के संपादक ने लिखा था, "हिटलर ने निश्चय किया था कि १९४० की १५ अगस्त को वह पश्चिम यूरोप को पूरी तरह जीत कर 'बकिंगहम पैलेस' से रेडियो द्वारा ब्रिटेन के पतन की घोषणा करेगा . . . उसी १५ अगस्त को लुफ्‌वाफ (जर्मन) हवाई जहाजों को ब्रिटेन ने सब से बड़ी संख्या में गिराया . . .। हम यही मानते हैं कि ब्रिटेन के युद्ध का पांसा उसी दिन से पलटा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ अक्तूबर, १९४०

सेना के किसी पत्रकार ने एक अखबार में लिखा कि अब ब्रिटेन हमला करने के लिये तैयार है और अब वह एड्रिआटिक समुद्र से होकर जर्मनी पर आक्रमण कर पायेगा। श्रीअरविन्द ने टिप्पणी की, "ये लोग बहुत दूर की सोच रहे हैं, लेकिन वे सेना को उतारेंगे कहां ? युगोस्लाविया में ? अगर उन्होंने इस तरह युगोस्लाविया में प्रवेश किया तो उसका अर्थ होगा बाल्कन प्रदेश की स्वाधीनता का उल्लंघन ! अगर अंग्रेज फिलिस्तीन में एकत्रित अपनी सेना को लेकर सीरिया जीत पायें तो फिर तुर्किस्तान को अपने साथ मिलाकर वे जर्मनी की ओर बढ़ पायेंगे। अगर वे इस तरह आगे बढ़े तो एड्रिआटिक समुद्र की रक्षा के लिये उसे घेरे बैठी इतालवी सेना के साथ युद्ध करने से बच जायेंगे।

२० अक्तूबर, १९४०

रेडियो समाचार से पता लगा कि युगोस्लाविया ने जर्मनी के साथ अपने आर्थिक और राजनीतिक मामलों में संधि कर ली है। श्रीअरविन्द ने कहा, "अब युगोस्लाविया आर्थिक रूप से और राजनीतिक पक्ष से भी जर्मनी पर आश्रित रहेगा, जिसका अर्थ है सभी तरह से उसपर आश्रित रहना। अगर यह बात सच है तब तो बाल्कन प्रदेश के अंत का आरंभ हो चुका समझो, क्योंकि बुलगेरिया जर्मनी का सामना न कर पायेगा। यूनान का यह हाल है कि तुर्किस्तान की सहायता के बिना उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जायेगी, और फिर तुर्किस्तान अकेला रह कर क्या कर पायेगा भला ? तब फिर होगा यह कि हिटलर एशिया मायनोर में घुस जायेगा और उसका अर्थ होगा भारत में प्रवेश। हिटलर ने बाल्कन में प्रवेश का अपना इरादा प्रकट किया उससे बहुत पहले मैं सोच रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि वह बाल्कन अवश्य हड़पेगा। अब उसकी वह चाल स्पष्ट दिखायी दे रही है। अब वह भूमध्य सागर की ओर जायेगा, सुएज़ नहर पर कब्जा करके मिस्र को हथियाएगा। साथ ही वह जिब्रालटर पर अधिकार पाने के लिये फ्रांस की सहायता लेना चाहेगा। या उसकी सहायता के बिना स्पेन की ओर मुड़ जायेगा। मिस्र को हथियाने के बाद वह पेतें की सहमति से उत्तरी अफ्रीका को हड़पेगा। अगर पेतें ने सहमति देने से इंकार कर दिया तो उसके स्थान पर वह लावाल को बुलाएगा। मान लो, पेतें और लावाल, दोनों ने सहयोग नहीं दिया तो वह पूरे फ्रांस को और भूमध्य सागर के सभी बंदरगाहों को घेर लेगा। ऐसा हुआ तो इंग्लैंड के लिये स्थिति बहुत भयानक हो जायेगी। और अंग्रेजों की नाकाबंदी, जो अभी उपयोगी है, बेकार हो जायेगी। इस जोखिम को मैं युद्ध के आरंभ से देखता आ रहा हूं।''

खैर, ये कुछ उद्धरण श्रीअरविन्द के शुद्ध अंतर्दर्शन को स्पष्ट दिखाने के लिये पर्याप्त हैं। युद्ध के प्रति उनकी सक्रिय हित चिंता और आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग उनके युद्ध में सहभागी होने का प्रमाण है। हम कल्पना नहीं कर सकते कि अगर श्रीअरविन्द का इस युद्ध में हस्तक्षेप न होता तो संसार की क्या दशा होती! सैन्य परिस्थिति के बारे में उनकी असाधारण सूझ-बूझ मुझे बड़े ही आश्चर्य में डाल देती थी। मैंने अपने एक पत्र में उनसे पूछा था कि क्या उनके अंदर कोई प्रसुप्त सांग्रामिक क्षमता थी तो उनका उत्तर आया, "इस जीवन में तो नहीं।'' जब किसी ने माताजी से पूछा कि श्रीअरविन्द की सहायता के बावजूद इंग्लैंड को इतनी विपत्तियों का सामना क्यों करना पड़ रहा है तो उन्होंने उत्तर दिया, "अगर उन्होंने सहायता न दी होती तो इंग्लैंड कब का हिटलर का ग्रास बन चुका होता।'' मुझे अफसोस है कि इसके बाद युद्ध के बारे में बातचीत का आलेखन करना मैंने बंद कर दिया था। जिस तरह उनके हस्तक्षेप से, या जैसे वे उसे भागवत हस्तक्षेप कहते हैं और जिसने इंग्लैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हिटलर के आक्रमण से बचाया था उसी तरह जब अमरीका मित्र-राष्ट्रों से जा मिला और हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया तो उन दोनों घटनाओं के पीछे भी श्रीअरविन्द की दिव्य कूटनीति निश्चित रूप से काम कर रही थी।

अक्तूबर १९३९ में, श्रीअरविन्द ने हिटलर पर एक कविता लिखी जिसमें उन्होंने उसके अंत का जैसा वर्णन किया था ठीक वैसा ही उसका अंत हुआ!

अंतिम पंक्तियां कुछ इस तरह थीं—

इस तरह उकसाया हुआ, सब कुछ
जीतता हुआ वह प्रचण्ड कदमों
से आगे बढ़ता जा रहा है,
धमकी देता, शोर मचाता, पाशविक, अजेय,
अपने तूफानी वेग से बढ़ता वह जा रहा है
जबतक कि वह न मिले महानतर शैतान से—
या भगवान् के वज्र से।

हिटलर महानतर शैतान से कैसे मिला ? उसने ऐसी विराट् भूल किस कारण कर दी ? हम मानव प्राणी असुर के मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं, कुछ नहीं कर पाते। केवल "असुर ही दूसरे असुर की अंतड़ियां खींच बाहर निकाल सकता है।" किसी वार्तालाप में माताजी से पूछा गया था, "अगर रूस हिटलर के पक्ष में होता तो क्या परिस्थिति ज्यादा अच्छी होती ?" मां ने उत्तर दिया, "ओह, नहीं ! तब तो संसार के लिये बचने की आशा ही न रहती . . .। यही है भागवत कूटनीति। वह बड़ी सफल रही।" (हंसी) लेकिन संसार को नहीं मालूम कि एक महानतम दिव्य शक्ति ने उसकी मुक्ति के लिये काम किया है—

एक दिव्य शक्ति ने किया कार्य, किंतु
न जाना किसी ने वह आयी कहां से। (सावित्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह एक दिलचस्प बात है कि युद्ध के समय व्यक्तिगत रूप से अपनी गुह्य विद्या द्वारा माताजी ने कितने ही लोगों की सहायता की थी ! मैंने निम्नलिखित घटना उसी साधिका से सुनी है जिन्होंने यह सब देखा था। उन्होंने बताया, "एक दिन हम लोग माताजी की समाधि-अवस्था के विषय में उनके सामने चर्चा कर रहे थे, वे हमारी बातें बड़े मनोरंजन के साथ मुस्कुराते हुए सुन रही थीं।" सेविका ने बात आगे चलायी, "तुम कल्पना नहीं कर सकते मुझे कभी-कभी कैसी उलझनों का सामना करना पड़ता था ! मैंने एक दिन उन्हें पीने के लिये पानी-भरा गिलास दिया, वे उसे हाथ में लिये समाधि में चली गयीं और उनका शरीर डोलने लगा जब कि मैं प्रतीक्षा करती रही, प्रतीक्षा करती रही ! इस तरह वे कई बार समाधि में पता नहीं कहां चली जाती थीं।" उनकी बात सुनने के बाद माताजी ने कारण बताया, "युद्ध के इन वर्षों में लोग अपने दुःख और व्यथा में मुझे पुकारते थे और मैं सब कुछ छोड़कर तत्काल उनके पास चली जाती थी।"

मैंने कहा, "लेकिन माताजी, लोग आपको जानते तो नहीं थे !" मेरी ओर ताकते हुए वे बोलीं, "उसकी परवाह नहीं। जब कभी लोगों ने किसी भी रूप में भगवान् को पुकारा, मैंने उनकी पुकार का उत्तर दिया। एक दिन की बात सुनाती हूं, तब जर्मन सेना फ्रांस के ऊपर जबरदस्त बमबारी कर रही थी। उस दिन भी दो बच्चे, भाई और बहन, विद्यालय गये थे। जब शाम को घर लौटे तो न घर था, न माता-पिता; सब कुछ नष्ट हो चुका था। बहन बड़ी थी, वह अपने भाई को बांहों में भर कर माता-पिता को पुकारने लगी, छोटा भाई डर के मारे पत्ते की तरह थर-थर कांप रहा था। उनके हृदय की गहराई से हठात् भगवान् की ओर पुकार उठी जो मेरे पास आयी। मुझे तत्काल जाना पड़ा। उन बच्चों के लिये कुछ व्यवस्था करके मैं लौट आयी।"

श्रीअरविन्द का हिटलर के विषय में जो अंतर्दर्शन था उसे हम समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें। किसी को हिटलर और उसके लक्ष्य और उद्देश्य के बारे में पता चले उससे बहुत पहले माताजी और श्रीअरविन्द को उसका पूरा ज्ञान था और उसके बारे में कोई भ्रम न था। यह सच है कि हिटलर ने अपनी पुस्तक "मैंन कैम्फ" में खुल्लमखुल्ला अपने लक्ष्य की बात कही है, लेकिन किसी ने उस बात को गंभीरता से नहीं लिया। श्रीअरविन्द न केवल बात की गंभीरता समझ पाये बल्कि हिटलर के पीछे गुह्य क्षेत्र से जिस रहस्यमयी शक्ति ने उसे अपना प्रभावशाली हथियार बना लिया था, वे उसे भी जान पाये थे। श्रीअरविन्द कभी-कभी हिटलर के विषय में हमारी चिट्ठियों में संकेत देते थे कि वह एक आसुरिक शक्ति से ग्रस्त है। १९३५ में एक चिट्ठी मैंने लिखी थी, "चूंकि अतिमानस के अवतरण से साधना की प्रगति तेज हो जायेगी अतः आप अपने सभी विशेष कार्यकर्ताओं की छुट्टी क्यों नहीं कर देते ? अतिमानस के अवतरण के बाद हम फिर आपके पास जमा हो जायेंगे !"

श्रीअरविन्द—कैसे ? मैं हिटलर नहीं हूं। मैं अपना काम इस तरह नहीं करता . . .।

मैंने फिर १९३६ में उन्हें लिखा, "आप शायद जर्मनी को अपनी शक्ति सवेरे ९ बजे से दोपहर ३ बजे तक भेजते रहते हैं ?"

श्रीअरविन्द—जर्मनी को शैतान के सिवा और कौन शक्ति देगा ? क्या तुम सोचते हो कि मैं हिटलर और उसके दहाड़ते, चीखते-चिल्लाते नाज़ियों के कबीले के साथ मिला हुआ हूं ?

हमें आश्चर्य होता है कि यह कैसे संभव हुआ कि एक मामूली आदमी शक्ति के इतने ऊंचे शिखर पर पहुंच पाया, सारी जर्मन जाति पर इतना प्रभाव डाल पाया और शासन कर पाया ! सारे यूरोप और संसार से प्रशंसा प्राप्त कर पाया ? श्रीअरविन्द इस अप्रत्याशित प्रभाव को आसुरिक माया कहते हैं। इस माया ने सब राष्ट्रों को इस हदतक सम्मोहित कर दिया कि वे हिटलर को सिकंदर और नेपोलियन से भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक महान् मानने लगे ! श्रीअरविन्द ने उस छल-कपट के मुखौटे का परदा चीर डाला और हमें उसका भयंकर और भीषण सत्य दिखलाया। जर्मन जैसी सुसंस्कृत जाति को मुग्ध करने के लिये हिटलर के जैसा विक्षिप्त पागल इतिहास में और कोई खोजे न मिलेगा। उस जाति की कल्पना को सम्मोहित करने के लिये हर तरह की धोखाधड़ी, असत्य, मिथ्याचार, दंभ और विकृति तथा विकार का उसने उपयोग किया। श्रीअरविन्द उसकी आत्मकथा "मैंन कैम्फ" को—जो नाज़ियों का बाइबल बन गया था—झूठ का जाल मानते थे। वे उसे छूना तक नहीं चाहते थे। फरांसीसी पत्रिका 'लिलुस्त्रासियों' में हिटलर, गोबेल्स और गोरिंग के फोटो देखकर उन्होंने कहा, "हिटलर तो सड़क पर छोटे-मोटे अपराध करनेवाला गुण्डा लगता है। उसको देखकर ऐसा लगता है कि वह सफल बदमाशी का नमूना है जिसमें पाशविक धूर्तता मिली है और उसके पीछे लंदन के सामान्य कोचवान का चैत्य पुरुष छिपा है जो एकदम अनपढ़ और अविकसित है। इस आदमी के चरित्र में निरर्थक और मूर्ख अतिभावुकता है जो उसकी चित्रकारी में अभिव्यक्त होती है और इसी के कारण, वह अपनी मां की कब्र पर जाकर रोता है। कोई अधिदैविक शक्ति उस पर हावी है और उस शक्ति से ही वह आवाज आती है जिसे सुनकर हिटलर काम करता है। तुम लोगों ने नहीं देखा कि जो लोग उसके विरोधी थे, वे भी उसके संपर्क में आने के बाद उसके प्रशंसक बन गये ? यह उस शक्ति का चिह्न है। इस शक्ति से ही उसके पास लगातार सुझाव आते रहते हैं और उन सुझावों को निरंतर दोहरा कर उसने जर्मन लोगों को अपने कब्जे में कर लिया। अगर तुम ध्यान से सुनो तो अपने भाषणों में वह एक ही तरह के विचारों पर जोर देता रहता है, उन्हें दोहराता रहता है—यही भूतावेश का स्पष्ट चिह्न है।"

हमने माताजी से भी उनके एक वार्तालाप में इसी तरह की बात सुनी थी। उन्होंने कहा था, "हिटलर बुद्धू था। अपनी सामान्य अवस्था में वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारपाल या मोची से ज्यादा अच्छा न था। उस समय वह जड़मूर्ख की तरह बातें करता था और उसका व्यवहार भी बेवकूफों-सा होता था। बाद में उसपर कोई शक्ति हावी हो गयी और वह उसका यंत्र बन गया। जब ऐसा हुआ तो वह असाधारण काम करने लगा। जिन लोगों ने उसको भूतग्रस्त दशा में देखा है, वे कहते हैं कि उन्होंने देखा कि वह कैसे पांव पटकता था, रोता था और चीखता था। जापान के राजदूत ने कहा था, "वह आदमी पागल है। उसके साथ किसी तरह का संबंध रखना खतरनाक है। यह कैसी विचित्र बात है कि सारी जर्मन जाति इतनी नासमझ है कि उस आदमी के पीछे चल रही है! ऐसी बात फ्रांस या अन्य किसी राष्ट्र में कभी न हुई होती।"

फिर भी ऐसे लोग थे जो हिटलर के हृदय को अहिंसा द्वारा द्रवित करने का स्वप्न देख रहे थे। श्रीअरविन्द ने कहा कि उसके हृदय को केवल एक ही उपाय से द्रवित किया जा सकता है—वह था बम द्वारा उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा देने का उपाय! अक्तूबर १८, १९४० की बातचीत में श्रीअरविन्द ने हमें बताया, "गांधी पोलेण्ड में अहिंसा के प्रयोग में पहले से ही असफल हो गये। पोलिश लोगों ने नाज़ियों से लड़ने के लिये अहिंसा को अपनाया था, जानते हो परिणाम क्या हुआ ? रवीन्द्र की परिचित एक पोलिश मित्र ने गांधी को अहिंसक लोगों के ऊपर किये गये जर्मन अत्याचारों का वर्णन लिख भेजा था। उसने कुछ दृष्टांत दिये—

विद्यालय के ३०० बच्चों ने हिटलर को सलामी देने से इनकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उनको उनके मां-बाप के सामने ले जाकर गोली से उड़ा दिया गया।

सैनिकों के बैरक में विद्यालय की कई लड़कियों को ले जाया गया और सैनिकों ने उनपर इतना बलात्कार किया कि वे मर गयीं . . .।

नाज़ीवाद के साथ अहिंसक प्रतिरोध के प्रयोग करने का यह नतीजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। आशा करें कि गांधी नहीं चाहेंगे कि भारत में भी लड़कियों की ऐसी स्थिति हो। शायद वे कहेंगे कि पोलिश लोगों के हृदय में जर्मन लोगों के लिये प्रेम न था।

जब आधा संसार हिटलर की विजय की चकाचौंध से चौंधिया गया था और उसे सिकंदर और नेपोलियन से भी महान् मानता था, जब बहुत लोग उसके युद्ध-यंत्र के लौह पहियों तले कराह रहे थे और कितने ही लोग उसके हृदय को अहिंसा के द्वारा बदलने की आशा लगाये हुए थे, तब एकमात्र श्रीअरविन्द थे जिनकी राय हिटलर के विषय में एक क्षण के लिये भी विचलित नहीं हुई थी—"वह बौना नेपोलियन जिसकी चैत्य सत्ता एक अविकसित चीज थी, जिसका हृदय किसी प्रकार के परिवर्तन की संभावना से परे था, वह एक आसुरिक शक्ति का यंत्र बन गया था। अंत में वही आसुरिक शक्ति उसे प्रतिशोधात्मक मृत्यु तक खींच ले गयी।"

(क्रमशः) —नीरदवरण

शरीर की वर्तमान अवस्था में नींद अनिवार्य है। अवचेतना पर विकसनशील नियंत्रण के द्वारा ही नींद को अधिकाधिक सचेतन बनाया जा सकता है।

२५-१-३८

*

मैं अनुभव से जानती हूं कि खाना कम कर देने से नींद सचेतन नहीं हो जाती; शरीर बेचैन हो जाता है लेकिन उससे किसी भी तरह से चेतना नहीं बढ़ती। अच्छी, गहरी तथा अचंचल नींद में ही व्यक्ति अपने गभीरतर भाग के संपर्क में आ सकता है।

४-८-३७ *—माताजी*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाश्वत के स्वर

(उड़ीसा में १९९९ के तूफान के बाद)

हाय वह कैसी सुबह थी
रात से ही तूफानी कदमों की
आहट आने लगी थी
भोर होते-होते तो झंझावात
अपनी पूरी तैयारी के साथ
हमला बोल चुका था
सूरज डर के मारे न जाने कहाँ
छुप गया था
हवा कभी शेरों की तरह गरजती थी
तो कभी कुत्ते-बिल्ली की तरह रोती थी
आंखों के सामने ऊँचे-ऊँचे पेड़
अहंकारी के अहंकार की तरह
धराशायी हो रहे थे
जड़ से उखड़े मंझोले वृक्ष
कुश्तीबाजों की तरह
धमाधम पटके जा रहे थे
खिड़की का काँच एकाएक
टूट कर बिखर गया और
भावी आशंका से हम सब का
हृदय सिहर उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन की रोशनी को अँधेरे ने
पैरों तले रौंद दिया था
प्रकृति का सौंदर्य, प्रकृति के ही
रौद्र से विकृत हो रहा था
ऐसे में इंसानी खोजों से बने
बिजली के लट्टू कब तक चमकते !
प्रबल प्रभंजन वर्षा के साथ मिल कर
प्रलयंकारी बवण्डर राग
सप्तम स्वर में आलाप रहा था
आतंकित हो दूरभाषी भी मूक हो चला
धरती से आकाश तक का रंग
एक हो गया।
लगता ऊपर भी जल है, नीचे भी जल है
ठहरा हुआ यह घर
न जाने कब तैरने लग जाए
चारों ओर जल ही जल
पर हम सब प्यासे
'पानी में मीन पियासी' का
अर्थ अब समझ में आ रहा था।
तीन दिनों की भीषण मारकाट के बाद
अब सारा शहर युद्ध के मैदान-सा
खण्डित वृक्षों, विखण्डित भवनों
यहाँ-वहाँ पड़े पशु और इंसानी
लाशों के ढेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर मरघट-सी चुप्पी
हर आंखों में एक वीरानी
हर चेहरे पर एक आतंक
लगता ताण्डव से थक कर
शंकर कहीं सो गए हैं
उनके गले से उतर-उतर कर
सर्पों के समूह, भूख और प्यास
के रूप में सब ओर रेंग रहे हैं
और बचे हुए इंसान
उन व्यालों को काबू में कर
मृत्यु से जूझने लगे।

समय बड़ा बलवान है
धीरे-धीरे जन जीवन की गति
कुछ सामान्य हो चली
सड़कों पर आवागमन उभरने लगा
मलबों के ढेरों पर
फिर से भवन बनने लगे
प्रभंजन ने बड़ी बेदर्दी से
वस्त्रहरण किया था
निर्वस्त्र खड़े उन पेड़ों की शाखाओं पे
नये कोंपल फूट रहे थे
जिजीविषा अब अपनी पूरी ताकत से
चारों दिशाओं से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजारों-हजारों साधनों से
प्रलय की शक्ति को रौंद रही थी
परिवारों के बचे सदस्य
कदम से कदम मिलाने को
जूझ रहे थे
और चारों ओर एक प्रश्न गूंजने लगा कि
सृजन और विनाश के इस युद्ध में
विजयी कौन रहा ?
शान्ति और अशान्ति का यह द्वंद्व
नया नहीं, युगों-युगों से चला आ रहा है
मौत की बेरहमी पर जीवन
आशा के मरहम सदा-सदा से लगाता रहा है
मृत्यु के दलदल में
जीवन का कमल, फिर से खिलता रहा है
और यही है शाश्वत का वह स्वर
जिसे भीषण झंझावात हमें
सुना कर गया है।

—छाया श्रीवास्तव

साधक को अपने शरीर की भूख की आवश्यकता के लिये खाना चाहिये, अपने लोभ की मांगों के कारण नहीं।

४-४-३७

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदर बी खाला

हैदर बी खाला फूट पड़ीं। मैंने ऐसी कोई सख्त बात तो न कही थी फिर भी उनकी आंखें भर आयीं। मैं निहायत हमदर्दी के साथ उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था पर मरज बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवा की। मैंने दिल पर हाथ रखकर कहा, खाला माफ कीजिये; मैं आप जैसे बुजुर्गों की तौहीन का ख्याल तक दिल में नहीं ला सकता और यह सुनते ही खाला के दरिया का बांध टूट गया और उनकी आंखों में सैलाब आ गया जिसे बरदाश्त करने की ताब मेरे अंदर न थी।

लेकिन शायद मुझे बात शुरू से कहनी चाहिये। मेरे नाना अली कुली खां अपने जमाने के बड़े आदमी थे। रस्सी जल चुकी थी पर ऐंठ बाकी थी। उन्हें अभीतक मुसलमान बादशाहत की याद सताती थी और वे (खुदा उन्हें जन्नत बख्शे) अब भी रंग-रूप में, चाल-ढाल में, बातचीत में, गरज जिंदगी के कदम-कदम पर मुगलों के ठाठ की याद दिलाया करते थे। उनके यहां जाफर बेग नाम का मुलाजिम था, मुलाजिम नहीं मुसाहिब कहिये। वह मेरे नाना का बहुत मुंहलगा था। वह उनकी शान-शौकत में चार चांद लगाने की कोशिश में रहता था और मेरे नाना उससे घर में बरकत रखने की फिक्र किया करते थे। एक बार करना खुदा का क्या हुआ, सारे शहर में ताऊन (प्लेग) आया और जाफर मियां उसके मुंह का लुकमा बन गये। मेरे नाना को फिक्र हुई। अब जाफर मियां की बेवा का पुरसाने हाल कोई नहीं, घर में पर्दा है इसलिये वह गरीब बाहर तक न निकल सकती। बाजार से हल्दी मिर्च मंगाने के लिये भी दूसरों का मुंह ताकना पड़ेगा। घर में पैसा नहीं और जाफर की इज्जत का ख्याल किसी और से मदद न लेने देगा। मेरे नाना चाहते थे कि सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे। बेवा की मदद भी हो जाये और उसे अपनी बेचारगी का ख्याल तक न आने पाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप चाहे कुछ कहें, मेरे नाना थे सूझ-बूझ के आदमी। उन्हें एक तरकीब सूझी। मेरी मां की शादी होनेवाली थी। उनकी ससुराल में घर की देखभाल करनेवाला कोई न था। नाना ने जाफर के घर जाकर पर्दे के बाहर से ही कहा—देखिये आपको मालूम ही है कि मेरी और जाफर मियां की दांतकटी रोटी हुआ करती थी। मेरे ऊपर जब कभी कोई मुश्किल आयी उन्होंने हमेशा किसी-न-किसी तरकीब से उसे हल कर दिया। खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, उनकी वजह से घर के कामकाज का बोझ कभी मेरे कंधों को नहीं उठाना पड़ा। आज फिर से मेरे सामने एक मुश्किल आयी है। अब मदद के लिये आपके पास आया हूं, देखिये इंकार न कीजियेगा।

बेवा ने कहा—नौज, आपकी खिदमत करना तो हमारे लिये तकदीर की बात है। आप यहांतक तशरीफ लाये हैं यह मेरे ऊपर और मुझसे बढ़कर मरहूम (दिवंगत) पर आपकी मेहरबानी है लेकिन एक बेबस पर्दानशीन आपकी क्या मदद कर सकेगी? यह कहते-कहते उन्होंने लंबी सांस ली। मेरे नाना बोले—देखिये, मैं आपके यहां से खाली वापस न जाऊंगा। काम आपके बस का है तभी तो आपके यहां आया हूं। बात यह है, आपको मालूम ही होगा कि मेरी बेटी का निकाह है। उसके खाविंद के घर में कोई औरत नहीं है। बेचारी को दिन भर अकेला रहना पड़ेगा। मुझे डर है कि इस तरह से मकान में अकेली पड़ी-पड़ी मेरी नन्हीं-सी कली मुरझा न जाये। मैं चाहता हूं कि आप टुक उसके साथ चली जायें। लड़की का दिल लग जाये। वह वहां के काम-काज से वाकिफ हो जाये तो आप भले वापस चली आयें।

अजी मियां, हमीदा जैसे आपकी बच्ची वैसे मेरी बच्ची। लेकिन जरा गौर तो कीजिये, मैं उसकी ससुरालवालों के सिर बार (भार) बनकर कैसे रह सकती हूं। वह तो आपका घर नहीं है जहां मैं बगैर तकल्लुफ के जा सकूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर आपसे यह कहा ही किसने कि आप उन लोगों के कंधों पर बार बनेंगी ? आप वहां हमीदा की देखभाल के लिये जा रही हैं, हमीदा की खाला बनकर। इस बारे में जो कुछ करना होगा वह मेरी जिम्मेदारी। आपको कुछ सोचने की जरूरत नहीं, हमीदा की कसम भाभी साहिबा, मैं आपसे ना न सुनूंगा। बस अब आप तैयार हो जाइये, मैं शाम को आपके लिये डोली भेज दूंगा। आप कुछ दिनों के लिये मेरे यहां आ जाइये ताकि हमीदा आपसे अच्छी तरह मानूस (परिचित) हो जाये और आप भी उसके रंग-ढंग से वाकिफ हो जायें। अच्छा, खुदा हाफिज, शाम के पांच बजे तैयार रहियेगा।

और जवाब के लिये रुके बगैर मेरे नाना झट बाहर निकल आये और उसी दिन से जाफर मियां की बेवा सारे कुनबे की हैदर बी खाला बन गयीं। उम्र में तो वे मेरी मां से दो-चार बरस ही बड़ी होंगी लेकिन कुछ तो जरूरत और कुछ तजरुबे की वजह से हर छोटे-बड़े के साथ उनका सुलूक बुजुर्गों जैसा होता था। मां की ससुराल में उन्होंने सभी के दिल जीत लिये। कुछ ही दिनों में मेरे अब्बा ने उनसे कहा—कहीं यह भी सुना है कि खाला अपने बच्चों से पर्दा करती हो। यह आपका अपना घर है, बेतकल्लुफ होकर रहिये, जैसे हमीदा आपकी बच्ची है उसी तरह मुझे भी अपना बच्चा मानने में आपको क्या ऐतराज है ? खाला के लिये भानजा, चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो जाये महरम[१] ही रहता है। आप उसे नामहरम बनाकर बड़ी नाइंसाफी कर रही हैं।

बात खाला को जंच गयी और उन्होंने घर में पर्दा करना बंद कर दिया। दिन गुजरते गये। उनकी वजह से मेरी मां को बहुत आराम रहता था, अब्बा जहां रहते बेफिक्र रहते क्योंकि खाला ने घर इतनी अच्छी तरह संभाल लिया था कि और किसी को इस तरफ तवज्जह देने की

[१] महरम—ऐसा पुरुष जो जनानखाने में जा सकता है, जिससे पर्दा करने की जरूरत नहीं; नामहरम—जिससे पर्दा करना जरूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत ही न होती थी, मेरी मां को घर के काम-काज से जरा भी दिलचस्पी न थी इसलिये वे मजे से सभा-सोसायटी में घूमा करतीं, कभी क्लब जातीं, कभी मेहफिले मस्तूरात[1] की बैठक करवातीं, कभी कुछ, और कभी कुछ लगा रहता। घर वापिस आने पर उन्हें हर चीज सलीके से तैयार मिलती, कभी किसी किस्म की शिकायत के लिये मौका न आता। उधर खाला के दिन भी इज्जत के साथ कटते थे, उन्हें अपने गुजारे की कोई फिक्र न करनी पड़ती थी और घर का काम तो उनकी पसंद का था इसलिये, हालांकि खाला 'कुछ दिनों' के लिये हमीदा की देखभाल के लिये आयी थीं पर दोनों ने ही इस 'कुछ दिनों' की बात को अपने दिमाग से निकाल दिया। इस महलनुमा मकान पर खाला की हुकूमत चलती थी, इसे छोड़कर वे कहां मारी-मारी फिरतीं।

दिन बीतते गये। हमीदा अब नयी दुलहन न रही। उसने हम जैसे तीन बच्चों को जन्म दिया पर फिर भी उसका मिजाज जैसा का वैसा रहा। हम लोगों को कभी पता भी न लगने पाया कि हैदर बी सचमुच हमारी खाला नहीं हैं। कहना मुश्किल है कि हमने मां से ज्यादा मुहब्बत पायी या खाला से। सारा खानदान उनका अदब करता था, हम सबके दिलों में उनके लिये इज्जत और मुहब्बत थी। मैं बड़ा हो चला, बहुत-सी बातें समझने लगा लेकिन यह बात समझ में न आती थी कि आखिर अम्माजान और अब्बाजान खाला का इतना ज्यादा ख्याल क्यों रखते हैं, इतने करीबी रिश्ते में यह चीज कुछ गैर-मामूली-सी लगती थी। खैर, हमें इससे क्या ? एक दिन मैं हमाम से (नहा कर) वापिस आया तो देखा खाला जमीन पर पैर पसारे बैठी हैं, कपड़ों का होश नहीं और चपर-चपर करके कुछ खा रही हैं। मुझे देखते ही वे चौंक पड़ीं और जो बरतन उनकी गोद में रखा था उसे झट से ढक कर एक तरफ

[1] महिला समाज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा खड़ी हुईं। मुझे कुछ अजीब-सा जरूर लगा पर शक नहीं हुआ। मैंने यूं ही मजाक में कहा—वाह खालाजान, आज तो पूरी भटियारिन लग रही हैं। मेरा यह कहना था कि उनका रोना शुरू हो गया गोया मैंने उनके दिल के नासूर को छू दिया हो। मैं वहीं खड़ा-का-खड़ा रह गया। बहुतेरा समझाया कि मैं तो मजाक कर रहा था, उनसे बार-बार माफी मांगी लेकिन खाला का रोना न बंद होना था न हुआ। इधर मैं डर रहा था कि अब्बा, अम्मा वापस आकर क्या कहेंगे। क्योंकि खाला बार-बार हिचकियों के बीच कहती जाती थीं—अब इस घर में गुजारा न होगा, या अल्लाह मुझे भी बुला ले, मुझे क्यों छोड़ रखा है यहां ?

कुछ देर इंतजार करके मैं तो घर से भाग निकला और आधी रात तक इधर-उधर आवारागर्दी करता रहा। दबे पैरों वापिस आया तो अम्माजान मेरा इंतजार कर रही थीं। मुझे काटो तो लहू नहीं। मैंने सोचा अभी अम्मीजान बरसने लगेंगी और फिर अब्बा को ताव आयेगा। या अली मुश्किल कुशा (मुश्किल आसान कर दे) कहते हुए, बिसूरनी शकल बनाकर मां के पास जा पहुंचा और वे कुछ बोलें उससे पहले उनकी गोद में सिर रख दिया। अम्माजान ने मेरे बालों में उंगलियां फिराते हुए कहा—क्या कर डाला तूने। खाला इतनी हलकान हो रही थीं। वे कहती थीं अब इस घर में उनका गुजारा नहीं है। हम दोनों ने मिलकर किसी तरह उन्हें मनाया है। अभी-अभी जाकर सोयी हैं।

मैंने सारा किस्सा सुनाया तो अम्माजान के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। उन्होंने कहा—बेटे तू नहीं जानता, लेकिन तूने वाकई उनपर बुरा वार किया था। क्योंकि वाकई खाला एक भटियारिन की बेटी हैं और तब उन्होंने हैदर बी खाला की सारी कहानी सुनायी। अब मुझे भी अपनी गलती का एहसास हुआ और उसके लिये नादिम (लज्जित) हूं और आपको यकीन दिलाता हूं कि आयंदा ऐसी गलती न होगी।

—रवीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक का रूपांतर

एक समय आता है जब मन और प्राणिक सत्ता की लंबी तैयारी के बाद भौतिक सत्ता को खोलना भी आवश्यक हो जाता है। लेकिन जब यह होता है तो बहुधा प्राणिक उल्लास, जो प्राण में अनुभूति के समय बहुत बढ़ा-चढ़ा हो सकता है, झड़ जाता है और धुंधली, बाधाएं देनेवाली भौतिक और जड़-भौतिक चेतना अपनी विशुद्ध जड़ता में प्रकट होती है। जड़ता, तमस्, मूढ़ता, संकीर्णता और सीमितता, प्रगति करने में अयोग्यता, संदेह, मंदता, शुष्कता, प्राप्त आध्यात्मिक अनुभूतियों को सतत भूलते रहना अपुनरुज्जीवित भौतिक प्रकृति के उस समय के विशेष लक्षण हैं, जब उसे प्राण धक्का नहीं देता और उच्चतर मानसिक इच्छा-शक्ति और बुद्धि से सहायता नहीं मिलती। ऐसा लगता है कि तुम्हें आंशिक रूप से कुछ समय के लिये यही हुआ है लेकिन इससे बचने का उपाय भौतिक को किसी प्राणिक विद्रोह या चिल्लपों द्वारा उत्तेजित करना या अपनी स्थिति के लिये परिस्थितियों या माताजी को दोष देना नहीं है—क्योंकि इससे चीजें और भी बिगड़ जायेंगी, तमस्, शुष्कता, मंदता, जड़ता बढ़ जायेंगी—बल्कि तुम्हें यह जानना चाहिये कि यहां तुम्हारे अंदर वैश्व प्रकृति का एक तत्त्व प्रतिबिंबित होता है जिसे तुम्हें बाहर निकालना चाहिये और यह अधिकाधिक समर्पण और अभीप्सा और प्राण तथा मन से परे की दिव्य शांति, प्रकाश, शक्ति और उपस्थिति को लाने से ही हो सकता है। भौतिक प्रकृति के रूपांतर और उसकी परिपूर्णता के लिये यह एक ही मार्ग है।

*

यह हमेशा भौतिक चेतना के सबसे ऊपर रहने की वजह से होता है (जबतक कि वह पूरी तरह बदल न जाये) कि तुम्हें ऐसा अनुभव होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—एक साधारण मनुष्य की तरह या उससे भी खराब, एकदम से बाहरी चेतना में, जब आंतरिक चेतना पर्दे के पीछे होती है, योग-शक्ति की क्रिया निलंबित होती प्रतीत होती है। यह शुरू की स्थितियों में भी होता है लेकिन साधारणतः तब यह पूर्ण नहीं होता क्योंकि तब भी भौतिक में मन और प्राण की कोई चीज सक्रिय होती है और अगर साधना में पूरा विघ्न पड़ जाये तो वह लंबे समय तक नहीं चलता, इसलिये तुम उसकी ओर ज्यादा ध्यान नहीं देते। लेकिन जब तुम योग के मानसिक और प्राणिक स्तर से नीचे भौतिक में आते हो तो यह स्थिति, जो भौतिक के लिये स्वाभाविक है, पूरी तरह अभिव्यक्त होती है और लंबे समय तक बनी रहती है। यह इसलिये होता है क्योंकि तुम्हें नीचे उतर कर इस भाग के साथ सीधा उसमें प्रवेश करके व्यवहार करना होता है, अगर यह न किया जाये तो प्रकृति का पूरा परिवर्तन नहीं हो सकता। करना यह है कि यह समझ लो कि यह एक अवस्था है और यह विश्वास रखो कि इसको जीत लिया जायेगा। अगर यह किया जाये तो उस दिव्य शक्ति के लिये—जो पहले पर्दे के पीछे कार्य करती है और फिर सामने—इस बाहरी भौतिक कोष में यौगिक चेतना को प्रकट करना और उसे आलोकमय और अनुकूल उत्तरदायी बनाना अधिक आसान हो जायेगा। अगर तुम स्थायी रूप से श्रद्धा और अचंचलता बनाये रख सको तो यह ज्यादा जल्दी किया जा सकता है—अगर श्रद्धा को ग्रहण लग जाये या अचंचलता लंबी कठिनाई से क्षुब्ध हो जाये तो इसमें ज्यादा समय लगता है, फिर भी काम हो जायेगा। क्योंकि चाहे अनुभव न हो फिर भी दिव्य शक्ति क्रियारत रहती है। इसे तभी रोका जा सकता है अगर तुम अलग हट जाओ और साधना को छोड़ दो क्योंकि तुम कठिनाई से इतने अधीर हो उठते हो कि तुम उसे नहीं चला सकते। यह एक ऐसी चीज है जिसे कभी नहीं करना चाहिये।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह निषेध भौतिक प्रतिरोध की प्रकृति है और भौतिक प्रतिरोध जगत् में भगवान् के निषेध की समस्त नींव है। भौतिक में सब कुछ अध्यवसायी, आग्रही है और उसमें निषेध और तमस् की बहुत बड़ी शक्ति है—अगर ऐसा न होता तो साधना एकदम सरसरी होती। तुम्हें भौतिक प्रतिरोध के इस स्वभाव का सामना करना और उसे जीतना होगा, यह चाहे जितनी बार क्यों न उठा करे। यह पार्थिव चेतना के रूपांतर का मूल्य है।

*

भौतिक को बदलने के लिये कुछ लोगों ने उग्रता का उपयोग किया था, लेकिन मुझे उसकी उपयोगिता के बारे में विश्वास नहीं है। निःसंदेह भौतिक एक हठी बाधा है, लेकिन उसे आलोकित करना, प्रेरित करना तथा बदलने के लिये दबाना भी चाहिये, लेकिन कभी उत्पीड़ित करना या उग्रता से हांकना न चाहिये। लोग मन, प्राण और शरीर में उग्रता या हिंसा का उपयोग करते हैं क्योंकि वे जल्दी में होते हैं, लेकिन मैंने अपने-आप हमेशा देखा है कि इससे सच्ची, स्वस्थ प्रगति नहीं होती, प्रतिक्रियाएं और बाधाएं ही आती हैं।

*

भौतिक प्रकृति की सामान्य प्रवृत्ति केवल अधिक सतत क्रियाशील शक्ति के अपरिवर्तनशील समता और शांति में अवतरण से ही मिट सकती है।

भौतिक प्रकृति की सामान्य प्रवृत्ति है जड़ होना और अपने तमस् में सामान्य प्राणिक शक्तियों को ही—उच्चतर शक्तियों को नहीं—उत्तर देना। अगर तुम्हारे अंदर पूर्ण समता और शांति हो तो तुम तमस् के फैलने से अप्रभावित रह सकते हो और धीरे-धीरे या तेजी से उसके अंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चतर चेतना की उसी शांत शक्ति को उतार सकते हो जो उसे बदल सकती है। अगर वह उपस्थित हो तो कोई कठिनाई या उतार-चढ़ाव या तमस् की प्रधानता नहीं रह सकती जैसी कि अभी तुम्हारे अंदर है।

*

पहला साधन है जब तमस् आये या टिक जाये तो अस्तव्यस्त न होना। दूसरा साधन है अपने-आपको उससे अलग कर लेना, अपने-आपको केवल ऊपर ही नहीं नीचे भी उससे अलग रखना, उसके साथ एक न होना। तीसरा साधन है हर उस चीज को अस्वीकार करना जिसे तमस् ऊपर उठाता है, उसे अपना न मानना और बिलकुल स्वीकार न करना।

अगर तुम ये चीजें कर सको तो तुम्हारे अंदर कोई चीज होगी जो अधिक-से-अधिक तमस् में भी पूरी तरह अचंचल रहती है। उस अचंचल भाग के द्वारा तुम शांति और शक्ति को, यहांतक कि प्रकाश और ज्ञान को भी स्वयं तमस् के अंदर उतार कर ला सकते हो।

*

भौतिक साधना है उच्चतर प्रकाश और शक्ति, शांति और आनंद को नीचे शारीरिक चेतना में उतार लाना, भौतिक के तमस्, संदेहों, सीमा-बंधनों, भौतिक मन की बाहरी वृत्ति, प्राणिक भौतिक स्नायुओं की अपूर्ण ऊर्जाओं से पिंड छुड़ाना और उनके स्थान पर वहां सत्य चेतना को स्थापित करना ताकि भौतिक भागवत इच्छा के लिये पूर्ण यंत्र बन सके। शरीर के लिये भोजन और देख-भाल उसे अच्छी स्थिति में रखने के लिये होते हैं, बाद में ऐसी चीजों की ओर ध्यान देने की जरूरत न रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवचेतना का रूपांतर

जबतक नीचे अवचेतना तक में पूर्ण और समग्र अतिमानसिक परिवर्तन न आ जाये तबतक सत्ता के किसी भाग पर निम्न प्रकृति की हमेशा पकड़ बनी रहती है।

जैसे हमारी वर्तमान चेतना के ऊपर अतिचेतना होती है जो हमारे सिर के ऊपर रहती है, जिससे उच्चतर चेतना शरीर में उतरती है, उसी तरह हमारी चेतना के नीचे, हमारे पैरों के नीचे अवचेतना होती है। जड़ द्रव्य इसी शक्ति के अधीन होता है क्योंकि उसकी रचना इसी में से की गयी है—इसी कारण से जड़ द्रव्य हमें एकदम से निश्चेतन मालूम होता है। भौतिक शरीर भी इसी कारण से इस शक्ति के काफी अधीन रहता है और इसी कारण हमें यह चेतना नहीं होती, बड़ी हदतक यह पता नहीं होता कि शरीर के अंदर क्या हो रहा है। बाह्य चेतना, जब हम सोये होते हैं तो इस अवचेतना के अंदर गहरे चली जाती है, अतः जब हम सोये होते हैं तो वह हमारे अंदर जो कुछ चलता है उसके बारे में अनभिज्ञ होती है, कुछ थोड़े-से सपनों की और बात है। इनमें से अनेक स्वप्न अवचेतना में से ऊपर उठते हैं और पुरानी स्मृतियों, संस्कारों इत्यादि को एक साथ असंगत रूप से जोड़ देने से बनते हैं। हम जीवन में जो कुछ करते या अनुभव करते हैं अवचेतना उनके संस्कार ग्रहण करती और उन संस्कारों को रखती है, नींद में उनके कुछ टुकड़े ऊपर भेजती है। यह सत्ता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है लेकिन हम सचेतन इच्छा द्वारा इसके साथ बहुत कुछ नहीं कर सकते। हमारे अंदर कार्य करती हुई उच्चतर चेतना अपनी स्वाभाविक पद्धति से अवचेतना को अपनी ओर खोल लेगी और उसके अंदर अपना नियंत्रण और प्रकाश उतार लायेगी।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवचेतना अंधेरा और संज्ञाहीन क्षेत्र है, इसलिये यह स्वाभाविक है कि प्रकृति की धुंधली गतिविधियों में वहां ज्यादा शक्ति होती है। निम्नतर प्राण से लेकर नीचे तक प्रकृति के सभी निचले भागों में यही बात है। लेकिन वह कभी-कभी, बहुत ही कम, अच्छी चीजों को भी ऊपर भेजता है। उसे साधना में नैसर्गिक रूप से निचली गतिविधियों का आधार बनने की जगह आलोकित होना और भौतिक प्रकृति में उच्चतर चेतना का सहारा बनना होगा।

*

प्रकाश अवचेतना को भेद दे और उसे सत्य की आधारशिला, सत्य के प्रति उचित संस्कारों तथा उचित भौतिक प्रत्युत्तरों का भंडार बना दे। असल में, वह अवचेतना बिलकुल न होगी बल्कि होगा ऐसे सच्चे मूल्यों का एक तरह का बैंक जो उपयोग में लाये जाने के लिये वहां प्रस्तुत होंगे। —श्रीअरविन्द

माताजी के साथ एक शिष्य का पत्र-व्यवहार

आगामी उत्सव के लिये प्रभु को मेरे अत्यंत विनयपूर्ण प्रणाम और दिव्य जननी को मेरा बहुत, बहुत विशेष प्रेम और अभिवादन।

माताजी : मेरे प्यारे बालक, २४[१] तारीख को चुपचाप, प्रसन्नता के साथ उस दिन दिये जानेवाले विशेष प्रकाश, प्रेम और शक्ति को ग्रहण करने के लिये खुले रहो।

प्रेम और आशीर्वाद। २१ नवंबर, १९३८

[१] २४ नवंबर, आश्रम में दर्शन-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जानता हूं कि आपका प्रेम और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ हैं। कभी-कभी मैं चाहता हूं कि आप मुझ पर इतनी कृपा और दया न करतीं क्योंकि इससे यह कहना और भी कठिन हो जाता है कि मेरे स्वभाव में ऐसी कठिनाइयां हैं जिनके कारण मेरे लिये आपको और आपके योग को वांछनीय भाव से स्वीकार करना मुश्किल है और उसके बिना शिष्य कैसे हुआ जा सकता है?

माताजी : मैं गुरु की तरह प्रेम और आशीर्वाद नहीं देती। मैं मां की हैसियत से देती हूं जो बदले में कुछ नहीं मांगती।

९ जुलाई, १९३९

माताजी, आपकी बड़ी कृपा है कि आपने मुझसे कहा है कि आपका प्रेम मां का प्रेम है जो बदले में कुछ नहीं चाहता। आपके लिये यह बिलकुल ठीक है क्योंकि आपका जीवन अपने-आपमें संपूर्ण जीवन है। लेकिन मुझे अभी अपने मानव जीवन को संतुष्ट करने के लिये सब कुछ प्राप्त करना है। मुझे अभी अपनी आत्मा और अंतरात्मा को जानना है, भगवान् को जानना और उनसे प्यार करना है, उन्हें अपने जीवन में सिद्ध करना, संसार को जानना है—बशर्ते कि उनकी इच्छा हो कि मैं यह सब करूं। और सबसे बढ़-चढ़ कर मुझे जगज्जननी की आद्याशक्ति महाकाली के दर्शन होने चाहियें। वे ही जानती हैं कि मेरे लिये अच्छे-से-अच्छा क्या है। तो मैं ऐसे गुरु के बिना कैसे काम चला सकता हूं जो मुझे उनके चरणों तक पहुंचा दें।

माताजी : तुम्हें महाशक्ति के चरणों तक पहुंचाने के लिये मुझे सारे संसार में श्रीअरविन्द से ज्यादा योग्य और कोई नहीं दिखायी देता।

मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१६ जुलाई, १९३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

२४ अप्रैल दर्शन-दिवस था। इसी दिन श्रीमां १९२० को पांडिचेरी में हमेशा के लिये बसने आ गयी थीं। इस अवसर पर जो 'फोल्डर' बंटा उसपर श्रीमां के कक्ष के बाहरी हिस्से के चित्र के साथ-साथ पृष्ठभूमि में फूलों से लदे आश्रम के 'सेवा-वृक्ष' का भी सुन्दर चित्र है। उसपर श्रीअरविन्द का यह संदेश छपा है—

"अगर व्यक्ति उद्घाटन का अनुभव न भी करे फिर भी उसे माताजी की शक्ति का आवाहन करना चाहिये। बहुधा आवाहन करने से उद्घाटन भी हो जाता है और साथ-साथ शक्ति भी उतर आती है।"

श्रीअरविन्द के 'गीता प्रबंध' पर अंग्रेजी में डॉ॰ नाडकर्णी का शिक्षा शिविर सोसायटी के बीच ऑफिस में २६ नवम्बर से ४ दिसम्बर २००२ तक लगेगा। इसमें सभी का स्वागत है। इस अवधि में कई महत्त्वपूर्ण दिवस भी आयेंगे—२४ नवम्बर, सिद्धि-दिवस की जयन्ती (दर्शन-दिवस), ५ दिसम्बर—श्रीअरविन्द का महासमाधि-दिवस। इसके साथ आश्रम के दो प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम भी होते हैं—पहली दिसम्बर को श्रीअरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षाकेन्द्र का कार्यक्रम जिसमें सामान्यतः श्रीअरविन्द के किसी नाटक इत्यादि का मंचन किया जाता है और दूसरी दिसम्बर का कार्यक्रम जिसमें शारीरिक शिक्षा-विभाग के सदस्य स्पोर्ट्स ग्राउण्ड में वर्षान्त कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। डॉ॰ नाडकर्णी का अगला 'सावित्री अध्ययन शिविर' फरवरी २००३ में लगेगा।.

पश्चिम बंगाल के सोसायटी के केंद्रों और शाखाओं का वार्षिक अधिवेशन बांकुरा में ९ तथा १० मार्च को हुआ। श्री गोपाल भट्टाचार्य ने इसका सभापतित्व सुचारु रूप से किया। कई रचनात्मक कार्यों पर भी विचार-विमर्श हुआ।

न्यू मेहरोली रोड, अधचीनी में स्थित नयी दिल्ली शाखा ने मार्च के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने में कई भाषणों का आयोजन किया—डॉ० एन० एस० राजारमण 'वैदिक अन्तर्दर्शन और आधुनिक विज्ञान' पर बोले, 'सावित्री में योग' विषयक श्रीमती श्रुति के छह भाषण हुए। डॉ० नाडकर्णी के तीन हुए, विषय था—श्रीअरविन्द का अन्तर्दर्शन। मोना श्वार्ट्ज़ के भाषण का विषय था 'भोजन की शक्ति' और डॉ० अश्विनी चोपड़ा 'स्वास्थ्य और रोग पर मन की भूमिका' पर बोले।

रतलाम केंद्र ने फरवरी में अन्तर्राज्यीय संगीत तथा चित्रकारी की प्रतियोगिताएं कीं और साथ ही फूलों की प्रदर्शनी भी लगायी जिसमें श्रीमां द्वारा दिये गये फूलों के अर्थ भी दर्शाये गये। नौयडा शाखा ने १३ मार्च को श्रीअरविन्द भवन का शिलान्यास किया। चेन्नइ में आश्रम के प्रो० किट्टू रेड्डी ने १७ मार्च को भाषण दिया, विषय था 'श्रीअरविन्द योग में जीवन'। मार्च में कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में सोसायटी का एक नया केंद्र खुला।

---

२१ फरवरी २००२-२००३
श्रीमां की १२५वीं वर्षगांठ की जयन्ती का वर्ष

पथ पर श्रीअरविन्द का मार्गदर्शन

अगर तुम अपने-आपको एक ही तरफ खोलो या सत्य के एक ही पक्ष में उद्घाटित होओ और दूसरे पक्ष निरंतर विरोधी शक्तियों का दरवाजा खोलते रहें तो यह आशा करना व्यर्थ है कि भागवत कृपा तुम्हारे साथ बनी रहेगी। तुम्हें अपना मन्दिर साफ-सुथरा रखना होगा अगर तुम उसमें जीवन्त उपस्थिति प्रतिष्ठित करना चाहते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप जानते हैं ?

केवल बीसवीं सदी में मनुष्यों ने १०० करोड़ से भी अधिक लोगों को मौत के घाट उतारा।

आर० एल० सिवर्ड

और इसमें उस मानसिक, भावुक तथा भौतिक हिंसा, अत्याचार, दुःख-दर्द तथा घृणित क्रूरता और कष्ट की गिनती नहीं है जो मनुष्य रोज एक दूसरे के ऊपर ढा रहे हैं। इस नयी सदी में हत्या और मार-काट कम होती नहीं दीखती !

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा ... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

तमिलनाडु में हिन्दी पढ़नेवाले, विशेषतः डाक-विभाग में हिन्दी जाननेवाले बहुत ही कम हैं। अतः आपसे अनुरोध है कि धनादेश अथवा पत्र भेजते समय आप अपना पता हमेशा अंग्रेजी में, स्पष्ट पढ़े जानेवाले बड़े अक्षरों में, पिनकोड के साथ लिखा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

संदेश

जो अंधकार और मिथ्यात्व की शक्तियों पर सत्य की ज्योति की विजय चाहते हैं उन्हें अपनी गतियों और अपनी क्रियाओं को प्रेरणा देनेवाले आवेशों को ध्यान से देखना चाहिये और उनमें विवेक करना चाहिये जो सत्य से आते हैं और जो मिथ्यात्व से आते हैं ताकि वे पहले की आज्ञा का पालन कर सकें और दूसरे से इंकार और उन्हें अस्वीकार कर सकें।

पृथ्वी के वातावरण में सत्य की ज्योति के आगमन के पहले प्रभावों में से है यह विवेक-शक्ति।

वस्तुतः सत्य के आवेशों और मिथ्यात्व के आवेशों में विवेक करना बहुत अधिक कठिन है जबतक कि व्यक्ति को विवेक का यह विशेष उपहार न मिला हो जिसे सत्य की ज्योति लायी है।

फिर भी, शुरू में सहायता के लिये तुम यह मार्ग-दर्शक नियम बना सकते हो कि जो कुछ अपने साथ शांति, श्रद्धा, आनंद, सामंजस्य, विस्तार, एकता और आरोही विकास लाता या पैदा करता है वह सत्य से आता है। और जो कुछ अपने साथ बेचैनी, संदेह, शंका, दुःख, अनबन, स्वार्थ-भरी संकीर्णता, तमस, निरुत्साह और निराशा लेकर आता है वह सीधा मिथ्यात्व से आता है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सम्पादकीय' :

अवश्य जगायेंगे

जो हमें जड़ दिखायी देता है उसे हम चेतना से वंचित मानते आये हैं, किंतु संवेदनशील व्यक्ति जैसे लेखक, कवि, उनमें सुप्त चेतना का अनुभव करते हैं। इस विषय में सोचते हुए मुझे सुमित्रानंदन पंत की एक कविता की याद हो आयी। वे लिखते हैं :

"ए मिट्टी के ढेले अजान !
तू जड़ अथवा चेतन-प्राण ?
क्या जड़ता चेतनता समान
निर्गुण, निःसंग, निःस्पृह, वितान ?
कितने तृण, पौधे, मुकुल, सुमन
संसृति के रूप-रंग मोहन
ढीले कर तेरे जड़-बंधन
आये औ' गये ! यही क्या मन ?
अब हुआ स्वप्न मधु का जीवन,
विस्मृति-स्मृति के विमुक्त बंधन !
खुल गया शून्य का अवगुंठन
अज्ञेय सत्य तू जड़-चेतन !"

कितनी सूक्ष्म उनकी संवेदनशीलता थी कि वे मिट्टी के ढेले से फूटते पौधे, तृण के कारण निर्जीव से दीखते ढेले में चेतना महसूस कर पाये!

यह तो हुई हमारे सुसंस्कृत व्यक्तियों की अभिव्यक्ति किंतु हम सामान्य नागरिक उस अवस्था से दूर हैं।

सर जगदीश चन्द्र बोस ने पहली बार पौधों के अंदर स्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूतियों को वैज्ञानिक परीक्षण के द्वारा प्रमाणित किया कि उन्हें काटने से कष्ट होता है और अच्छी तरह रखने से वे प्रसन्न रहते हैं।

आज हम फिर सामान्य मानव समाज को देखें तो पायेंगे कि उसे पेड़-पौधों से कोई विशेष लगाव नहीं है।

अब विज्ञान ने इस दिशा में और प्रगति कर ली है। अभी तक जो चीजें जड़, अचेतन दीखती हैं उनमें संवेदनशीलता, सजगता और कई तरह की प्रतिक्रियाएं भी होती हैं, इसका एक ठोस प्रमाण जापानी जल-अन्वेषक डॉ० मासारु एमोटो ने अनेक प्रयास करके हमारे आगे प्रस्तुत किया है। उन्होंने कई तरह के परीक्षण किये और जब उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी खोज की तीव्र आलोचना भी निरुत्तर हो जायेगी तब उन्होंने जनता के सामने अपनी खोज के प्रमाण प्रस्तुत किये।

अब हम देखें कि उन्होंने कैसे परीक्षण किये। उन्होंने पके हुए चावल दो शीशियों में भर दिये। एक शीशी पर कागज चिपका दिया जिस पर लिखा था, "तुम बेकार हो, अखाद्य हो।" दूसरी शीशी के कागज पर लिखा गया, "तुम सुस्वादु हो।" दो दिन के बाद शीशियों को बर्फ से निकाला तो देखा गया कि जिस शीशी पर लिखा गया था कि "तुम अखाद्य हो, बेकार हो" उसके चावल काले पड़ गये थे और जिस शीशी पर 'सुस्वादु' लिखा गया था, उसमें एकदम सफेद, खाने योग्य भात था। जिन लोगों ने कागज चिपकाये थे, उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी इसलिये मानव भावना का हस्तक्षेप बिलकुल न था। क्या चावल पढ़ लेते थे ? नहीं, फिर भी उनकी प्रतिक्रिया शब्दों के अनुसार ही हुई !

उनकी दूसरी खोज यह थी कि जैसे बर्फ में स्फटिक बनते हैं वैसे ही पानी को ठंडा करने पर भी स्फटिक बनते हैं किंतु उन्हें देख पाने में हमारी आंखें असमर्थ हैं। उसके लिये उन्होंने एक विशेष यंत्र बनाया जिसके द्वारा स्फटिक और उनके विभिन्न आकार स्पष्ट दीखते हैं। उन्होंने नल के पानी को थोड़ा ठंडा करके देखा तो जो स्फटिक बना वह अपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, कारण यह था कि पानी गंदला था। पानी जितना साफ होगा स्फटिक का आकार उतना ही बड़ा और पूर्ण होगा, कहीं से कटा हुआ या दायीं ओर एक डिजाइन और बायीं ओर कुछ भी आकार नहीं, ऐसा न होगा।

उन्होंने संगीत का प्रभाव भी देखा। किसी सरोवर के किनारे शास्त्रीय संगीत सुनाया तो उस पानी के स्फटिक पूर्ण और सुंदर थे। किसी नदी पर बहुत-से लोगों ने चिल्लाकर कहा, "मैं तुम्हें मार डालूंगा।" तो उसके स्फटिक अस्त-व्यस्त आकार लिये बने। एक सरोवर पर ओंकार का उच्चारण बड़ी श्रद्धा से किया गया और उसका स्फटिक सबसे सुंदर और बड़ा था!

तो पानी मानव भावना से स्पंदित होता है। कितना सजीव, कितना संवेदनशील है पानी! क्या हम जानते थे कि जल इतना जीवंत है?

अब हम मानव कितनी प्रगति कर रहे हैं! चारों ओर देखते हुए हमें यही प्रतीत हो रहा है कि शायद हम पिछड़ते जा रहे हैं। हिंसा, बलात्कार, आगजनी, आजकल सब जगह फैले हुए हैं। क्या हम प्रलय को निमंत्रण दे रहे हैं? अपनी अस्मिता, चरित्र, आदर्श—क्या हम उन्हें जगा न पाएंगें? हमारी नचिकेता-सी अभीप्सा मर गयी है क्या?

ना, हम उसे अवश्य जगायेंगे।

—अनुबेन

तमिलनाडु में हिन्दी पढ़नेवाले, विशेषतः डाक-विभाग में हिन्दी जाननेवाले बहुत ही कम हैं। अतः आपसे अनुरोध है कि धनादेश अथवा पत्र भेजते समय आप अपना पता हमेशा अंग्रेजी में, स्पष्ट पढ़े जानेवाले बड़े अक्षरों में, पिनकोड के साथ लिखा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जुलाई

१. सच्चाई और लगन के साथ मनुष्य आगे बढ़ता जाये और हार को कभी अंतिम चीज न मान बैठे।

२. बच्चे को देने योग्य सबसे मूल्यवान् उपहार यही है कि हम उसमें सीखने का अनुराग, सर्वदा और सर्वत्र सीखने का अनुराग पैदा कर दें ताकि उसके लिये जीवन की सभी परिस्थितियां, सभी घटनाएं अधिक और सदा अधिकाधिक सीखते रहने के लिये नित्य नवीन अवसर बन जायें।

३. प्रत्येक दिन, प्रत्येक मुहूर्त का जीवन समस्त पाठशालाओं से बढ़कर होता है; वह होता है बहुविध और जटिल, अदृष्टपूर्व अनुभवों से, समाधान के लिये प्रस्तुत समस्याओं से, स्पष्ट और प्रभावक उदाहरणों से तथा प्रत्यक्ष परिणामों से भरा-पूरा।

४. अगर तुम बच्चों के पूछे हुए असंख्य प्रश्नों का बुद्धिमानी तथा स्पष्टता के साथ उत्तर दे सको तो उनमें बड़ी आसानी से एक स्वस्थ-सुन्दर खोज की वृत्ति जगायी जा सकती है।

५. सभी मानव प्राणियों के अंदर एक महत्तर चेतना की छिपी हुई संभावना मौजूद है जो उनके वर्तमान जीवन की सीमा से बड़ी है और जिसकी सहायता से वे एक उच्चतर और अधिक व्यापक जीवन में भाग लेने के अधिकारी बन सकते हैं।

६. प्रत्येक को अपनी कठिनाइयों में से अपना रास्ता आप निकालना होता है।

७. उन्नति के लिये एक प्रज्वलित अग्निशिखा बन जाओ। जो कुछ तुम्हारे मार्ग में आये उसे अपने विकास के लिये मानो . . .।

८. सब कार्य प्रसन्नता से करने का यत्न करो; परंतु प्रसन्नता कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे कार्य का प्रेरक भाव न बनने पाये।

९. अपने जीवन के प्रयोजन और लक्ष्य को कभी मत भूलो। इस महान् उपलब्धि का तुम्हारा संकल्प सदा तुम्हारे ऊपर तथा जो कुछ तुम करते हो और जो कुछ तुम हो उसपर सजग रूप में विद्यमान रहे, मानों यह प्रकाश का एक विशाल पक्षी है जो तुम्हारे अस्तित्व की सब गतिविधियों को प्रभावित करता है।

१०. शुरू करने के लिये सबसे अधिक सफल तथा शीघ्र पहुंचानेवाली चीज पूर्ण आत्म-समर्पण है। . . . जैसे-जैसे उसका आत्म-समर्पण अधिकाधिक पूर्ण और सर्वांगीण होता जायेगा, उसके अंदर उस सत्ता के साथ एक होने की तथा उसमें पूर्ण रूप से मिल जाने की अभीप्सा पैदा होती जायेगी जिसे उसने समर्पण किया है और क्रमशः यह अभीप्सा सब विषमताओं और बाधाओं को पार कर लेगी, विशेषकर उस अवस्था में जब इस अभीप्सा के साथ-साथ व्यक्ति में प्रगाढ़ और सहज प्रेम भी हो; क्योंकि तब कोई भी वस्तु उसकी विजयशील प्रगति के मार्ग में बाधक नहीं हो सकेगी।

११. मनुष्य जिन परिस्थितियों में संसार में रहते हैं वे उनकी अपनी चेतना के परिणाम हैं। चेतना को बदले बिना परिस्थितियों को बदलने की इच्छा करना कोरा स्वप्न है।

१२. समस्त विश्व-संगठनों को वास्तविक या जीवित रहने के योग्य बनने के लिये राष्ट्र-राष्ट्र के बीच तथा व्यक्ति-व्यक्ति के बीच पारस्परिक आदर और पारस्परिक सद्भाव होना चाहिये।

१३. केवल सामंजस्य और सामूहिक व्यवस्था द्वारा, पारस्परिक सदिच्छा तथा सहयोग के द्वारा ही मनुष्य को आज की इस दुःखद अवस्था में से निकाला जा सकता है जिसमें वह फंसा हुआ है।

१४. आध्यात्मिक जीवन प्रकाश और संतुलन, सौंदर्य और आनंद का जीवन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. सबसे कठिन काम है चेतना को हमेशा उसकी क्षमता के शिखर पर बनाये रखना और शरीर को कभी निचले आवेगों या प्रेरणाओं के प्रभाव में आकर काम न करने देना।

१६. हर एक को अपनी क्षमता और निजी आवश्यकता के अनुसार अपनी पद्धति खोजनी होगी और उसे कार्यान्वित करना होगा।

१७. व्यक्ति में वह सामर्थ्य होनी चाहिये कि वह अपनी आदतों का, वे चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हों, दास न बन जाये; उसमें अधिक-से-अधिक नमनीयता होनी चाहिये ताकि जब-जब जरूरत हो आदमी अपनी आदतों को बदल सके।

१८. व्यायाम का जीवन सुख और विक्षेप का जीवन नहीं होता। इसके विपरीत, यह वांछित परिणाम पाने के लिये क्रमबद्ध प्रयत्नों और कठोर अभ्यासों का जीवन होता है।

१९. जो प्रगति और आत्म-प्रभुत्व के लिये अभीप्सा करता है उसके लिये सभी काम एक-से उपयोगी हैं।

२०. तुम जो कुछ करो, उसे न सिर्फ अपनी सामर्थ्य-भर अच्छा करो, बल्कि हमेशा पूर्णता की ओर बढ़ते हुए, हमेशा अच्छे-से-अच्छा करते रहने के उत्साह के साथ करो।

२१. विश्राम शक्ति और प्रकाश में लेना चाहिये, न कि अंधकार और दुर्बलता में। उन सब लोगों के लिये जो उन्नति के लिये अभीप्सा करते हैं, संयम ही नियम है।

२२. बाहरी मौन आंतरिक शांति के लिये बहुत अनुकूल होता है और अगर तुम्हारे अंदर सद्भावना और सतत अभीप्सा हैं तो तुम प्रगति के लिये सहायक वातावरण पैदा कर सकोगे।

२३. सबसे अधिक अवांछनीय प्रकार की बकवास में उस बातचीत को भी गिनना चाहिये जो तुम औरों के बारे में करते हो।

२४. हर हालत में, सामान्य रूप से, दूसरों के बारे में तुम जितना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम बोलो—उनकी प्रशंसा में भी—उतना ही अच्छा। अपने अंदर क्या हो रहा है उसे ही ठीक-ठीक जानना इतना मुश्किल है—फिर भला निश्चित रूप से यह कैसे जाना जाये कि दूसरों में क्या हो रहा है ?

२५. हर विचार या भाव में थोड़ा-सा सत्य या सत्य का एक पहलू होता है, पर कोई भी विचार या भाव ऐसा नहीं है जो अपने-आपमें पूर्ण सत्य हो।

२६. मन बहलाव की, काम में आराम की, जीवन के लक्ष्य को कुछ समय के लिये या ज्यादा समय के लिये पूरी तरह भूल जाने की और साथ ही जीवन के मूल हेतु को भूल जाने की आवश्यकता को बिलकुल स्वाभाविक और अनिवार्य नहीं मान लेना चाहिये। यह एक ऐसी दुर्बलता है जिसके आगे मनुष्य अभीप्सा की तीव्रता के अभाव, संकल्प-शक्ति की अस्थिरता, अज्ञान, निश्चेतना और निरुत्साह के कारण झुक जाता है। इन प्रवृत्तियों को न्यायसंगत न ठहराओ और शीघ्र ही तुम देखोगे कि ये जरूरी नहीं रहीं; कुछ समय बाद ये तुम्हारे लिये अरुचिकर, यहांतक कि अग्राह्य हो जायेंगी।

२७. आंतरिक जीवन और आध्यात्मिक साधना के बारे में वाणी के उपयोग पर ज्यादा कठोर अनुशासन रखना होगा और जबतक एकदम आवश्यक ही न हो कुछ न कहा जाये।

२८. यह भली-भांति जाना हुआ तथ्य है कि अगर तुम अपनी अनुभूति में इकट्ठी की गयी शक्ति को, जो तुम्हारी प्रगति को तेज करने के लिये है, क्षण-भर में गायब होते नहीं देखना चाहते हो तो तुम्हें अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों के बारे में कभी न बोलना चाहिये।

२९. ऐसा एक दिन होगा जब मनुष्य सब कुछ भगवान् के प्रति प्रेम के कारण करेंगे, आज की तरह उनके प्रति कर्तव्य मानकर नहीं। तब प्रगति एक प्रयास, और बहुधा संघर्ष होने की जगह एक आनंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी, या यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि प्रगति समस्त सत्ता की निष्ठा के आनंद के द्वारा होगी, अहंकार के प्रतिरोध के दमन के द्वारा नहीं, जिसका अर्थ है बहुत प्रयास और कभी-कभी बहुत दुःख-कष्ट।

३०. अपने मन में नीरव रहो और 'सर्व प्रज्ञा', 'सर्व ज्ञान', 'सर्व चेतना' के लिये सतत अभीप्सा के सच्चे भाव में स्थिर रहो। तब, अगर तुम्हारी अभीप्सा निष्कपट है, अगर यह चीजों को अच्छी तरह करने और सफल होने की महत्त्वाकांक्षा को छिपाने के लिये एक आवरण नहीं है, अगर वह शुद्ध, सहज और सर्वांगीण है तो तुम सरलता के साथ बोल सकोगे, वही शब्द बोलोगे जो बोले जाने चाहियें, न अधिक, न कम, और उनमें सर्जक शक्ति होगी।

३१. इस बात को कभी न भूलो : यदि तुमने भगवान् के विषय में सोचा है तो इसका कारण यह है कि भगवान् ने भी तुम्हारे विषय में सोचा है। यदि तुमने भगवान् को चुन लिया है तो इसका कारण यह है कि भगवान् ने भी तुम्हें चुन लिया है।

आपका अग्निशिखा/पुरोधा का चंदा... ... ... में समाप्त हो रहा है। कृपया अग्निशिखा के ४० रु० और पुरोधा के ५० रु० शीघ्र भेजें। अलग अनुस्मारक नहीं भेजा जायेगा, न ही अगला अंक वी० पी० पी० से जायेगा। कृपया चेक न भेजें। चाहें तो ८०० रु० देकर अग्निशिखा के और १,००० रु० देकर पुरोधा के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता २० वर्ष के लिये मानी जायेगी।

संपर्क-सूत्र—पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोडरजू मर गये

एक राजा थे। उनकी एक रानी थी। दोनों बड़े सीधे-सादे थे। न किसी के लेने में न किसी के देने में। सादा खाना खाते, सादे कपड़े पहनते और सादा जीवन बिताते। उनका एक दीवान था। बड़ा चतुर, चालाक और चलता पुरजा। जब बड़े महाराज मरे थे तो उन्होंने युवराज से कहा, देखो बेटा, दीवान के कहे में चलना। इनकी बात कभी मत टालना। राजा ने गांठ बांध ली। रानी ने गांठ बांध ली। दीवान कहे तो खायें, दीवान कहे तो पियें। जो कुछ दीवान कहे उसके अनुसार काम हो। दिन बीतते गये। जीवन चलता रहा। सब सुखी थे।

एक दिन दीवान गये छुट्टी पर। राजा को चिंता हुई। रानी को चिंता हुई। अब काम कैसे चलेगा ? राजा ने सोचा, अरे एक दिन की तो बात है, काम चला ही लेंगे। रानी ने सोचा, चलो एक दिन की बात है हम भी अपना कौशल दिखा देंगे। दीवान गये छुट्टी पर और राजा रानी अपना कौशल दिखाने बैठे।

रानी की एक दासी थी। रोज जाकर धोबिन को कपड़े दे आती और दूसरे दिन तड़के ही वापिस ले आती। धोबी भी कैसा कि दीया लेकर ढूंढ़ो तब भी ऐसा आदमी न मिले। राजा रानी का भक्त, काम में चतुर और बात का पक्का। आज दासी कपड़े लेने गयी तो कपड़े तैयार न थे। ऐसा तो कभी न हुआ था। बरसों में कभी एक दिन भी नागा न हुआ था। आज क्या नयी बात है। धोबिन बोली अरे क्या कहें, हम लोग काम पर कैसे जाते सोडरजू मर जो गये।

हाय दैया ! यह क्या हुआ। सोडरजू मर गये और राजा रानी को खबर भी नहीं। उन दिनों रिवाज था कि कोई बड़ा आदमी मर जाता तो सारे राज्य को सूतक लगता था। हड़ताल होती थी। न कोई खाता, न कोई पकाता। दुकानें, दफ्तर सब बंद रहते। रानी को पता लगा सोडरजू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर गये तो रनिवास में हड़ताल हो गयी। खाना-पीना बंद। काम-काज बंद। राजा ने सुना रनिवास में हड़ताल है। सोचा रानी के कोई नातेदार मर गये होंगे। दरबार बंद, सरकारी दफ्तर बंद। बात सारे राज्य में फैल गयी। सबके चूल्हों में पानी पड़ गया। कहीं घर में से धुआं निकलता दिखायी दे जाये तो राजा के सिपाही पकड़ न ले जायें। बड़ी मुश्किल हो गयी। राजा को भूख लगी। राजा ने सोचा, अगर मैंने खा लिया तो रानी रूठ जायेगी। रानी को भूख लगी। उसने सोचा, राजा का कोई मर गया है मैंने खा लिया तो राजा बिगड़ बैठेंगे। राज्य में बच्चों को भूख लगी। किसी के घर चना चबेना था तो उसने चुपके से खिला कर मुंह पोंछ दिया। जिसके घर कुछ न था उसने थप्पड़ खिला कर मन को शांत किया।

शाम हो चली। दीवान वापिस आये। आते ही घर में खाना मांगा। रसोइये ने कहा आज तो सूतक है। खाना पकाना बंद है। दीवान ने पूछा किसका सूतक, कैसा सूतक। रसोइये ने कहा सोडरजू मर गये और सारे राज को भूखा मार गये। रानी भूखी बैठी हैं, राजा भूखे बैठे हैं। सारा राज भूखा बैठा है। दीवान ने हुकुम दिया जाओ मुनादी फेर दो कि सूतक खतम हो गया सब लोग खाओ। राजा ने खाया, रानी ने खाया, सब ने खाया। किसी ने खाये लड्डू जलेबी, किसी ने खाये पूरी परांठे, किसी को मिली सूखी रोटी लेकिन पेट सब का भर गया।

अब दीवान बाहर निकले। पहरेदार से पूछा तुमसे किसने कहा कि सोडरजू मर गये। उसने कहा, सरकार सब कहते हैं। सरकार को आया गुस्सा, एक चपत जड़ दिया। 'तुझसे किसने कहा', उसने डरते-डरते नाम बताया। उसकी तलब हुई, उससे पूछा क्यों भई तुझसे किसने कहा था कि सोडरजू मर गये ? उसने कहा सरकार सभी कहते हैं और लगा एक तमाचा तो उसने भी नाम उगल दिया। इस तरह अमीर उमराव, तेली तमोली सब की तलब हुई। सब ने एक एक तमाचा खाया और अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नाम बताया। होते-होते रानी की दासी पकड़ी गयी और उसने धोबिन को पकड़वा दिया। धोबिन बुलायी गयी। वह बड़े तम-तड़ाक से आयी। दीवान ने पूछा 'क्यों री तूने कहा था कि सोडरजू मर गये ?' "हां महाराज, कहती नहीं तो क्या करती। यह दासी मेरे सिर हो गयी कि ला कपड़े। कपड़े तैयार न थे, तो मुझे कहना पड़ा कि सोडरजू मर गये इसलिये कपड़े न धो पायी।"

"कौन हैं ये सोडरजू, जिनके मरने पर तूने हड़ताल की।"

"हड़ताल कहां सरकार, सोडरजू मेरा गधा था जिस पर लादी लाद कर घाट तक पहुंचाती थी। वह मर गया तो हम लोग कपड़े न धो पाये !"

—रवीन्द्र

(लक्ष्मीप्रसाद जी से सुनी हुई एक लोककथा)

श्रीअरविन्द के साथ बारह वर्ष

युद्ध और राजनीति

श्रीअरविन्द के साथ यूरोप के युद्ध की चर्चा के साथ-साथ भारत की राजनैतिक समस्याओं की चर्चा भी महत्त्वपूर्ण होती थी। महात्मा गांधी का रवैया, कांग्रेस की नीति, हिन्दू-मुसलमान समस्या, जिन्ना का दुराग्रह और वाइसराय की शांति स्थापित करने की भूमिका; इन सारी राजनैतिक जटिलताओं पर गरमागरम चर्चा होती थी। हमारे नेताओं की हिमालय-सी वह भयंकर भूल, जब उन्होंने 'क्रिप्स मिशन' (प्रस्ताव) को ठुकरा दिया था; इस विषय का भी हमारी चर्चा के निरंतर बढ़ते विस्तार में समावेश हो जाता था . . . 'क्रिप्स मिशन' के आने के बाद हमारी चर्चा का परिणाम यह निकला कि कांग्रेस के नेताओं ने मंत्री-पद से त्यागपत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर बड़ी भूल की थी। तबतक अंग्रेज सरकार हमें 'डोमीनियन स्टेटस' देने के लिये तैयार हो गयी थी। उसको हम स्वीकार कर लेते तो हमारे लिये वह कदम लाभदायक होता क्योंकि स्वाधीनता की ओर बढ़ाया हुआ वह एक कदम होता। हम अंग्रेजों के इस विशेष युद्ध में हाथ बंटा पाते और इस सहायता के कारण हमें उनके सामरिक विभागों में, जैसे हवाई-युद्ध के संचालन में, नौसेना के संचालन में और स्थल-सेना के संचालन में प्रवेश पाने का अवसर अनायास हमें मिल जाता। साथ ही हम उच्च पद पाते, उन विभागों में निपुणता प्राप्त करते और इस तरह स्वाधीनता का अपना जन्मजात अधिकार पाने के लिये अंग्रजों पर दबाव डाल पाते।

गांधी की फरियाद थी कि उनके प्रश्नों के उत्तर में वाइसराय ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। इस सिलसिले में, ७ अक्तूबर १९४० की बातचीत में श्रीअरविन्द ने हमें बताया, "वाइसराय क्या कह पाते ? स्पष्ट है कि वे क्यों कुछ भी नहीं बोले। पहली बात तो यह है कि सरकार स्वाधीनता की मांग को स्वीकार करना नहीं चाहती थी। वह जो देने के लिये तैयार है, वह है 'डोमीनियन स्टेटस', वह भी युद्ध के बाद ! उसे आशा होगी कि ऐसा हुआ तो भारत ब्रिटिश साम्राज्य के साथ उभयनिष्ठ संबंध स्थिर करके रखेगा। लेकिन उस समय हम मान जाते तो राष्ट्रीय सरकार का मतलब होता 'डोमीनियन स्टेटस' ही और उसमें वाइसराय केवल सांवैधानिक अध्यक्ष ही बने रहते। उस समय कोई कह नहीं पाता कि अधिकार मिल जाता तो उसके बाद कांग्रेस क्या करती। शायद वह केवल भारत की सुरक्षा की व्यवस्था में व्यस्त रहती और इंग्लैंड को नाममात्र की सहायता दे पाती। मान लो इंग्लैंड के साथ अधिक गड़बड़ हो जाती तो कांग्रेस उसे संकटावस्था में छोड़कर शत्रु के साथ अपनी अलग शांतिवार्ता का आरंभ कर पाती। कांग्रेस में 'लेफ्ट विंगर' हैं, समाजवादी हैं और कॉम्यूनिस्ट भी हैं। इन सबको कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पक्ष में लाने में असमर्थ होगी, लेकिन वह उन्हें नाराज करने का साहस जुटा न पाएगी। अगर वह अधिक प्रभावशाली रही तो कांग्रेस-दल ब्रिटेन का सामना करने खड़ा हो जायेगा। इस परिस्थिति में सरकार भी अपने अधिकार को छोड़ने के लिये अनिच्छुक हो, यह स्वाभाविक है, उसी तरह हमारे लोगों का स्वत्व-अधिकार पर दावा करना भी स्वाभाविक है। चूंकि हमें सहारा देनेवालों की संख्या कम है इस कारण हम कमजोर हैं। स्थिति ऐसी नाजुक होने के कारण हमें सोचना होगा कि सरकार और हमारी अपनी पार्टी के बीच ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जहां दोनों पक्ष सहमत हो पाएं। ऐसा कोई क्षेत्र हो तो समझौता ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय है। एक समय था जब समझौता हो पाता किंतु कांग्रेस ने उसे गंवा दिया। अब तो स्थिति यह है कि जो भी मिले उसे स्वीकार लो। मुझे पता नहीं क्या होने जा रहा है। हम जो चाहते हैं उसे पाने के लिये अगर हम क्रांति करने के लिये क्षमता और शक्ति रखते तो हम उसे प्राप्त भी कर लेते, किंतु अब बात अलग है। एक समय था जब एमरी और अन्य पदाधिकारी कांग्रेस को 'डोमीनियन स्टेटस' देने के लिये तैयार थे। लेकिन अब उन्होंने अपना रुख बदल दिया है क्योंकि वे हमारी जनता की विचार-धारा को पहचान गये हैं। हमारे राजनीतिज्ञों के विचार एकदम बंधे-बंधाए हैं और वे उन्हीं पर अड़े रहते हैं। असल में राजनीतिज्ञ राजनेता को परिस्थितियों को भांप कर कार्य निश्चित करना चाहिये। उनमें सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिये।"

अपने बचाव में हमने कहा, "अंग्रेजों की फूट डालकर हुकूमत चलाने की नीति के कारण हम एकजुट न हो पाए।"

श्रीअरविन्द का दो टूक जवाब था, "निरर्थक बकवास ! अंग्रेजी हुकूमत आयी उससे पहले भी क्या भारत में एकता थी ? . . . जिन्ना क्या एकता चाहता है ? उसका चरित्र ही बताता है कि वह क्या चाहता है—मुसलमानों के लिये स्वाधीनता और संभव हो तो भारत के ऊपर अपनी हुकूमत। वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराना ढर्रा . . .।" कांग्रेस की नीति के दिवालियेपन से राष्ट्र में जो आंशिक गतिरोध आ गया था उसे तोड़ने के लिये सहायता करने भागवत कृपा क्रिप्स प्रस्ताव के रूप में आ गयी। अगर उस प्रस्ताव को मान लिया जाता तो भारत का भाग्य ही पलट जाता। श्रीअरविन्द ने कहा था, "इस प्रस्ताव में स्वराज्य का जो तत्त्व था उसे अविश्वास, असंतोष और एक साथ, तत्काल सब कुछ प्राप्त करने की हड़बड़ी ने ही असफल बना दिया। मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने की जो बात थी उसे छोटी-छोटी बातों की धूल में लोगों ने प्रायः भुला दिया। भारत की उलझी हुई समस्याओं के हल के लिये और भारत की पूर्ण मुक्ति के लिये श्रीअरविन्द ने 'क्रिप्स मिशन' में एक बहुत अच्छा अवसर देखा था।

हमें याद रखना चाहिये कि क्रिप्स प्रस्ताव ने संयुक्त, मुक्त और अविभाज्य भारत की कल्पना की थी जो दुश्मन के सामने एकीकृत मोरचा ले पायेगा। श्रीअरविन्द ने तुरत सर स्टेफर्ड क्रिप्स को उनके प्रस्ताव का स्वागत करते हुए संदेश भेजा और भारतीय नेताओं से उसे स्वीकारने की सिफारिश भी की थी। संदेश में यह लिखा गया था, "मैंने आपका भाषण सुना। हालांकि अब मैं राजनीतिक क्षेत्र में नहीं, आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य कर रहा हूं फिर भी एक समय राष्ट्र के नेता और भारत की स्वाधीनता के लिये कार्य करनेवाले एक कार्यकर्ता के रूप में, मैं—आपने इस प्रस्ताव के लिये जो परिश्रम किया है उसके लिये—आपकी सराहना करता हूं। मैं मानता हूं कि इस योजना में भारत को स्वयं निर्णय लेने का और अपनी स्वाधीनता और ऐक्य को पूरी आजादी के साथ व्यवस्थित करने का अवसर दिया जा रहा है।

"इस निर्णय के साथ ही संसार के राष्ट्रों में भारत भी अपना सार्थक स्थान ग्रहण कर लेगा। मुझे आशा है कि अपनी सारी फूट, अनबन और मतभेद को भुलाकर हमारे नेता इस प्रस्ताव को स्वीकारेंगे और उसका उचित उपयोग करेंगे। पिछले संघर्षों को भुलाकर भारत और ब्रिटेन मैत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संबंध बना पायेंगे। यह संबंध सब राष्ट्रों की एकता को बढ़ाने का एक सही कदम होगा। इस राष्ट्र-संघ में भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बनकर अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा मानव जाति के जीवन को अधिक उच्च और सुखी बना पाएगा। यह सोचकर कि मेरा वक्तव्य आपके कार्य में सहायक होगा, मैं आपकी योजना को अपना समर्थन देकर जनता के सामने प्रस्तुत कर रहा हूं।"

सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने उत्तर में लिखा, "आपके सदय संदेश से मैं द्रवित हुआ हूं और मुझे संतोष भी हुआ है। मुझे भारत को यह कहने का अवसर मिल गया है कि आप, जो भारतीय युवा मानस में अद्वितीय स्थान बना चुके हैं, ब्रिटेन के महामहिम की घोषणा का समर्थन करते हैं। यह घोषणा भारतीय राष्ट्रीय संघ (कांग्रेस) को वह स्वाधीनता दे रही है जिसके लिये जनता लंबा संघर्ष कर रही है।"

श्रीअरविन्द ने श्रीमान् शिव राव द्वारा महात्मा गांधी और पंडित नेहरू के पास भी संदेश भेजे कि क्रिप्स की योजना को बिना शर्तों के मान लेना अच्छा होगा। अंत में इस आशा से कि अंततः विवेक और समझदारी की विजय होगी उन्होंने अपने संदेशवाहक को दिल्ली में कांग्रेस के नेताओं के पास भी भेजा था। ऐसे संकटकालीन समय पर जो मूर्खता होनेवाली थी, उसे वे निष्क्रिय साक्षी बने देखना न चाहते थे। उनकी आर्ष दृष्टि ने देखा था कि यह प्रस्ताव दिव्य प्रेरणा की लहर पर आया था। वह दृश्य हमारी स्मृति में अबतक ताजा है—संध्या का समय था। श्रीअरविन्द चलने की कसरत करने से पहले पलंग के किनारे पर बैठे हुए थे। हम सब पास ही खड़े थे। मद्रास के प्रसिद्ध वकील और श्रीअरविन्द के भक्त दुरैस्वामी को संदेशवाहक चुना गया था। वे कांग्रेस के मुख्य नेताओं में जाने-माने श्री राजगोपालाचारी के मित्र थे, शायद इसीलिये उन्हें चुना गया था। उसी रात को वे दिल्ली रवाना होनेवाले थे। वे श्रीअरविन्द के आशीर्वाद लेने के लिये आये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया, फिर हाथ जोड़े खड़े रहे। श्रीअरविन्द की ओर एकटक देखते रहे, फिर मुड़कर चल दिये।

दुरैस्वामी श्रीअरविन्द की ओर से महत्त्वपूर्ण संदेश कांग्रेस की कार्यकारिणी सभा के लिये ले जा रहे थे। अपनी पुस्तक 'द लिबरेटर' में श्री शिशिरकुमार मित्र लिखते हैं, "श्रीअरविन्द ने जो दृष्टिकोण अपने संदेशवाहक को कांग्रेस के सामने रखने के लिये दिये वे थे,—

१. जापान का साम्राज्यवाद अभी उठ रहा है और उसका आधार है औद्योगिक और सैन्य शक्ति, साथ ही वह पश्चिमी देशों की ओर मुड़ रहा है। यह नव शक्ति भारत के लिये अधिक भारी और खतरनाक होगी जब कि अंग्रेजी साम्राज्य से हम परिचित हैं, वह बूढ़ा भी हो चला है। उसके साथ व्यवहार करना हमारे लोगों ने सीख लिया है। अब तो वह यहां से निकलने जा रहा है।

२. हमारे नेताओं को गद्दी पर जल्द-से-जल्द बैठना चाहिये। किस तरह वे अधिकार पायें इस बात के कानूनी आधार की उन्हें चिंता न करनी चाहिए। एक बार अधिकार और शक्ति हमारे हाथ में आ जायें, हम कुर्सी पर बैठ जायें उसके बाद अपनी स्थिति को स्थिर कर पायेंगे और दृढ़ता से अधिकार जता पायेंगे।

३. जिस मन्त्रिमण्डल की योजना प्रस्तुत की गयी है उससे कांग्रेस और मुसलमान दोनों को एक दूसरे को समझने का मौका मिल जायेगा और राष्ट्र के हित में एकजुट होकर काम करने का उन्हें अवसर मिलेगा, खास कर जब राष्ट्र के ऊपर कोई संकट आ जाये तब उन्हें अनायास एक साथ रहना होगा।

४. हिन्दू महासभा का भी इस मन्त्रि-मण्डल में प्रतिनिधित्व होगा, तब हिन्दू भी भारत पर शासन करने की अपनी क्षमता दिखा पायेंगे, वे केवल हिन्दुओं के लिये नहीं बल्कि सारे राष्ट्र के हित के लिये शासन-योग्य साबित होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. मुख्य समस्या भारत की शक्ति को एकत्रित करने की है ताकि आक्रमण के खतरे का सामना किया जाये।''

श्रीअरविन्द के महाकाव्य 'ईलियन' में हेलथिबियस ट्रॉय के लिये जो संदेश ले गये थे हम उसे याद कर लें। एकिलीस ने ऐसा प्रस्ताव किया था जिससे ट्रॉय को बचा लिया जाता और यूनानी लोगों की प्रतिष्ठा भी बनी रहती। यह अच्छा सामंजस्यपूर्ण सुझाव था किंतु उसे अस्वीकार कर दिया गया। इसी तरह दुरैस्वामी अपने कोमल हाथों में भारत की आत्मा लिये गये थे और निराश होकर उसे वापस ले आये, ऊपर से अनैच्छिक सलाह देने के लिये अभद्र फब्ती का पुरस्कार भी उन्हें मिला। श्रीअरविन्द ने राजगोपालाचारी और डॉ० मुंजे को भी तार भेजे थे कि क्रिप्स प्रस्ताव को वे समर्थन दें। डॉ० इन्द्रसेन लिखते हैं, "हम व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस कार्यकारिणी की हर समिति से मिले और उन सबकी प्रतिक्रिया प्रायः यही थी; श्रीअरविन्द ने क्रिप्स को संदेश भेजकर हमारे लिये मुसीबत खड़ी कर दी है। वे असली बात जानते नहीं, हम उसमें पूरी तरह डूबे हैं, हम सारी बात को उनसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं . . .''। निराश होकर क्रिप्स वापस चले गये, उन्हें एक ही बात का दिलासा था कि कम से कम एक महान् भारतीय नेता ने उनके प्रस्ताव का स्वागत किया था। जब प्रस्ताव की अस्वीकृति की घोषणा हुई तब श्रीअरविन्द ने शांत स्वर में कहा, "मैं जानता था, मेरा संदेश असफल होगा।'' हम सब झपट-से पड़े और उनसे पूछा, "फिर आपने दुरैस्वामी को भेजा ही क्यों ?'' कटुता या नाराजगी के बिना उनका शांत उत्तर था, "निष्काम कर्म करने के लिये।'' इस तरह के "निष्काम कर्म'' का पूरा अर्थ उनके दिसंबर १९३३ में लिखे एक पत्र में अधिक स्पष्ट है। अपने आध्यात्मिक कार्य के विषय में लिखते हुए वे कहते हैं, "मुझे अपने कार्य के परिणामों के बारे में पूरा-पूरा विश्वास है। अगर मैं जानता कि कार्य का परिणाम शून्य होगा (जो असंभव है) फिर भी मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेझिझक कार्य जारी रखता क्योंकि मैं पूरी शक्ति लगाकर वह कार्य किये जाता जो मुझे पता था मुझे करना चाहिये। इस तरह किये गये कार्य का भी विश्व की व्यवस्था में मूल्य होता है।''

—नीरदवरण

(क्रमशः)

दिल की सचाई

किसी ने माताजी से कहा, "आपने कहा था, तुम्हें बहुत जागरूक रहना चाहिये। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये भगवान् को एक सुन्दर कोट न बनाओ जिसमें तुम अपने-आपको छिपा सको,'' इसका क्या मतलब है ?

माताजी ने कहा, "बहुत से लोग कुछ सिद्धांत बना बैठते हैं जिनमें से कुछ बहुत सुविधाजनक होते हैं। वे कहते हैं, हर चीज भगवान् की इच्छा से होती है या भगवान् हर जगह हैं, हर चीज में हैं और वे ही सब कुछ कर रहे हैं। कुछ अन्य कहते हैं, मेरी इच्छा भगवान् की इच्छा से एकाकार है, मुझे भगवान् से ही प्रेरणा मिलती है इसी प्रकार की बहुत-सी बातें हैं। कहनेवालों का अहंकार जीता-जागता होता है, वे मनमानी करते हैं और ऊपर से कहते हैं, मेरे अंदर से भगवान् ही सब कुछ कर रहे हैं। उनके दिमाग से जो कुछ निकलता है वह भगवान् का संकल्प होता है, कोई चीज उनकी अपनी नहीं होती, हर बात भगवान् के संकल्प के आधार पर है, 'मैं तो नहीं कर रहा, मेरे द्वारा भगवान् कर रहे हैं' और यह सब कहते हुए लोग उनकी जो मरजी हो करते जाते हैं। इस तरह के बहुत से लोग होते हैं। इसीलिये मैंने कहा है कि अपनी इच्छाओं को छिपाने के लिये भगवान् को एक सुंदर-सा लबादा न बनाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन लोग इससे भी आगे जाया करते हैं। हमारे एक मित्र थे। बड़े ही साधु पुरुष, उठते-बैठते, छींकते, डकारते सारे समय भगवान् के कई नामों की तालिका दोहराते थे। आसपास के लोगों में उन्होंने भक्त के नाम से ख्याति पा ली थी इसलिये लोग उनपर विश्वास भी कर लेते थे। एक बार वे आर्थिक कठिनाई में पड़ गये। बस जोर-जोर से नारायण नाम का जप शुरू हो गया। एक दिन की बात है, दरजी उनसे पैसे मांगने आया। कई महीने पहले भक्त-प्रवर ने उससे कुछ कपड़े सिलाये थे पर अभीतक कानी कौड़ी भी न दी थी। उसके आते ही भक्तजी ने कहा, "आ गया बेटा दरजी, आओ, आओ" और यह कहते-कहते नारायण नाम का जप शुरू कर दिया। दरजी जप में बाधा कैसे डाले ? एक ओर बैठ गया। थोड़ी देर में भक्तजी ने आंखें खोली। दरजी को देखकर बोले, "हां तो, दरजी बेटा, कैसे आया ? कोई खास बात है क्या ? हां बेटा, बोल नारायण . . ." और फिर आंखें बंद ! इस तरह दो घंटे दरजी को बिठाये रखा और पैसों की जगह नारायण की दीक्षा देते रहे। धर्मभीरु दरजी भक्त के भजन में कैसे बाधा डालता, झक मारकर घर लौट गया और तब कहीं जाकर बेचारे नारायण को छुट्टी मिली।

इसी प्रसंग में एक प्राचीन कहानी है। एक सज्जन ने बड़ा सुन्दर बाग लगाया। बाग से उन्हें इतना अधिक प्रेम था कि वे उसमें सब कुछ भूले रहते थे। सारे दिन बाग की प्रशंसा करते और सुनते रहते थे। एक बार इन्द्र को ख्याल आया कि यह भला आदमी इस तरह अपना जीवन नष्ट कर रहा है, इसकी सहायता करनी चाहिये। विचार का आना था कि वे एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में उन सज्जन के बगीचे में जा पहुंचे और एक तरफ खड़े होकर बाग की प्रशंसा करने लगे। प्रशंसा मालिक के कानों में पड़ी। वह झट दौड़ा-दौड़ा आया और इन ब्राह्मण देवता को अपने साथ ले गया और बड़े विस्तार से हर चीज दिखाने लगा। ब्राह्मण देवता बार-बार पूछते जाते थे। सज्जन बड़े गर्व से उत्तर देते, यह मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है और यह भी मेरा ही काम है। चलते-चलते दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां घास का एक तिनका भी न था। ब्राह्मण ने पूछा, यह जगह इस तरह खाली क्यों है ? बाग के मालिक ने कहा, कुछ नहीं, यूं ही, आप आगे चलिये न। लेकिन ब्राह्मण देवता वहीं अड़ गये कि रहस्य जाने बिना आगे कदम न रखेंगे। थक कर बगीचे के मालिक ने कहा, यहां एक अपराध हो गया था इसलिये यह शापित भूमि है। ब्राह्मण ने कहा, ऐसा भी क्या अपराध था ? मालिक ने कहा, आपको आग्रह है तो सुनिये। यहां एक गाय मर गयी थी। ब्राह्मण देवता बोले, गाय का मरना तो कोई अपराध नहीं है, इसका दण्ड आपको क्यों मिल रहा है ? मालिक ने कहा, नहीं, गाय अपने-आप नहीं मरी थी उसे इन्द्र ने मार दिया था। ब्राह्मण ने कहा, यह कैसे ? इन्द्र देवपुरी छोड़कर गाय मारने के लिये यहां आये थे ? मालिक जरा चिढ़-सा गया और बोला, आप तो व्यर्थ की बहस करते हैं। लीजिये सुनिये, गाय मेरे हाथ से मरी थी पर हाथ में इन्द्र का निवास होता है इसीलिये मैंने कहा कि इन्द्र से गो-हत्या हो गयी थी। यह सुनते ही ब्राह्मण देवता ने अपना असली स्वरूप दिखाया और बोले, जो कुछ अच्छा था वह तो तुमने किया और जो कुछ बुरा है उसका करनेवाला है इन्द्र !

बगीचे के मालिक के होश गायब। इन्द्र के पैरों पर गिर पड़े और आंखें खोल देने के लिये उनका बहुत उपकार माना। इस प्रकार बहुत बार आदमी अपनी भूलें और अपनी इच्छाएं छिपाने के लिये भगवान् के नाम का लबादा ओढ़ लेता है। परंतु यह एक भयंकर आदत है, अपने-आपको धोखा देने का सबसे अच्छा उपाय है।

यदि हम सचमुच भगवान् के बनना चाहते हैं तो हमें इस लबादे को उतार फेंकना होगा और अपने-आपको बड़ी पैनी दृष्टि से देखना होगा। उच्चतर जीवन के लिये दिल की सचाई बहुत अधिक आवश्यक है। हमें निर्मम होकर यह देखना चाहिये कि भगवान् की सीधी प्रेरणा से काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना तो दूर रहा, हमने सारे दिन में कितनी बार सच्चे दिल से भगवान् को याद किया और उनसे पथ-प्रदर्शन के लिये प्रार्थना की ? दिल की सचाई ही वह प्रकाश है जो हमारे मन के कोनों में छिपे हुए अंधकार को दूर कर सकता है।

हमें अपने दोषों पर मुलम्मा करने की जगह उन्हें उनके नंगे रूप में देखने की आदत डालनी चाहिये और एक बार देख लेने के बाद उन्हें अभीप्सा की आग में भस्म करने की कोशिश करनी चाहिये। इस प्रयास में जितनी अधिक दिल की सचाई होगी उतनी ही सफलता मिलेगी और जबतक पूरी विजय न मिल जाये तबतक बिना थके, पूरे उत्साह के साथ हमें परिश्रम करते रहना पड़ेगा।

—रवीन्द्र

श्रीमां के उत्तर

शायद भगवान् ने सृष्टि का सृजन एक मुस्कान के साथ किया था और वे उसे एक मुस्कान के साथ ही देखते हैं।

निश्चय ही। और हमें भी हर चीज को मुस्कान के साथ देखना सीखना चाहिये। लेकिन हमने बहुत बुरी आदतें सीख ली हैं जिन्हें अब हमें भूलना सीखना चाहिये।
९ मई १९७०

आज सवेरे वैश्व चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

समग्रता की शांति।
११ मई १९७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं धूल से बना हूं, लेकिन यह ऐसी धूल है जो आपके संपर्क से बदल सकती है।

सारा भौतिक जगत् ही धूल से बना है।

परंतु इस धूल में यह विशेषता है कि भगवान् के संपर्क से यह प्रकाश में बदल सकती है।

१३ मई १९७०

अब मन की अक्षमता बहुत स्पष्ट है।

मन अध्ययन और विश्लेषण का यंत्र है। परंतु वह ज्ञान पाने योग्य नहीं है क्योंकि वह विभाजन में काम करता है।

१५ मई १९७०

मेरे अंदर जो अंधकार हैं उनमें से कुछ ने प्रकाश से प्रेम करना शुरू कर दिया है।

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

तुम्हारे अंदर जो चीज अभीतक अंधकार में है वह अज्ञान के कारण अंधेरे में है, दुर्भावना के कारण नहीं, और यह विजय की निश्चिति है, तेज विजय की क्योंकि प्रकाश तेजी से बढ़ रहा है।

क्या वैश्व चेतना में भौतिक पीड़ा का भाव नहीं रहता ?

वैश्व चेतना में वह निश्चित रूप से रहता है।

वह परम दिव्य चेतना में नहीं रहता; यानी, अनुभूति की प्रकृति बदल जाती है और परस्पर-विरोध मिट जाते हैं। उनके स्थान पर ऐसी चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाती है जिसकी हमारी भाषा में व्याख्या नहीं की जा सकती।
२० मई १९७०

अगर मेरी अभीप्सा स्थायी, निष्कपट और संपूर्ण हो जाये तो चीजें सरल हो जायेंगी।

अभीप्सा की अस्थिरता को देखने के लिये बहुत सचाई और निष्कपटता की जरूरत होती है।
२२ मई १९७०

क्या आपका सच्चा सेवक बनने के लिये व्यवस्थित अंतर्बोध जरूरी नहीं है ?

निश्चय ही व्यवस्थित अंतर्बोध मन का स्थान लेने के लिये बहुत उपयोगी यंत्र है; मन ने अपने-आपको उच्चतर चेतना को ठीक तरह से अभिव्यक्त करने के लिये अयोग्य प्रमाणित कर दिया है। परंतु अंतर्बोध के परे एक ऐसी चेतना है जो परम चेतना को और भी ज्यादा अच्छी तरह अभिव्यक्त करती है।
२६ मई १९७०

ऐसे अंधकार हैं जो भाग जाना चाहते हैं और कुछ हैं जो रूपांतरित होना चाहते हैं!

हां, एक क्षण होता है जब स्वीकार करने या लुप्त हो जाने के बीच चुनाव करना होता है—तब चीजें तेजी से चलती हैं।
२८ मई १९७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकतर समस्याओं का एक ही समाधान होता है—आत्मदान।

जब आत्मदान सचमुच और पूरी तरह से चरितार्थ हो जाता है तो कोई समस्या नहीं रह जाती, हर चीज बहुत सरल हो जाती है।
३० मई १९७०

मेरा ख्याल है कि सर्वांगीण प्रेम आत्मदान के सर्वांगीण होने के लिये पहला कदम है।

परम प्रभु के साथ पहले संपर्क से ही आदमी ऐसे अद्भुत प्रेम से अभिभूत और आवृत हो जाता है कि उसकी प्रतिक्रिया सहज और स्वाभाविक हो जाती है।
१ जून १९७०

सत्य की झांकियों को विस्तृत और सतत होना चाहिये।

एकाग्रता शुरू करते ही तुम्हें एक प्रकार के सत्य के वातावरण में शरण लेनी चाहिये, जबतक कि वह समय न आ जाये, जबतक तुम उसमें सतत निवास न करने लग जाओ, उस समय भी जब तुम ऊपरी क्रियाशीलता को बनाये रखो, लेकिन जो उसकी चेतना पर प्रभाव न डाले।
३ जून १९७०

क्या भागवत इच्छा वह एकमात्र सत्य नहीं है जिसका क्रिया में अनुसरण करना चाहिये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ भागवत चेतना में और उसके द्वारा अस्तित्व रखता है और हर वस्तु या व्यक्ति समग्र में जो स्थान पाता है वह इस पर निर्भर है कि वह परम चेतना से कितना अभिज्ञ और एकात्म है।
५ जून १९७०

मेरे अंदर भौतिक तमस्, विशेष रूप से शाम के समय अधिक हठीला होता है।

यह थकान हो सकती है, सचेतन विश्राम या अधिक नींद की आवश्यकता हो सकती है या यह भोजन में किसी तत्त्व की कमी के कारण हो सकता है। यह अध्ययन करने योग्य विषय है।
७ जून १९७०

सचेतन विश्राम कैसे लिया जाये ?

शरीर शिथिल हो, सोने से पहले लेटकर अपने-आपको भगवान् के प्रति अर्पित करे और बिना प्रयास के, सहज भाव से सचेतन विश्राम ले। एकमात्र सचेतन चीज है कोषाणुओं की यह अभीप्सा कि वे अपने-आपको पूरी तरह भगवान् के अर्पित कर दें।
९ जून १९७०

क्या साधक के लिये एकमात्र सच्चा विश्राम सच्चिदानंद में विश्राम नहीं है ?

सिद्धांत रूप में हां, परंतु मुझे शंका है कि कितने हैं जो इसे पाना जानते हैं।
१२ जून, १९७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अभी तक अपने अंदर चेतना का वह उलटाव नहीं पाता जो "आधारभूत संतुलन की प्रतिक्रिया" है, रूपांतर का अनिवार्य आरंभ-बिंदु है।

कोई पक्का नियम नहीं है। आंतरिक भगवान् के साथ अप्रत्याशित रूप से संपर्क हो सकता है। जरूरी चीज है अभीप्सा को बनाये रखना।
१६ जून १९७०

ऐसा साधक जिसने न तो लक्ष्य देखा है और न मार्ग, यह कैसे जान सकता है कि वह प्रगति कर रहा है या नहीं?

जब तुम क्रिया करो तो अपने कर्म को अर्पित करो।
जबतक विश्राम करो या सोओ तो अपने शरीर को अर्पित करो।
और हमेशा, हर क्षण अपनी चेतना का अर्पण करो।
क्या यह काफी नहीं है?
परिणाम की परवाह किसलिये? क्या यह अहंकार नहीं है?
१८ जून १९७०

कभी-कभी जब मैं आपको याद करता हूं तो शरीर में पुलक-सी होती है।

इसका मतलब यह है कि तुम्हारा शरीर अतिमानसिक चेतना के प्रति संवेदनशील है और वह अधिकाधिक ग्रहणशील हो सकता है।
२० जून १९७०

व्यक्तिगत प्रगति के लिये परवाह के बिना सीधे भगवान् की ओर अभीप्सा, कैसी शुद्ध ज्वाला है यह!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बहुत सुखदायक है। यह सभी कठिनाइयों पर विजय पाने का बल देती है।
२२ जून १९७०

क्या भगवान् को हर जगह और हर चीज में देखने के लिये उनके साथ एकत्व अनिवार्य नहीं है ?

निश्चय ही यह आवश्यक है और अनिवार्य है, अन्यथा तुम सब तरह की कल्पनाओं के खिलौने बन जाने के खतरे में रहते हो।

इसीलिये भगवान् के साथ एकत्व पर एकाग्र होना ज्यादा जरूरी है, बाकी चीजें बाद में आयेंगी।
२४ जून १९७०

माताजी ने एक प्रकार के विकिरण की बात की है जो शरीर से निकलकर औरों के साथ मिल जाता है। क्या यह विकिरण शारीरिक दूरी से सीमित होता है ?

विकिरण का प्रसार व्यक्ति के हिसाब से बदलता है और कोषाणुओं में रहनेवाली चेतना की शक्ति पर निर्भर रहता है।

अधिकतर लोगों के लिये यह कुछ सेंटीमीटर ही होता है। श्रीअरविन्द के शरीर के विकिरण का विस्तार नगर के परे दस किलोमीटर के घेरे से अधिक में फैलता था।
२६ जून १९७०

शायद शरीर के लिये उत्तर की चिंता किये बिना अभीप्सा करना ज्यादा आसान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने देखा है कि जैसे ही शरीर के कोषाणु भगवान् के साथ संपर्क में आते हैं, वे तेजी से और पूरी तरह समर्पण कर देते हैं और उनका समर्पण बहुत स्थायी होता है।

२८ जून १९७०

सामूहिक प्रार्थना

मधुर मां, सामूहिक प्रार्थना का क्या प्रभाव और महत्त्व होता है ?

इसके बारे में, सामूहिक प्रार्थना और उसके उपयोग के बारे में, हम पहले ही बातचीत कर चुके हैं। मेरे ख्याल से यह 'बुलेटिन' में भी छप चुकी है।

इसके अलावा, जैसे तरह-तरह की समष्टियां होती हैं वैसे ही तरह-तरह की सामूहिक प्रार्थनाएं भी होती हैं। एक बेनाम जमघट, भीड़ होती है जो परिस्थिति के संयोग से, आंतरिक सामंजस्य के बिना, परिस्थिति की शक्ति के धक्के से बनती है, जैसे, जब कोई राजा या कोई ऐसा व्यक्ति जो जन-समूह का ध्यान आकर्षित करता हो, एक संकटमय अवस्था में हो, चाहे वह बीमार हो या दुर्घटनाग्रस्त, और जनता समाचार जानने और अपनी भावना प्रकट करने के लिये उमड़ी पड़ रही हो : तो परिस्थितियों के संयोग से ही लोग इकट्ठे होते हैं, अर्थात्, समान रुचि और भावना के सिवाय कोई आंतरिक संबंध नहीं होता। ऐसा भी उदाहरण मिलता है कि सारी भीड़ उस व्यक्ति के रोगमुक्त होने के लिये अनायास प्रार्थना करने बैठ गयी जिसमें उसकी खास रुचि थी। स्वभावतः, वही भीड़ें बिलकुल भिन्न उद्देश्य से, घृणा के उद्देश्य से इकट्ठी हो सकती हैं और उनकी चीख-चिल्लाहट भी एक तरह की प्रार्थना होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, विरोधी और विनाशकारी शक्तियों के प्रति प्रार्थना।

यह सहज गतिविधि होती है, न व्यवस्थित, न प्रत्याशित।

ऐसे व्यक्तियों की समष्टि भी होती है जो एक आदर्श या एक शिक्षा या कार्य की चरितार्थता के लिये जमा होते हैं, इनका आपस में व्यवस्थित संबंध, एक ही लक्ष्य का संबंध, एक ही श्रद्धा और संकल्प का संबंध होता है। ये सामूहिक प्रार्थना और ध्यान के अनुष्ठान के लिये विधिवत् जमा हो सकते हैं, यदि उनका लक्ष्य उदात्त है, संगठन सुचारु ढंग से हुआ है, उनका आदर्श प्रबल है तो यह समष्टि अपनी प्रार्थनाओं या अपने ध्यान द्वारा दुनिया की घटनाओं पर, अपने आंतरिक विकास और अपनी सामूहिक प्रगति पर यथेष्ट प्रभाव डाल सकती है। निश्चय ही ऐसे समूह औरों से बहुत अधिक श्रेष्ठ होते हैं, पर उनमें भीड़ की अंध-शक्ति, भीड़ की सामूहिक क्रिया नहीं होती। ये इन आवेगों-प्रवेगों को अभिप्रेत कर सकते और सचेतन व्यवस्था की शक्ति द्वारा बदल देते हैं।

सदा ही, धरती पर ऐसे समूह रहे हैं जो अपने-आपको इस तरह संगठित करते थे। इनमें से कइयों का ऐतिहासिक जीवन रहा है, दुनिया में ऐतिहासिक कार्य रहा है, लेकिन आम तौर पर जनसाधारण में इन्हें विशिष्ट व्यक्तियों की अपेक्षा ज्यादा सफलता नहीं मिली। इन पर हमेशा संदेह किया गया, ये आक्रमणों और अत्याचारों के शिकार रहे और प्रायः ही बड़ी क्रूरता से, बहुत अज्ञानमय, अंधकारमय तरीकों से भंग कर दिये गये...। एक निश्चित लक्ष्य के लिये, किसी मान्यता, बल्कि सिद्धांत या मत को घेर कर खड़े होनेवाले ऐसे अर्ध-धार्मिक, अर्ध-वीरोचित दल भी हुए हैं जिनका इतिहास बड़ा ही दिलचस्प रहा है। और निश्चय ही उन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयास से सामूहिक प्रगति के लिये बहुत कुछ किया है।

एक आदर्श संगठन है जिसे यदि ठीक-ठीक कार्यान्वित किया जाये तो वह एक बहुत सबल ऐक्य का सृजन कर सकता है, यह ऐसे अवयवों से बना होगा जिनका एक ही लक्ष्य और एक ही संकल्प होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनका आंतरिक विकास इतना हो चुका होगा कि ये लक्ष्य की, उद्देश्य की, अभीप्सा की और कार्य की आंतरिक एकता को एक सुसंगत ठोस शरीर दे सकें।

सभी युगों ने दीक्षा-केंद्रों में कम या अधिक प्रसन्नता देनेवाले तरीके से इसके लिये प्रयास किया है और गुह्य परंपराओं में सदा ही इसे कर्म का अत्यधिक शक्तिशाली साधन बताया गया है।

यदि सामूहिक एकता व्यक्तिगत एकता की संलग्नता को पा सकती तो वह व्यक्ति के कार्य और बल को और भी अधिक बढ़ा सकती।

साधारणतः, यदि बहुत से व्यक्तियों को इकट्ठा कर दिया जाये तो हर अलग-अलग व्यक्ति के गुण की अपेक्षा दल का सामूहिक गुण कहीं कम होगा, लेकिन इसके विपरीत, एक पर्याप्त सचेतन और समन्वित संगठन द्वारा व्यक्तिगत कार्य की क्षमता को बहुगुणित किया जा सकता है।

६ अगस्त, १९५८

—'श्रीमातृवाणी' खण्ड ९, पृ० ३३९-३४१

प्रेम

जो प्रेम भगवान् की ओर मुड़ा हुआ हो, उसे वह सामान्य प्राणिक संवेदन नहीं होना चाहिये जिसे लोग इस नाम से जानते हैं क्योंकि वह प्रेम नहीं है, केवल प्राणिक कामना है, एक अधिकार करने की सहज वृत्ति है, कब्जा और एकाधिकार करने का आवेग। इतना ही नहीं कि यह भागवत प्रेम नहीं है बल्कि इसे तो योग के साथ लेशमात्र भी न मिलने देना चाहिये। भगवान् के लिये सच्चा प्रेम तो आत्मोत्सर्ग है, मांग से मुक्त, आत्म-निवेदन और समर्पण से भरा, वह कोई दावा नहीं करता, कोई शर्त नहीं लगाता, कोई सौदा नहीं करता, ईर्ष्या, घमण्ड या क्रोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उग्रता में रस नहीं लेता क्योंकि ये चीजें उसकी रचना में नहीं हैं। बदले में दिव्य जननी भी अपने-आपको देती हैं, परंतु देती हैं मुक्त रूप से और यह देना अपने-आपको एक आंतरिक दान में चरितार्थ करता है—तुम्हारे मन में, तुम्हारे प्राण में, तुम्हारी भौतिक चेतना में उनकी उपस्थिति, उनकी शक्ति तुम्हें भागवत स्वभाव में फिर से घड़ती हैं, तुम्हारी सत्ता की सभी गतिविधियों को लेकर उन्हें पूर्णता और परिपूर्ति की ओर चलाती हैं, उनका प्रेम तुम्हें घेरे रहता है और अपनी बांहों में लेकर भगवान् की ओर ले जाता है। तुम्हें अपने सभी अंगों में, एकदम भौतिक तक में इस चीज का अनुभव करने की और इसे अपने अधिकार में रखने की अभीप्सा करनी चाहिये और यहां किसी प्रकार की, न तो समय की और न पूर्णता की कोई सीमा है। अगर तुम सचमुच अभीप्सा करो और इसे पा लो, फिर किसी अन्य मांग या किसी हताश कामना के लिये कोई जगह न रहेगी। और अगर कोई सच्ची अभीप्सा करे तो जैसे-जैसे पवित्रीकरण होता जाये और प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन होते जायें वैसे-वैसे वह उसे अमोघ रूप से पाता जायेगा।

अपने प्रेम को सभी स्वार्थभरी मांगों और कामनाओं से शुद्ध रखो और तुम देखोगे कि उत्तर में उतना अधिक प्रेम पा रहे हो जितना तुम सह सकते और आत्मसात् कर सकते हो।

जान लो कि कार्यान्वयन पहले है, जो काम करना है वह पहले आता है, मांगों या कामनाओं की तुष्टि नहीं। केवल तब जब भागवत चेतना अतिमानसिक ज्योति और शक्ति के साथ नीचे उतर आये और भौतिक का रूपांतर कर दे तभी दूसरी चीजों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जा सकता है—और तब भी वह कामनाओं की तुष्टि नहीं, प्रत्येक में, सब में और उस नवजीवन में जो उसे व्यक्त करेगा, भागवत सत्य की परिपूर्णता होगा। भागवत जीवन में सब कुछ भगवान् के लिये है अहंकार के लिये नहीं।

शायद मुझे गलतफहमी से बचने के लिये एक दो बातें और जोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देनी चाहियें। पहली, मैं भगवान् के लिये जिस प्रेम की बात करता हूं वह केवल चैत्य प्रेम नहीं है, यह सारी सत्ता का प्रेम है, जिसमें प्राण और प्राणिक-भौतिक भी शामिल हैं। सभी एक-सा आत्मदान करने में सक्षम हैं। यह मानना गलत है कि अगर प्राण प्रेम करता है तो वह ऐसा प्रेम होना चाहिये जो मांगें करता और अपनी कामनाओं की तुष्टि आरोपित करता है। यह सोचना गलत है कि या तो यही होना चाहिये अन्यथा 'आसक्ति' से बचने के लिये प्राण को अपने प्रेम के विषय से एकदम अलग हो जाना चाहिये। प्राण भी प्रकृति के अन्य किसी भी भाग के समान बिना किसी ननुनच के पूर्ण आत्मदान कर सकता है और जब प्राण प्रिया के लिये अपने-आपको भूल पाता है तो उसकी गति के जैसी उदारता और कोई नहीं हो सकती। प्राण और भौतिक दोनों को अपने-आपको सच्चे तरीके से, अहंकारभरी कामना के साथ नहीं, सच्चे प्रेम के तरीके से देना चाहिये।

*

मैंने यह कभी नहीं कहा कि भगवान् के लिये प्रेम में प्राण का कोई हिस्सा न होना चाहिये, बस इतना ही कहा है कि उसे अपने-आपको चैत्य सत्ता के प्रकाश में शुद्ध करना और उदात्त बनाना होगा। मनुष्यों के बीच अपने-आपसे प्रेम करनेवाला प्रेम—साधारण प्राणिक प्रेम से मेरा यही आशय है—के परिणाम इतने क्षुद्र और अंत में इतने विपरीत होते हैं कि मैं चाहता हूं कि भगवान् की ओर गति में स्वयं प्राण में भी कुछ चीज अधिक शुद्ध, अधिक उदात्त और उच्च हो।

*

रही बात हृदय की, इस योग में भगवान् के लिये ललकने, रोने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख करने और तरसने की जरूरत नहीं है। प्रबल अभीप्सा तो होनी ही चाहिये, एक तीव्र ललक भी हो सकती है, उत्कट प्रेम और ऐक्य के लिये इच्छा भी हो सकती है लेकिन दुःख और क्षोभ की कोई जरूरत नहीं है।

*

अपने-आपमें, भावों में, प्रेम, विषाद, दुःख, निराशा, भावमय सुख इत्यादि में रस लेना और उनपर मानसिक-प्राणिक जोर देना भावुकता कहलाता है। गहरी भावना में स्थिरता, संयम, पवित्र नियंत्रण और मर्यादा होने चाहियें। तुम्हें अपनी भावनाओं और संवेदनों के वश में नहीं होना चाहिये, बल्कि सदा अपना स्वामी होना चाहिये।

*

हृदय को सुखा डालना इस योग का अंग नहीं है बल्कि भावनाओं को भगवान् की ओर मोड़ना चाहिये। ऐसी छोटी अवधियां हो सकती हैं जब हृदय निष्क्रिय हो, साधारण भावनाओं से अलग होकर वह ऊपर से आनेवाले प्रवाह की प्रतीक्षा में हो, लेकिन ऐसी अवस्थाएं शुष्कता की नहीं नीरवता और शांति की अवस्थाएं होती हैं। वस्तुतः जबतक चेतना ऊंची न उठ जाये तबतक इस योग में हृदय को ही एकाग्रता का मुख्य केंद्र होना चाहिये।

*

इस योग में संवेग जरूरी है। केवल अत्यधिक भावुकतापूर्ण संवेदन-शीलता को ही, जो तुम्हें छोटी-छोटी चीजों पर अवसाद और निराशा में डाल देती है, तुम्हें जीतना चाहिये। इस योग का असली आधार ही है भक्ति और अगर तुम अपनी संवेगमय सत्ता को ही समाप्त कर डालो तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्ति नहीं हो सकती। अतः संवेग को योग से निकाल बाहर करने की संभावना नहीं हो सकती।

*

अगर तुम अपनी संवेगमय सत्ता की भक्ति को केवल इस कारण प्रोत्साहन नहीं दो कि निम्नतर प्राण अभीतक नियंत्रण में नहीं है और भिन्न प्रकार से क्रिया करता है तो भक्ति कैसे बढ़ेगी और निम्नतर प्राण कैसे बदलेगा ? प्रकृति की अंतिम शुद्धि और सामंजस्य तक हमेशा सत्ता में विपरीतताएं बनी रहती है लेकिन यह इस बात के लिये कोई कारण नहीं है कि अच्छी गतिविधियों की क्रीड़ा को किसी भी तरह दबाया जाये—इसके विपरीत इन्हें परिष्कृत करना और बढ़ाना चाहिये।

*

प्रतिस्थापन के बारे में तुमने जो अनुभव किया है, वह बिलकुल सच है। एक बड़ी हदतक रूपांतर पुरानी सतही 'स्व' की चीजों को हटा देने या निकाल बाहर करने और उनके स्थान पर नये गहरे स्व और उसकी सच्ची क्रिया लाने से आगे बढ़ता है।

अगर तुम्हें उच्चतर भावनाएं, भक्ति आदि प्रभाव या रंग मालूम होते हैं तो इसका कोई महत्त्व नहीं है। यह ऐसा ही लगता है जब तुम अपने-आपको बाह्य भौतिक या बाह्य प्राण या बाह्य मन में अनुभव करो। सचमुच ये भावनाएं तुम्हारे अंतर्तम स्व, तुम्हारी अंतरात्मा, तुम्हारे अंदर के चैत्य की हैं और जब तुम चैत्य चेतना में होते हो तो ये सामान्य और स्वाभाविक बन जाती हैं। लेकिन जब तुम्हारी चेतना हट जाती है और अधिक बाहरी बन जाती है, तब अंतरात्मा या भागवत चेतना की इन क्रियाओं को बाहरी या मात्र प्रभाव के रूप में अनुभव किया जाता है। फिर भी, तुम्हें अपने-आपको उनकी तरफ निरंतर खोलना होगा तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे या तो अविचल रूप से तुम्हारे अंदर अधिकाधिक व्याप्त हो जायेंगी या उत्तरोत्तर लहरों या प्लावन के रूप में आयेंगी और तबतक आती रहेंगी जबतक कि वे मन, प्राण और शरीर को परिप्लावित न कर दें। तब तुम उनका अनुभव हमेशा सामान्य ही नहीं बल्कि तुम्हारी अपनी सत्ता के अंश और अपनी प्रकृति के सच्चे सार के रूप में करोगे।

यांत्रिक या दिखावटी भक्ति की तरह की कोई चीज नहीं हो सकती—या तो भक्ति होती है या नहीं होती। भक्ति तीव्र या अतीव्र, पूर्ण या अपूर्ण, कभी अभिव्यक्त तो कभी पर्दे के पीछे हो सकती है, लेकिन यांत्रिक और दिखावटी भक्ति शाब्दिक विरोध है।

—श्रीअरविन्द

सोसायटी समाचार

श्रीअरविन्द सोसायटी की वार्षिक बैठक १२, १३ तथा १४ अगस्त को हमेशा की तरह पांडिचेरी में होगी। सभी का स्वागत है। १५ अगस्त श्रीअरविन्द के १३०वें जन्म-दिवस तथा भारत के ५५वें स्वतंत्रता-दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

डॉ० एम० वी० नाडकर्णी श्रीअरविन्द के 'एसेज़ ऑन द गीता' (गीता प्रबंध) पर २६ नवम्बर से ४ दिसम्बर २००२ तक सोसायटी के बीच ऑफिस में शिक्षा-शिविर लगायेंगे। सावित्री का अगला अध्ययन-सत्र फरवरी २००३ में लगेगा।

श्रीअरविन्द आश्रम के श्रद्धालु रानाडे का भाषण ७ अप्रैल को नयी दिल्ली शाखा में हुआ। विषय था, 'इण्डियाज़ डेस्टिनी एण्ड प्रेज़ेंट क्राइसिस' (भारत की नियति और वर्तमान संकट)। प्रसिद्ध उडीसी नर्तकी शारोन लोएन १० अप्रैल को 'डिवाइन आस्पेक्ट्स ऑफ डांस' (नृत्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवत पहलू) पर बोलीं। चेन्नई शाखा ने १४ अप्रैल को डॉ० आनन्द रेड्डी का 'प्रेजेंट क्राइसिस ऑफ इण्डिया' (भारत का वर्तमान संकट) विषय पर भाषण रखा। चेंगलपट्टु (तमिलनाडु) केंद्र ने अपने केंद्र की तीसरी जयन्ती ७ अप्रैल को मनायी। उसमें शंकर नारायणन श्रीअरविन्द और श्रीमां के योग पर बोले। शाम को आश्रम का तथा फूलों के आध्यात्मिक अर्थों वाला वृत्तचित्र भी दिखलाया गया। मुंबई में पेडर रोड शाखा में अप्रैल के पहले दो हफ्तों में डॉ० नाडकर्णी के 'सावित्री' विषयक भाषण हुए। १५ अप्रैल को श्रीअरविन्द आश्रम के रिचर्ड और कैलाशबेन ने श्रीअरविन्द तथा श्रीमां के प्रतीकों का अर्थ बतलाया। २१ अप्रैल को श्रुति ने 'पावर ऑफ साउण्ड' (स्वर की शक्ति) विषयक भाषण दिया। पटिलाया केंद्र में ९, १० तथा ११ अप्रैल को तीन दिनों का शिक्षा शिविर श्रद्धालु तथा श्रुति ने लगाया।

सिरसा (हरियाणा) केंद्र में ७ अप्रैल २००२ को श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेष की स्थापना की गयी जिसमें करीब २०० ने हिस्सा लिया।

पांडिचेरी के श्री विजय पोद्दार ने मार्च के अंत में पटियाला, चण्डीगढ़ तथा अम्बाला के केंद्रों का दौरा किया। उन्होंने सोसायटी द्वारा संचालित पटियाला तथा चण्डीगढ़ के विद्यालयों के बारे में विस्तार से बातचीत की, सुझाव दिये और भावी कार्यक्रम बनाये। इसमें वहां के प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों तथा कई निरीक्षकों ने भाग लिया। वे अम्बाला केंद्र में भी सोसायटी के कई सदस्यों से मिले। वापिसी में वे सूरत भी रुके और वहां ४ तथा ५ अप्रैल के समारोहों में उन्होंने भाग लिया। सूरत में श्रीअरविन्द आश्रम दिल्ली शाखा से तारा जौहर तथा कलकत्ते से शान्तनु ने भी भाग लिया।

नये प्रकाशन

चम्पकलाल स्पीक्स (अंग्रेजी) तीसरा परिशोधित तथा परिवर्धित संस्करण; प्रकाशक—श्रीअरविन्द आश्रम; पृष्ठ—४००, मूल्य १७५ रु० (डाक-व्यय अतिरिक्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पुस्तक के पहले सम्पादक तथा संकलनकर्ता श्री माधव पण्डित ने अपनी भूमिका में कहा था कि 'चम्पकलाल स्पीक्स' और कुछ नहीं बस *मां-श्रीअरविन्द, मां-श्रीअरविन्द* है। वर्तमान परिवर्धित संस्करण में कई ऐसी चीजें जोड़ी गयी हैं जो बाद में मिलीं। इसका गुजराती परिवर्धित संस्करण भी श्रीमती रौशेनबेन ने छापा है।

भावसुमम् (संस्कृत की छोटी कविताएं) १३० पृष्ठों और ७० रु० (डाक-व्यय अतिरिक्त) की यह सुन्दर पुस्तक श्रीअरविन्द अंतर्राष्ट्रीय केंद्र ने छपवायी है। इसमें आश्रम की एक साधिका—जो विद्यालय में संस्कृत की अध्यापिका हैं—द्वारा रचित लयबद्ध, सरल संस्कृत गीत हैं।

'द स्पिरिट ऑफ ओरोवील' (ओरोवील की आत्मा) लेखिका—हुता। करीब ३०० पृष्ठों की इस पुस्तक का दाम २८० रु० है। आकार में काफी बड़ी है यह और जैसा कि नाम से ज्ञात होता है इसमें ओरोवील के बारे में, मातृमन्दिर के बारे में बहुत कुछ है। इसकी भूमिका में ही श्रीमां का बहुत ही प्रोत्साहक संदेश है—"हम पृथ्वी पर परम सत्य और प्रेम की विजय लाने के लिये ही हैं—और वह विजय आंकर रहेगी।" यह पुस्तक ऐसे प्रेरणात्मक संदेशों से भरपूर है। यही चीज सचमुच ओरोवील की आत्मा को दर्शाती है।

एक निवेदन

खण्डवा (म० प्र०) में श्रीअरविन्द सोसायटी की शाखा श्रीअरविन्द के पवित्र देहावशेषों के लिये समाधि, ध्यान-कक्ष, पुस्तकालय तथा एक अतिथि-गृह बनवाना चाहती है। इस काम के लिये सात लाख की लागत का अनुमान है। जो लोग आर्थिक रूप से इस योजना में हाथ बंटाना चाहें वे धनादेश, डी. डी. या चेक इस पते पर भेज सकते हैं—सेक्रेटरी, २१ मातृ अंचल, रेलवे कॉलोनी, खण्डवा - ४५०००१। इसमें आयकर की छूट मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Best Compliments
From:

ENBEE ENTERPRISES

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, Room No. 69, 3rd Floor
CALCUTTA - 700 007

Ph. 232-2940/2944
Cable - AUROENBEE

House of
Solvents & Coaltar By-products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

Spintex Private Limited

301, Harsha House, Karampura
New Delhi - 110015

Phone : 530537
Telex : 31-76124 STEXIN Gram . SPINTEX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Entered in Database

Signature with Date
10/5/08

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri